काशी गौरव



श्री काशी विश्वनाथजी

लेखक—

अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट् श्री स्वामी करपात्री
जी महाराज के कृपापात्र शिष्य

ब्रह्मनिष्ठ काशीस्थसन्त स्वामी शिवानन्द सरस्वती

धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

काशी के तीर्थ एवं मन्दिरों का नक्शा

कुण्ड
सड़क
रेल

वरुणा नदी
जी टी रोड
रामनगर

१ कामेश्वर
२ त्रिलोचन
३ ओंकारेश्वर
४ भूत भैरव
५ ज्येष्ठेश्वर
६ मारभूतेश्वर
७ मंगलागौरी
८ अग्नीश्वर
९ संकटादेवी
१० वीरेश्वर
११ तारकेश्वर
१२ आदिविश्वेश्वर
१३ गोकर्णेश्वर
१४ दण्डपाणि
१५ ढुण्ढिराज
१६ विश्वेश्वर
१७ धर्मेश्वर
१८ अन्नपूर्णा
१९ विशालाक्षी
२० साक्षी विनायक
२१ शूलटंकेश्वर
२२ चौसट्ठी देवी
२३ तिलभाण्डेश्वर
२४ केदारेश्वर
२५ अर्क विनायक
२६ असिसंगमेश्वर
२७ जगन्नाथ
२८ दुर्गा जी

अहीर सागर
सुमेरु देवी (दुर्गा)

शिव
देवी
विष्णु
गणेश
भैरव
सूर्य

काशी गौरव

(काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा 'माहात्म्य' काशी का इतिहास काशी माहात्म्य वर्तमान में प्रचलित वाराणसी की सम्पूर्ण यात्रा)

ॐ

लेखक

धर्मसम्राट ब्रह्मज्ञानी स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती श्री करपात्री जी महाराज के कृपापात्र शिष्य ब्रह्मनिष्ठ काशीस्थ सन्त स्वामी शिवानन्द सरस्वती

प्रकाशक और लेखक
स्वामी शिवानन्द सरस्वती
धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड
वाराणसी

प्रथम संस्करण दश हजार १०००० प्रतियाँ

संवत् २०५० आषाढ़ शुक्ल गुरु पूर्णिमा
जुलाई १९९३

मूल्य- श्रद्धा भक्ति और विश्वास से युक्त होकर वर्णाश्रम एवं स्वधर्म का पालन करते हुए शिवपूजा, निष्काम सेवा तथा यथाशक्ति दान करते हुए काशी की यात्रा करें और जन्म-मृत्यु रूप चक्कर से छूटने का प्रयत्न करें।

समर्पण

हे काशी विश्वनाथ जी ! आप तो तीनों लोकों के स्वामी हैं। मैं आपको कुछ समर्पित करना चाहता हूँ। किन्तु क्या समर्पित करूँ ! आप तो तीनों लोकों के प्राणियों को मोक्ष देने वाले हैं। जब तक प्राणी इस संसार में जीवित रहता है, तब तक इस संसार के सभी भोग्य पदार्थों को देकर सुख और शान्ति प्रदान करते हैं और अन्त में मोक्ष की भिक्षा भी देते हैं।

हे काशी विश्वनाथ जी ! मैं यति हूँ। मेरे पास तो केवल मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार हैं। इसे मैं आपके कमलवत् श्री चरणों में समर्पित करता हूँ।

हे शिव शंकर ! आप तो अनाथों के नाथ हैं। मैं तो भारतीय सनातन वैदिक धर्म और काशी की प्राचीन संस्कृति के प्रचार-प्रसारार्थ और संसार के प्राणियों के कल्याणार्थ संपूर्ण "काशी की पञ्च क्रोशी यात्रा माहात्म्य" (वाराणसी की सम्पूर्ण यात्रा) नामक पुस्तक को आपके पादारविन्दों में समर्पण करता हूँ।

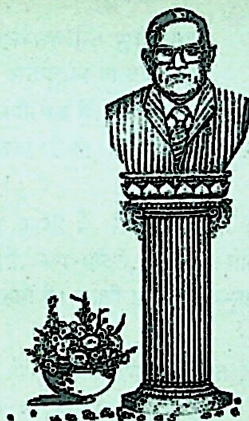
स्वामी शिवानन्द सरस्वती

॥ ॐ हरिः ॥

काशी गौरव

29





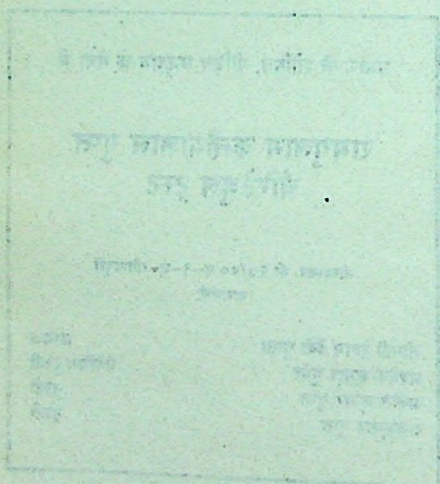
कन्हैयालाल गुप्त जन्म : 7 फरवरी 1924 मृत्यु : 8 मई 1992

समाज के शोषित, पीड़ित समुदाय के सेवा में

रामगुलाम कन्हैयालाल गुप्त चैरिटेबुल ट्रस्ट

नीलाम्बर, बी २७/८० ए–१–ए–रविन्द्रपुरी
वाराणसी





भूमिका

ये काश्यां धर्म्मभूमिष्ठानिवसन्ति मुनीश्वराः।
ते तारयन्ति चात्मानं शतपूर्वान् शतावरान्॥

वेद और काशी अपौरुषेय हैं। प्राणी जब तक जीवित रहता है काशी मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य तथा भोजन, आवास, भक्ति और ज्ञान देती है, अन्त में काशी मोक्ष देती है।

पुराणों के अनुसार काशी में, शिव-पीठों के अतिरिक्त विष्णु-पीठों, सूर्य-तीर्थों, भैरव-मंदिरों, नाग-मंदिरों, शिवगण-मंदिरों एवं योगीनी मंदिर आदि के विवरण प्राप्त होते हैं। काशी खण्ड के अनुसार पैंतालिस विष्णुपीठ थे।

अड़सठ देवी-पीठ थे। कृत्यकल्पतरु में उद्धृत लिंग पुराण के अनुसार इन ६८ देवी-पीठ के अलावा ८ और देवी पीठ थे। काशी खण्ड के अनुसार एकहत्तर विनायक-पीठ, आठ भैरव, एक बेताल तीर्थ, तीन नाग तीर्थ, सात गण तीर्थ, चालीस रुद्रगण-पीठ, १२ आदित्य-पीठ, इनके अतिरिक्त हृद्वापी और कूप का भी वर्णन मिलता है। काशीखण्ड के अनुसार अठासी हृद् और बासठ कुण्डों का उल्लेख प्राप्त होता है, किन्तु आजकल इनेगिने थोड़े से पीठ, मंदिर, हृद्वापी आदि प्राप्त हो रहे हैं।

उपरितन वर्णित देव-देवी आदि के पुण्यस्थलों के कारण काशी का महत्त्व और दूसरे तीर्थों से विशिष्ट स्थान रखता है। इन देवी-देवताओं के अतिरिक्त एक और विशेषता यह है कि गंगा काशी में आकर चन्द्राकार बनकर अपने कंधे पर काशी को धारण की हुई हैं। काशी के पच्चीस कोस में स्थित द्रवीभूत ब्रह्म कहा जाता है, पूरी काशी शिव स्वरूप है और गंगा शिव के ललाट की अर्द्धचन्द्राकार शोभा है। दक्षिण उत्तर में गिरने वाली अस्सी वरुणा नदियाँ काशी में आते हुए के पापों को तलवार से काटती हैं और रोकती हैं। इस प्रकार काशी विशेष प्रकार का सर्वोत्तम पुण्य स्थल बन जाता है। इसलिए काशी शिव, विष्णु और सूर्य आदि

देवताओं के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है। इन देवताओं के साथ सिद्ध ऋषि मुनि गण भी काशी में निवास करते थे और उनके नाम के अनेक मुहल्ले अगस्त कुण्डा आदि अभी भी विद्यमान हैं।

इस काशी में निवास करने का उक्त पुण्य स्थलों के दर्शन-पूजन, नित्य यात्रा और प्रदक्षिणा करने का बड़ा महत्त्व है। इस महत्त्व को बताने के लिए प्राचीन और अर्वाचीन अनेक ग्रन्थ हैं। वेद, महाभारत, ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म पुराण, नारद पुराण, अग्नि पुराण, मत्स्य पुराण, लिङ्ग पुराण, पद्म पुराण, कूर्म पुराण, गरुड़ पुराण, आदित्य पुराण, भविष्य पुराण, वायु पुराण, शिव पुराण, वामन पुराण, काशीखण्ड, काशीकेदार माहात्म्य, काशीरहस्य, कृत्य कल्पतरु, वीरमित्रोदय, त्रितीर्थस्थली (त्रीस्थली) सेतु हेमाद्रि, तीर्थ चिन्तामणि तथा वाराणसी वैभव आदि हैं। इनमें विशिष्ट ग्रन्थों को सामने रखकर धर्म सम्राट ब्रह्मज्ञानी स्वामी अनन्त श्री विभूषित हरिहरानन्द सरस्वती श्री करपात्री स्वामी जी के कृपा पात्र प्रिय शिष्य ब्रह्मनिष्ठ स्वामी शिवानन्द सरस्वतीजी ने बड़े वैदुष्य के साथ ''काशी गौरव'' की रचना की है। इस ग्रन्थ में काशी माहात्म्य, पूज्य दर्शनीय देवताओं के स्थान, पूजा की तिथि, दिन का निर्देश किया गया है। अन्तर्गृही, पञ्चक्रोशी यात्रा क्रम, स्थान एवं फल आदि का भी निर्देश किया गया है। सभी तथ्यों को लिखते समय पुराणों के वचनों का उदाहरण दिये गये हैं। विषय की दृष्टि से और वचनों की दृष्टि से यह ग्रन्थ काशी, काशीस्थ देव, काशी के पुण्यस्थलों एवं काशी की प्रदक्षिणा के लिए अत्युत्तम सामग्री प्रस्तुत करता है। काशी निवासियों के लिए यह ग्रन्थ बड़ा उपादेय है और काशी-जिज्ञासुओं के लिए आलोक का काम करेगा। इति शुभ

मुरलीधर पाण्डेय



ब्रह्मनिष्ठ स्वामी शिवानन्द सरस्वती



स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र

अयोध्या के हनुमान गढ़ी में शंकर प्रसाद उपाध्याय जी के पुत्र भोलानाथ उपाध्याय हुये। भोलानाथ जी ज्योतिर्मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के शिष्य थे। भोलानाथ जी को ३५ वर्ष की अवस्था तक कोई संतान नहीं थी, भगवान की कृपा से भोलानाथ जी को वैराग्य हुआ, वे अपनी सम्पत्ति अपने चाचा को देकर काशी में आ गये। ब्रह्मनाल में काशीवास करने लगे और अन्नक्षेत्र खोलकर साधु-महात्माओं एवं संन्यासियों को बना हुआ दिव्य भोजन (भिक्षा) कराते रहे। इसके साथ ही सभी वर्गों के गरीबों को प्रतिदिन एक-एक किलो सीधा अन्न देते रहे। वे सभी सन्तों, साधुओं, महात्माओं, संन्यासियों, तपस्वियों, साधकों, अनुष्ठान करने वालों और अग्निहोत्र आदि की कुटिया-कुटिया, आश्रमादि (मठ) में जाकर पत्नी सहित दर्शन करते थे। दर्शन के पश्चात् किस महात्मा को किस वस्तु की आवश्यकता है, स्वयं समझ कर, स्वयं महात्माओं के पास पहुँचाते थे, इस प्रकार निष्काम सेवा करते हुये साढ़े तीन वर्ष व्यतीत हो गया। जिस दिन साढ़े तीन वर्ष पूर्ण हुआ उसी दिन प्रातः आठ बजे एक दण्डी स्वामी दण्ड और कमण्डलु हाथ में लिए हुए (वृद्ध किन्तु तेजपूर्ण, प्रकाशमान मुखमण्डल, शरीर से दिव्य तेज स्फुरित हो रहा था) महात्मा उस गली से जा रहे थे, जिस गली के बरामदे में भोलानाथ पत्नी सहित वृहदारण्यक उपनिषद् का पाठ कर रहे थे। उनकी दृष्टि अचानक स्वामी जी के ऊपर पड़ी। दोनों उठकर खड़े हो गये और स्वामी जी को अपने यहाँ लाने के लिए दौड़ पड़े। स्वामी जी का चरण धोकर आसन पर बैठाये, मिष्टान्न आदि अर्पण किये। प्रसाद स्वरूप फल, मिठाई सब लोगों को स्वामी जी ने बाँट दिये, बाँटने के पश्चात् उमा देवी बोलीं स्वामीजी! मेरे कोई पुत्र नहीं है। आप मुझे पुत्र का आशीर्वाद दीजिए। स्वामी जी अपनी झोली से एक सेव निकालते हुये बोले 'यह फल खाओ तुम्हें भगवान का भक्त पुत्र उत्पन्न होगा।' इस प्रकार कहते हुये कुछ दूर

तक जाकर अन्तर्धान हो गये। दश महिने के पश्चात् सन् उन्नीस सौ बत्तीस (१९३२) माघ शुक्ल वसन्त पंचमी के दिन काशी में प्रातः आठ बजे शिवनारायण नाम के बालक का भारद्वाज गोत्र सर्जूपारी ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ। शिवनारायण जी का जीवन चरित्र बाल्यावस्था से ही धार्मिक था, वे पूजा-पाठ करते थे, मन्त्रों का जप, कीर्तन इत्यादि धार्मिक कार्यों में अपना समय खर्च करते थे। उनके पिताजी का आयुर्वेदिक औषधालय था। उस औषधालय में जाकर वे रोगियों की सेवा करते थे।

शिवनारायणजी जी का आठ वर्ष की अवस्था में उपनयन संस्कार हुआ। नौ वर्ष की अवस्था में पिता जी काशी में ब्रह्मलीन हो गये। पिताजी के देहान्त होने के बारहवें दिन पिता जी के नाम से जमीन, मकान, गौ आदि दान करके भोज-भण्डारा किया।

माताजी की सेवा करते हुए, धर्म प्रचार करने लगे। धर्मशाला, मन्दिर, जलाशय, संस्कृत-विद्यालय आदि के जीर्णोद्धार करने और कराने लगे। बाल्यावस्था में ही अनेक मन्दिर, धर्मशाला, विद्यालय बनवाये। श्री स्वामी करपात्री जी महाराज अयोध्या के लक्ष्मण किला में विराजमान थे। माता जी दर्शन करने गयीं। स्वामी जी को ओंनमोनारायण (प्रणाम) करने के पश्चात् माता जी ने पुत्र का हाथ पकड़ कर स्वामी जी से बोलीं, यह मेरा पुत्र है। इसे मैं आपके चरणकमलों में समर्पण करती हूँ। सन् १९४८ को रामनवमी के दिन शिवदीक्षा प्राप्त हुई। शिवचैतन्य नाम पड़ा। गुरुजी की आज्ञा से हरिद्वार में इन्हें योगानन्द जी से अष्टाङ्ग योग की शिक्षा प्राप्त हुई।

सन् १९५० में आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया तिथि के दिन तीर्थ यात्रा प्रारम्भ हुई। माताजी को तीर्थों में स्नान, मन्दिरों के दर्शन और सन्त-महात्माओं के दर्शन हेतु तीर्थ यात्रा जाने के लिए नन्दीश्राद्ध करके घर से चल पड़े। ब्राह्मण वेदों की स्तुति करते हुए आगे-आगे चल रहे थे। ये वैदिक ब्राह्मण श्री नागेश्वर जी के मन्दिर तक गये, नागेश्वर जी के दर्शन करके माताजी

को लेकर काशी में मणिकर्णिका घाट में स्नान, संध्या, देव, ऋषि, पितृ-तर्पण करके श्राद्ध किया, श्राद्ध करने पिशाचमोचन तीर्थ में जाकर ब्राह्मणों को मिष्टान्न का भोजन कराने के पश्चात् श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर वस्त्र दक्षिणा दिये, श्राद्ध किया, तीन दिन काशी में रहकर गया जी गये और गया श्राद्ध किया। इसी प्रकार भारत के तीर्थों, मन्दिरों, सन्त-महात्माओं के दर्शन करते हुए भारत, नेपाल, काश्मीर आदि की तीर्थ-यात्रा के पश्चात् यज्ञ और कीर्तन का आयोजन किया।

चन्द्रग्रहण में माताजी को लेकर काशी आये दूसरे दिन मणिकर्णिका घाट पर स्नान करके उपशान्तेश्वर के दर्शन, पूजा करने के पश्चात् मन्दिर में माता जी कीर्तन करने लगीं, कीर्तन करती हुई सन् १९५२ में ब्रह्मलीन हो गईं। बारहवें दिन माताजी के नाम से जमीन, मकान, गौ आदि दान दिये। ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र-दक्षिणा देकर प्रसन्न किये। माताजी के वार्षिक श्राद्ध करने के पश्चात् मातृ, पितृ, देव और ऋषि ऋण से मुक्त होकर ब्रह्मचारी शिवनारायण को तीव्र वैराग्य हुआ। महाशिवरात्रि के दिन नन्दीश्राद्ध करके रात्रि में पूजा करते हुए पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप करते हुए रात्रि में जागरण किया और प्रातः नित्यकर्म से निवृत होकर पुनः रुद्राष्टाध्यायी से अभिषेक करने के पश्चात् सर्वत्याग यज्ञ करके अपने पुरोहित तथा अन्य ब्राह्मणों को जमीन, मकान देकर छप्पन प्रकार के व्यंजन बनाकर दान किया। घर के अन्दर के धन, सामान और अपना वस्त्र सहित दान किये, एक कोपीन, एक सफेद अचला पहिनकर गौ-ब्राह्मणों को आगे करके चले। ब्राह्मण वेदों की स्तुति करते हुए चल रहे थे। इसी प्रकार अयोध्या के नागेश्वर तक सब चले। उस समय का दृश्य अलौकिक था। नागेश्वर की पूजा करके काशी आये। काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करके उत्तरा खण्ड चले गये।

नेपाल के मुक्तिनाथ के पास के धौलागिरि पर्वत पर जाकर गुफा में रहने लगे भूख लगने पर जंगल के पत्ते खाकर झरने के जल पीते हुए,

घोर तपस्या करने लगे। वनदेव-वनदेवी आकर उनकी रक्षा करने लगे। जंगल में बाघ, भालू गरजते थे उनकी परीक्षा ले रहे थे। कस्तुरी-मृग गुफा के पास आकर रहने लगे। वहाँ पाँच वर्ष में दो ब्रह्मगायत्री का पुरश्चरण पूर्ण किये। गायत्री पुश्चरण की पूर्णाहुति के दिन रात्रि में स्वप्न में जटाधारी महात्मा आकर बोले, तुम नेपाल के पशुपतिनाथ जी के दर्शन करके शिवपुरी में जाकर तपस्या करो। इष्टदेव की आज्ञा पाकर वनदेव-वनदेवी से आज्ञा लेकर पशुपति नाथ जी के दर्शन करके शिवपुरी में जाकर पत्ते की कुटिया बनाकर रामषडअक्षरी महामन्त्र का पुरश्चरण करने लगे। जंगल के विच्छूघास, नेपाली भाषा में सिश्नो कहते हैं और नेपाल में काऊलो नाम के पेड़ का छिल्का निकाल कर उसकी रोटी बनाकर प्रसाद पाते थे। वहाँ अन्य बहुत से पौधें और कन्दमूल जमीन में होते हैं। अनुष्ठान के पश्चात् दिन में २ बजे सिश्नो नाम के विच्छु पौधे के पत्ते चिमटे से तोड़कर पानी में उबालकर बिना नमक का भगवान को अर्पण करके प्रसाद पाते थे। तीन वर्षों में रामषडाक्षरी महामन्त्र का पाँच पुरश्चरण पूर्ण हुआ उसी रात्रि में वही इष्टदेव आकर बोले, तुम केदार जी के पास जाकर तपस्या करो। वनदेव-वनदेवी से आज्ञा लेकर केदारेश्वर के दर्शन कर बगल के गुफा में शिवपञ्चाक्षरी महामन्त्र का पुरश्चरण करते हुए रहने लगे। जल पीकर, कन्द-मूल खाकर तपस्या करने लगे। ४ मास पर्यन्त बर्फ से गुफा ढक जाता था। पानी जम जाता था, बर्फ पिघलाकर जल पीते थे। वहाँ रहकर 'ओंनमः शिवाय' पञ्चाक्षरी महामन्त्र का सात बार पुरश्चरण किये, ४ वर्ष में, और सातवाँ पुरश्चरण जिस दिन पूर्ण हुआ उसी दिन स्वप्न में इष्टदेव बोले तुम जम्मू के वैष्णवी देवी के मन्दिर के पास में रहकर "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" नवार्ण महामन्त्र का पुरश्चरण करो। प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर केदार जी के दर्शन करके वनदेव वनदेवी जी से आज्ञा लेकर जम्मू के वैष्णवी देवी जी के दर्शन करके बगल के गुफा में पुरश्चरण रूप महायज्ञ प्रारम्भ हुआ, दो वर्ष लगा, दो पुरश्चरण जिस दिन पूर्ण हुआ

उसी दिन स्वप्न में इष्टदेव बोले, तुम बदरीनारायण में जाकर विष्णु महामन्त्र का पुरश्चरण करो। इष्टदेव की आज्ञा पाकर वैष्णवी देवी से बदरीनारायण जाने के लियें चल पड़े। बदरीनारायण विष्णु भगवान का दर्शन कर भृगु गुफा में जाकर विष्णु भगवान जी के महामन्त्र "ऊँ नमोभगवते वासुदेवाय" इस महामन्त्र का पुरश्चरण प्रारंभ किये। यहाँ रहकर ३ वर्षों में पाँच पुरश्चरण किये। जिस दिन तीन वर्ष पूर्ण हुए, उसी रात्रि में स्वप्न हुआ। स्वप्न में काशी के काल भैरव मन्दिर में दर्शन कर रहे थे, वहीं मन्दिर में इष्टदेव बैठे हुए थे। वे बोले, तुम कहाँ हो काशी आ जाओ। प्रातः बदरीनारायण जी के दर्शन करके काशी आये। काशी में मणिकर्णिका घाट के मणिकर्णिका कुण्ड में स्नान करके कुण्ड के पूर्व बगल के चौतरा पर बैठकर संध्या करने के पश्चात् पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप कर रहे थे। रात्रि के ग्यारह बजे, एक पत्तल की थाली में खीर मालपुआ लेकर सातवर्ष की कन्या आकर बोली, आप भूखे हैं। भोजन कर लीजिए। देववाणी सुनकर चौंक उठे और भवानी जी की स्तुति करने लगे। वह कन्या तत्क्षण अन्तर्धान हो गई। भवानी जी के प्रसाद पाते ही भूख प्यास, रोग, शोक, चिन्ता दूर हो गई। उस प्रसाद को पाते ही आनन्द में डूब गये। अहर्निश आनन्द में मग्न रहने लगे। प्रातः विश्वनाथ जी का दर्शन करके गुरुवर श्री करपात्री जी के दर्शन करने केदार घाट करपात्री धाम में गये। गुरुजी का दर्शन होते ही उन्होंने कहा तुम संन्यास ले लो। मुहूर्त आज ही है। संन्यास महायज्ञ प्रारम्भ हुआ। दीक्षा के पश्चात् महराज जी ब्रह्मात्म साक्षात्कार का उपदेश करते हुए बोले, मधुकरी भिक्षा सर्वश्रेष्ठ है। संन्यास लेने के पश्चात् शिवानन्द सरस्वती नाम पड़ा। भैरवाष्टमी के दिन अस्सी घाट में स्नान कर रहे थे। बगल में काशी के कमीश्नर शिवशंकर जी काशी की यात्रा करने की बात कर रहे थे, उनको लेकर पं० श्री बैजनाथ त्रिपाठी जी के पास गये। काशी की यात्रा मण्डली बनी, प्रत्येक रविवार के दिन यात्रा प्रारम्भ हो गयी। बैजनाथ त्रिपाठी जी अस्सीघाट में बैठकर स्नान

करने वालों को गोदान कराते हैं। सबको प्रेरणा देकरके यात्रा जाने के लिए निमन्त्रण करते हैं।

(नोट: तीर्थ पुरोहित अर्थात् घाट के पण्डा होते हुए भी श्री बैजनाथ त्रिपाठी जी वेद, वेदान्त, ज्योतिष के विद्वान् हैं। उनको काशी विश्वनाथ जी की अनन्य भक्ति प्राप्त है। श्री शिवशंकर कमीशनर जी को भी शंकरजी का अनन्य भक्ति प्राप्त हो गयी है। १९८० की श्रावण कृष्ण त्रयोदशी तिथि को दो बजे श्री विश्वनाथ जी की अन्तर्गृही यात्रा करके अपने गुरुजी के कर कमलों से स्थापित व्यक्तिगत विश्वनाथ मन्दिर में दिन के दो बजे श्री विश्वनाथ जी के दर्शनकर रहे थे। उसी समय श्री विश्वनाथ जी के शिवलिंग से यह वाणी प्रस्फुटित हुई कि "शिवानन्द सरस्वती, काशी माहात्म्य, काशी दर्शन लिखो।" इसके अनंतर गुरुजी के पास जाकर उनसे सब वृतान्त कहा।

गुरुजी बोले, श्री विश्वनाथ जी प्रसन्न हो गये हैं, तुम काशी माहात्म्य लिखो। शिवानन्द सरस्वती जी बोले, गुरुजी मैं अनपढ़ हूँ। गुरुजी बोले, तुमको सब विद्या आ जायेगी। यह कहकर गुरुजी ने अपना दाहिना हाथ उनके सिर पर रखा। उसी दिन से शिवानन्दजी को सब विद्यायें आ गयीं। १९८० के श्रावण कृष्ण त्रयोदशी के दिन प्रात: ४ बजे मणिकर्णिका घाट में स्नान कर, संध्या करके विश्वनाथ जी के दर्शन करने जा रहे थे, नीलकण्ठ मुहल्ले में नीलकण्ठेश्वर के सामने पहुँचते ही मालूम हुआ, विश्वनाथ जी की तरफ से कोई "महापुरुष" आ रहे हैं। मैं वहीं पर रुक गया, बगल से जाते समय उनके शरीर से स्पर्श किया हुआ हवा लगते ही, आनन्द का अनुभव हुआ, उसी समय से सबकुछ भूल गये, भूख-प्यास लगना बन्द हो गया, १५ दिनों तक ललिता घाट के राजराजेश्वरी मठ में जाकर गुफा में रहे, सोलहवें दिन गुरुजी के पास गये, सब बात सुनायी, गुरुजी बोले, अब काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी बास करो।

"इति शुभ"

विश्वनाथ प्रसाद उपाध्याय

इस पुस्तक संकलन में अनेक विद्वानों और धर्मप्रिय भक्तों का शारीरिक व आर्थिक सहयोग मिला है उन सभी को मैं सुख-सम्पत्ति, मान-प्रतिष्ठा और शान्ति प्राप्त हो, यही आशीर्वाद देता हूँ।

ज्ञान चैतन्य ब्रह्मचारी जी ने पुस्तक लिखने में बहुत सहयोग किया है मैं इसी जीवन में उन्हें भगवान की अनन्य भक्ति और ब्रह्मात्मा-साक्षात्कार हो यही आशीर्वाद देता हूँ।

शिवानन्द सरस्वती

मङ्गलाचरण

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥
भवानीतनयाऽऽसाऽऽद्य तनयानन्ददायक।
काशीवासजनाद्यौघ हारिन् ढुण्ढे ! नमोऽस्तुते॥
जगदम्बावलम्बाय निरालम्बाय शूलिने।
लोकत्रय कुटुम्बाय नमः रामाय शम्भवे॥
इयं काशीरम्या त्रिभुवनविचित्रा सुमहती।
श्रुतिस्तुत्या दिव्या ह्यपनदि सुपूज्या सुरगणैः॥
चतुर्मोक्षस्थानं बुधजन हृदिस्था न रक्षतु।
पुनन्ती लोकानां मनइह प्रदत्तादभिमतम्॥
काशीवासिसुखायमहिमाऽऽज्ञानाय मोक्षाय च।
गुप्तस्थान प्रतिष्ठितामरगणान् द्रष्टुं समीहाततताम्॥
सौकर्य्यायसुखाय दर्शन विधौ आलोच्य ग्रन्थान् बहून्।
संगृह्णाति अमुं सुकाणि-महिमा राज्यं जनानन्दनम्॥
श्रीशङ्कराचार्यनवावतारं, विद्वद्वरेण्यं च यतीन्द्रमुख्यम्।
कलौ युगे धर्मयुगप्रवर्तकं, वन्दे सदा श्रीकरपात्रिणं गुरुम्॥
पूज्य श्रीकरपात्र शिष्य प्रवरो नाम्ना शिवानन्दकः।

लोकानां सुखदं विविच्य विशदं काशी महिम्नः परम्।।
ग्रन्थं निर्मितवान् प्रसन्न मनसा विश्वेश्वरः प्रीयताम्।।
दण्डि स्वामि सरस्वती पदधरः काशीस्थ-देवार्चकः।।
क्षेत्रेऽस्मिन् वसतां मुदाहर गुणान् भक्त्या सदा गायताम्
विद्याचाचरतां शिवार्चन विधौ निष्ठावतां सद्गृहे।।
विप्राणां श्रुति-शुद्धभिक्षणमटन् स्वामी शिवानन्दकः
श्री काशी - महिमा प्रकाशनपरस्तेभ्यः शुभं कामये।।
वाराणसी निविशते न वसुन्धरायां-
तत्रस्थितिर्मखभुजां भुवने निवासः।
तत्तीर्थमुक्तवपुषांमतएव मुक्तिः
स्वार्गात् परं पदमुदेतु मुदेतु कीदृक्।।
आलोक्य भाविविधिकर्तृलोकसृष्टि-
कष्टानि रोदिति पुरा कृपयैव रुद्रः।
नामेच्छयेतिमिषमात्रमधन्त यत्तां-
संसारतारणतरीमसृजत्पुरीं सः।।
ज्ञानाधिकासि सुकृता न्यधिकाशिकुर्याः
कार्यंकिमन्यकथनैरपि यत्र मृत्योः।
एकं जनाय सतता भय दानमन्य-
द्धन्ये ! वहत्यमृत सत्रमवारितार्थि।
निर्विश्य निर्विरति काशिनिवासि-
भोगान्नर्माय नर्मच मिथोमिथुनं यथेच्छम्।
गौरीगिरीश घटनाधिक मेक भावं-
शर्मोर्मिकञ्चुकितमञ्चति पञ्चतायाम्।

श्लोकार्धं श्लोकपादम्वा नित्यङ्काशीकथामृतम्।
पिबन्ति ये महाभागास्तेषाम्भीतिर्न भैरवी॥

जो व्यक्ति एक पन्ना भी नित्य "काशी माहात्म्य" की कथा सुनता या कहता है। ऐसे भाग्यशाली पुरुषों को यम से भय कौन कहे काशी में मरने से भैरवी यातना भी नहीं भोगनी पड़ती है।

श्रुताश्च सर्वधर्मास्तैर्महापुण्यैकराशिभिः।
श्रुतं यैः स्थिरचेतोभिः काशी माहात्म्यमुत्तमम्॥

(काशी खण्ड, अ० १००)

अर्थ – महापुण्यात्मा जन स्थिरचित्त से यदि काशी-माहात्म्य का श्रवण करते हैं तो उन्होंने उन समस्त धार्मिक ग्रन्थों का श्रवण कर लिया है।

महापातक्युक्तोऽपि शृणुयाद्यः कथामृतम्।
स मुक्तो मुक्तिमाप्नोति पुण्यसम्भार-दुर्लभाम्॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

अर्थ – यदि कोई महापातक से युक्त होकर भी 'काशी-माहात्म्य' की कथा सुने वह पुण्याधिक्य से, न प्राप्त होने वाली मुक्ति को प्राप्त करता है।

य इमां शृणुयान्नित्यं कथां पाप-प्रणाशिनीम्।
त्यक्तपापो विशुद्धात्मा रुद्रसामीप्यमाप्नुयात्॥

(पद्मपुराण, अ० ३५, श्लोक-४९)

अर्थ – जो इस पापनाशिनी काशी की कथा को नित्य सुनते हैं उनकी पापों से मुक्ति हो जाती है। आत्मा निर्मल हो जाती है, और वह रुद्र का सामीप्य प्राप्त करता है।

प्रवर्त्तते काशिकायां, भक्त्यात्मा जनार्दनः।
सर्वे शृण्वन्तु सद्वृन्दे स्थित्वा काशिकथाम्मुहुः॥
कथन्न साक्षाद्भवति भगवान् मधुसूदनः॥

(काशी रहस्य, अ० १९)

अर्थ – काशी में निवास करने वाले सभी सन्तजनों सुनो– काशी के माहात्म्य की कथा को सुनने के लिये सन्तों के बीच में स्वयं भगवान् मधुसूदन जी भी उपस्थित रहते हैं। काशी की महिमा को श्रवण करने से क्यों भगवान् कृष्णजी का साक्षात्कार नहीं होगा ? अर्थात् अवश्य होगा।

शृण्वन्तु मुनयः सर्वे कथां सर्वांगमाश्रिताम्।
ममाऽपि परमानन्ददायिनीं दुःखनाशिनीम्॥

(काशी रहस्य, अ० २४)

अर्थ – काशी की कथा नाना प्रकार के सभी अंगों से युक्त है तथा उत्कृष्ट आनन्द देने के साथ ही सांसारिक दुःखों को नष्ट करने वाली काशी-माहात्म्य की कथा है।

काशी-कथनश्रवणेन सम्यग्मनःशुद्धिर्जायते वै नराणाम्॥

(काशी खण्ड, अ० ६, श्लोक- २६)

अर्थ – काशी माहात्म्य की कथा सुनने से मनुष्यों का मन भलीभाँति शुद्ध हो जाता है। काशी में रहने की विधि का ज्ञान हो जाता है, तथा विधिवत् काशी में रहते हुये वह भय से मुक्त हो जाता है।

तीर्थों में स्नान का फल

सर्वतीर्थावगाहाच्च यत्पुण्यं स्यान्नृणामिह ।
तत्पण्युं कोटिगुणितं मणिकर्ण्येकमज्जनात् ॥

(काशी रहस्य, अ०-२, श्लोक-६५)

अर्थ – सभी तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है । उसके कोटि गुणा पुण्य केवल मणिकर्णिका घाट में स्नान करने से प्राप्त होता है ।

सर्वतीर्थावगाहाच्च यावज्जन्म यदर्ज्यते ।
तदानन्दवने प्राप्यं मणिकर्ण्येकमज्जनात् ॥

(काशी खण्ड, अ० ९६, श्लोक २९)

अर्थ – सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य पूरे जीवन में प्राप्त होता है वह काशी में मणिकर्णिका घाट पर स्नान करने से ही प्राप्त हो जाता है।

काशी का फल

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ।
काश्यांवासः सतां संगः गंगाम्भः शिवपूजनम् ।।

(काशी खण्डे)

अर्थ – इस असार संसार में चार सार वस्तु हैं- (१) काशी में निवास, (२) संतों का संग, (३) गंगाजी में स्नान और (४) शिवजी की पूजा।

यत्सुखं काशीवासेऽत्र न तद्ब्रह्माण्डमण्डपे ।
अस्ति न चेत्कथं सर्वे काशीवासाभिलाषुकाः ।।

(काशीखण्ड, अ०- ३, श्लोक- ८२)

अर्थ – जो सुख काशीवास से प्राप्त होता है, वह सुख इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दुर्लभ है। यदि ऐसा सुख अन्यन्त्र सुलभ होता तो सभी लोग काशीवास के अभिलाषी क्यों होते ?

वस्तुं कोटिगुणं पुण्यं काश्यां वासयितुर्ध्रुवम् ।
आत्मानं तारयेत् स तु स्वौ द्वौ वासयिता यतः ।।

(काशी दर्शन)

अर्थ – काशीवास करने वाले से काशीवास कराने वाले को कोटिगुणा अधिक पुण्य होता है, क्योंकि काशीवास करने वाला तो अपने को ही तारता है, पर काशीवास कराने वाला अपने को तथा जिसे काशी वास कराता है उसे भी, दोनों ही का उद्धार कर देता है।

यथा शुक्तौ पयोवाहात् पतिता जलबिन्दवः ।
मुक्ताः स्युस्तथाकाश्यां स्थिताः सर्वेऽपि जन्तवः ।।

(लिङ्गपुराणे)

अर्थ – भगवान् विश्वनाथ जी भवानी जी से कहते हैं कि हे देवि! काशीवासी सदा मेरे गर्भ में निवास करते हैं। अतः अन्त में मैं उन्हें मुक्त कर देता हूँ। यही हमारी प्रतिज्ञा है।

काशीसमाश्रिता यैश्च यैश्च विश्वेश्वरोऽर्चितः।
तारकं ज्ञानमासाद्य ते मुक्ताः कर्मपाशतः॥

(काशीखण्ड, अ० ४२, श्लोक- ५६)

अर्थ – जो व्यक्ति काशीवास करते हैं, और विश्वनाथ भूत-भावन का दर्शन-अर्चन-पूजनादि करते हैं, वे तारक ज्ञान प्राप्त करके कर्मबन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

'काशी' नाम जप की महिमा

काशी काशीति काशीति बहुधा संस्मरन् द्विजः।
न पश्यति हि नरकान् वर्तमानान् स्वयंकृतान्॥

(काशी खण्ड)

अर्थ – वह द्विज काशी-काशी इस प्रकार बार बार स्मरण करता हुआ स्वयं कृत वर्तमान नरकों को नहीं देखता है। अस्तु, काशी का स्मरण करने वाले नर-नारियों के स्थूल पाप नष्ट होते हैं।

काशीनामसुधापानं ये कुर्वन्ति निरन्तरम्।
तेषां वर्त्म भवत्येव सुधाभवसुधामयम्॥५२॥

(काशी खण्ड, अ० ५५)

अर्थ – जो लोग निरन्तर अमृतमयी काशी का जप तथा सुधापान करते हैं उनका मार्ग अमृतमय हो जाता है और काशी नाम जपने से मुक्ति हो जाती है।

यो मन्त्रं जपति प्रातः काशीवर्णद्वयात्मकम्।
स तु लोकद्वयं जित्वा लोकातीतं व्रजेत् पदम्॥६२॥

(काशी खण्ड, अ० ८५)

अर्थ – 'काशी' इस दो वर्ण वाले मन्त्र का जो प्रातः जाप करता है वह दोनों लोकों को जीतकर अलौकिक पद को प्राप्त करता है।

भवन्तोऽपि महाप्राज्ञाः काशीमाहात्म्यवेदिनः।
श्रयंतु काशीन्नियतं सर्वपापापनुत्तये।।२१३।।

(काशी रहस्य, अ० १२)

अर्थ – आप सब काशी का माहात्म्य जानते हैं, अतः निश्चित रूप से काशीवास करें क्योंकि काशी में सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं।

'काशी' के दर्शन करने का फल

काशी-दर्शन मात्रेण निष्पापो जायते जनः।
एकेन रेणुना काश्याः शुध्यन्ति मलिना जनाः।।

अर्थ – काशी के दर्शन करने मात्र से मनुष्य निष्पाप हो जाता है, क्योंकि काशी के धूल के एक कण से भी मलिन जन शुद्ध हो जाते हैं।

तावत् पापानिजृम्भन्ते नानाजन्मार्जितान्यपि।
यावत् काशी न हृत्संस्था पुनर्भवविघातिनी।।

(काशी खण्ड, अ०- ५०, श्लोक-१२७)

अर्थ – अनेक जन्मों के अर्जित पाप तब तक गरजते हैं जब तक भव विनाशिनी काशी का दर्शन नहीं होता, काशी के दर्शन होते ही सभी पाप शान्त हो जाते हैं।

जन्मान्तरसहस्रेषु यत्पापं पूर्व-सञ्चितम्।
अविमुक्तं प्रविष्टस्य तत्सर्वं व्रजति क्षयम्।।

(पद्मपुराण स्वर्ग खण्ड, अ० ३३, श्लोक- १७)

अर्थ – हजारों जन्मों के सञ्चित पाप काशी अविमुक्त क्षेत्र में प्रवेश करते ही नष्ट हो जाते हैं।

मुमुक्षवः सुखेन स्युः काशीवासे शिवाज्ञया।

न काशी सदृशङ्किञ्चित्साधनंविद्यतेऽनघाः ।।८६।।

(काशी रहस्य, अ० २०)

अर्थ – सूत जी ब्रह्म ऋषि से कहते हैं, शंकर जी की कृपा से मोक्ष चाहने वाले मुमुक्षु मोक्ष प्राप्ति के लिए सानन्द काशीवास करें, क्योंकि काशी के सदृश दूसरा मोक्ष का साधन नहीं है। अतः मोक्ष प्राप्ति के लिये भक्ति से युक्त होकर काशीवास करना चाहिए।

काशी समाश्रितायैश्च विश्वेश्वरोऽर्चितः।
तारकं ज्ञानमासाद्य ते मुक्ताः कर्मपाशतः।।

अर्थ – जो व्यक्ति काशीवास करते हैं और भूत भावन विश्वनाथ का दर्शन-अर्चन पूजनादि करते हैं वे तारक ज्ञान प्राप्त करके कर्म बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

दृशौ कृतार्थौ कृतकाशिदर्शनं तनुः कृतार्था शिवकाशिवासिनी।
मनः कृतार्थं धृतकाशिसंश्रयं मुखं कृतार्थं कृतकाशिसम्मुखम्।।

अर्थ – जिसने काशी का दर्शन प्राप्त कर लिया उसकी आँखें कृतार्थ हो गयीं, काशी निवास से शरीर पवित्र हो गयी, काशी का आश्रय लेने से मन कृतार्थ हो गया और काशी का साक्षात्कार करने से मुख कृतार्थ हो गया।

गंगायां स्नाति यो मर्त्यो यावज्जीवं दिने दिने।
जीवन्मुक्तः सविज्ञेयो देहान्ते मुक्त एव सः।।

अर्थ – गंगा जी में प्रतिदिन स्नान करने वाले व्यक्ति को जीवनमुक्त जानना चाहिए। मरने पर तो वह मुक्त है ही।

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात्तथा गंगेति कीर्तनात्।
स्मरणादेव गंगायाः सद्यः पापात् प्रमुच्यते।।

अर्थ – गंगा जी के दर्शन एवं स्पर्श और गंगा के गुणों का कीर्तन करने से गंगा का जलपान करने वाले नर, नारी तथा गंगा जी के स्मरण

करने मात्र से मनुष्य पाप से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

यतः पापानि भक्तानां भक्षयिष्यति तत्क्षणात्।
पापं भक्षण इत्येन तव नाम भविष्यति ।।
वामे मुक्ति पुरी काशी सर्वाभ्योऽपि गरीयसी।

अर्थ – प्रणव ऋषि अथर्व ऋषि से बोले, हे मुनि जी पापियों के सभी पाप 'काशी' एक क्षण में खा लेती है इसलिए काशी का नाम पाप भक्षिणी हो गयी, सभी तीर्थों से उत्तम तीर्थ काशी है। और सभी मोक्ष दायनी पुरियों से कांशी उत्तम पुरी है।

स्नानं दानं तपः श्राद्धं पिण्डनिर्वपणंत्विह।
एकैकशः कृतं विप्राः पुनात्यासप्तमं कुलम् ।।

अर्थ – हे विप्रो। इस काशी पुरी में स्नान, दान, तप, श्राद्ध तथा पिण्डदान इनमें से एक भी किये जाने पर सात कुलों तक पवित्रता हो जातीं है। और सातकुल पीछे के जो पितर हो चुके हैं वह, और आनेवाली पीढ़ी सब पवित्र हो जाते हैं।

दानान्यनि स्व स्व वित्तानुसारेण कृतानि वै।
दूर्वापत्रं पुण्य जातं शिवार्पितममोघकृत ।।

अर्थ – अपने-अपने शक्ति के अनुसार प्रतिदिन दान करें। चूँकि दूर्वा, पत्र, फूल, ऋतुफल, मिष्टान्न, वस्त्र एवं द्रव्य, दूध, अन्न आदि वस्तु शिवार्पण करने से अमोघ फल होकर-प्राप्त होता है।

योगक्षेमं सदा कुर्याद्भवानी काशिवासिनाम्।
तस्माद्भवानी संसेव्या सततं काशिवासिभिः ।।

अर्थ – विष्णु भगवान अग्नि बिन्दु ऋषि से कहने लगे कि भवानी काशी वासियों का सदा योगक्षेम करती रहती हैं और भोजन आवास आदि की व्यवस्था करती हैं।

वाराणस्यां भैरवो देवः संसार भयनाशनम्।
अनेक जन्म कृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ।।

अर्थ – वाराणसी के भैरव देव संसार के भय से प्राणिमात्र को अभय दिलाते हैं एवं अनेक जन्म के किए हुए पाप दर्शन मात्र से ही विनाश कर देते हैं।

सर्वेभ्य: काशिसंस्थेभ्यो मोक्ष-भिक्षा प्रयच्छति।
त्रिपुरारि: पुरद्वारि कदास्यां मोक्ष भिक्षुक:।।

अर्थ – काशी में निवास करने वालों का मोक्ष भिक्षा देने के लिए भगवान (विश्वनाथ जी) शंकर सदा प्रतीक्षा करते हैं कि हमारे द्वार पर यह मोक्ष-भिक्षुक कब आयेगा, उस मोक्ष की भिक्षा माँगने वाले अतिथि का मैं कब दर्शन करूँगा, हे अन्नपूर्णे ! जब तक भिक्षा माँगने वाला अतिथि नहीं आयेगा तब तक मैं भोजन नहीं करूँगा।

येन काश्यां समभ्यर्चि येन काश्यां प्रतिष्ठितम्।
येन काश्यांस्तुतं लिंग समेरूपाद दर्पण:।।
तत्वं स्वच्छोऽसि मुकुरो ममनेत्रयस्यहि।
काश्यां लिंगार्चनात्वाष्टवरं वरय सुव्रत।।
काश्यां यो राजधान्यां मे हित्वा मामन्यमर्चयेत्।।

अर्थ – विश्वनाथ जी कहते हैं कि जिसने काशी में शिवलिंग की पूजा की है, जिसने काशी में शिव लिंग की प्रतिष्ठा की है। जिसने काशी में उनकी स्तुति की है वह मेरे तीनों नेत्रों के लिए स्वच्छ दर्पण है। काशी में लिंगार्चन से मनोरथ की प्राप्ति ध्रुव होता है। मेरी राजधानी में मेरी उपासना छोड़कर अन्य की अर्चना व्यर्थ ही है।

यथा लौहं स्पर्शमणौ पतितं कनकम्भवेत्।
तथा काश्याम्ब्रह्मरूपं प्राप्नुयाच्छिवरूपताम्।।

अर्थ – जैसे पारसमणि से स्पर्श होने पर लोहा भी सोना बन जाता है। उसी प्रकार काशी में शिवजी के सान्निध्य से जीव मात्र ब्रह्मरूप हो जाता है।

मोक्षार्थिनाम्मोक्षदानामधेया धर्मार्थिनां धर्मदाचिन्तनाद्या।

अर्थार्थिनामर्थ दयादपद्मा कामार्थिनां कामदाकल्पवल्ली॥

अर्थ – विष्णु भगवान् कहते हैं कि काशी के तीन नाम हैं। मोक्ष देने के कारण मोक्षदा, धर्म देने के कारण धर्मदा, अर्थ चाहने वालों के लिए अर्थदा और कामार्थियों के लिए कामदकल्पवल्ली है।

अमोघ भोगदाचात्र स्वल्प धर्म कृतामपि।
केवलं धर्मह्रस्वत्वात् कालो काशी गतिर्नृणाम्॥

अर्थ – काशी में देह छोड़ने वाले समस्त जन्तुओं को मुक्ति देने वाली और अमोघ भोग देने वाली काशी में थोड़ा भी धर्म करने वाले केवल धर्मबुद्धि रखने वाले के लिए काशी कलियुग में एक मात्र शरण है।

कदा काश्यां गमिष्यामि कदा द्रक्ष्यामि शंकरम्।
इति ब्रुवाणः सततं काशीवास फलं लभेत्॥

अर्थ – मैं किस समय काशी आऊँगा, कब विश्वनाथ जी का दर्शन करूँगा। इस प्रकार बोलने वाला काशीवास का फल प्राप्त करता है। क्योंकि काशी का नाम लेने वाले स्त्री पुरुषों के पाप घबड़ाते हैं।

दत्तं जप्तं हुतं चेष्टं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
ध्यानमध्ययनं ज्ञानं सर्वं तत्राक्षयं भवेत्॥

अर्थ – काशी में दिया हुआ दान, जप, हवन, यज्ञ, तप और जो भी शुभ कार्य किया गया हो, ध्यान, अध्ययन, ज्ञान सबकुछ अक्षय होते हैं।

अद्यप्रातः परश्वोवामरणं प्राप्यमेव च।
यावत् कालविलम्बोऽस्ति तावत्काशीं समाश्रयेत्॥

अर्थ – शिवजी विष्णु भगवान् से बोले आज या परसों मरना निश्चय ही है, जब तक काल पाश का विलम्ब है। तब तक काशी का आश्रय ग्रहण कर लेना चाहिए। चूँकि काशी के अतिरिक्त कहीं भी मुक्ति नहीं मिलती है। अतः प्रयत्न पूर्वक काशीवास करें।

जरया परिभूता ये ये व्याधिविकलीकृताः।
येषां क्वाऽपि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः॥

अर्थ – शंकर जी कहते हैं कि जो व्यक्ति वृद्धावस्था से पीड़ित है तथा रोग व्याधियों से पीड़ित है, जिसकी कहीं गति नहीं है, उनकी काशी वाराणसी में गति है।

हरिभक्तः शिवः साक्षाद्हरिः शिवपरायणः।
विचारतो न भेदोऽस्ति भक्त्या भेदः प्रकल्पितः॥

अर्थ – भगवान् शिवशंकर जी नारायण के भक्त हैं, साक्षात् नारायण सदा शिव के भक्त हैं, विचारतः कोई भेद नहीं है। भक्ति से कल्पित भेद है। अतः शिव, विष्णु में कुछ भी भेद नहीं है।

वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणानामिदं तथा।
क्षेत्राणां चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा॥

अर्थ – भगवान् विष्णु के भक्तों में भगवान शंकर जी अग्रगण्य हैं और जितने भी मुक्तिप्रद क्षेत्र हैं उन सब में सबसे उत्तम काशी क्षेत्र है।

योजनानां शतस्थोपि विमुक्तं स्मरेद्यदि।
बहुपातक पूर्णापि पदं गच्छत्यनामयम्॥

श्रीमद्भागवत १२ स्कन्द

अर्थ – यदि एक सौ योजन पर स्थित रहकर भी श्री काशी का स्मरण करें तो बहुत पाप कर्म से पूर्ण होने पर भी वह प्राणी पापों से रहित हो जाता है।

जले स्थलेन्तरिक्षेवायत् कुत्रापि वा मृताः।
तारकं ज्ञानमासाद्य कैवल्य पदमार्गिनः॥

अर्थ – काशी में पृथ्वी, जल, आकाश या किसी भी जगह मृत्यु हो तो वह प्राणी भगवान् शिवजी के तारक मन्त्रोपदेश द्वारा मोक्ष पद का भागी होता है।

तत्रोत्क्रमणकालेतु साक्षाद् विश्वेश्वरः स्वयम्।
व्याचष्टे तारकं ब्रह्म येनासौतन्मयो भवेत्।।

अर्थ – प्राणियों के प्राण निकलते समय साक्षात् श्री विश्वनाथ जी स्वयं तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं जिससे वह प्राणी भी ब्रह्ममय हो जाता है।

कीटाः पतंगा मशकाश्च वृक्षाः,
जलेस्थले ये विचरन्ति जीवाः।
मण्डूकमत्स्याः कृमयोपि काश्यां,
त्यक्त्वा शरीरं शिव माप्नुवन्ति।।

अर्थ – पृथ्वी के सभी तीर्थ मुक्ति क्षेत्र केवल काशी को प्राप्त कराते हैं, परन्तु काशी को पाकर प्राणी मुक्त हो जाते हैं। अर्थात् अन्य करोड़ों तीर्थों से बड़ी यह काशीपुरी है, कीट, पतंग, मच्छर, वृक्ष, जलचर, थलचर आदि सभी प्राणी यहाँ अपना शरीर छोड़कर कल्याण पद को प्राप्त होते हैं।

स्थिराकाश्यामिहैवैका प्रतिज्ञा हि मयाकृता।
अत्रैव मृतमात्राणां तिरश्चामपि देहिनाम्।।
भक्तानामप्यभक्तानां पुण्यापापात्मनामपि।
मुक्तिं दास्यामि सर्वेषां भवतानामेव सा वहिः।।

अर्थ – शिवजी कहते हैं कि मैंने यह दृढ़ प्रतिज्ञा की है कि इस काशीपुरी में मरने वाले सभी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि को चाहे वे भक्त हों या नहीं, पुंण्यात्मा हों या पापी, सभी को अवश्य मुक्ति दूँगा। काशी से बाहर मरने वाले उन्हीं मनुष्यों को मुक्ति दूँगा जो मेरे अनन्य भक्त हैं।

सूच्यग्रमात्रमपि नास्ति ममास्य देऽस्मिन्,
स्थानं सुरेश्वरि मृतस्य न यत्र मोक्षः।
भूमौ जले वियति वाशुचि मेध्य भूमौ,

सर्पाग्निदस्युपविभिन्निहतस्य जन्तोः ॥

अर्थ – हे सुरेश्वरि मेरी इस काशीपुरी में ऐसी कोई सुई भर भी जगह नहीं हैं, जिसमें मरने पर जीव को मुक्ति न मिले। चाहे भूमि पर प्राण त्याग करें या जल में, चाहे आकाश में मरे या अपवित्र स्थान में मरे, उस जीव को मुक्ति अवश्य मिल जाती है। जो लोग सर्प के काटने से, अग्नि में जल जाने से, वज्र के गिरने से अथवा चोरों के द्वारा असमय में मारे जाने से उनकी अकाल मृत्यु कही जाती है, और उनको सद्गति की प्राप्ति नहीं होती है, परन्तु काशी में किसी भी प्रकार के मरने वाले को मुक्ति अवश्य मिलती है।

काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा वर्षभर चलती है उसमें भी कार्तिक, मार्गशीर्ष, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख में विशेष यात्रा होती है। मलमास-अधिक मास में प्रतिदिन लगभग पचास हजार यात्री विश्वनाथ जी के दर्शन करके मणिकर्णिका घाट से काशी की पंचक्रोशी यात्रा करने जाते हैं। इस यात्रा में भारत के कोने-कोने से और नेपाल, भूटान, पूर्वबंगाल एवं लंका, मारीशस तथा विश्व राष्ट्र से यात्री यात्रा करने के लिये आते हैं। लगभग पन्द्रह लाख यात्री यात्रा करते हैं।

काशी की पंचक्रोशी आदि यात्रा करने वाले यात्रियों को निःशुल्क वितरण करने के लिये दसहजारं काशी की पञ्चक्रोशी आदि प्रचलित सम्पूर्ण यात्राओं को छपाया है, यात्रियों के सम्पूर्ण पापों को नष्ट करके मुक्ति दिलाने के लिये यह पुस्तक छपवाया गया।

पञ्चक्रोशी की सीमा

पूरब दिशा में गंगाजी तक, पश्चिम में (भीमचण्डी) रामेश्वर तक, दक्षिण में कर्दमेश्वर (कंदवा बाजार) तक और उत्तर में शिवपुर कपिलधारा तक, इस प्रकार पञ्चकोशी की सीमा है।

मोक्ष भूमि की सीमा

पूरब दिशा में आधा गंगाजी तक, पश्चिम में देहली विनायक तक,

दक्षिण में शुष्क नदी अस्सी तक और उत्तर में वरुणा नदी तक, इस प्रकार काशी की मोक्ष भूमि की सीमा है।

काशी की यात्रा करने वाले यात्रियों से कालभैरव, ढुण्ढिराज, और अन्नपूर्णा, विश्वनाथ भगवान् एवं विन्दुमाधव और विष्णु आदि देव प्रसन्न होकर यात्रियों के मनोरथ पूर्ण करते हैं। उन्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। काशी के चारों तरफ पचीस कोस का ज्योर्तिलिंग है। उसी पचीस कोस के ज्योर्तिलिंग के बाहर से पंचकोशी सड़क बनी है, उसी सड़क से यात्रा होती है। जिन विद्वानों को "काश्याम् मरणान्मुक्तिः" के विषय में सन्देह हो उनको काशी मोक्ष निर्णय देखना चाहिए।

काशीवास का फल

काशीस्थैः पतितैस्तुल्या न वयं स्वर्गिणः क्वचित्।
काश्यां पाताद्भयं नास्ति स्वर्गे पाताद्भयं महत्॥

[काशीखण्ड ३ अ०]

अर्थ - काशी में वास करने वाले पतित से पतित मनुष्यों की तुलना हम स्वर्गवासी नहीं कर सकते हैं। क्योंकि काशी निवासी प्राणियों को किसी को किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता है। स्वर्ग में निवास करने वाले हम देवताओं को 'क्षीणे पुण्ये मर्त्येलोके विशन्ति' इस सूक्ति के अनुसार पुनः मर्त्यलोक में पतन का भय रहता है।

परार्धद्वयनाशेऽपि काशीस्थो यो न नश्यति।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन काश्यां श्रेयः समाचरेत्॥

(काशीखण्ड ३ अ०)

अर्थ - परार्द्धद्वय के नाश होने पर भी काशी में वास करने वाले को भय नहीं रहता है। इसलिए आत्मोन्नति के इच्छुक व्यक्ति को चाहिए कि वह असीम प्रयास पूर्वक काशी निवास करके निःश्रेयस की प्राप्ति करें।

एक एव हि विश्वेशो मुक्तिदो नान्य एव हि।

स एव काशीं सम्प्राप्य मुक्तिं गच्छति नान्यतः ॥

अर्थ - भगवान् विश्वेश (विश्वनाथ) जी ही मुक्ति दाता हैं। दूसरा कोई नहीं है। वही भगवान् विश्वनाथ काशी निवासियों को मुक्ति देते हैं।

अपि पातकिनो ये च कालेन निधनं गताः।
तेऽपि स्वर्गादिहागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः ॥

अर्थ - यदि पापी भी कालवशात् काशी में प्राण-त्याग कर दे तो वह पापी काशी में मुक्त हो जाता है। इसलिये यहाँ देवता स्वर्ग से आकर मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

मृतानां वै पुनर्जन्म न भूयो भवसागरः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वाराणस्यां वसेन्नरः ॥

(स्क० पु० काशी खण्ड अ० ३२)

अर्थ - इस काशी (अविमुक्त) पुरी में मरने वालों का पुनर्जन्म नहीं होता है। इसलिये अनेक प्रयत्नों द्वारा काशी पुरी में निवास करना चाहिये।

दुर्लभं जन्म मानुष्यं दुर्लभा काशिकापुरी।
उभयोः सङ्गमासाद्य मुक्ता एव न संशयः ॥

अर्थ - हे देवि ! मनुष्य जन्म दुर्लभ है। काशी पुरी में निवास भी दुर्लभ है। यदि दोनों की प्राप्ति हो जाय तो निश्चित ही प्राणी मुक्त हो जाता है।

यत्सुखं काशिवासेऽत्र न तत्ब्रह्माण्डमण्डपे।
अस्ति चेत्कथं सर्वे काशीवासाभिलाषुकाः ॥

(काशी खण्ड)

अर्थ - जो सुख काशीवास से प्राप्त होता है, वह सुख इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दुर्लभ है। ऐसा सुख अन्यत्र सुलभ होता तो सभी लोग काशीवासाभिलाषी क्यों होते ?

वाराणसीह करुणामयदिव्यमूर्ति-

रुत्सृज्य यत्र तु तनुं तनुभृत्सुखेन।
विश्वेशवृङ महसि यत्सहसा प्रविश्य-
रूपेण तां वितनुतां पदवीं दधाति॥

(काशी खण्ड अ ३० श्लोक ७१)

अर्थ - इस संसार में वाराणसी (काशी) साक्षात् करुणामयी अलौकिक दिव्य मूर्त्ति है, जहाँ प्राणी मात्र सुखपूर्वक देहत्याग करते हैं। वह प्राणी उसी समय ही भूत-भावन विश्वेश्वर की दिव्य तेजोमय पुंज में प्रवेश कर तदाकाराकारित होकर उस परम शिव पद को अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होता है।

तीर्थान्तराणि कलुषाणि हरन्ति सद्यः।
श्रेयोददत्यपि बहु त्रिदिवं नयन्ति।
पानावगाहनविधान तनु प्रहाणै-
वाराणसी तु कुरुते बत मूलनाशम्॥

(काशीखण्ड श्लोक ८३)

अर्थ - अन्य तीर्थों में स्नानादि करने से प्राणियों के पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं और पुण्य लाभ होने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। पुण्य क्षीण होने पर पुन: मर्त्यलोक आने का भय रहता है। परन्तु काशी (शंकर जी की) नगरी में भागीरथी गङ्गाजल का पान, स्नान शिव पूजा तथा काशी में जन्म लेने तथा शरीर-त्याग से तो इस भवसागर का मूल ही नष्ट हो जाता है। अत: वह सर्वथा शिव-स्वरूप परम मोक्ष पद को प्राप्त हो जाता है।

मंदिर जलाशय जीर्णोद्धार

मन्दिर एवं बावड़ी(तालाब), कूप (कुँआ), तड़ाग आदि के जीर्णोद्धार करने वाले भक्तों के रोग और पाप नष्ट हो जाते हैं।

शिव उवाच

वापी कूपतडागादिजीर्णोद्धारं प्रकल्पयेत्॥

क्षेमकृतानां पापानां प्रायश्चित्तं गतं मम ।।७२।।

(काशी रहस्य)

भावार्थ - जो मनुष्य जहाँ कहीं भी और काशी में मन्दिर, तालाब, कूँआ और तड़ाग आदि का जीर्णोद्धार करवाता है, उसके काशी क्षेत्र में किये गये पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है।

अतः श्रुत्वा तडागादि जीर्णोद्धार कल्पये।
क्षेत्रे कृतनाम्पापानां प्रायश्चित्तं मतं मया।।

अर्थ - काशी क्षेत्र में अपने किये हुए समस्त पापों का प्रायश्चित्त करने की इच्छा से काशी नगरी में तडागादि अर्थात् तालाब, मन्दिर, धर्मशाला, सत्संग भवन इत्यादि का जीर्णोद्धार करना चाहिए, ऐसा मेरा मत है, अर्थात् घोरतर पापकर्मों वाला मनुष्य भी काशी में मन्दिरों, तालाबों आदि का जीर्णोद्धार रूप सत्कर्म के पुण्यों से पाप से मुक्त हो जाता है।

अतः मन्दिरों तीर्थों के जीर्णोद्धार का बहुत माहात्म्य है। विश्व में रहने वाले हिन्दू सनातन वैदिकधर्म को मानने वाले सभीं मनुष्य (शिव) शंकर जी की पूजा करते हैं। जो मनुष्य काशी में रहकर शंकर जी का पूजन नहीं करता और शंकर जी को नहीं मानता उस व्यक्ति को पग-पग में विघ्न, कष्ट और संकट आता है। शंकरजी ही अन्त समय में मुक्ति देनेवाले देवता हैं, क्योंकि काशी में भैरव प्रधान मन्त्री हैं, भैरव के गण उन नास्तिकों के मार्ग में विघ्न उत्पन्न करते हैं।

काशी में कहीं भी (जल में, थल में और आकाश में) प्राण त्यागने वाले प्राणी के दक्षिण कर्ण (कान) में परम दयालु श्री विश्वनाथ भगवान तारक मन्त्र का उपदेश देते हैं।

प्रलयकाल में काशी का स्वरूप

छत्राकारन्तु किं ज्योतिर्जलादूर्ध्व प्रकाशते।
निमग्नायां धरण्यान्तु न निमज्जति तत्कथम् ।।
सदाशिवा महादेवो लिङ्गरूपधरः प्रभुः।

मयास्मृतो लोकगुप्तयै प्रादेश परिमाणत: ।।
लिङ्गरूपधर: शम्भुर्हृदयाद् बहिरागत: ।
वृद्धिमासाद्य महतीं पञ्चक्रोशात्मकोऽभवत् ।।

(काशीरहस्य)

अर्थ - अमर ऋषि गण प्रलय के समय में श्री सनातन महाविष्णु से पूछते हैं- हे भगवान ! छत्र के आकार की ज्योति जल के ऊपर क्या प्रकाशित हो रही है? जो प्रलय काल में पृथ्वी के डूबने से भी नहीं डूबती। विष्णु जी बोले- हे ऋषियों ! लिङ्गरूपधारी सदाशिव महादेव का हमने लोकों के कल्याण के लिए (आदि में) स्मरण किया था तब वह लिङ्गरूप स्वयं प्रादेश (एक वित्ता) प्रमाण होकर हमारे हृदय से वहिर्गत हुए। पुन: अतिशय वृद्धि को पाकर पञ्चक्रोशात्मक काशी हो गये वह यही काशी है।

अविमुक्तं महत्क्षेत्रं पंचक्रोशपरिस्थितम् ।
ज्योतिर्लिङ्गतदेकं हि ज्ञेयं विश्वेश्वराभिधम् ।।१३।।

(का० खं० अ० २६)

अर्थ - पञ्चक्रोश परिमाण अविमुक्त काशी नामक जो महाक्षेत्र है, उसे एक ही विश्वेश्वर नामक ज्योतिर्लिङ्ग जानना चाहिए। काशी पृथ्वी से अलग चेतन रूप है, अत: काशी प्रलय काल में भी नाश को प्राप्त नहीं होती। अत: प्रलय काल में काशी जल में नहीं डूबती।

कृते त्रिशूलवद्ज्ञेयं त्रेतायां चक्रवत्तथा ।
द्वापरे तु रथाकारं शङ्खाकारं कलौयुगे ।।
मुखं शङ्खस्य गङ्गायां पृष्ठं देहलि सन्निधौ ।
वामपार्श्वस्थितं तोयं रामाख्यंवारणाभिधम् ।।

(ब्रह्म० पु०)

अर्थ - काशी की गङ्गाजी 'काशी क्षेत्र सत्य युग में त्रिशूल के समान आकारवाली थी' त्रेता युग में चक्र के समान वृत्ताकार रहती हैं और द्वापर

युग में रथ के आकार की होती हैं तथा कलियुग में शङ्ख के रूप में रहती हैं।

काशी की पंचक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा

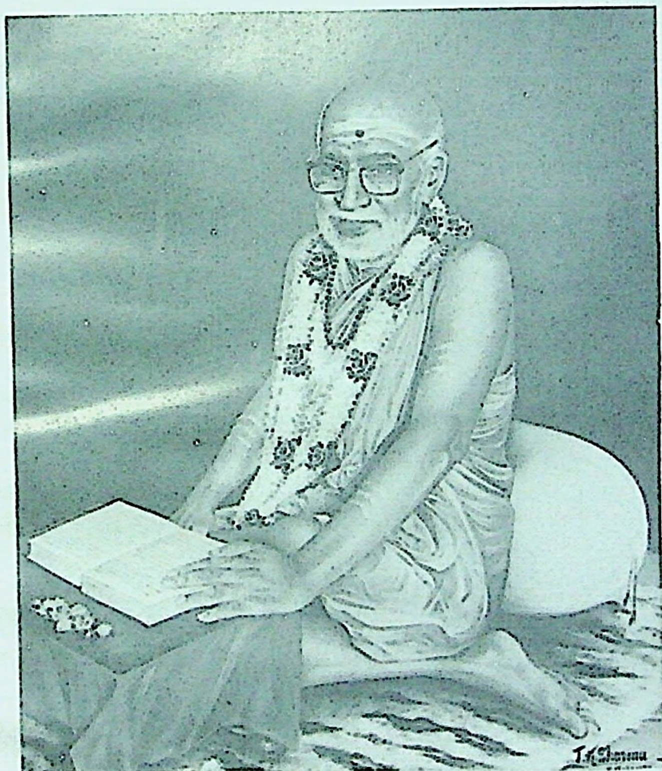
देव ! देव ! महादेव ! वेदविद्या विशारद ! ।
यथा प्रदक्षिणा कार्या मनुजैर्विधिपूर्वकम् ॥१॥
स्थानम्वासस्य वद नो भक्ष्यं चाऽभक्ष्यमेव च ।
पूजां सीम्निस्थितानाञ्च देवानां दानमेव च ॥२॥
यथा सम्पूर्णतामेति यात्रा क्षेत्रस्य सत्तम ॥३॥
शृणु देवि ! महाभागे ! सर्वलोकोपकारकम् ।
तद्ब्रवीमि महेशानि ! यथावद्विधिपूर्वकम् ॥४॥
पञ्चक्रोशस्य यात्रायां विधिः सम्यगुदीर्यते ।
श्रुत्वा मनुष्यो येनाऽऽशु निष्पापः पुण्यवान् भवेत् ॥५॥
आश्विनादिषु मासेषु त्रिपु पार्वति ! सर्वदा ।
प्रदक्षिणा प्रकर्तव्या क्षेत्रस्याऽपापकाङ्क्षिभिः ॥६॥
माघादिचतुरो मासाः प्रोक्ता यात्राविधौ नृणाम् ।
पूर्वस्मिन्दिवसे ढुण्ढिम्पूजयित्वा हविष्यभुक् ॥७॥
प्रातरुत्तरवाहिन्यां स्नात्वा विश्वेशमर्चयेत् ।
पुनर्यात्रार्थमपि च शिवयोः पूजनम्भवेत् ॥८॥
मुक्तिमण्डपिकायाञ्च सम्विश्यवरवर्णिनि ! ।
प्रतिज्ञाम्महतीं कृत्वा पूजनन्तत्र तत्र ह ॥९॥
काश्याम्प्रजातवाक्काय मनोजनितमुक्तये ।
ज्ञाताज्ञातविमुक्त्यर्थम्पातकेभ्यो हिताय च ॥१०॥
पंचक्रोशात्मकं लिङ्गं ज्योतिरूपं सनातनम् ।
भवानीशङ्कराभ्याञ्च लक्ष्मीश्रीशविराजितम् ॥११॥
ढुण्ढिराजादिगणपैः षट्पञ्चाशद्भिरावृतम् ।
द्वादशादित्यसहितं नृसिंहैः केशवैर्युतम् ॥१२॥

रामकृष्णत्रययुतङ्कूर्ममत्स्यादिभिस्तथा ।
अवतारैरनेकैश्च युतम्विष्णोः शिवस्य च ।।१३।।
गौर्यादिशक्तिभिर्युक्तं क्षेत्रङ्कुर्याम्प्रदक्षिणम् ।
बद्धाञ्जलिः प्रार्थयित्वा महादेवम्महेश्वरीम् ।।१४।।
पञ्चक्रोशस्य यात्राम्वै करिष्ये विधिपूर्वकम् ।
प्रीत्यर्थन्तव देवेश ! सर्वाघौघप्रशान्तये ।।१५।।
इति सङ्कल्प्य मौनेन प्रणिपत्य पुनः पुनः ।
दुण्ढिराज ! गणेशान ! महाविघ्नौघनाशन : ! ।।१६।।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थन्देह्याज्ञाङ्कृपया विभो ! ।
विश्वेशन्त्रिः परिक्रम्य दण्डवत्प्रणिपत्य च ।।१७।।
मोदम्प्रमोदंसुमुखन्दुर्मुखङ्गणनायकम् ।
प्रणम्य पूजयित्वाऽऽदौ दण्डपाणिन्ततोऽर्चयेत् ।।१८।।
कालराजञ्च पुरतो विश्वेशस्य जगद्गुरोः ।
पूजयित्वा ततो गच्छेन्मणिकर्णीम्विधानतः ।।१९।।
तत्र स्नात्वा महादेवम्मणिकर्णीशमर्चयेत् ।
विनायकं सिद्धिदञ्च पुनरागत्य पूजयेत् ।।२०।।
मणिकर्णीतटच्छन्नं गङ्गाकेशवमप्युत ।
ललिताञ्च ततः पूज्य जरासन्धेश्वरम्विभुम् ।।२१।।
सोमनाथं ततः पूज्य दालभेश्वरमेव च ।
शूलटङ्केश्वरन्देवं (मा) आदिवाराहमेव च ।।२२।।
दशाश्वमेधकं लिङ्गं वन्दन्तत्रैव पूजयेत् ।
सर्वेश्वरञ्च केदारन्ततो हनुमदीश्वरम् ।।२३।।
सङ्गमेशन्ततः पूज्य लोलार्कम्पूजयेत्ततः ।
अर्कसंज्ञङ्गणाध्यक्षमसेस्तीरम्पुनर्व्रजेत् ।।२४।।
क्षेत्रम्प्रदक्षिणी कुर्वंस्तिलमात्रन्न सन्त्यजेत् ।
दुर्गाकुण्डे ततः स्नात्वा, यजेद्दुर्गविनायकम् ।।२५।।

दुर्गांसम्पूज्य विधिवद्वसेत्तत्र सुखाप्तये ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र मधुपायसलड्डुकैः ॥२६॥
रात्रौ जागरणन्तत्र पुराणश्रवणादिभिः ।
कुर्याच्च कीर्तनम्भक्त्या परोपकरणानि च ॥२७॥
जय दुर्गे महादेवि ! जय काशिनिवासिनि ! ।
क्षेत्रविघ्नहरे ! देवि ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥२८॥
इति दुर्गाम्प्रार्थयित्वा विश्वक्सेनेश्वरन्ततः ।
पूजयित्वा कर्द्दमेशम्पञ्चव्रीहितिलैर्नमेत् ॥२९॥
आदौ कर्दमतीर्थे तु स्नानंकूपावलोकनम् ।
सोमनाथम्विरूपाक्षं नीलकण्ठन्ततोऽर्चयेत् ॥३०॥
तत्रवासम्विधायाऽग्नौ किञ्चिद्हमं द्विजार्चनम् ।
श्राद्धादिकर्म कार्याणि कृत्वा मुच्येदृणत्रयात् ॥३१॥
कर्द्दमेश ! महादेव ! काशिवासिजनप्रिय ! ।
त्वत्पूजनान्महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥३२॥
प्रातः स्नात्वा कर्दमेशम्पूजयित्वा च स (द) द्विजान् ।
नागनाथञ्च चामुण्डाम्मोक्षेशङ्करुणेश्वरम् ॥३३॥
वीरभद्रन्ततो दुर्गां विकटाख्याम्प्रपूजयेत् ।
उन्मत्तभैरवन्नीलं कालकूटन्ततोऽर्चयेत् ॥३४॥
दुर्गाञ्च विमलान्नत्वा महादेवन्ततो व्रजेत् ।
नन्दिकेशम्भृङ्गिरिटिं तत्रैव च गणप्रियम् ॥३५॥
विरूपाक्षञ्च यज्ञेशम्विमलेश्वरमेव च ।
मोक्षदं ज्ञानदञ्चैवामृतेशन्तत्र पूजयेत् ॥३६॥
गन्धर्वसागरन्तीर्त्वा भीमचण्डीन्ततो व्रजेत् ।
तत्र स्नात्वा भीमचण्डीम्पयसा स्नापयेत्सुधीः ॥३७॥
पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ब्राह्मणान्परितोपयेत् ।
तत्र वासम्प्रयत्नेन कुर्याच्चण्डविनायकम् ॥३८॥

रविरक्ताक्षगन्धर्वन्नरकार्णवतारकम् ।
शिवं सम्पूज्य यत्नेन रात्रौपूर्ववदाचरेत् ॥३९॥
प्रातरुत्थाय सुस्नातः प्रार्थयेद्भीमचण्डिकाम् ।
भीमचण्डि ! प्रचण्डानि मम विघ्नानि नाशय ॥४०॥
नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि पुनर्दर्शनमस्तु ते ।
ततो गच्छेदेकपादं गणङ्गत्त्वा सतण्डुलान् ॥४१॥
तिलांश्च विकिरेत्तत्र धनधान्यादिसम्पदे ।
ततो गच्छेन्महाभीमं भैरवम्भैरवीं शुभाम् ॥४२॥
भूतनाथञ्च सोमेशं पूजयेत्सिन्धुरोधसि ।
कालनाथङ्कपर्दीशम् कामेशञ्च गणेश्वरम् ॥४३॥
वीरभद्रञ्चारुमुखं गणनाथञ्च पूजयेत् ।
ततो गच्छेद्देहलीशम्विघ्नपूगनिवारणम् ॥४४॥
मोदकैः पृथुकैर्लाजैस्सक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः ।
पूजयेच्छ्रद्धयादेवन्तन्देहलीविनायकम् ॥४५॥
तत्पार्श्वे षोडशपुनर्विघ्ननाथान् समर्चयेत् ।
उद्दण्डगणसम्पूज्य उत्कलेश्वरमेव च ॥४६॥
रुद्राण्यास्तु तपोभूमिं दृष्ट्वारामेश्वरम्व्रजेत् ।
वरणायान्ततः स्नात्वा तर्पणादि विधाय च ॥४७॥
रामेश्वरं श्वेततिलैर्बिल्वपत्रादिभिर्यजेत् ।
सोमेनाथञ्च तत्रैव पूजयेदिन्द्रदिग्गतम् ॥४८॥
भरतेशं लक्ष्मणेशं शत्रुघ्नेश्वरमेव च ।
द्यावा भूमीश्वरं तत्र पूजयेन्नहुषेश्वरम् ॥४९॥
तत्र वासम्प्रकल्प्याऽथ पूर्ववज्जागरादिकम् ।
कृत्वा स्नात्वाऽपि रामेशम्प्रार्थयेत्काशिवासदम् ॥५०॥
श्री रामेश्वर ! रामेण पूजितस्त्वं सनातन ! ।
आज्ञान्देहि महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥५१॥

लिङ्गानि सुबहून्यादौ वरणापारगान्यथ ।
पूजयित्वा ततो गच्छेद्देवसङ्घनिषेवितम् ।।५२।।
देवसङ्घेश्वरे किञ्चिद्दत्वा स्थित्वा ततो व्रजेत् ।
पाशपणिं गणेशञ्च क्षेत्रमध्ये व्यवस्थितम् ।।५३।।
पूजयित्वा बहिश्चैव पृथ्वीश्वरमथो यजेत् ।
एकोऽश्वमेधः पृथुना कृतः क्षेत्राद्वहिः पुरा ।।५४।।
स्वर्गभूमिस्तु साज्ञेया मोक्षभूमिस्तु मध्यतः ।
काश्याश्चतुर्दिशं देवि ! योजनं स्वर्गभूमिका ।।५५।।
मृतास्तत्र तु गच्छन्ति स्वर्गं सुकृतिनाम्पदम् ।
ततः सुपूयं हि सरः स्पृष्ट्वा गच्छेच्छनैः शनैः ।।५६।।
महत्क्षेत्रङ्कापिलन्तु यत्र श्रीवृषभध्वजः ।
तत्र स्नात्वा विधानेन तर्प्पयित्वा पितॄनथ ।।५७।।
श्रद्धाम्विधाय सुश्रद्धः पूजयेद् वृषभध्वजम् ।
निवसेत्तन्तु दिवसं श्रवणादि प्रकल्पयेत् ।।५८।।
वृषभध्वज ! देवेश ! पितॄणाम्मुक्तिदायक ! ।
आज्ञान्देहि महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ! ।।५९।।
प्रदक्षिणीकृत्य ततो गच्छेज्ज्वालानृसिंहकम् ।
एवम्प्रदक्षिणीकृत्य सरः कापिलमुत्तमम् ।।६०।।
वरणाञ्च ततस्तीर्त्वा स्नात्वा वै सङ्गमे शुभे ।
अदिकेशवमभ्यर्च्य सङ्गमेश्वरमेव च ।।६१।।
विनायकङ्खर्वसञ्ज्ञम्पूजयित्वा ततो व्रजेत् ।
क्रोडीकृत्ययवान्शु (च्छु ?) द्धान्विकिरन्विष्णुमुच्चरन् ।।६२।।
प्रह्लादेश्वरमभ्यर्च्य त्रिलोचनमतः परम् ।
विन्दुमाधवमभ्यर्च्य ह्रदे पञ्चनदे शुभे ।।६३।।
गभस्तीशं मङ्गलाञ्च गौरीं दृष्ट्वा ततोव्रजेत् ।
वशिष्ठवामदेवौ च पर्वतेश्वरमेव च ।।६४।।



अनन्त श्री विभूपित धर्मसम्राट श्री स्वामी करपात्री जी महाराज



महेश्वरं समभ्यर्च्य ततः सिद्धिविनायकम् ।
सप्तावरणगान्दिव्यान्पूजयेत् गणनायकान् ॥६५॥

पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा काशी रहस्यम् दशमोध्यायः ।

काशी की पञ्चक्रोशी माहात्म्य

काशी प्रदक्षिणा येन कृतात्रैलोक्यपावनी ।
सप्तद्वीपा साब्धिशैला भूः परिक्रामिताऽमुना ॥१॥

(नारदीय पु० अ० ६)

अर्थ– हे भवानी जिसने काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा की है उसने त्रैलोक्यपावनी सात द्वीप, सात समुद्र, सम्पूर्ण पर्वतों के सहित पृथ्वी की वह प्रदक्षिणा दर्शन कर चुका। वह पुरुष निष्पाप और पुण्यवान हुआ, कृतार्थ हुआ, और वह चौरासी लाख योनि से छूट कर शिव सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है।

प्रत्यब्दं ये प्रकुर्वन्ति, पञ्चक्रोश प्रदक्षिणाम् ।
जीवन्मुक्तास्तु ते ज्ञेया, निष्पापाः काशिवासिनः ॥२॥

अर्थ– जो मनुष्य प्रतिवर्ष पञ्चक्रोशी की प्रदक्षिणां दर्शन-यात्रा करते हैं वे मनुष्य जीवन्मुक्त हैं और वही काशी वासी निष्पाप हैं। (चूँकि प्रतिदिन मन, वाणी, शरीर से कुछ न कुछ पाप कर्म होते रहते हैं।)

यावज्जीवं वसेत् काश्यां, प्रत्यब्दं सुप्रदक्षिणम् ।
कुर्यादेव निरालस्या, आनन्द सदनस्यहि ॥३॥

अर्थ– जन्म भर, जब तक काशी में वास करे, तब तक आनन्द सदन काशी व वार्षिक पञ्चक्रोशी की प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करें। आलस्य को छोड़ कर पञ्चक्रोशी यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

यथा कथञ्चिद्देवेशि पञ्चक्रोश प्रदक्षिणम् ।
कुर्यादेवेन मासादि चिन्तयेद्धर्मकोविदः ॥४॥
स एव शुभदः कालो यस्मिन् श्रद्धोदयोभवेत् ।

अर्थ– पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा जाने के लिए वार, तिथि, मास, काल, चन्द्र और समय का विचार नहीं करना चाहिए, चूँकि पापों को नाश करने वाली और मोक्ष देने वाली पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा जाने के लिए जिस दिन हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो वही शुभ काल और वही उत्तम मुहूर्त माना जाता है। इसलिए प्रयत्न पूर्वक पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करनी चाहिए।

यथा कथञ्चिद् देवेशि पञ्चक्रोश प्रदक्षिणम् ।।५।।

अर्थ– शंकर जी भवानी से कहते हैं कि हे भवानी ! सभी मनुष्यों को यथाशक्ति पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करनी चाहिए, पापों को नष्ट करने वाला इतना सहज उपाय अन्य नहीं है।

काशी की पञ्चक्रोंशी दर्शन-यात्रा सभी दुःखों को नाश करने वाली है और सभी पापों को नष्ट करने वाली है तथा पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा सभी दुःखों और संकटों को दूर करने वाली है।

प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा, पापं जन्मशतार्जितम् ।
विलयं प्रापयति ना, नात्र कार्या विचारणा ।।६।।

अर्थ– तीन पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करने वाले भक्त का सौ जन्मों का पाप अवश्य छूट जाता है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।

क्षेत्रं प्रदक्षिणी कृत्य, भवेत्पापो हि विज्वरः ।।७।।

अर्थ– पञ्चक्रोशी क्षेत्र काशी की परिक्रमा करके पापी प्राणी पाप रहित हो जाता है।

प्रायश्चित्त विहीनानां, यातनास्ति सुदारुणा ।
ज्ञानस्वरूपा काशीयं, पञ्चक्रोशे परिस्थितां ।।८।।
तस्याः प्रदक्षिणां कृत्वा, सर्व पापैः प्रमुच्यते ।

स्कन्द जी अगस्त्य ऋषिजी से कहते हैं कि चैत्र कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन ३६० दिन में जिस दिन जिज्ञाशा हो प्रातः स्नान संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत होकर विश्वनाथनित्य-यात्रा करने के पश्चात् दुण्ढिराज

के दर्शन, पूजन करके पञ्चक्रोशी यात्रा जाने के लिये सामग्री एकत्रित करें और बैलगाड़ी सजाकर सभी सामान बैल गाड़ी में रखें।

"पूर्वस्मिन्दिवसे दुण्ढिम्पूजयित्वा हविष्य भुक् "।

नोट- चैत्रकृष्ण पंचमी तिथि के दिन स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री जी महाराज जी की पञ्चक्रोशी वार्षिक यात्रा) मेरे गुरुजी की पञ्चक्रोशी-यात्रा का विशेष महत्व यह है कि मधुमास बसन्त-ऋतु, वेद, पुराण एवं आयुर्वेद में कहा गया है कि वसन्त ऋतु में जल, वायु बदलने वाला मनुष्य एक वर्षतक निरोग रहता है। (आयुर्वेद में आश्विन और चैत्र महीने में इच्छाभेदिनी आदि औषधि द्वारा पेट को साफ करने, जुलाब लेने वाला व्यक्ति भी निरोग रहता है) बसन्त ऋतु में सन्त-महात्माओं को मन्दिरों के दर्शन करने के लिये अथवा तीर्थ यात्रा करने के लिए जाना चाहिए।

विशेष महत्व तो यह है कि ब्रह्मज्ञानी सभी शास्त्रों के ज्ञाता और शास्त्रार्थ-दिग्विजयी स्वामी करपात्री जी महाराज ने १८ वर्षों की अवस्था से ही शास्त्रार्थ करना प्रारम्भ किया। पूर्व में बंगाल, पश्चिम में पाकिस्तान, दक्षिण में कन्या कुमारी और उत्तर में नेपाल, काश्मीर तक जाकर शास्त्रार्थ किया लेकिन कहीं भी परास्त नहीं हुए। चूँकि वे भगवती सरस्वती के उपासक थे। रात्रि को ९ बजे २॥ सौ ग्राम गौ का दूध पीकर सोते थे। रात्रि के एक बजे शैय्या से उठकर स्नान आसन प्रणायाम करके ध्यान लगाते थे, तीन बजे स्नान कर दर्शन करने जाते थे। बहुत तेज चलते थे। चार बजे घूमकर आते थे, पुनः स्नान कर दर्शन करने जाते थे। ध्यान के पश्चात् शीर्षासन में पैर को ऊपर करके खड़े होकर दुर्गासप्तमी का पूरा पाठ करते थे, पाठ करके शीर्षासन के पश्चात् पूजा करने बैठते थे। दोनों तरफ दीपक जलता था, मेंज पर पूजा की सामग्री रखी जाती थी। शालग्राम नर्वदेश्वर को स्नान कराकर पूजा करने बैठते थे। पूजा करने के पश्चात् रुद्रीवेद के मंत्रों से अभिषेक करते थे। पूजा के पश्चात् शंख बजाते थे। उस ध्वनि से शंख बजाते हुए कभी भी सुनने में नहीं आता।

शंख के पश्चात् सबको प्रसाद बाँटते थे। जो विद्वान पढ़ने आते थे उनको पढ़ाते थे। व्याकरण, वेदान्त, न्याय, मीमांसा और जो कोई भी शास्त्र लेकर आता था उनको पढ़ाते थे और विशेष महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह जो भी शास्त्र पढ़ाते थे विद्यार्थियों को कण्ठस्थ होता था। यह बात किसी भी विद्वान में नहीं पाया जाता, ११ बजे तक पढ़ाते थे।

पुनः स्नान करके मध्याह्न पूजा करने बैठते थे। पूजा के पश्चात् शंख बजाते थे, शंख की आवाज सुनकर प्रसाद लेने के लिए सब आते थे। प्रसाद मिठाई फल स्वयं अपने हाथ से सब को देते थे। प्रसाद राजा, महाराजा, करोड़पति और रंक, दरिद्र सब को देते थे। प्रसाद वितरण करने के पश्चात् मिलने के लिये आये हुए अतिथियों से मिलते थे। सब से बात करते थे। मध्याह्न पूजा तक किसी से बात नहीं करते थे। पूजा के पश्चात् दूध फल जलपान करते थे। एक घंटा विश्राम करने के पश्चात् भक्तिसुधा रामायण मीमांसा एवं वेदार्थपारिजात आदि सदग्रन्थ लिखते थे। स्वामी जी २० भाषा के विद्वान् थे। सायं पाँच बजे हरी सब्जी, रोटी, दलिया आदि हल्का भिक्षा करते थे। चौबीस घंटे में एक बार सायं भोजन करते थे। कथा के पश्चात् नौ बजे तक सबसे मिलते थे। पुनः स्नान करके सायं पूजा करने बैठते थे। पूजा के पश्चात् प्रसाद वितरण करते थे। एक गिलास गाय का दूध पीते थे, नौ बजे के पश्चात् किसी को भी मिलने की आज्ञा नहीं थी। विशेष महत्व पूर्ण बात तो यह है कि ध्यान में बैठते ही प्राण को ब्रह्मरन्ध्र में चढ़ाते थे। किसी भी समय प्राण को ब्रह्मरन्ध्र से उतार कर समाधि से उठते थे। यह महायोग की परम्परा लुप्त सी होती जा रही है। योग, प्राचीन विज्ञान, ज्योतिष, वेद और वेदान्त के द्वारा विश्वराष्ट्र में भारत महान कहा गया है।

योग दर्शन, वेदान्त दर्शन का शिक्षा विश्व में कही भी नहीं है इसलिए भारत विश्व का गुरु है। स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री जी महाराज स्वयं काशी पंचक्रोशी की यात्रा करते रहे हैं और भक्तों को प्रेरणा करके

काशी की यात्रा कराते रहे हैं। काशी की यात्रा का माहात्म्य, यात्रा करने के नियम आदि का उपदेश करते हुए स्वामी जी के बायें और दाहिने तरफ चारों वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् वेदों की स्तुति करते हुए धीरे-धीरे पंचक्रोशी की सड़क पर चलते थे। अन्य यात्री काशी विश्वनाथ की जयघोष करते हुए हर-हर महादेव की ध्वनि लगाते हुये कीर्तन करते हुये चलते थे। प्रत्येक पड़ाव में (विश्राम स्थल में) अन्न क्षेत्र चलता था। मध्याह्न पूजा के पश्चात् साधु संन्यासियों को स्वामी हरिहरानन्दसरस्वती जी महाराज स्वयं खड़े होकर भोजन कराते थे। वस्त्र देते थे। दीन दुःखी दरिद्र को भोजन वस्त्र दिलाते थे। जिस धर्मशाला में स्वामी जी निवास करते थे उसी धर्मशाला में तीन बजे के पश्चात् विद्वान् प्रवचन करते थे, अन्त में स्वामी जी की कथा होती थी। हजारों नर-नारी गाँव और शहर से दर्शन करने तथा कथा श्रवण करने के लिए आते थे। प्रायः कथा का विषय पंचक्रोशी यात्रा, पञ्चक्रोशी माहात्म्य एवं काशी वास का नियम और फल का वर्णन करते थे। कथा में कहा करते थे कि प्रत्येक मनुष्य को अंत समय में काशी वास करने का संकल्प लेना चाहिये। अन्त में स्वामी जी ने स्वयं काशी क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास किया। काशी खण्ड और काशी रहस्य, काशी माहात्म्य आदि काशी के विषय में पुस्तक छपाने वाले व्यक्तियों के प्रति विश्वनाथ अन्नपूर्णा जी प्रसन्न होकर धर्म, अर्थ, मोक्ष देते हैं। अनन्त विभूषित स्वामी हरिहरानन्दसरस्वती करपात्री जी महाराज जब प्रथमा में पढ़ते थे वे उस समय पण्डित नागेश दत्त मिश्र जी के साथ ग्रहण में काशी आये। काशी आने पर श्री स्वामी जी विश्वनाथ अन्तर्गृही और पंचकोशी दर्शन यात्रा करने के पश्चात् अन्नूपूर्णा जी का दर्शन करके सभी विद्वान् प्रदक्षिणा करने लगे और स्वामी जी अन्नूपूर्णा जी के दरवाजे पर बैठकर हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे। उसी समय अन्नपूर्णा जी की मूर्ति से एक दिव्य प्रकाश का दर्शन हुआ, इसके अनन्तर अन्नपूर्णा जी के सिर से गेंदा की माला उछलकर स्वामीजी के गले में

आ गई। गद्गद होकर अन्नपूर्णाजी की स्तुति करने लगे उसी समय से श्री स्वामी करपात्री जी महाराज को सम्पूर्ण विद्याएँ आने लगीं और वे सभी विषयों के विद्वान् हो गये। श्री स्वामी जी महाराज जिस पुस्तक को पढ़ते थे और जिसको एक बार श्रवण कर लेते थे वह उनको कभी विस्मरण नहीं होता था अर्थात् कण्ठस्थ हो जाता था। स्वामी जी महाराज अध्ययनकाल से ही साधना करते थे और प्रातःकाल ३ बजे ब्राह्ममुहूर्त्त में ही उठकर स्नान करते, अध्ययन करते थे। तत्पश्चात् वट वृक्ष के नीचे बैठकर कुछ समय तक मनोलय योग से पहले पढ़े हुए पाठ की पुनरावृत्ति करते थे। पुनरावृत्ति के पाचात् गुरुजी के पास जाकर सुनाते थे उसके बाद हवन आदि करते थे। पुनः गुरुजी महाराज के पास जाकर एकाग्रचित्त होकर एक घण्टा पाठ सुनते थे। तत्पश्चात् पुनरावृत्ति कर गुरुजी महाराज को कण्ठस्थ करके सुना देते थे। यही नियम प्रातः ३ बजे से आरम्भ कर रात्रि १० बजे तक अध्ययन करते थे। गुरुजी महाराज का पैर दबाते-दबाते अपने पाठ को सुनाते थे। गुरुजी महाराज की सेवा वहुत ही श्रद्धा भक्ति से करते थे।

वे भारत के ही नहीं अपितु विदेशी भाषाओं के भी धुरन्धर विद्वान् थे। विश्व के किसी भी देश का नागरिक जब भारत भ्रमण करने आता था और स्वामी जी का दर्शन करने आता था तो जिस भाषा में वह बात करता था, उसी भाषा में श्री स्वामी जी बात करते थे उनके सभी प्रश्नों का उचित उत्तर देकर समझाते थे।

पञ्चक्रोशात्मकं लिङ्गं ज्योतिरूपसनातनम् ।
भवानीशङ्कराभ्यांच लक्ष्मी श्रीशिवराजितम् ॥

(काशी रहस्यय अ० १०)

अर्थ– पंचकोशात्मक भगवान् शिव का लिङ्ग शाश्वत तथा ज्योतिस्वरूप है। भवानी तथा शिवजी के साथ लक्ष्मी तथा भगवान विष्णु इस लिंग में विराजमान हैं।

कृष्णरामत्रययुतम् कूर्ममत्स्यादिभिस्तथा ।
अवतारैरनेकैश्च युतं विष्णोः शिवश्च ।।
गौर्यादिशक्तिभिर्जुष्टं क्षेत्रं कुर्यात्प्रदक्षिणाम् ।

(काशी रहस्य अ० १०)

कृष्ण राम आदि से युक्त तथा कूर्म, मत्स्यादि अनेकों अवतारों से युक्त भगवान विष्णु और भगवान् शिव गौरी, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा आदि शक्तियों में विशिष्ट हैं उनकी तथा काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

पञ्चक्रोशात्मकस्यैव लिङ्गस्य परमात्मनः ।
प्रदक्षिणा त्रयं कृत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।।
प्रदक्षिणायामाहात्म्यं महापापहरं क्षुभम् ।

(काशी रहस्य अ० ९०)

काशी पञ्चक्रोशी यात्रा माहात्म्य

अर्थ– इस पञ्चक्रोशी यात्रा के अन्तर्गत शिव लिङ्गों की जो मनुष्य तीन बार यात्रा करता है वह मनुष्य आवागमन से मुक्त हो जाता है। पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा का माहात्म्य महापापों को नष्ट करने वाला होता है।

पुत्रस्य जननी लोके सर्वदाहितकारिणी ।
हितकृत् सर्वजन्तूनां काशीहाऽमुत्रसिद्धिदा ।।

(काशी रहस्य अ० ११)

अर्थ– जिस प्रकार माता, पुत्र का हित करने वाली होती है, उसी प्रकार यह काशी, मातृवत् सभी जीव-जन्तुओं का हित करके सिद्धि को प्रदान करती है।

दक्षिणे चोत्तरे चैव ह्ययने सर्वदामया ।
क्रियते क्षेत्र प्रदाक्षिण्यं भैरवस्य भयादपि ।।

(सनत्कुमार संहिता)

अर्थ– विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भवानी ! भैरव के भय से उत्तरायण

और दक्षिणायन दोनों अयनों में काशी की सर्वदा पञ्चक्रोशी यात्रा करता हूँ।

प्रदक्षिणा प्रकर्त्तव्या क्षेत्रस्याऽपापकाङ्क्षिभिः ।
श्रुत्वामनुष्योयेनाऽऽशुनिष्पापः पुण्यवान् भवेत् ।।५।।

अर्थ– इस काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस क्षेत्र को सुनने से मनुष्य निष्पाप होकर पुण्यवान हो जाता है।

अनेक जन्मपापानि कृतानि मम शङ्कर ! ।
गतानि पञ्चक्रोशात्मन्सर्व लिङ्गप्रदक्षिणात् ।।

(काशी रहस्य अ० १०)

हे भगवान शंकर ! अनेकों जन्मों में मैंने जो पाप किये वह सब पञ्चक्रोशी यात्रा तथा शिव लिङ्ग प्रदक्षिणा करने से समाप्त हो गये।

काश्यां तिष्ठति यो नित्यं स्नाति भागीरथी जले ।
कुर्यात्सांवत्सरी यात्रां पंचक्रोशत्यसुन्दरि ।।

ब्रह्मवैवर्त पुराण

जो इस काशी क्षेत्र में नित्य वास करता हुआ माँ भागीरथी गङ्गा जी के जल में स्नान करता है तथा हे पार्वती ! जो सांवत्सरी पञ्चक्रोशी की यात्रा करता है, वह व्यक्ति जीवन-मुक्त हो जाता है। काशी की पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा सभी दुःखों का नाश करने वाली और सभी पापों को नष्ट करने वाली है।

अर्थ- पाप करके प्रायश्चित्त नहीं करने पर घोर यातना (पीड़ा) होती है। लेकिन ज्ञानस्वरूप पञ्चकोश मात्र काशी की प्रदक्षिणा करने से सब पाप छूट जाता है।

नरयानं चाश्वतरी ह्यादि सहितो रथः ।
तीर्थयात्रा ह्यशक्तानां, यान दोषकरी न हि ।।१।।

(कुर्म पुराणे)

जो यात्री पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा में चलने में असमर्थ हैं, वे यात्री

आटो रिक्शा, कार, जीप, मिनी बस आदि से पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा कर सकते हैं। इनसे यात्रा करने से दोष नहीं होता। परन्तु विधान इस प्रकार है– अन्नपूर्णा, विश्वनाथ आदि के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् (ज्ञानवापी से) संकल्प लेकर मणिकर्णिका घाट से अस्सी घाट तक जो चलने में असमर्थ हैं वे नाव में जाते हैं। नगवा से गाड़ी में बैठकर दुर्गाजी के दर्शन करके लंका होते हुए पञ्चक्रोशी मार्ग से दर्शन, पूजन करते हुए कपिलधारा कोटवा गाँव होते हुए गङ्गा, वरुणा संगम में आते ही सवारी को छोड़कर वरुणा संगम से नाव में मणिकर्णिकाघाट आना चाहिए अन्यथा यात्रा खंडित होती है।

श्री शंकर जी भवानी जी से कहते हैं कि हे भवानी! सभी मनुष्यों को यथाशक्ति पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा करनी चाहिये। पापों को नष्ट करने वाला इतना सहज उपाय अन्य नहीं है।।

काशी पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा सभी दुखों को नाश करने वाली है और सभी पापों को नष्ट करने वाली है। अत: प्रयत्नपूर्वक पंचक्रोशी यात्रा करनी चाहिये।

१. दण्डपाणिभ्यो नम: (मन्दिर नम्बर सी० के० ३६/११ में हैं, मु० दुण्ढिराज गली)।

२. दुण्ढिराजाय नम: (मन्दिर नम्बर सी०के० ३५/२७ में हैं, मु० सावित्री फाटक, अन्नपूर्णा गली)। – दर्शन-पूजन कर प्रार्थना करें–

दुण्ढिराज गणेशान महाविघ्नौघनाशन:।
पञ्चक्रोशस्य यात्रार्थं देह्याज्ञां कृपया विभो ।।

३. पञ्चविनायकाय नम: (मन्दिर नम्बर सी०के० ३५/२१ में है। मु० विश्वनाथ सभा मण्डप।)

कालराजेश्वराय नम: (मु० विश्वनाथ जी)

४. श्री विश्वनाथाय नम: मन्दिर (मंदिर नं० सी० के० ३५/१९ में है, मु० विश्वनाथ जी) प्रार्थना मन्त्र यह है–

पञ्चक्रोशस्य यात्राम्वै करिष्ये विधिपूर्वकम्।
प्रीत्यर्थं तव देवेशं ! सर्वाघौघ प्रशान्तये ।।

विश्वनाथ जी से प्रार्थना करें- हे विश्वनाथ भगवान् ! मैं समस्त पापों के प्रायश्चित्त करने के लिये और ग्रहों की शान्ति के लिये, दुःख दरिद्रता और संकट को दूर करने के लिये एवं पितरों को उद्धार करने एवं मुक्ति दिलाने के लिये पञ्चक्रोशी यात्रा करना चाहता हूँ, आप हमें यात्रा करने की आज्ञा दें। हे विश्वनाथ भगवान ! मैं विधिपूर्वक यात्रा करना चाहता हूँ, समस्त पाप समूहों की शान्ति के लिए, पितरों के उद्धार के लिए और देवऋण एवं पितृऋण से मुक्ति पाने के लिए दैहिक, दैविक, भौतिक ताप की निवृत्ति के लिए, रोग और ग्रहों की शान्ति के लिए, पञ्चक्रोशी यात्रा करना चाहता हूँ, आप हमें आज्ञा दें। प्रार्थना करने के पश्चात् विश्वनाथ जी के मन्दिर की तीन प्रदक्षिणा करके प्रणाम करें। बगल में स्थित-ज्ञानवापी में संकल्प लें।

५. मुक्ति मण्डप में जाकर, ज्ञानवापी तीर्थाय नमः। – संकल्प लेकर ब्राह्मण को दक्षिणा (पैसा, सीधा) देकर मौन होकर चलें।

६. मर्णिकर्णिका तीर्थाय नमः। (मणिकर्णिका घाट) – मर्णिकर्णिका घाट में स्नान करके मौन व्रत को छोड़कर वस्त्र, टीका, त्रिपुण्ड और रुद्राक्ष-माला धारण करके गङ्गा जल पञ्चोपचार से पूजन की सामग्री पैसा, कुशा और पुष्प अक्षत आदि साथ में लेकर सम्प्रदाय के अनुसार तिलक माला आदि धारण करके पञ्चाक्षरी महामन्त्र को मनमें जप करते हुए, शिव-शिव नाम महामन्त्र का जप करते हुए। कीर्तन का महामन्त्र यह है– "हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे"। सब मिलकर एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलते हैं। पैसा, अक्षत गरीब को देते हुए चलते हैं। झोले में अक्षत, पैसा, पुष्प आदि मन्दिर में चढ़ाने के लिए बाहु में लटकाये हुए, अति वृद्ध, सिर झुका हुआ, सोंटा हाथ में लिए हुए मधुर स्वर से, सुन्दर मङ्गल मनोहर स्वर में कीर्तन करते हुए, शनैः शनैः

मन्दिरों का दर्शन-पूजन करते हुए चलते हैं। मर्णिकर्णिका घाट से उत्तर मणिकर्णिकेश्वर गली में हैं।

मणिकर्णिकेश्वर का प्रमाण-स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिङ्गपुराण, पद्मपुराण में वर्णन है।

७. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (मंदिर नं० सी. के. ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला) – मणिकर्णिकेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले व्यक्ति के पाप दुख कष्ट दूर होते हैं। स्व० आत्मा स्वरूप ज्योति का दर्शन और आत्मा का ज्ञान होता है। साधक को ब्रह्मात्म साक्षात्कार होता है। अन्त में मुक्ति मिलती है। मणिकर्णिकेश्वर में यज्ञ होते हैं और उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र पढ़ाया जाता है। पहले वेदान्त सम्मेलन भी होता था। उसी मार्ग से घाट के ऊपर हनुमानजी के बगल में गणेश मन्दिर में सिद्धि विनायक हैं। सिद्धि विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण एवं लिङ्ग पुराण गणेशोपनिषद् में उपलब्ध है।

८. सिद्धि विनायकाय नमः (मन्दिर डी. १/६७ में हैं, मु० मर्णिकर्णिका घाट) – सिद्धि विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है। साधकों को अति शीघ्र ही सिद्धि को देने वाले सिद्धि विनायक हैं, और सब कार्य सफल होते हैं। परिवार-द्रव्य-व्यापार से परिपूर्ण होता है। मर्णिकर्णिका घाट से दक्षिण मन्दिरों के दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए यात्री चलते हैं। ललिता घाट के ऊपर नेपाली पशुपतीश्वर मन्दिर के नीचे गङ्गा केशव हैं। इनका प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य एवं विष्णु पुराण में प्राप्त होता है।

९. गङ्गाकेशव विष्णवेनमः (मंदिर नम्बर डी. १/६६ में हैं, मु० ललिता घाट) – गङ्गा केशव के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को विष्णु और शिव जी की भक्ति मिलती है तथा काशीवासियों की रक्षा और काशी वास कराते हैं। जल में डूबने का खतरा नहीं रहता है। परिवार में धन-लक्ष्मी की वृद्धि होती है। ललिता गौरी का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य

देवी भागवत् में वर्णन है।

१०. ललितागौरीदेव्यै: नमः (मंदिर नं० डी० १/६७ में हैं, मु० ललिता घाट)– (ललिता गौरी से दक्षिण त्रिपुरा भैरवी घाट के ऊपर शंकर जी के मन्दिर में जरासन्धेश्वर हैं) इनका प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य में है।

११. जरासन्ध्येश्वराय नमः (मंदिर नम्बर डी० ५/१० बगल में है, मु० त्रिपुरा भैरवी घाट)– जरासन्धेश्वर के दक्षिण बगल में मान मन्दिर घाट के ऊपर, सोमनाथ मन्दिर में सोमनाथेश्वर हैं। इनका काशीखण्ड, काशीरहस्य, पदम् पुराण में सोमेश्वरों के नाम प्राप्त हैं।

१२. सोमनाथेश्वराय नमः (मंदिर नं० डी० १६/३४ में हैं, मु० मान मन्दिर घाट)– सोमनाथेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को स्थूल शरीर में शक्ति तथा विश्वनाथ एवं भवानी की भक्ति प्राप्त होती है। मनोरथ पूर्ण होते हैं और धन, जन, भक्ति की वृद्धि होती है।

१३. दालभेश्वराय नमः (मंदिर नं० डी० १६/३२ में है, मु० मान मंदिर घाट) – दालभ्येश्वर के दर्शन, पूजन करने से स्वधर्म का पालन करने तथा सहन करने की शक्ति आती है। भक्ति ज्ञान में वृद्धि होती है। दालभ्येश्वर से दक्षिण गङ्गा किनारे से शूलटंकेश्वर जाइये। शूलटंकेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य, केदारमाहात्म्य, पद्म पुराण, ब्रह्म पुराण में भी प्राप्त है।

१४. शूलटंकेश्वराय नमः। मु० दशाश्वमेध घाट। – शूलटंकेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति के पेट सम्बन्धी रोग शान्त होते हैं। शूल या पेट में गैस के रोगी को शूलटङ्केश्वर का स्नान कराया हुआ निर्माल्य जल पिलाने से शूल का रोग नष्ट होता है। दर्शन करने वाले अपने भक्तों को शूलटङ्केश्वर चारों पदार्थ प्रदान करते हैं। शूलटङ्केश्वर के पास बड़े-बड़े यज्ञ और वेद, पुराण भगवद्गीता, रामायण आदि का विशाल आयोजन

और सम्मेलन हुआ करता है और प्रति-दिन कथा होती है।

शूलटङ्केश्वर के मन्दिर के ऊपर के मकान में राम मंदिर से सटे हुए, शंकर जी के मन्दिर में वाराहेश्वर हैं। उनका प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, वाराह पुराण में प्राप्त होता है।

१५. आदि वाराहेश्वराय नमः (मन्दिर नं० डी० १६/१११ में हैं, मु० दशाश्वमेध घाट)– आदि वाराहेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को विश्वनाथ, विष्णु एवं लक्ष्मी की भक्ति प्राप्त होती है तथा द्रव्य, आयु, मित्र और आत्म-ज्ञान में वृद्धि होती है। वाराहेश्वर के दक्षिण बगल में प्रयागेश्वर के मन्दिर में बंदी देवी जी की मूर्ति (पूर्वाभिमुख हैं) काशीरहस्य, काशीखण्ड, देवी भागवत में बंदी देवी जी का वर्णन है।

१६. बन्दीदेव्यै नमः (मंदिर नं० डी० १७/१०० में हैं, मु० प्रयागराजघाट) – बन्दी देवी के दर्शन, पूजन जो नर-नारी करते हैं उनके दुःख-दोष-दरिद्रता दूर होती है और जो कैदी जेल में बन्द रहते हैं, वे कैदी जेल से छूट जाते हैं। इनके दर्शन, पूजन, उपासना आदि करने और मंदिर के जीर्णोद्धार करने वाले भक्तों को पुत्र-रत्न-भक्ति की प्राप्ति होती है। ये काशीवासियों का कल्याण करती हैं और सबको बुद्धि देती हैं।

बन्दी देवी से नीचे घाट में, शीतला देवी जी के मन्दिर में दशाश्वमेधेश्वर की प्रतिमा है। दशाश्वमेधेश्वर का प्रमाण स्कन्धपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, काशी दर्शन-यात्रा में मिलता है।

१७. दशाश्वमेधेश्वराय नमः (मंदिर नं० डी० १८/१९ में हैं, मु० प्रयागघाट)– दशाश्वमेधेश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं उनके स्थूल पाप शान्त होते हैं और उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसके साथ ही सन्तान, धन, पुण्य एवं भक्ति की वृद्धि होती है।

विवरण – इलाहाबाद के प्रयागराज में स्नान करने से जो फल मिलता है उससे दशगुणा अधिक काशी के प्रयागराज दशाश्वमेध घाट में माघ मास में स्नान करने से मिलता है। दशाश्वमेधेश्वर से दक्षिण गङ्गा किनारे

से पाण्डेय घाट है, उसके दणिण बगल के पाण्डेय घाट के ऊपर शंकर जी के मन्दिर में सोमेश्वर से सटे हुए, शिवालय में सर्वेश्वर की प्रतिमा है। सर्वेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य में है।

१८. सर्वेश्वराय नमः (म० नं० डी० २५/७, मु० रङ्गमाटी क्षेत्र पाण्डेय घाट के ऊपर) – सर्वेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति सबकी निष्काम सेवा करते हैं और समभाव रखते हैं। दर्शनार्थियों को सुख का साधन प्राप्त होता है और द्रव्य, बुद्धि की वृद्धि होती है।

केदारेश्वर का शिवपुराण, लिङ्गपुराण, पद्म पुराण, काशीखण्ड, काशीरहस्य और केदार माहात्म्य में वर्णन है।

१९. केदारेश्वराय नमः (मंदिर नं० बी-६/१०२, मु० केदार घाट)– केदारेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के स्थूल पाप और त्रय ताप क्षीण होते हैं। रोग, दुःख, संकट एवं दरिद्रता दूर होती है। धन, परिवार, बुद्धि, विद्या, भक्ति और ज्ञान की वृद्धि होती है। केदारेश्वर अपने साधक भक्त को प्रत्यक्ष फल देते हैं और भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करते हैं। अतः प्रयत्न पूर्वक श्री केदारेश्वर के दर्शन, पूजन, उपासना और आराधना करनी चाहिए। केदारेश्वर में बड़े-बड़े यज्ञ होते हैं और वेद-पुराण के पाठ एवं वेदान्त का पाठ तथा वेद, पुराण, रामायण आदि सम्मेलन होते हैं और प्रतिदिन कथा होती है। केदारेश्वर से दक्षिण, हरिश्चन्द्र घाट से सटे हुये दक्षिण बगल के हनुमान घाट के शंकर जी के मन्दिर में हनुमतेश्वर जी की शिवलिंग प्रतिमा है। हनुमतेश्वर का प्रमाण काशीरहस्य, काशीखण्ड में प्राप्त होता है।

२०. हनुमतेश्वराय नमः (हनुमान घाट के ऊपर मंदिर नं० बी० ४/११ में है।)– इनके दर्शन, पूजा से डाकिनी-साकिनी, भूत-प्रेत की बाधा तथा दरिद्रता नष्ट होती है। इसके साथ ही वे भक्ति, विद्या देते हैं तथा सब कार्य सफल करते हैं। (यह विवरण काशी सप्तपुरी यात्रा में अयोध्या है और यह अयोध्या की जैसी काशी की हनुमानगढ़ी है। रामेश्वर मन्दिर

के बाहर बड़े हनुमान जी के नाम से संत-तुलसीदास जी के करकमलों से स्थापित हनुमान जी हैं। हनुमतेश्वर से गङ्गा किनारे से पानी टङ्की से सटे हुये लोलार्क घाट के ऊपर दो मन्दिरों के दर्शन होते हैं, गणेश मन्दिर में अर्कविनायक की दिव्य और बड़ी मूर्ति है, जो उत्तराभिमुख है। ये ही अर्क विनायक हैं। इनका प्रमाण स्कन्दन्धपुराण, काशीरहस्य, शिवरहस्य तथा लिङ्ग पुराण में प्राप्त होता है।

२१. गणाध्यक्षे अर्क सूर्य विनायकाय नमः (मंदिर नं० बी० २/१७ में है, मु० लोलार्क कुण्ड)।– लोलार्क सूर्य विनायक के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के मनोरथ निर्विघ्न सफल होते हैं और शत्रु परास्त होते हैं। सब कार्य में विजय होती है। पदोन्नति, द्रव्य, विद्या तथा मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। अर्क विनायक के पश्चिम बगल में लोलार्क कुण्ड के ऊपर सूर्य मन्दिर है। लोलार्क सूर्य का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण, वामन पुराण में मिलता है।

२२. लोलार्क सूर्याय नमः (मंदिर नं० बी० २/३१ ए)– लोलार्क-सूर्य के दर्शन, पूजन और कुण्ड में स्नान करने से चर्म-रोग, अन्य पाप-ताप शान्त होते हैं। धन, सम्पत्ति एवं पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। भक्तों के सब मनोरथ पूर्ण करते हैं। नेत्र की ज्योति, मान-प्रतिष्ठा, व्यापार, द्रव्य और विद्या-भक्ति तथा ज्ञान की वृद्धि होती है। अर्क विनायक में प्रतिदिन कथा-यज्ञ होते हैं और वेद-पुराण आदि सम्मेलन होते रहते हैं। श्री रामलीला कृष्णलीला भी होती है। लोलार्ककुण्ड में एकबार भी स्नान करने वाले को धन, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और रोग की निवृत्ति होती है। भक्ति, ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्री दर्शन, स्नान, पूजन करते हैं तथा मनौतियाँ मानते हैं। मनोरथ पूर्ण होने के पश्चात् पञ्च-बाजा बजाते हुए स्नान-दर्शन करने यात्री आते हैं। काशी खण्ड में स्नान-दर्शन-पूजन का बहुत महत्व लिखा है। भाद्र शुक्ल षष्ठी के दिन लगभग तीन लाख यात्री स्नान-दर्शन करते हैं। लोलार्क से गङ्गा किनारे से दक्षिण, अस्सी मुहल्ले में अस्सी घाट पर

मार्जन करके, गङ्गाजल साथ में लेकर जायँ, अस्सी घाट के ऊपर जो शिवालय है, इसे ही अस्सी सङ्गमेश्वर का मन्दिर कहते हैं। इसी मंदिर के समीप में माया देवी हैं। अस्सी सङ्गमेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य, पद्मपुराण एवं ब्रह्माण्ड-पुराण में संगमेश्वर के नाम से प्राप्त है।

२३. अस्सी सङ्गमेश्वराय नमः (मन्दिर नं० बी० १/१७४ में हैं, मु० अस्सी घाट)– अस्सी सङ्गमेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, रोग से मुक्ति मिलती है और गरीबी दूर होती है। इसके साथ ही ऐश्वर्य, लक्ष्मी, बुद्धि और भक्ति-ज्ञान में भी वृद्धि होती है। अस्सी संगमेश्वर के पास में प्रति दिन कथा होती है, गीता, भागवत् तथा रामायण और वेद-पुराण के सम्मेलन होते हैं और बड़े बड़े यज्ञ होते हैं। अस्सी सङ्गमेश्वर से दक्षिण नगवा, लङ्का चौराहा, मानस मंदिर के बगल से होते हुये दुर्गाकुण्ड जाना होता है।

दुर्गा-कुण्ड, दुर्गा तीर्थाय नमः। कुण्ड में मार्जन करके यहाँ निवास करना हो तो दुर्गाकुण्ड में स्नान करके दर्शन करना चाहिए। दुर्गा विनायक का प्रमाण-काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव पुराण और लिङ्ग पुराण में है।

दुर्गा-कुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने में गणेश जी की मूर्ति है, जो उत्तराभिमुख है।

२४. दुर्ग विनायकाय नमः (मंदिर नं० बी० २७/२ में है, मु० दुर्गाकुण्ड)– दुर्ग विनायक के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दैहिक, दैविक और भौतिक आदि पाप-ताप शान्त होते हैं। सब कार्य सफल होते हैं। ये दुर्गति और दरिद्रता आदि दुखों को दूर करते हैं। दुर्गा देवी जी का प्रमाण देवी भागवत, शिव पुराण, स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव रहस्य, मत्स्य पुराण और पद्म पुराण में उपलब्ध है। दुर्गा विनायक से पश्चिम बगल में दुर्गा जी का मन्दिर है। दुर्गा जी की प्रतिमा पश्चिमाभिमुख है।

२५. दुर्गा देव्यै नमः (मंदिर नं० बी० २७/२ में है, मु० दुर्गाकुण्ड)–

दुर्गा जी के दर्शन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट एवं संकट नष्ट होते हैं। ग्रहों की पीड़ा दुर्गा जी की कृपा से शान्त होती है और दुर्गाजी अन्त में मुक्ति दिलाती हैं। इनके दर्शन से धन, पुत्र तथा सुख के साधन प्राप्त होते हैं। पुरवासियों की ये कल्याण करती हैं। विद्या, बुद्धि तथा आयु की वृद्धि होती है। भक्तों को अन्त समय में मुक्ति प्राप्त होती है।

दुर्गाजी में गणेश, शिवशक्ति, विष्णु यज्ञ होते हैं और दुर्गा सप्तसती का पाठ तथा रामायण उपनिषद् आदि सम्मेलन होते हैं। बड़े-बड़े यज्ञ भी होते हैं।

''ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र मधुपायस लड्डुकैः।''

(काशी रहस्य अ० १०)

दुर्गाजी में ब्राह्मणों को लड्डू आदि मिष्ठान्न, जलपान कराकर द्रव्यादि दक्षिणा देकर प्रणाम करें और साधुओं को जलपान दें। गरीबों को लाई, पैसा देकर दुर्गा जी से प्रार्थना करें।

''जय दुर्गे महादेवि ! जय काशी निवासिनी !
क्षेत्र विघ्न हरे देवि ! पुनर्दर्शनमस्तुते।।''

इस प्रकार दुर्गाजी को नमस्कार करके शिव रहस्य के अनुसार दुर्गाजी में सात रात्रि की पञ्च-क्रोशी यात्रा में यात्री दुर्गा जी में निवास करते हैं। यात्री दुर्गाकुण्ड में स्नान करके दुर्गा जी का दर्शन करते हैं। दुर्गा जी के दर्शन-पूजन के पश्चात् कोई कोई यात्री नगवा के दक्षिण लंका चौराहा से पूर्व अस्सी नदी के दक्षिण (अस्सी नदी एवं संगम) गङ्गा के पास में जाकर निवास करते हैं।

क्षेत्रम्प्रदक्षिणी कुर्वस्तिलमात्रन्न सन्त्यजेत्।

पञ्च-क्रोशी-दर्शन-यात्रा करते समय तिल मात्र भी मार्ग की भूमि को नहीं छोड़ना चाहिए। दर्शनार्थी पञ्चक्रोशी मार्ग-सड़क को छोड़कर देवताओं का दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् उसी मार्ग से पञ्चक्रोशी सड़क पर आकर यात्रा प्रारम्भ करते हैं। दुर्गा जी से दक्षिण से उसी मार्ग से

लङ्का चौराहा होते हुए महामना मदन मोहन मालवीय जी की मूर्ति अर्थात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के फाटक के बाहर से पश्चिम कंदवा जाने वाली पञ्चक्रोशी सड़क से पश्चिम की ओर यात्री कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के १० वें अध्याय के अनुसार पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा में दुर्गाजी में प्रथम दिन रात्रि में विश्राम करने का विधान है। पञ्चक्रोशी यात्रा में दुर्गाजी का दर्शन करके विश्राम करने के लिए, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के फाटक के बाहर पश्चिम बगल में शंकरजी के मन्दिर में दक्षिणेश्वर हैं। दक्षिणेश्वर मोटे महादेव जी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

दक्षिणेश्वराय नमः। (मु० मोटे महादेव) दक्षिणेश्वर का प्रमाण इस प्रकार स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण, पद्म पुराण में उपलब्ध है।

आदित्य नगर करमहिताल पुर चौराहा से उत्तर आधा फर्लाङ्ग पर करमहितालपुर गाँव में शंकर जी के मन्दिर में जो दिव्य शिवलिङ्ग है, वही विश्वक्सेनेश्वर हैं। विश्वक्सेनेश्वर का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण, काशी वैभव, काशी यात्रा और काशी-दर्शन-यात्रा में है।

२६. विश्वक्सेनेश्वराय नमः। (करमहितालपुर गाँव में है)।— विश्वक्सेनेश्वर का दर्शन, पूजन करने वालों भक्तों के दुःख-दरिद्रता (गरीबी), भय आदि दूर होते हैं। धन, पदोन्नति, व्यापार, मान-प्रतिष्ठा तथा भक्ति एवं ज्ञान की वृद्धि होती है। ये पुरवासियों की रक्षा करते हैं। मंदिर का जीर्णोद्धार कराने वाला व्यक्ति सब कार्य में विजयी होता है। विश्वक्सेनेश्वर से उसी मार्ग से आदित्य नगर पञ्चक्रोशी सड़क पर आदित्य नगर से पश्चिम चितईपुर होते हुए कन्दवा। पहली गली छोड़कर दूसरी उत्तर जाने वाली गली से विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा-तालाब) है। तालाब के उत्तरतट में विशाल कर्दमेश्वर मन्दिर का दर्शन होता है। कर्दमेश्वर नित्य-दर्शन यात्रा प्रारम्भ।

२७. आदि कर्दमेश्वर तीर्थाय नमः। कर्दमेश्वर मन्दिर से सटा हुआ पश्चिम बगल में यह स्थान कुँआ के रूप में है। कर्दम कूपाय नमः। काशी

रहस्य के अनुसार कर्दम कूप का दर्शन करना चाहिए। कर्दम कूप से सटे हुए पश्चिम दक्षिण बगल के शंकर जी के मंदिर में सोमनाथेश्वर हैं। काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव रहस्य और काशी-दर्शन में सोमनाथेश्वर का वर्णन है।

२८. सोमनाथेश्वराय नमः (कर्दमेश्वर कंदवा गाँव में हैं)।- सोमनाथेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति को भक्ति, सुख और शन्ति की प्राप्ति होती है तथा शत्रु पराजित होते हैं। कर्दम कूप से सटे हुए उत्तर में विरूपाक्षगण के मन्दिर में विरूपाक्षगण हैं, इनका प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण और नन्दी उप-पुराण में है।

२९. विरूपाक्षगणाय नमः (मु० कर्दमेश्वर)- विरूपाक्षगण के दर्शन करने वाले भक्तों को ये दुःख, संकट आपत्ति में तत्काल रक्षा और ग्रामवासियों के कल्याण करते हैं। विरूपाक्षगण के उत्तर बगल के शंकर जी के मंदिर में नीलकण्ठेश्वर हैं। काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, लिङ्गपुराण, शिव पुराण, पद्मपुराण और ब्रह्माण्ड पुराण में नीलकण्ठेश्वर का प्रमाण मिलता है।

३०. नीलकण्ठेश्वराय नमः (कर्दमेश्वर)- नीलकण्ठेश्वर के दर्शन-पूजन से घर में सुमति, सुव्यवस्था एवं घर में लक्ष्मी निवास करती हैं। नीलकण्ठेश्वर के दक्षिण बगल में जो विशाल मंदिर का दर्शन होता है वही कर्दमेश्वर हैं। कर्दमेश्वर का वर्णन ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, लिङ्गपुराण और शिवपुराण में प्राप्त होता है।

३१. कर्दमेश्वराय नमः (मु० कर्दमेश्वर)- कर्दमेश्वर के दर्शन-पूजन, उपासना एवं आराधना करने वाले भक्तों के दुःख, चिन्ता, कष्ट और रोग दूर होते हैं। धन, जन, मित्र, सन्तान, बुद्धि, विद्या, भक्ति एवं ज्ञान की वृद्धि होती है। ये पुरवासियों का कल्याण करते हैं। कर्दमेश्वर के दर्शन, पूजन, उपासना से दर्शनार्थियों के मन के अनुसार उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं। कर्दमेश्वर में यज्ञ और कथा होती है तथा वेद, पुराण, रामायण आदि

सम्मेलन होते हैं, कीर्तन होते हैं। कर्दम ऋषि का विशेष वर्णन श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कन्द के २१ वें अध्याय के ४४ वें श्लोक से प्राप्त होता है। कर्दम ब्रह्मर्षि साक्षात् विष्णु रूप में अवतार लिये हुए अपने पुत्र कपिलदेव (कपिल मुनी) और स्त्री देहौती से संन्यास लेने के लिए उनसे आज्ञा प्राप्त कर संन्यास ग्रहण किये और निवृत्ति-मार्ग ग्रहण करके तपस्या करने के लिए उन्होंने काशी में आकर काशी की दर्शन-यात्रा करने के पश्चात् कंदवा गाँव में अपने करकमलों से कर्दमेश्वर को स्थापित किया और दर्शन-पूजा करते हुए वे तपस्या करने लगे। कुछ दिन के पश्चात् भवानी शंकर प्रगट हो गये। विश्वनाथ जी बोले– 'तुम्हारी तपस्या से मैं प्रसन्न हूँ, वर माँगो !' कर्दम ब्रह्मर्षि बोले-'मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। कर्दमेश्वर और कर्दमेश्वर के भक्तों को वरदान दीजिए।' विश्वनाथ भगवान कहते हैं– 'जो नर-नारी कर्दमेश्वर के दर्शन, पूजन, अर्चन और उपासना करेंगे उन दर्शनार्थी-यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होंगे, परिवार में धन, बुद्धि और भक्ति-ज्ञान की वृद्धि होगी।' ऐसा वरदान देकर विश्वनाथजी अन्तर्धान हो गये। कर्दमेश्वर गण मन्दिर के बाहर दालान में हैं। उनको पञ्चव्रीहि-पाँच प्रकार के (धान्य) अन्न, काला तिल चढ़ता है। कर्दमेश्वर को गंगा जल, श्रीखण्ड-चन्दन, पुष्प, विल्व-पत्र, धूप-दीप, वस्त्र, द्रव्य ऋतु फल, मिष्टान्न, पक्वान्न आदि प्रसाद चढ़ता है। भीख माँगने वाले को पैसा देकर कर्दमेश्वर से दक्षिण सड़क के बगल में धर्मशाला में जाकर सफाई करके कूप जल, गंगा जल, छिड़ककर, आसन बिछाकर मध्याह्न की संध्या करने के पश्चात् कर्दमेश्वर में ३१ श्लोकों में हवन करके ब्राह्मणों की पूजा तथा पितृ-तर्पण और श्राद्ध करने का विधान लिखा है। तत्पश्चात् ब्राह्मण, साधु-महात्मा और संन्यासियों को भोजन कराना चाहिए, इसके अभाव में जलपान कराना चाहिए। जलपान का भी साधन न हो तो दूर से साधु, महात्मा और ब्राह्मण को नमस्कार करें। अपने परिवार सहित हविष्य अन्न का भोजन करें। कुछ देर विश्राम करने के पश्चात् तीन बजे से कथा श्रवण करें।

यात्रियों में जो विद्वान्, ब्राह्मण, साधु, महात्मा और संन्यासी हों उन्हें सभी यात्रियों को कथा-श्रवण कराना चाहिए। जो कथा श्रवण कराते हैं उन विद्वानों से विश्वनाथ-भवानी प्रसन्न होते हैं। व्यासजी का कथन है कि पुराणों की कथा श्रवण कराना चाहिए।

प्रश्न- कौन-कौन ग्रन्थों की कथा श्रवण करें ?

उत्तर- पञ्चक्रोशी माहात्म्य, पञ्चक्रोशी यात्रा करने की विधि, पञ्चक्रोशी-यात्रा करने का फल, काशी-मोक्ष-निर्णय, काशी माहात्म्य और काशी दर्शन यात्राओं का वर्णन तथा काशी की महिमा। उपर्युक्त पुस्तकें पढ़ें। कथा श्रवण करने के पश्चात् स्नान, सायं संध्या करने के पश्चात् "शिव-शिव" नाम मन्त्र जपते हुए और कर्दमेश्वर की जय हो, जयकार करते हुए कर्दमेश्वर के दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् यात्री अपने-अपने आसन पर बैठकर कीर्तन, जप, ध्यान आदि करके, विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए शयन करें। प्रातः स्नान, संध्या, देव, ऋषि, पितृ-तर्पण, पूजा-पाठ आदि सूक्ष्म रूप से नित्य कर्म से निवृत्त होकर कर्दमेश्वर जी का दर्शन करके प्रार्थना करें–

कर्दमेश महादेव काशिवासि जनप्रिय ।
त्वत्पूजनान्महादेव पुनर्दर्शनमस्तुते ॥

तत्पश्चात् एक स्वर से कीर्तन करते हुए यात्री, दर्शन-यात्रा प्रारम्भ करते हैं। जिस यात्री के पास साधन (धन) हो उस यात्री को प्रत्येक पड़ाव के मन्दिर में तीन घण्टा कीर्तन कराना चाहिए। कीर्तन करने-कराने से यात्रा के देवता, विश्वनाथ भगवान तथा पितृगण प्रसन्न होते हैं।

वेदव्यास जी लिखते हैं– भक्त लोग कीर्तन करें, परोपकार करें तथा यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, द्रव्य और औषधि आदि का दान करें। यात्रा में सङ्कल्प करें कि 'मैं आज से पाप कर्म नहीं करूँगा और मैं प्रति दिन एक मुट्ठी अन्न, एक पैसा आदि दान करूँगा और वस्त्र, औषधि आदि यथाशक्ति दान दूँगा। सभी प्राणियों के प्रति करुणा और दया का भाव

रखूँगा तथा निष्काम सेवा करने का आज से अभ्यास करूँगा।' यह भी संकल्प लें कि– 'आज से मैं भगवानं की भक्ति करूँगा।' यात्री मन्दिरों के जीर्णोद्धार करने के भी संकल्प लेते हैं। मन्दिर के प्रथम फाटक के बाहर फूल, माला, नारियल, लायची दाना, रेजगारी, ऋतु फल, मिष्टान्न तथा पूजा के सामान, धार्मिक पुस्तकों की दुकान प्रयत्न पूर्वक रखना चाहिए। कर्दमेश्वर से पश्चिम पञ्चक्रोशी सड़क से दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं। आगे अमरा गाँव में दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में नागनाथेश्वर हैं। इनका काशीरहस्य, काशीखण्ड, शिवपुराण और लिंग पुराण में वर्णन है।

३२. नागनाथेश्वराय नमः (मु० अमरा गाँव में)–नागनाथेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को नाग (साँप) का भय नहीं होता और दर्शन से भक्त के परिवारों को नाग (सर्प) नहीं काटते। काशी रहस्य, काशी खण्ड, देवी भागवत् में चामुण्डा देवी का वर्णन है।

३३. चामुण्डा देव्यै नमः (मु० अमरा गाँव में)– चामुण्डा देवी जी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के शत्रु परास्त होते हैं। देवी अपने भक्तों की दुःख-दरिद्रता और अमान को दूर करती हैं या गाँव वालों की रक्षा करती हैं। इनके दर्शन से भूत, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी की बाधा दूर होती है। अष्टमी तथा मङ्गल वार के दिन प्रयत्न पूर्वक दर्शन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नवरात्र भर अवश्य दर्शन करना चाहिए। चामुण्डा देवी से पश्चिम दोहना गाँव में सड़क से दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में मोक्षेश्वर हैं। मोक्षेश्वर का प्रमाण- स्कन्द पुराण, काशी रहस्य, लिङ्ग पुराण, शिवपुराण आदि में मिलता है।

३४. मोक्षेश्वराय नमः (मु० देहना गाँव में है)।– मोक्षेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट और घर में कलह नहीं होते। इसके साथ ही अज्ञानता दूर होती है। अन्त में भक्ति की प्राप्ति होती है। मोक्षेश्वर गाँव वालों की रक्षा करते हैं। अतः सोमवार प्रदोष के दिन दर्शन-यात्रा

करें। मोक्षेश्वर के पश्चिम बगल में दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में करुणेश्वर हैं। इसका प्रमाण-काशीरहस्य, काशी खण्ड, शिवरहस्य और काशी दर्शन-यात्रा में मिलता है।

३५. करुणेश्वराय नमः (मु० देहना गाँव में)– करुणेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्तियों में सभी प्राणियों में दया और करुणा की भावना उत्पन्न होती है। भक्तों के दुःख और गरीबी दूर होती है तथा जन-धन की वृद्धि होती है। करुणेश्वर के पश्चिम बगल में दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में वीरभद्रगण की मूर्ति पूर्वाभिमुख है। वीरभद्रगण का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण और शिवपुराण में प्राप्त होता है।

३६. वीरभद्रगणाय नमः (देहना गाँव में)– जो भक्त वीरभद्रगण के दर्शन-पूजन करता है उसके शत्रु मित्र होते हैं और वह व्यक्ति निर्भय हो जाता है। वीरभद्रगण गाँव वालों की रक्षा करते हैं और परिवार, धन, भक्ति आदि में वृद्धि करते हैं। वीरभद्रगण के पश्चिम बगल में सड़क से दाहिनी तरफ विकटाक्ष देवी के मन्दिर में इनकी प्रतिमा हैं। विकटाक्ष देवी जी का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य, काशी वैभव और काशी-दर्शन-यात्रा में है।

३७. विकटाक्ष दुर्गा देव्यै नमः (मु० देहना गाँव में है)।– विकटाक्ष देवी के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को सुख-सम्पत्ति और विद्या की प्राप्ति होती है। प्रत्येक अष्टमी और मङ्गलवार के दिन इनका दर्शन किया जाता है। देवी जी के पश्चिम बगल में हनुमान जी के मन्दिर से सटा हुआ उत्तर बगल का मंदिर है, जो पूर्वाभिमुख है।

उन्मत्त भैरव तीर्थ के उत्तर बगल में विशाल कुण्ड (तालाब) है। उन्मत्त भैरव का काशी खण्ड, काशी रहस्य और लिङ्ग पुराण में वर्णन है।

३८. उन्मत्त भैरवाय नमः (मु० देऊरा गाँव में है)।– उन्मत्त भैरव के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-कष्ट और चिन्ता दूर होती है। उनके भक्त सभी कार्यों में सफल होते हैं। इनके दर्शन से भूत, प्रेत, शत्रु आदि

कष्ट नहीं देते। इनके मन्दिर का जीर्णोद्धार कराने के पश्चात् भक्त जो भी कामना या प्रार्थना करता है वह पूर्ण होती है। इसके साथ ही उसके असाध्य रोग भी शान्त होते हैं। जेल में बन्द कैदी छूट जाते हैं, पुत्र की प्राप्ति होती है। प्रत्येक अष्टमी और मङ्गलवार के दिन इनके दर्शन अवकाश लेकर करना चाहिए। उन्मत्त भैरव के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में नीलकण्ठगण की मूर्ति है, जो पूर्वाभिमुख हैं। नीलकण्ठगण का प्रमाण काशीरहस्य, काशी-दर्शन आदि में प्राप्त होता है। नीलकण्ठगणाय नमः। (मु० देउरा गाँव में) नीलकण्ठगण के दर्शन-पूजन से धन-धान्य की प्राप्ति होती है तथा गाँव वालों की रक्षा होती है। नीलकण्ठगण के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में जो मूर्ति पूर्वाभिमुख है वही नीलकण्ठगण हैं। नीलकण्ठगण का काशी-दर्शन-यात्रा में वर्णन है।

३९. कालकूटगणाय नमः (मु० देऊरा गाँव में)– कालकूटगण के दर्शन-पूजन से काल का भय नहीं होता। इनके दर्शन करने वाला व्यक्ति अल्प समय में ही मनोरथ को पूर्ण करता है। इनके दर्शन, पूजन से पुरवासियों की रक्षा होती है। कालकूटगण के पश्चिम बगल में सड़क से दाहिनी तरफ देवी के मन्दिर में विमला देवी की प्रतिमा है, जो पूर्वाभिमुख है। विमला देवी जी का प्रमाण काशीरहस्य, काशी भैरव, काशी-वार्षिक-यात्रा आदि में विस्तृत वर्णन है।

४०. विमला दुर्गा देव्यै नमः (मु० देऊरा गाँव में है)।– विमला देवी के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को देवी धन, धान्य और सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं, पुरवासियों का कल्याण करती हैं। अतः भक्तों को प्रत्येक अष्टमी, मंगलवार के दिन दर्शन, पूजन करना चाहिए। विमला देवी के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में महादेवेश्वर का शिवलिंग है। महादेवेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव पुराण एवं लिंगपुराण में प्राप्त होता है।

४१. महादेवेश्वराय नमः (मो० देऊरा गाँव में है)– महादेव के दर्शन-पूजन से शिव-शक्ति-गणेश और विष्णु की भक्ति प्राप्त होती है, साथ ही धन, विद्या, सुख तथा शान्ति की वृद्धि होती है। महादेव के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ काशी रहस्य और काशी खण्ड में विस्तृत रूप में प्राप्त होता है।

४२. नन्दिकेश्वराय नमः (मु० देऊरा गाँव में है)– नन्दिकेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाला व्यक्ति बलवान् और तेजस्वी होता है। इनके दर्शन से शत्रु परास्त होते हैं और शंकर-भवानी की भक्ति प्राप्त होती है। नन्दिकेश्वर के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में भृंगीरीटगण की प्रतिमा है जो पूर्वाभिमुख है। काशीरहस्य, शिव पुराण में भृंगीरीटगण का वर्णन है।

४३. भृंगीरीटगणाय नमः (मु० देऊरा गाँव में)– भृंगीरीटगण के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ गौरा गाँव में शङ्कर जी के मंदिर में गणप्रियेश्वर का शिव लिंग है। काशीरहस्य, शिव पुराण में इनका वर्णन है। गणप्रियेश्वराय नमः (गौरा गाँव में है।)

४४. अपने दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के दुःख और दरिद्रता को दूर करते हैं, पुरवासियों की रक्षा करते हैं। गणप्रियेश्वर से पश्चिम बगल में शङ्कर जी के मन्दिर में विरूपाक्ष गण हैं, जो पूर्वाभिमुख हैं। विरूपाक्षगण का प्रमाण काशीरहस्य लिङ्ग पुराण, शिव पुराण में है।

४५. विरूपाक्षगणाय नमः (मु० गौरागाँव में है) विरूपाक्षगण के दर्शन, पूजन करने वाला भक्त सब कार्य में सफल होता है और ये गाँव वालों की रक्षा करते हैं। विरूपाक्षगण से पश्चिम बगल में चकमातलदेई गाँव में सड़क के दाहिने तरफ शंकरजी के मंदिर में यक्षेश्वर हैं।

४६. यक्षेश्वराय नमः (चकमातलदेई गाँव में है)।– यक्षेश्वर के दर्शन, पूजन से मनुष्य बुद्धिमान और चतुर होता है तथा ये पुरवासियों को सुख प्राप्त कराते हैं। यक्षेश्वेर के पश्चिम प्रयागपुर गाँव में सड़क के दाहिनी

तरफ शंकर जी के मंदिर में विमलेश्वर की प्रतिमा है। विमलेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य, लिंग पुराण में प्राप्त होता है।

४७. विमलेश्वराय नमः (मु० प्रयागपुर गाँव में है)।– विमलेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट व रोग शान्त होते हैं। विमलेश्वर के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिने तरफ शङ्करजी के मंदिर में मोक्षेश्वर का शिवलिंग है। मोक्षेश्वर का प्रमाण काशीरहस्य, काशीदर्शन यात्रा, शिव पुराण में प्राप्त होता है।

४८. मोक्षेश्वराय नमः (मु० प्रयागपुर गाँव में है)।– मोक्षेश्वर के दर्शन, पूजन से इस लोक में सुख-शान्ति और अन्त में मुक्ति की प्राप्ति होती है, तथा शत्रु मित्र बनते हैं। मोक्षेश्वर के पश्चिम बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शङ्कर जी का मंदिर है जिसमें ज्ञानेश्वर का शिव लिंग है। ज्ञानेश्वर का प्रमाण लिंग पुराण, काशी रहस्य, स्कन्द पुराण में वर्णित है।

ज्ञानेश्वराय नमः (मु० प्रयागपुर गाँव में है)। ज्ञानदेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति को ज्ञान उत्पन्न होता है और मंदिर के जीर्णोद्धार कराकर जो भक्त प्रार्थना करता है उसके सभी कार्य सिद्ध होते हैं, नौकरी में पदोन्नति होती है एवं सर्वत्र विजय प्राप्त करता है। ज्ञानदेश्वर के पश्चिम असवारी गाँव में सड़क के दाहिनी तरफ शङ्कर जी के मंदिर में अमृतेश्वर हैं। अमृतेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य, शिव पुराण, काशी दर्शन में प्राप्त होता है।

५०. अमृतेश्वराय नमः (मु० असवारी गाँव में है)।– अमृतेश्वर के दर्शन, पूजन से रोग, दुःख और कष्ट दूर होते हैं। भक्त को भक्ति एवं शान्ति प्राप्त होती है। अमृतेश्वर से पश्चिम भीमचण्डी गाँव में पहले बायीं तरफ धर्मशाला मिलेंगे, इसके आगे दाहिनी तरफ विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) है वही गन्धर्वसागर तीर्थ है। स्नान करके पितरों का तर्पण करने से पापों का क्षय होकर पुण्य का उदय होता है।

५१. गन्धर्वसागर भीमचण्डी तीर्थाय नमः (मु० भीमचण्डी)– कुण्ड में स्नान करके, पूजन की सामग्री साथ में लेकर दर्शन-पूजन करते हुए चलें। गन्धर्वसागर के पूर्व दक्षिण के कोने के शिव मंदिर में जो पश्चिमाभिमुख हैं, वे ही नरकार्णावतार शिव गण हैं। इनका प्रमाण काशीरहस्य, काशी-दर्शन-यात्रा, काशी-वार्षिक-यात्रा और शिव पुराण में मिलता है। ये शिव जी के गण हैं।

५२. नरकार्णावतार शिवाय नमः (मु० भीमचण्डी)– इनके दर्शन, पूजन तथा उपासना करने वाले सभी मनुष्यों की आकांक्षाओं की पूर्ति होती है। परिवार में द्रव्य और भक्ति की वृद्धि होती है। गन्धर्वसागर तीर्थ के पश्चिम दक्षिण के कोने में बडे शिवालय में गन्धर्वेश्वर हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, लिंग पुराण में गन्धर्वेश्वर का वर्णन है।

५३. गन्धर्वेश्वराय नमः (मु० भीमचण्डी)– गन्धर्वेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले भक्तों की वाणी मधुर, प्रिय एवं हितकर होती है, और वह सबका निष्काम सेवा करने वाला होता है। इसके साथ ही भक्ति एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। गन्धर्वेश्वर के दक्षिण बगल की त्रिमुहानी के बायीं तरफ का कुँआ भीमचण्डी शक्ति तीर्थ है। इसी कुँआ से यात्री पानी पीने, भोजन आदि की व्यवस्था करते हैं।

भीमचण्डी शक्ति तीर्थाय नमः। इस शक्ति तीर्थ से पश्चिम बगल में भीमचण्डी देवी के मन्दिर से सटे हुए पूर्व बगल में गणेश मन्दिर है। गणेश जी की प्रतिमा उत्तराभिमुख है। भीमचण्ड विनायक का वर्णन काशी खण्ड के ५७ वें अध्याय और काशी रहस्य के दशम अध्याय में है।

५४. भीमचण्ड विनायकाय नमः (मु० भीमचण्डी)– भीमचण्ड विनायक के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के सब कार्य सिद्ध होते हैं और भविष्य में आने वाला दुःख, कष्ट, विघ्न-बाधा दूर होती है।

भीमचण्डविनायक से सटा हुआ गन्धर्व के मंदिर में गन्धर्व की प्रतिमा है जो उत्तराभिमुख है। गन्धर्व का प्रमाण काशीरहस्य, स्कन्द पुराण, शिवपुराण

और पद्मपुराण में है।

५५. रविरक्ताक्षगन्धर्वाय नमः (मु० भीमचण्डी)– रविरक्ताक्ष गन्धर्व के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को सुख, सम्पत्ति, भक्ति की प्राप्ति होती है, और परिवार में सुख, शान्ति होती है।

गन्धर्व से उत्तर बगल में हनुमान जी के मंदिर के बगल में शंकर जी के मंदिर में भीमचण्डेश्वर हैं। काशीरहस्य, काशीखण्ड और लिङ्ग पुराण में भीमचण्डेश्वर वर्णित हैं।

भीमचण्डेश्वराय नमः (मु० भीमचण्डी)– भीमचण्डेश्वर के दर्शन, पूजन से व्यक्ति बलवान, बुद्धिमान, तेजस्वी होता है और लक्ष्मी, सन्तति सुख की वृद्धि होती है। भीमचण्डेश्वर के दक्षिण बगल में देवी जी का मंदिर है जिसमें भीमचण्डी देवी जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है।

भीमचण्डी देवी जी का उल्लेख स्कन्दपुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, देवीभागवत पुराण और शिवपुराण में है।

५६. भीमचण्डी देव्यै नमः (मु० भीमचण्डी)– भीमचण्डी देवी के दर्शन-पूजन जो करते हैं उनके शारीरिक रोग, मानसिक चिन्ता तथा दुःख, कष्ट और दरिद्रता आदि नष्ट होकर धन-सम्पत्ति, विद्या की वृद्धि होती है। भीमचण्डी जी से पूर्व बगल में ग्यारह धर्मशालाएँ हैं। धर्मशाला में जाकर सफाई करके गंगाजल का छिट्टा देकर आसन बिछाकर मध्याह्न संध्या करने के पश्चात् साधु, महात्मा और संन्यासियों को यथाशक्ति भोजन या जलपान देकर अपने परिवार सहित हविष्य अन्न का एक समय भोजन करें। तीन बजे के पश्चात् कथा श्रवण करें, कथा श्रवण के पश्चात् स्नान संन्ध्या करके भीमचण्डी देवी जी का दर्शन करें तत्पश्चात् कीर्तन करें। यात्री अपने-अपने इष्टदेव का ध्यान करें, ध्यान के पश्चात् विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए रात्रि में शयन करें। दर्शनार्थी प्रत्येक अष्टमी, मंगलवार के दिन गन्धर्व सागर में स्नान करके भीमचण्डी देवी का दर्शन, पूजा करते हैं, देवी जी की कृपा से यात्रियों के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं।

दोनों नवरात्र में और प्रत्येक अष्टमी मंगलवार के दिन दर्शन-पूजन करने वालों की विशेष भीड़ होती है। भीमचण्डी देवी को सफेद पेड़ा (कद्दू) और नारियल की बलि चढ़ती है।

जो लोग बकरे की बलि चढ़ाते हैं उनको भीमचण्डी देवी शाप देती हैं। यात्री शुभ कार्य सम्पन्न करने के लिए एक दिन पहले भीमचण्डी देवी जी का दर्शन करते हैं और मनौती मानते हैं। कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् पञ्च बाजा बजाते हुए लाल चादर की डोली बनाकर, पूजा की सामग्री डोली (पालकी) में रख करके कीर्तन करते हुए चलते हैं और 'भीमचण्डी की जय हो' की जयकार करते हुए एवं हरहर महादेव की ध्वनि करते हुए बारात के समान मनोहर गीत गाते हुए सब पंक्तिबद्ध होकर चलते हैं। भीमचण्डी में शिव-शक्ति, विष्णु आदि यज्ञ होते हैं और वेद-वेदान्त-गीता एवं भागवत दुर्गा सप्तसती आदि का सम्मेलन होता है। कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, रामायण पाठ एवं अखण्ड रामायण होते हैं। यहाँ भीमचण्डी मठ है। दूसरे दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर दर्शन-पूजन करने के पश्चात् प्रार्थना करें । प्रार्थना मन्त्र निम्नलिखित है–

भीमचण्डिः प्रचण्डानि, मम विघ्नान्विनाशय।
नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि, पुनर्दर्शनमस्तु ते।।
भीमचण्डि ! महादेवि ! सर्वराक्षसभक्षिणि !।
मुनित्राणकरे देवि ! नमस्तेऽस्तु पुनः पुनः।।

इस प्रकार प्रार्थना करके यात्री अपना-अपना सामान गाड़ी में रख करके या स्वयम् साथ में ले करके भीमचण्डी देवी से उत्तर पञ्चक्रोशी सड़क से दर्शन, पूजन करते हुए शनैःशनैः चलते हैं। राजातालाब चौराहा से उत्तर रामेश्वर जाने वाली पञ्चक्रोशी सड़क से आगे सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर कचनार गाँव में एकपाद शिवगण का दर्शन-पूजन करते हैं। एकपाद शिवगण का प्रमाण-शिव पुराण, कांशीरहस्य, काशीदर्शन में उपलब्ध है।

५७. एकपाद शिवगणाय नमः (मु० कचनार गाँव में है)।– एकपाद शिवगण के दर्शन-पूजन से भक्तों के दुःख, कष्ट दूर होते हैं ! और भक्तों के परिवार की रक्षा होती है। एकपाद शिवगण पुरवासियों का कल्याण करते हैं और जो व्यक्ति विजयी होना चाहता है वह व्यक्ति मंदिर का जीर्णोद्धार कराने के पश्चात् प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर, जो प्रार्थना करता है वह अवश्य विजयी होता है। एकपाद शिवगण से उत्तर आगे हर्रे का तालाब है, हरपुर गाँव में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी का मंदिर है, जिसमें महाभीम का शिवलिंग है। महाभीम का शिवपुराण, स्कन्द पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण में वर्णन है।

५८. महाभीमगणाय नमः (मु० हरपुर गाँव में है)।– महाभीम के दर्शनपूजन से व्यक्ति बलवान, विद्यावान् और बुद्धिमान होता है उनके भक्तों के शत्रु परास्त होते हैं।

महाभीम से उत्तर आगे हरशोत गाँव में सड़क के दाहिने तरफ पूर्व में भैरव मुहल्ला में जाने वाली गली से सड़क से लगभग एक फर्लांग पर भैरव मंदिर है। भैरव तीर्थ कुँआ के रूप में है। भैरवेश्वर के मन्दिर में दो मूर्त्तियाँ हैं जो पूर्वाभिमुख हैं। काशीरहस्य, काशी खण्ड, लिङ्ग पुराण में भैरव का वर्णन है।

५९. भैरवाय नमः (मु० हरशोत गाँव में है)।

६०. भैरवी देव्यै नमः (मु० हरशोत गाँव में है)।– भैरव भैरवी के दर्शन, पूजन और उपासना करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, रोग तत्काल नष्ट होते हैं। भक्त के परिवार में द्रव्य, आयु तथा व्यापार की वृद्धि होती है। मन्दिर का जीर्णोद्धार करने वाला व्यक्ति शत्रु आदि से विजय पाने का अधिकारी होता है। भैरव की पूजा और दर्शन से सर्वकार्य की सिद्धि होती है, ग्राम की रक्षा करते हैं। भैरव जी का दर्शन करके सड़क से उत्तर जाने पर दीनदासपुर गाँव में लंगोटिया हनुमान जी के दक्षिण बगल में शंकर जी का मंदिर है जिसमें भूतनाथेश्वर हैं जिनका काशीरहस्य,

काशीखण्ड, लिङ्गपुराण आदि में वर्णन है।

६१. भूतनाथेश्वराय नमः (मु० दीनदासपुर में)– भूतनाथेश्वर के दर्शन-पूजन से भूत, प्रेत, पिशाच, बाधा दूर होती है। धन, सम्पत्ति, बुद्धि एवं सन्तति की प्राप्ति के साथ ही शिव-भक्ति में वृद्धि होती है। भूतनाथेश्वर से उत्तर बगल में लंगोटिया हनुमान जी के पूर्व बगल में विशाल पक्का कुण्ड (तालाब) है जो सिन्धु सरोवर तीर्थ के नाम से काशी रहस्य, स्कन्द पुराण में प्रसिद्ध है।

६२. सिन्धु सरोवर सोमनाथ तीर्थाय नमः।– सिन्धु सरोवर तीर्थ के पश्चिम दक्षिण के कोने में ऊपर शंकर जी के मंदिर में सिन्धु सरोवरेश्वर हैं। लंगोटिया हनुमान जी के पश्चिम बगल में सोमनाथ शक्ति तीर्थ इस समय कुँआ के रूप में हैं। कुँआ के बगल में धर्मशाला है। संस्कृत विद्यालय है। लंगोटिया हनुमान जी से सटा हुआ उत्तर बगल के शंकर जी के मंदिर में सोमनाथेश्वर का लिङ्ग है। इनका प्रमाण स्कन्द, पुराण ब्रह्मवैवर्त पुराण एवं लिङ्गपुराण शिव पुराण में मिलता है।

६३. सोमनाथेवराय नमः (मु० दीनदासपुर, लंगोटिया हनुमान)– सोमनाथेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को सुख, सम्पत्ति, विद्या और सन्तति प्राप्त होती है। परिवार के व्यक्ति दीर्घायु द्रव्य से परिपूर्ण, भक्ति सम्पन्न तथा ज्ञानवान होते हैं। इसके साथ ही ये गाँववालों के कल्याण करते हैं। शिव रहस्य के अनुसार सोमनाथ जी में छः रात्रि और सात रात्रि के पञ्चक्रोशी यात्रा में विश्राम किया जाता है। वृद्ध, रोगी, निर्बल तथा सन्त, राजा, महाराजा सात रात्रि की पञ्च-क्रोशी यात्रा करते हैं। लोगों का ऐसा विचार है, कि जो व्यक्ति मंदिर का जीर्णोद्धार करके सोमनाथ जी का दर्शन करता है, वह भक्त सदा विजयी होता है। सोमनाथ जी में यज्ञ होते हैं और वेद, वेदान्त, रामायण आदि का सम्मेलन होता है। यहाँ मठ है, साधु, महात्मा रहते हैं। सोमनाथ जी का दर्शन प्रत्येक सोमवार, त्रयोदशी-प्रदोष तथा चतुर्दशी तिथि को करना चाहिए। कीर्तन-कथा होते

हैं। सोमनाथ से उत्तर जनसा गाँव में सड़क से दाहिनी तरफ शंकर जी का मंदिर है, जिसमें कालनाथेश्वर शिवलिङ्ग है। इनका प्रमाण काशी रहस्य, काशी दर्शन में मिलता है।

६४. कालनाथेश्वराय नमः (मु० जनसा गाँव में है)।– कालनाथेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को शत्रु का भय नहीं होता और द्रव्य, परिवार, भक्ति की वृद्धि होती है। कालनाथेश्वर से उत्तर बगल में सड़क के दाहिने तरफ शंकर जी का मंदिर है जिसमें कपर्दीश्वर का शिवलिङ्ग है। कपर्दीश्वर का विस्तृत विवरण काशीरहस्य, काशीखण्ड और काशी-दर्शन में है।

६५. कपर्दीश्वराय नमः (मु० जनसा गाँव में है)।– कपर्दीश्वर के दर्शन, पूजा करने से रोग, दुःख दूर होते हैं और सब कार्य सफल होते हैं। कपर्दीश्वर से उत्तर आगे चौखण्डी गाँव में रेलवे लाइन के पास में सड़क के दाहिने तरफ शंकर जी के मंदिर में कामेश्वर का शिवलिङ्ग है। कामेश्वर का लिङ्गपुराण काशीरहस्य, काशी खण्ड और शिव पुराण में वर्णन है।

६६. कामेश्वराय नमः (मु० चौखण्डी गाँव में है)।– कामेश्वर के दर्शन, पूजन करने से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। इनके मंदिर का जीर्णोद्धार, जो भक्त करते हैं वे सब जगह विजयी होते हैं। कामेश्वर से उत्तर बगल में सड़क के दाहिने तरफ गणेश्वर जी का मंदिर है। गणेश्वर का प्रमाण काशीरहस्य, शिवपुराण और काशी खण्ड में प्राप्त होता है।

६७. गणेश्वराय नमः (मु० चौखण्डी गाँव में है)।– गणेश्वर के दर्शन, पूजन करने से सब कार्य सफल होते हैं। गणेश्वर से उत्तर बगल में सड़क के दाहिने तरफ शिव जी का मंदिर है, जिसमें वीरभद्रशिवगण की प्रतिमा है। वीरभद्रशिवगण का प्रमाण काशीरहस्य, लिङ्गपुराण और काशी दर्शन यात्रा में प्राप्त होता है।

६८. वीरभद्रशिवगणाय नमः (मु० चौखण्डी गाँव में है)।– वीरभद्र जी के दर्शन, पूजन से पुरवासियों की रक्षा होती है। वीरभद्र जी से उत्तर

बगल में सड़क के दाहिनी तरफ शंकर जी के मंदिर में चारुमुख शिव की प्रतिमा है। काशी रहस्य, काशी यात्रा में इनका वर्णन है।

६९. चारुमुख शिवगणाय नमः (मु० चौखण्डी गाँव में है)।– चारुमुख शिवजी का दर्शन, पूजन करने वाला व्यक्ति बुद्धिमान तथा चतुर होता है और परिवार के लोगों में बुद्धि की वृद्धि होती है तथा धन की प्राप्ति होती है। चारुमुख शिवगण के उत्तर आगे भटौली गाँव में सड़क के दाहिने तरफ गणनाथेश्वर का मंदिर है। गणनाथेश्वर का प्रमाण काशीरहस्य, नन्दी उपपुराण और काशी दर्शन में है।

७०. गणनाथेश्वराय नमः (मु० भटौली गाँव में है)।– गणनाथेश्वर जी के दर्शन, पूजन से दुःख, विघ्न नहीं आता तथा धन, पुत्र सुख के साधन प्राप्त होते हैं। गणनाथेश्वर से उत्तर आगे की ओर सड़क की दाहिनी तरफ विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) देहली विनायक तीर्थ है। पोखरा के पूर्व तट स्थित बड़े गणेश मंदिर में गिरि नृसिंह विष्णु जी के बगल में देहली विनायक पूर्वाभिमुख हैं। देहली विनायक का स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण एवं लिंगपुराण, मत्स्यपुराण, पद्मपुराण एवं शिव रहस्य में वर्णन है।

७१. देहली विनायकायनमः (मु० भटौली गाँव में)– देहली विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के रिपु परास्त होते हैं और दुःख, कष्ट, विघ्न, रोग आदि भी दूर होते हैं। मंदिर का जीर्णोद्धार करके गणेश जी से जो व्यक्ति प्रार्थना करता है वह सब जगह विजयी होता है। कोई भी शुभ कार्य करने के एक दिन पहले निर्विघ्न कार्य सम्पन्न करने के लिए देहली विनायक जी का दर्शन, पूजन किया जाता है और प्रार्थना की जाती है कि हे गणेश जी! मनोरथ पूर्ण होने के पश्चात् पञ्चबाजा बजाते हुए पुनः दर्शन, पूजन करूँगा। हलुवा, लड्डू आदि का प्रसाद अर्पण करूँगा। देहली विनायक के मंदिर से सटा हुआ पश्चिम दीवाल से सटे हुए गणेश मंदिर में षोडश गणेश जी हैं। इनके दर्शन करके देहली विनायक से उत्तर

आगे लगभग दो किलोमीटर भुइली गाँव में दो मंदिर हैं। उत्कलेश्वर के दक्षिण बगल में स्थित सड़क के दाहिनी तरफ गणेश मंदिर में उद्दण्डविनायक हैं। इनको लड्डू और दूब चढ़ता है। उद्दण्ड विनायक का प्रमाण काशीरहस्य और काशीखण्ड में प्राप्त होता है।

७२. उद्दण्डविनायकाय नमः (मु० भुइली गाँव में है)।– उद्दण्ड विनायक का जो दर्शन पूजा करता है उसके दुश्मन शान्त होते हैं। शत्रु मित्र बन जाते हैं। दर्शन,पूजन और मंदिरों के जीर्णोद्धार करने वाले अपने भक्तों को कष्ट देने वाले व्यक्ति को ये दण्ड देते हैं। उद्दण्डविनायक से सटे हुए उत्तर बगल में स्थित शंकर जी के मंदिर में हैं– उत्कलेश्वर। इनका प्रमाण काशीरहस्य में, वृहत् काशी-दर्शन में एवं काशी वैभव में प्राप्त होता है।

७३. उत्कलेश्वराय नमः (मु० भुइली गाँव में)– उत्कलेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को इस लोक में धन, सुख और शान्ति मिलती है। यदि काशी से बाहर शरीर छूटा (मृत्यु हुई) तो उत्तम लोक की प्राप्ति होती है। उत्कलेश्वर से उत्तर आगे हरीमपुरा गाँव में सड़क के दाहिनी तरफ देवी के मंदिर में पश्चिमाभिमुख रुद्राणी देवी हैं। देवी जी का प्रमाण काशीरहस्य, काशीवार्षिक यात्रा, देवी भागवत्, काशी-दर्शन-यात्रा में देखा जा सकता है।

७४. रुद्राणीदेव्यै नमः (मु० हरीमपुरा गाँव में है)।– तपोभूम्यै नमः (रुद्राणी देवी के पास में है) यह काशी के रुद्राणी देवी के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को धन, पुत्र, सुख आदि की प्राप्ति होती है और शत्रु परास्त होते हैं। मंदिर के जीर्णोद्धार करने के पश्चात् जो भक्त माता से प्रार्थना करता है। उसके मनोरथ पूर्ण होते हैं। रुद्राणी देवी से उत्तर रामेश्वर गाँव में दाहिनी ओर काशी विश्वनाथ गौशाला है, ज़िसमें ५०० गाये हैं। उससे आगे बायीं ओर धर्मशाला है।

७५. रामेश्वर तीर्थाय नमः। वरुणा नदी में स्नान करके पूजन की सामग्री साथ लेकर घाट के ऊपर रामेश्वर से सटे हुए सबसे उत्तर शंकर जी के

मंदिर में सोमेश्वर शिवलिङ्ग है। काशीरहस्य, काशीखण्ड, शिवपुराण में सोमेश्वर का प्रमाण है।

७६. सोमेश्वराय नमः (मु० रामेश्वर में है)।– सोमेश्वर के दर्शन, पूजन से धन, सुख एवं शान्ति मिलती है। अन्त में सोमलोक में बास मिलता है। सोमेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में भरतेश्वर स्थित हैं। भरतेश्वर का प्रमाण काशी रहस्य, काशीखण्ड, लिङ्गपुराण और काशी, दर्शन में मिलता है।

७७. भरतेश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम् में है)।– भरतेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को घर में रहते हुए अनन्य भक्ति प्राप्त होती है। धन, सम्पत्ति, सुख आदि स्वतः प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही भाई-बन्धुओं में अत्यन्त स्नेह-प्रेम स्थापित होता है। भरतेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में स्थित शिवालय में लक्ष्मणेश्वर हैं। लक्ष्मणेश्वर का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण और लिङ्गपुराण में प्राप्त होते हैं।

७८. लक्ष्मणेश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम्)– लक्ष्मणेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के शत्रु परास्त होते हैं और व्यक्ति बुद्धिमान, बलवान, तेजस्वी होता है तथा रोग भी शान्त होते हैं। लक्ष्मणेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में स्थित देवालय में शत्रुघ्नेश्वर हैं। शत्रुघ्नेश्वर का काशीरहस्य, काशीखण्ड शिव रहस्य में वर्णन है।

७९. शत्रुघ्नेश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम् में है)।– शत्रुघ्नेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को माता, पिता और गुरु की भक्ति तथा भाई बन्धुओं में प्रेम रहता है। शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। शत्रुघ्नेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में स्थित शिवालय में ध्यावाभूमीश्वर हैं। इनका प्रमाण काशीरहस्य, काशी दर्शन-यात्रा में प्राप्त होता है।

८०. ध्यावा भूमीश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम् में है)– ध्यावा भूमीश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को धन, जन, भूमि की प्राप्ति होती है और भूमि सम्बन्धी मुकदमों आदि में विजय प्राप्त होती है। ध्यावाभूमीश्वर

के सटे हुए दक्षिण बगल में नहुषेश्वर स्थित हैं। काशी रहस्य और काशी खण्ड में इनका प्रमाण प्राप्त होता है।

८१. नहुषेश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम् में है)– नहुषेश्वर के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं, उनको साधु-महात्माओं जैसा मान-सम्मान और प्रतिष्ठा मिलती है। परिवार में द्रव्य, भक्ति आदि की वृद्धि होती है। नहुषेश्वर से सटे हुए पश्चिम बगल में विशाल मन्दिर है जो रामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। रामेश्वर का प्रमाण रामतापनी उपनिषद्, स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण एवं लिङ्ग पुराण, शिव रहस्य में प्राप्त होता है।

८२. रामेश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम् में है)– रामेश्वर के दर्शन, पूजन, उपासना करने वाले भक्तों को शिव, शक्ति, विष्णु और इष्टदेव की भक्ति सुलभ होती है। इसके साथ ही शूरवीर की भाँति वह सर्वत्र विजयी होता है। रामेश्वर के दर्शन से मानसिक ताप-कष्ट-संकट तथा अन्य रोग-चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है। रामेश्वर को श्वेत तिल, बिल्वपत्र, गङ्गाजल आदि चढ़ता है। रामेश्वर को गंगाजल चढ़ाने का बहुत महत्त्व है।

रामेश्वर के दर्शन के पश्चात् रामेश्वर से दक्षिण बगल में सड़क से सटे हुए पश्चिम बगल में ११ धर्मशालाएँ हैं। धर्मशाला में जाकर सफाई करके, जल छिड़क कर, आसन बिछाकर मध्याह्न सन्ध्या करें, संध्या के पश्चात् जो यात्री सम्पन्न हैं, वे यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, औषधि, द्रव्य आदि का दान करें। परोपकार करें। साधु, सन्त, महात्मा और संन्यासी भगवान् के प्राप्ति के लिए सन्मार्ग को बताने वाले और उपदेश देने वाले, यह सभी भगवान् के चल रूप माने जाते हैं। साधु-महात्माओं को भोजन या जलपान कराकर, अपने परिवार सहित भोजन करें। तीन बजे के पश्चात् कथा श्रवण करें। कथा श्रवण के पश्चात् स्नान-संध्या करके रामेश्वर की जय हो, जय हो, की जयकार और कीर्तन करते हुए रामेश्वर के दर्शन करने जायँ। दर्शन के पश्चात् यात्री रामेश्वर की प्रार्थना करते हैं–

श्री रामेश्वर ! रामेणपूजितस्त्वं सनातन !।

आज्ञान्देहि महादेव ! पुनर्दर्शनमस्तु ते ।।

'हे रामेश्वर भगवान ! मैं आज से पाप कर्म नहीं करूँगा, सत्कर्म करते हुए सच्छास्त्रों का श्रवण मनन और निधिध्यासन करते हुए सज्जन का सङ्ग तथा कथा श्रवण करते हुए जीवन व्यतीत करूँगा- ऐसा कहते हैं और इसके पश्चात् यात्री अपने-अपने आसन (स्थान) में जाते हैं। रात्रि में रामेश्वर में विश्राम करें, भजन-कीर्तन, लोक-गीत आदि करते हुए जप ध्यान करें। रात्रि में यात्री जागरण भी करते हैं। वृद्ध, रोगी, बालक, विश्वनाथ भगवान् का स्मरण करते हुए शयन करें।

रामचन्द्र भगवान अपने भाइयों के साथ काशी आये थे और पञ्चक्रोशी, काशी आदि की यात्रा करने के पश्चात् श्री रामचन्द्रजी ने अपने कर-कमलों से श्री रामेश्वरजी की स्थापना की। रामेश्वर में गणेश-शिव-शक्ति और विष्णु यज्ञ होते हैं। रामतापनीयोपनिषद्, योगवासिष्ठ, रामगीता तथा रामायण आदि के सम्मेलन होते हैं। इसके साथ ही विरहा, कौव्वाली आदि लोक-गीतों का भी आयोजन होता है।

प्राचीन मन्दिरों या श्री रामेश्वर के मंदिर के जीर्णोद्धार आदि के कार्य करने से श्री रामेश्वर जी प्रसन्न होते हैं और धन, सम्पत्ति, पुत्र, भक्तिज्ञान देकर भक्तों को सुखी बनाते हैं। इसके साथ ही असाध्य रोग नष्ट होते हैं। उस व्यक्ति की सर्वत्र विजय होती है। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर रामेश्वर के दर्शन करें। रामेश्वर से पश्चिम बगल में असंख्यात् शिवलिंगेश्वर का लिङ्ग है। इनका प्रमाण काशी रहस्य और काशी-दर्शन यात्रा में है।

८३. असंख्यात शिवलिङ्गेश्वराय नमः (मु० रामेश्वरम् में है)।- असंख्यातशिव के दर्शन, पूजन करने से सब शिवलिङ्गों के दर्शन करने का फल मिलता है। परिवार में कृषि, धन एवं बुद्धि की वृद्धि होती है। इस लोक में सुख-शांति और परलोक में (शिवलोक में) वास मिलता है।

रामेश्वर से उत्तर-पूर्व, दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए शनैः शनैः यात्री

चलते हैं। आगे करौमा गाँव चौराहा के पास शंकर जी का मन्दिर है। मन्दिर के पूर्व बगल से दक्षिण करौमा गाँव में देवसन्ध्येश्वर तीर्थ है। देवसन्ध्येश्वर शक्ति तीर्थ कुँआ के रूप में है। देवसंन्ध्येश्वर का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्दपुराण, लिङ्गपुराण में प्राप्त होता है।

८४. देवसन्ध्येश्वराय नमः (मु० करौमा गाँव में है)।– देवसन्ध्येश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, संकट और रोग नष्ट करते हैं। परिवार में द्रव्य, अन्न, व्यापार और भक्ति में वृद्धि होती है।

ये निर्धन को धन देते हैं। रोग की निवृत्ति के लिए एवं अपुत्री के पुत्र की प्राप्ति के लिए मनौती मनाते और प्रार्थना करते हैं– हे भगवन्! मेरी मनोकामना पूर्ण होगी तो मैं पञ्चक्रोशी के देवताओं के मन्दिरों का जीर्णोद्धार करूँगा और पञ्चबाजा बजाते हुए आपके दर्शन करने आऊँगा। कार्य पूर्ण होने के पश्चात् बाजा बजाते हुए लोग दर्शन करने आते हैं, ऋतुफल, मिष्टान्न, पकवान लाते हैं और चढ़ाते हैं, परिवार सहित प्रसाद पाकर घर पर जाते हैं। जो भक्त पञ्चक्रोशी के मार्ग के मंदिरों का जीर्णोद्धार करके देव सन्ध्येश्वर का दर्शन करते हैं, वे सर्वत्र विजयी होते हैं। यहाँ यज्ञ होता है और गीता, वेद, वेदान्त, भागवत् एवं रामायण आदि के सम्मेलन होते हैं।

देव सन्ध्येश्वर के दर्शन करके उसी मार्ग से करौमा चौमुहानी, पञ्चक्रोशी सड़क से पूर्व जी० टी० रोड को पार करके उत्तर से पूर्व पञ्चक्रोशी सड़क से आगे की ओर चलकर, आगे सड़क पार करके शिवपुर गाँव में पहुँचते ही जो सरोवर है, विशाल कुण्ड है, तीर्थ पुरोहित संकल्प छोड़ाते हैं उस तालाब पड़ाव का नाम शिव रहस्य में मानसरोवर तीर्थ कहा है। मानसरोवर तीर्थाय नमः। (मु० शिवपुर) हनुमान मंदिर के दक्षिण बगल के तिराहे से पश्चिम बगल में, दाहिनी तरफ द्रौपदी कुण्ड है। शिवरहस्य के अनुसार शिवपुर में निवास होता है। अन्य पुराण और काशी-दर्शन-यात्रा, काशी वार्षिक यात्रा आदि में भी शिवपुर निवास का वर्णन मिलता है। द्रौपदी

कुण्ड पहले विशाल था अब कूप के रूप में है।

द्रौपदीकुण्डाय नमः। शिवपुर निवास के दिन यहाँ कुण्ड में से बाल्टी से जल निकाल कर स्नान किया जाता है। द्रौपदी कुण्ड के बगल में द्रौपदी देवी जी का मंदिर है। द्रौपदी देवी जी का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, श्रीमद्भागवत् पुराण, एवं विष्णु पुराण, शिवपुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, पद्मपुराण तथा महाभारत में उपलब्ध होता है।

८५. द्रौपदी देव्यै नमः (मु० शिवपुर)– द्रौपदी देवी के दर्शन-पूजन करने वाले अपने भक्तों के दुःख, कष्ट, रोग और चिन्ता को हरती हैं तथा भक्तों को धन, पुत्र आदि सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं। जो भक्त मन्दिर के जीर्णोद्धार करने के पश्चात् द्रौपदी देवी से कैदी को छुड़ाने के लिये प्रार्थना करता है, देवी की कृपा से कैदी जेल से मुक्त हो जाते हैं। द्रौपदी के दर्शन से नारी को पतिव्रता होने का फल और विद्वान पुत्र की प्राप्ति होती है। पुरुष को धन तथा सम्मान एवं स्थूल शरीर में निरोगता की प्राप्ति होती है। द्रौपदी देवी से सटा हुआ पूर्व के कोने में द्रौपदीश्वर का मंदिर है।

८६. द्रौपदीश्वराय नमः (मु० शिवपुर)– द्रौपदीश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं, उनके दुःख, दरिद्रता का नाश होता है तथा काशीवास मिलता है। द्रौपदी देवी के दक्षिण बगल में सड़क पार करते ही फाटक के अन्दर सबसे दक्षिण बगल के शंकर जी के मन्दिर में दरवाजा के अन्दर, सामने जो दिव्य शिवलिङ्ग है वही युधिष्ठिरेश्वर हैं। युधिष्ठिरेश्वर आदि पाँच भाइयों का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य, लिङ्ग पुराण, महाभारत में प्राप्त होता है।

८७. युधिष्ठिरेश्वराय नमः (मु० शिवपुर में है)– युधिष्ठिरेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले मनुष्यों के दुःख, कष्ट-रोग को तत्काल हरण करते हैं।

इनके दर्शन, पूजन से आपत्ति-संकट के समय में भी दुःख सहन कर धर्म का पालन करने की शक्ति आती है और शत्रु भी प्रशंसा करते हैं।

मंदिरों के जीर्णोद्धार करके जो भक्त इनका दर्शन करता है वह सब जगह विजयी होता है। युधिष्ठिरेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल में भीमेश्वर का मंदिर है।

८८. भीमेश्वराय नमः (मु० शिवपुर)– भीमेश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं वे बलवान, वीर्यवान, पहलवान होते हैं और माता-पिता, बड़े भाई की आज्ञा का पालन करते हैं। इनके दर्शन, पूजन करने वाले के पुत्र बुद्धिमान, तेजवान्, बलवान उत्पन्न होते हैं। भीमेश्वर से सटे उत्तर बगल में अर्जुनेश्वर हैं।

८९. अर्जुनेश्वराय नमः (मु० शिवपुर)– अर्जुनेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को बुद्धि, विद्या, बल और शूरवीरता प्राप्त होती है। इनके दर्शन, मंदिरों के जीर्णोद्धार करके जो भक्त प्रार्थना करते हैं , इससे जेल में बन्द कैदी छूट जाते हैं और वह व्यक्ति सर्वत्र विजयी होता है। इसके साथ ही विद्या, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। अर्जुनेश्वर से सटे हुए मंदिर में नकुलेश्वर हैं।

९०. नकुलेश्वराय नमः (मु० शिवपुर)– नकुलेश्वर के दर्शन से दीन-दुखियों को धन, पुत्र, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। नकुलेश्वर से सटे हुए बगल में सहदेवेश्वर की प्रतिमा है।

९१. सहदेवेश्वराय नमः (मु० शिवपुर)– सहदेवेश्वर के जो भक्त दर्शन, पूजन करते हैं वे विद्वान्, बुद्धिमान और धैर्यवान होते हैं। इनके दर्शन करने वाले के कुल में बुद्धिमान, विद्वान् तथा तेजस्वी पुत्र-पौत्र उत्पन्न होता है। सहदेवेश्वर के पूर्व बगल में शंकर जी के मंदिर में कृष्णेश्वर हैं। कृष्णेश्वर का प्रमाण काशी खण्ह, काशी रहस्य, लिङ्ग पुराण में मिलता है।

९२. कृष्णेश्वराय नमः (मु० शिवपुर में है)– कृष्णेश्वर के दर्शन, पूजन से सब कार्य सफल होते हैं। कृष्ण और शिव जी की भक्ति सुलभ होती है, वल, बुद्धि की वृद्धि होती है। कृष्णेश्वर के वगल में परीक्षितेश्वर

हैं।

९३. परीक्षितेश्वराय नमः। अपने दर्शन करने वाले भक्तों को भगवान की अनन्य भक्ति, ऐश्वर्य और साधु, महात्मा, विद्वान ऋषि-मुनियों का सङ्ग प्राप्त कराते हैं। परीक्षितेश्वर से सटे हुए बगल में कुन्तीश्वर हैं।

९४. कुन्तीश्वराय नमः (मु० शिवपुर में)– कुन्तीश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को दुःख, कष्ट, अपमान सहन करने की शक्ति मिलती है और निरन्तर भगवान का स्मरण करने की शक्ति तथा भगवान् की भक्ति प्राप्त होती है। पाँच रात्रि, छः रात्रि और सात रात्रि के पञ्चक्रोशी यात्रा में यात्री शिवपुर में निवास करते हैं। मंदिरों के दर्शन, पूजन करने के पश्चात्, मंदिर के पूर्व उत्तर बगल में यात्रियों के लिए नौ धर्मशालायें हैं, धर्मशाला में जाकर सफाई कर, जल छिड़क कर, आसन बिछाकर मध्याह्न संध्या करें। तत्पश्चात् साधु, सन्त, महात्मा, संन्यासियों को यथाशक्ति जलपान देकर भोजन करें, तीन बजे से कथा श्रवण करें। कथा श्रवण के पश्चात् स्नान और सायं संध्या करके यात्री पञ्चपाण्डवेश्वर और द्रौपदी देवी का दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् अपने अपने आसन में बैठकर भजन कीर्तन, जप, विश्वनाथ भगवान का ध्यान और स्मरण करते हुए शयन करते हैं। प्रातः स्नान-संध्या आदि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर पाण्डवेश्वर के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् प्रार्थना करें। प्रार्थना के पश्चात् यात्री धर्मशाला में जाते हैं और सामान गाड़ी में रखते हैं।

नोट– बनवास के समय में पाँच पाण्डव और कुन्ती-द्रौपदी आदि काशी आये। काशी की पञ्चक्रोशी आदि यात्रा करने के पश्चात् शिवपुर में अपने नाम के शिव-लिङ्ग स्थापित करके मंदिर बनवाये और दर्शन, पूजन आराधना करते हुए तपस्या करने लगे। कुछ दिनों के बाद भवानी के साथ विश्वनाथ जी प्रगट हुए। युधिष्ठिर जी सर्वत्र विजयी होंगे और अमरत्व की प्राप्ति होगी यह वरदान दिये।

जब तक सूर्य-चन्द्र रहेंगे तब तक तुम लोगों का इतिहास रहेगा। यह

वरदान देकर विश्वनाथ जी भवानी सहित अन्तर्धान हो गये।

शिवपुर में रात्रि विश्राम करने वाले यात्री पहले पञ्चपाण्डवेश्वर का दर्शन करके पाशपाणि विनायक के दर्शन करके शिवपुर आते थे। मिलिटरी छावनी बनने के बाद और शिवपुर के पुल बनने के पश्चात् वह सीधा रास्ता बन्द हो गया । शिवपुर में गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं। वेद, वेदान्त, भागवत एवं रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। यात्री शिवपुर से दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए शनैः शनैः चलते हैं। धर्मशाला के पूर्व सड़क से उत्तर की ओर छहफुटी सड़क से लाल कुँआ होते हुए पञ्चक्रोशी सड़क से महावीर चौराहा में, महावीर हनुमान जी के मन्दिर के पश्चिम बगल से दक्षिण कचहरी के पास पुल पार करते ही कैण्टूमेन्ट जाने वाली दाहिनी तरफ की सड़क से टेलीविजन स्तम्भ के पश्चिम बगल से शक्ति-मार्ग के दक्षिण वगल में, सड़क के पश्चिम बगल में पाशपाणि तीर्थ कुँआ के रूप में है। पाशपाणि विनायक का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण, लिङ्गपुराण तथा अन्य पुराण में भी है।

९५. पाशपाणि विनायकाय नमः। (मु० कैन्टूमेन्ट एरिया, सदर बाजार)- पाशपाणि विनायक के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को दुःख, संकट, कार्य में विघ्न-बाधा नहीं आती और द्रव्य, विद्या, परिवार-व्यापर में वृद्धि होती है। पाशपाणि से उसी मार्ग से महावीर चौराहा से पूर्व पञ्चक्रोशी सड़क से पाण्डेयपुर चौराहा से पश्चिम बगल वाली सड़क से खजुरी (गाँव) नया बाजार जाने वाली सड़क से लगभग आधा किलोमीटर दाहिनी तरफ शंकर जी के मन्दिर में पृथ्वीश्वर तीर्थ, मन्दिर के बगल में है। पृथ्वीश्वर का प्रमाण काशी-खण्ड, काशीरहस्य, शिव रहस्य और लिङ्गपुराण में प्राप्त होता है।

९६. पृथ्वीश्वराय नमः। (मु० खजुरी बाजार)- पृथ्वीश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, संकट और रोग दूर होते हैं। द्रव्य, परिवार, व्यापार और भक्ति में वृद्धि होती है। जो भक्त पञ्चक्रोशी के देव मंदिर

के जीर्णोद्धार करके या कराकर पृथ्वीश्वर का दर्शन करता है वह व्यक्ति मुकदमे में विजयी होता है और वह सभापति, मन्त्री आदि होता है तथा नेतागिरी में पारंगत होता है।

पृथ्वीश्वर में गणेश, विष्णु और शिव-शक्ति आदि यज्ञ होते हैं, वेद-वेदान्त, गीता, भागवत, रामायण आदि सम्मेलन भी होते हैं, और अखण्डकीर्तन होते हैं। लोक कार्यक्रम में विरहा, कौवाली का भी आयोजन होता है। वाराणसी के उत्तर में पृथु राजा ने पृथ्वीश्वर को स्थापित करके दर्शन, पूजन तथा आराधना करते हुए अविमुक्त क्षेत्र के उत्तर में पहले उन्होंने अश्वमेध महायज्ञ किया था, उसी का नाम स्वर्गभूमि है। पृथ्वीश्वर के उसी मार्ग से पाण्डेयपुर चौराहा से पूर्व पञ्चक्रोशी मार्ग में सारङ्ग तालाब है, जहाँ सारङ्गतालाब स्वर्गभूमि देवी तीर्थ है। स्वर्गभूमि देवी शक्ति तीर्थ कुँआ के रूप में है। सारङ्गतालाब के तट में स्वर्गभूमि देवी जी का मन्दिर है। यहाँ पर ठाकुर जी, राम-कृष्ण जी की मूर्ति भक्तों के साथ पहले पञ्चक्रोशी यात्रा करती थी और स्वर्गभूमि में निवास करती थी। स्वर्गभूमि देवी जी का प्रमाण काशी रहस्य, काशी खण्ड, शिव रहस्य और काशी यात्रा में मिलता है।

९७. स्वर्गभूमि देव्यै नमः। (मु० सारङ्गतालाब)– स्वर्गभूमि देवी अपने दर्शन, पूजन करने वालों भक्तों को धन, ऐश्वर्य, पुत्र और आज्ञाकारी नौकर, मित्र देकर सुखी बनाती हैं तथा द्रव्य, बुद्धि, परिवार में भक्ति की वृद्धि करती हैं।

देवी की प्रार्थना इस प्रकार है–

स्वर्गभूमिस्तु सा ज्ञेया मोक्षभूमिस्तु मध्यतः।
काश्याश्चतुर्दिशं देवि ! योजनं स्वर्गभमिका।।५५।।
मृतास्तत्र तु गच्छन्ति स्वर्ग सुकृतिनाम्पदम्।

(काशीरहस्य अ० १०)

सारङ्ग तालाब से पूर्व दीनदयालपुर गाँव में दाहिनी तरफ शंकर जी

के मन्दिर के समीप यूपसरोवर तीर्थ है, जो सोना तालाब के नाम से प्रसिद्ध है। किंवदंती है कि यूपसरोवर तीर्थ का दर्शन और मार्जन करने से पञ्चक्रोशी यात्रा का फल मिलता है।

९८. यूपसरोवर तीर्थाय नमः (मु० दीनदयालपुर)– यूपसरोवर के जो भक्त जीर्णोद्धार करते हैं उनके दुःख-संकट और असाध्य रोग दूर हो जाते हैं तथा अपुत्री को पुत्र प्राप्त होता है। सरोवर के उत्तर तट के ऊपर यूपसरोवरेश्वर हैं।

९९. यूपसरोवरेश्वराय नमः (मु० दीनदयालपुर)– यात्री यूपसरोवरेश्वर का दर्शन कर शनैः शनैः कपिलधारा जाते हैं। कपिलधारा में पहुँचते ही बायी तरफ धर्मशाला में ठहरते हैं। सड़क की दाहिनी तरफ कपिल तीर्थ त्रिमुहानी पर जो कुँआ है वही पार्वती-शक्ति तीर्थ है।

पार्वती शक्ति तीर्थाय नमः। पार्वती तीर्थ के दक्षिण बगल में दाहिनी तरफ देवी के मंदिर में पार्वती जी का मंदिर है।

पार्वती देव्यै नमः (मो० कपिलधारा)– पार्वती देवी से दक्षिण पूर्व बगल में जो विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) है वही बृषभध्वजेश्वर कपिल तीर्थ है।

१००. वृषभध्वजेश्वर कपिल तीर्थाय नमः (कपिलधारा)– इस तीर्थ में स्नान करके मध्याह्न सन्ध्या करें। यहाँ पर पितृतर्पण श्राद्ध करने का विधान है। काशी खण्ड अध्याय ६२ में इसका विस्तार से वर्णन है। कपिलधारा तीर्थ में पितृतर्पण, श्राद्ध करने से पितृ प्रसन्न होते हैं, और आशीर्वाद देते हैं और धन, सन्तान की वृद्धि होती है।

विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे विष्णुजी! हे ब्रह्मा जी! आप सब सुनो। जो लोग कपिला गाय के दुग्ध से पूर्ण इस कपिल तीर्थ में श्रद्धा-भक्ति के साथ स्नान, पिण्डदान करेंगे उनके पितरों की पूर्ण तृप्ति होगी और सोमवार से युक्त सोमवती अमावस्या तिथि के दिन कपिलधारा तीर्थ में श्राद्ध करने से अक्षय फल की प्राप्ति होगी। कपिलधारा तीर्थ के पश्चिम तट पर विशाल

शिवालय के दक्षिण बगल के मन्दिर में छाङ्गवक्रेश्वरी देवी हैं।

छाङ्गवक्रेश्वरी देव्यै नमः (मु० कपिलधारा)– छाङ्गवक्रेश्वरी देवी के दर्शन, पूजन से भूत-पिशाच, डाकिनी-शाकिनी और ब्रह्म राक्षस बाधा दूर होती है। शीतला माई (चेचक) से पीड़ित, ज्वर से आक्रान्त, शरीर में दाने अर्थात् जिसके शरीर में चर्म रोग होते हैं वह भी देवी दर्शन-पूजन और प्रार्थना करने से ठीक होते हैं। मंदिर के जीर्णोद्धार करने वाले व्यक्तियों के कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं। देवी के बगल में कपिलतीर्थेश्वर हैं।

कपिलतीर्थेश्वराय नमः (मु० कपिलधारा)– छाङ्गवक्रेश्वरी देवी जी के बगल के विशाल मन्दिर में वृषभध्वजेश्वर हैं। बृषध्वजेश्वर का प्रमाण ब्रह्मवैवर्त पुराण, स्कन्द पुराण, लिङ्गपुराण, शिवपुराण; नन्दी उपपुराण में प्राप्त होता है।

१०१. वृषभध्वजेश्वराय नमः (मु० कपिलधारा में है)– बृषभध्वजेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, संकट, चिन्ता तथा रोग दूर होते हैं। दर्शनार्थियों के धन, द्रव्य, परिवार तथा व्यापार में वृद्धि होती है। दर्शन से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। बृषभध्वजेश्वर को दूध से स्नान तथा अभिषेक किया जाता है और ऋतुफल, मिष्टान्न, पक्वान्न, हलुआ और खीर चढ़ता है। यात्री बाहर से आते हैं, तीर्थ में या गङ्गा जी में स्नान करके बृषभध्वजेश्वर के दर्शन-पूजन करते हैं और अपने-अपने मनोवाञ्छित फल प्राप्त करने के लिए भगवान् से प्रार्थना करते हैं। मनोवांछित कार्य सिद्ध होने के पश्चात् पञ्चबाजा बजाते दर्शन करने आते हैं और ऋतु फल, मिष्टान्न, द्रव्य, वस्त्र आदि भगवान को अर्पण करते हैं। कीर्तन करते हैं और साधु, महात्मा तथा ब्राह्मण को जलपान कराते हैं। अपने भाई-बन्धु तथा इष्ट-मित्रों के साथ प्रसाद पाते है। इसके पश्चात् बृषभध्वजेश्वर के स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं।

कपिलधारा में शिव-शक्ति विष्णु आदि यज्ञ होते हैं। वेद, वेदान्त पुराण, गीता तथा रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। आधा किलो० जौ खरीद

कर साथ में रखें, दूसरे दिन खर्च जौ विनायक को और आदि केशव, ज्ञानकेशव को जौ चढ़ता है। कपिलधारा में देव, ऋषि, पितृ तर्पण करते हैं। तीर्थ श्राद्ध में आवाहन और विसर्जन नहीं करना चाहिए। मंदिर से उत्तर बगल में नौ धर्मशालाएँ यात्रियों को रहने के लिए बनी हैं, यात्री धर्मशाला में जाते हैं वहाँ जल छिड़ककर आसन बिछाते हैं। और यथाशक्ति साधु, महात्मा, संन्यासियों और ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं। जिन यात्रियों के पास साधु, महात्मा, और संन्यासियों तथा ब्राह्मणों को जलपान भोजन कराने के लिए साधन न हो वह यात्री दुःखी न हों चूँकि भगवान सर्वत्र हैं और सर्वज्ञ हैं। वे सब जानते हैं। अतः जो धनी व्यक्ति को फल मिलता है वही फल रङ्क को भी मिलता है। दूसरे दिन यात्री प्रातः स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर दर्शन करने जाते हैं।

बृषभध्वजः देवेशः पितृणाम्मुक्तिदायकः।
आज्ञान्देहि महादेवः पुनर्दर्शनमस्तुते॥

मन्दिर की एक प्रदक्षिणा करके प्रार्थना कर यात्री धर्मशाला में जाते हैं और अपना सामान गाड़ी में रखते हैं। यात्री कीर्तन, दर्शन, पूजन करते हुए कपिलधारा से शनैः शनैः चलते हैं। आगे कोटवा गाँव में सड़क के दाहिने तरफ शंकर जी के मंदिर के बगल में विष्णु मंदिर में दरवाजा के अन्दर दिव्य मूर्ति पूर्वाभिमुख है। ज्वाला नृसिंह विष्णु जी का प्रमाण काशी रहस्य, शिवरहस्य और वाराह पुराण, विष्णुपुराण, पद्म पुराण में है।

१०२. ज्वालानृसिंहाय नमः (मु० को कोटवा गाँव में)– ज्वालानृसिंह विष्णु अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को अपनी भक्ति, विद्या, धन देते हैं, और बुद्धि, सन्तति, द्रव्य, मित्र की वृद्धि करते हैं तथा गाँव वालों का कल्याण करते हैं।

१०३. वरुणा-गङ्गा-सङ्गमतीर्थाय नमः– स्नान या मार्जन करके संगम घाट से ऊपर जिस विशाल मन्दिर का दर्शन होता है वही आदिकेशव का मंदिर है। मंदिर के भीतर जो शिवजी हैं वही वरुणा-गङ्गा और आदि

केशवेश्वर हैं। आदि केशवेश्वर के सम्बन्ध में काशीखण्ड, काशी रहस्य और शिवपुराण, वामन पुराण, मत्स्य पुराण में प्रमाण है। काशी खण्ड में आदिकेशवेश्वर की स्थापना अपने कर-कमलों से विष्णु भगवान जी ने किया है।

१०४. वरुणा-गङ्गा-सङ्गम आदि केशवेश्वराय नमः (मु० आदिकेशव, बसन्तकालेज)– सङ्गमेश्वर का प्रमाण काशी-खण्ड, काशी-रहस्य में मिलता है। आदिकेशवेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को अपनी भक्ति और विष्णु की भक्ति, ज्ञान, तथा वैराग्य देते हैं। इसके साथ ही द्रव्य, परिवार, मित्रों की संख्या में वृद्धि करते हैं। सङ्गमेश्वर से ऊपर विष्णु मंदिर में मूर्ति पूर्वाभिमुख है। आदि केशव विष्णु का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, विष्णु पुराण, लिंगपुराण एवं शिवपुराण में प्राप्त होता है। आदि केशव को तुलसीदल, वस्त्र तथा मिष्टान्न आदि चढ़ता है।

१०५. आदिकेशव विष्णवे नमः (म० न० ३७/५१, मु० आदिकेशव)– आदिकेशव विष्णु के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट, दरिद्रता, रोग एवं अज्ञान दूर होते हैं, इनके दर्शन से सुखपूर्वक काशीवास होता है। विद्या, परिवार, द्रव्य, भक्ति आदि में वृद्धि होती है। ये नगर वासियों का कल्याण करते हैं। आदि केशव से सटे हुए उत्तर बगल के विष्णु मंदिर में ज्ञान केशव हैं।

ज्ञान केशवाय नमः। (मु० आदिकेशव, बसन्त कालेज)

नोट- आदिकेशव से मर्णिकार्णिका घाट तक के देवताओं का दर्शन, पूजन का वर्णन ओंकार अन्तर्गृही यात्रा में वर्णित है। ज्ञानकेशवविष्णु के उत्तर पश्चिम के कोने में बाहर नक्षत्रेश्वर के बगल में गणेश मंदिर में जौ विनायक हैं, जो उत्तराभिमुख हैं। जौ विनायक का प्रमाण काशी-खण्ड, काशी रहस्य में प्राप्त होता है।

१०६. जव खर्व विनायकाय नमः (म० न० ए० ५२/५२ में है, मु०-आदिकेशव)– जव खर्व विनायक अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों

के मनोरथ पूर्ण करते हैं और धन, पुत्र आदि की वृद्धि करते हैं। इसके साथ ही निर्विघ्न काशीवास का अवसर प्राप्त होता है। खर्वविनायक से दर्शन, पूजन करते हुए विष्णवे नमः। ऐसा कहते हुए जव विनायक को लड्डू, दूब, जव, मिष्टान्न और वस्त्र (ऋतुफल) आदि चढ़ाया जाता है।

नोट- आदिकेशव से जो यात्री चलने में असमर्थ और रोगी होते हैं वे नाव से मणिकर्णिका तक जाते हैं। पञ्चक्रोशी मंदिरों के सामने से उनका नाम ले लेकर नमस्कार करते हैं और जव छोड़ते हैं।

१- प्रह्लादेश्वराय नमः। २- त्रिलोचनेश्वराय नमः। ३- विन्दुमाधव विष्णवे नमः। ४- गभस्तीश्वराय नमः। ५- मंङ्गलागौरी देव्यै नमः। ६- वशिष्ठेश्वराय नमः। ७- वामदेवेश्ववराय नमः। ८- पर्वर्तेश्वराय नमः। महेश्वराय नमः कहकर नमस्कार करते हैं। आदि केशव से यात्री गंगा किनारे से शनैः शनैः दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए चलते हैं। श्रावण-भाद्रमास में जव खर्बविनायक से आते ही जी. टी. रोड से बसन्त कालेज होते हुए राजघाट जी० टी० रोड आते हैं तथा जी० टी० रोड के किनारे से एक पगडंडी रास्ता नीचे की ओर गङ्गा किनारे गया है उसी मार्ग से दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुए चलना चाहिए। प्रह्लादेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण और लिङ्गपुराण में प्राप्त होता है।

१०७. प्रह्लादेश्वराय नमः (म० न० ए० १०/८० में है, मु० प्रह्लादघाट)- प्रह्लादेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को शिव और विष्णु की भक्ति सुलभ कराते हैं। ये अपने भक्तों को धन, पुत्र आदि सुख का साधन देकर सुख देते हैं, साथ ही पुरवासियों का कल्याण करते हैं। त्रिलोचन घाट के ऊपर पञ्चाक्षरेश्वर के उत्तर बगल में त्रिलोचनेश्वर मन्दिर है। त्रिलोचनेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिव रहस्य और शिवपुराण, पद्म पुराण, कूर्म पुराण में उपलब्ध है।

१०८. त्रिलोचनेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचन)- त्रिलोचनेश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं उनके दुःख, कष्ट एवं संकट

दूर होते हैं और द्रव्य, परिवार, व्यापार, और भक्ति-ज्ञान में वृद्धि होती है।

पञ्चगङ्गा-बिन्दुमाधव घाट के ऊपर विन्दु विनायक और बिन्दुमाधवेश्वर के बगल में बिन्दुमाधव की दिव्य मूर्ति पूर्वाभिमुख है। विन्दुमाधव विष्णु का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण और विष्णु पुराण में है।

१०९. विन्दुमाधव विष्णवे नमः (म० नं० के० २२/३३ में है, मु० पञ्चगङ्गा)– विन्दुमाधव अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि से परिपूर्ण करते हैं। साथ ही शिव जी की भक्ति-ज्ञान की प्राप्ति होती है। अपने दर्शन करने वाले भक्तों को ये सुखपूर्वक काशी वास कराते हैं। मंगला गौरी घाट बालाजी मंदिर के ऊपर मंगला गौरी से सटे हुए जो दिव्य शिव जी हैं, जिन्हें गभस्तीश्वर कहते हैं। गभस्तीश्वर का वर्णन स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण, पद्मपुराण में है।

११०. गभस्तीश्वराय नमः (मं० नं० २४/३४ में है, मु० मंगला गौरी)– गभस्तीश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं उनके दुःख, कष्ट, दरिद्रता, चिन्ता दूर होती है, और शरीर में शक्ति, नेत्रों में ज्योति बढ़ती है। गभस्तीश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल के मंदिर में मंगला गौरी देवी हैं। इनका प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य और देवी भागवत् में प्राप्त होता है।

१११. मंगला गौरी देव्यैः नमः (म० नं० २४/३४ में है, मु० मंगलागौरी)– मंगला गौरी के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को देवी धन, ऐश्वर्य और सुख का साधन देकर सुखी बनाती हैं। मन्दिर के (जीर्णोद्धार करने के पश्चात् देवी से जो प्रार्थना करते हैं, वह सब पूर्ण (कार्य सिद्ध) होता है। कार्य सफल होते ही पञ्चबाजा बजाते हुए मंगला गौरी का दर्शन करने लोग आते हैं। मंगला गौरी से दक्षिण सिन्धिया घाट से सटा हुआ उत्तर बगल का घाट वशिष्ठेश्वर का है। घाट के ऊपर बाँयी तरफ शंकर जी के मंदिर में वशिष्ठेश्वर की प्रतिमा है। वसिष्ठेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड,

काशी रहस्य और एवं अनेक पुराणों में प्राप्त होता है।

११२. वशिष्ठेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में है, मु० वशिष्ठ घाट)– वशिष्ठेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्त संसार के असत्य पदार्थों में आसक्त नहीं होते और पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म करते तथा सज्जन, साधु-महात्माओं का सङ्ग करते हैं। इस लोक में सम्पत्ति, सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है। अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है, अतएव इनका प्रतिदिन दर्शन करें। वशिष्ठेश्वर से सटा हुआ दक्षिण पश्चिम बगल में फाटक के अन्दर वामदेवेश्वर हैं। काशी खण्ड, काशी रहस्य और अन्य पुराणों में भी वामदेवेश्वर के प्रमाण मिलते हैं।

११३. वामदेवेश्वराय नमः (म० नं० सीके० ७/१६१ में है, मु० वशिष्ठघाट, संकटा जी)– वामदेवेश्वर के दर्शन, पूजन से दुःख तथा दरिद्रता दूर होती है। इनके दर्शन से मोह-माया नहीं सताती और बुद्धि, विद्या, द्रव्य तथा भक्ति, ज्ञान की वृद्धि होती है। ब्रह्म-ऋषि वशिष्ठ वामदेव मूर्ति रूप धारण करके काशी वास करते हैं और काशीवासियों को उपदेश देते हैं तथा काशीवासियों का कल्याण करते हैं। सिन्धिया घाट के ऊपर दाहिनी ओर शंकर जी के मंदिर में पर्वतेश्वर हैं। पर्वतेश्वर का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य, काशी वार्षिक यात्रा में है।

११४. पर्वतेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१५ में है, मु० सिन्धिया घाट)– पर्वतेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति के प्रारब्ध में पर्वत के समान दुःख, कष्ट, विघ्न, बाधा हो तो भी दूर करते हैं और सब कार्य सफल करते हैं। पर्वतेश्वर से दक्षिण ब्रह्महृद मणिकर्णिका पुष्करणी ब्रह्म कुण्ड के नीचे गुफा में महेश्वर जी हैं। दूसरे महेश्वर सिद्धिविनायक के मंदिर के ऊपर बाँयीं तरफ के शिवालय में हैं। काशी खण्ड, काशी रहस्य, शिवपुराण और लिङ्गपुराण में महेश्वर जी का वर्णन है।

११५. महेश्वराय नमः (मु० मणिकर्णिका घाट)– महेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को धन, स्त्री, पुत्र आदि सुख के साधन देकर

सुखी बनाते हैं और सब प्रकार से कल्याण करते हैं। घाट के ऊपर बाँयी तरफ गणेश जी के मंदिर में सिद्धि विनायक पूर्वाभिमुख हैं।

११६. सिद्धिविनायकाय नमः (म० नं० सी० के०-३३/२६, मु० मणिकर्णिका घाट)– सिद्धिविनायक दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति को सिद्ध हो जाते हैं और उनके सब कार्य निर्विघ्न सफल करते हैं। मणिकर्णिका घाट से पश्चिम ब्रह्मनाल चौमुहानी से पश्चिम ऊपर पुलस्तीश्वर से सटा हुआ दक्षिण बगल के मंदिर में सप्तावर्ण गणेशजी उत्तराभिमुख हैं। सप्तावर्ण विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, काशी रहस्य में, वार्षिक काशी-दर्शन यात्रा में प्राप्त होता है।

११७. सप्तावर्ण विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३३/३६ में है, मु० ब्रह्मनाल)– सप्तावर्ण विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख-कष्ट, रोग और चिन्ता दूर करते हैं,इनके दर्शन से विघ्न-बाधा नहीं आती और पुरवासियों की रक्षा होती है। इनको शेष जल अर्पण करना चाहिए और लड्डू, दूब, ऋतुफल, मिष्टान्न आदि चढ़ाना चाहिए। मणिकर्णिका घाट में जाकर स्नान करके यात्री ढुंढिराज जी का दर्शन करने जाते हैं। विश्वनाथ जी को बाहर से प्रणाम करते हैं।

११८. विष्णवे नमः (अन्नपूर्णा जी)– अन्नपूर्णा आदि का दर्शन करें।

दुण्ढिराजाय नमः (मु० दुण्ढिराज गली)

दण्डपाणिभ्यो नमः (मु० दुण्ढिराज गली)– साक्षी विनायक के संबंध में गणेशोपनिषद, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिवपुराण, पद्म-पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, वामन पुराण और लिंग पुराण में वर्णन है।

११९. साक्षी विनायकाय नमः (मु० साक्षी विनायक)– साक्षी विनायक अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के रोग विघ्न आदि को दूर करते हैं। अपने भक्तों को आवश्यक सुख के साधन प्राप्त कराते हैं तथा सुखपूर्वक काशीवास और अन्त में मुक्ति दिलाते हैं। प्रतिदिन और चतुर्थी तिथि को अवश्य दर्शन करें। साक्षी विनायक जयन्ती के अवसर पर हजारों यात्री

दर्शन यात्रा करते हैं।

१२०. द्रौपदीआदित्य सूर्याय नमः (मु० विश्वनाथ अन्नपूर्णा गली)– पञ्चविनायकाय नमः (मु० विश्वनाथजी)– यहाँ पाँच देवों का पुनर्दर्शन करना चाहिए। काल राजेश्वराय नमः।

१२१. विश्वनाथाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० विश्वनाथ जी)– विश्वनाथ जी का बार-बार नमस्कार करें। तत्पश्चात् प्रार्थना करें। प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है–

प्रदक्षिणीकृतान्देवान्स्मरेत्तत्र क्रमात्सुधीः।
जय विश्वेशः विश्वात्मन्काशिनाथ ! जगद्गुरोः ॥
त्वत्प्रसादान्महादेव ! कृता क्षेत्रप्रदक्षिणा।
अनेक जन्म पापानि कृतानि मम शङ्कर ! ॥
तानि पञ्चक्रोशात्मलिङ्गस्याऽस्य प्रदक्षिणात्।
त्वद्भक्ति काशिवासाभ्यां रहितः पापकर्मणा ॥
सत्सङ्ग श्रवणाद्यैश्च कालो गच्छतु नः सदा।
हर ! शंभो महादेव सर्वज्ञ ! सुखदायक ॥
प्रायश्चित्तं सुनिर्वृत्त पापानान्त्वत्प्रसादतः।
पुनः पापमतिर्मास्तु धर्मबुद्धिः सदाऽस्तु मे ॥
इति जप्त्वा यथाशक्त्या दत्त्वा दानं द्विजन्मनाम्।
वद्ध्वा करयुगम्मन्त्री मन्त्रमेतदुदीरयेत् ॥
पञ्चक्रोशस्य यात्रेयं यथा शक्त्या मया कृता।
नूनं सम्पूर्णतां यातु त्वप्रसादादुमापते ॥
इति प्रार्थ्य महादेवं गच्छेद्गेहं स्वकं स्वकम्।
न्यूनातिरिक्तदोषाणाम् परिहाराय दक्षिणाम् ॥
सङ्कल्प्य गत्वा च गृहं ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः।
कुटुम्बैः सह भोजनम्।

कुतात्मानन्ततो ध्यायेत् कृतकृत्यो भवेत्ततः ॥

विश्वनाथ मंदिर के पीछे ज्ञानवापी (कूप) है।

ज्ञानवाप्यै नमः। ज्ञानवापी में बैठकर सभी देवों का नाम लिया जाता है और संकल्प छोड़कर ब्राह्मणों को फल, सीधा, वस्त्र और यथाशक्ति दक्षिणा देकर साधु, महात्माओं को जलपान कराकर और दरिद्र नारायण को लाई, चना, पैसा देने के पश्चात् यात्रा पूर्ण होती है। इस प्रकार पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा पूर्ण हुई। जो यात्री चल सकते हैं वह काल भैरव का दर्शन करें। वाराणसी देवी के मंदिर में भैरव पश्चिमाभिमुख हैं और गुरु, माता-पिता के दर्शन कर, आशीर्वाद लें। यात्री पापों का प्रायश्चित्त करके पाप रहित और निष्पाप होकर विश्वनाथ भगवान का स्मरण करते हुए, अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक अपने-अपने घर जाते हैं। जिन यात्रियों के पास धन-सम्पत्ति हो वह दूसरे दिन रुद्राभिषेक, हवन और गोदान करें, तत्पश्चात् ब्राह्मण, साधु, महात्मा, संन्यासियों को भोजन कराकर अपने परिवार सहित भोजन करें और जिनके पास साधन नहीं है वह गोदान करके अपने घर में कीर्तन करें।

काल भैरव काशी में रहने वाले मनुष्यों के देहपात अर्थात् मृत्यु होने के पश्चात् साक्षी विनायक से पूछते हैं कि इस जीव के पाप-पुण्य कितने हैं और इनके पापों के प्रायश्चित्त कराने के लिए क्या दण्ड देना चाहिए ? साक्षी विनायक कहते हैं कि मृतक जीव कितना भी अपराधी हो, परन्तु जैसे पुत्र के अपराध को पिता क्षमा करता है वैसे ही साक्षी विनायक काल भैरव से वकालत करके जीव को पापों से मुक्ति दिलाते हैं और कहते हैं पूर्वजन्म में इन्होंने बहुत पुण्य किया है इसलिए काशी में मर गये हैं।

साक्षी विनायक कालभैरव से कहते हैं कि इस जीव को कृपा करके भय दिखा कर पापों के प्रायश्चित्त कराकर इस को मुक्ति दिला दीजिए। अतः प्रयत्न पूर्वक साक्षी विनायक का दर्शन करना चाहिए। काशी में

देवता का प्रतिदिन तर्पण करने का सूक्ष्म रूप से विधान इस प्रकार है, दाहिने हाथ में जल लेकर पंचक्रोशी के देवताओं के अलग-अलग नाम लेकर जल छोड़ते हुए तर्पयामि कह कर जल छोड़ें।

देवताओं के नाम इस प्रकार हैं–

(१) ढुण्ढिराजाय नमः। (२) दण्डपाणिभ्यो नमः। (३) अन्नपूर्णाय नमः। (४) विश्वनाथाय नमः। (५) कालराजेश्वराय नमः। (६) पंचविनायकाय नमः। (७) मणिकर्णिकेश्वराय नमः। (८) सिद्धिविनायकाय नमः। (९) गंगाकेशवाय नमः। (१०) ललिता गौरी देव्यै नमः। (११) जरासन्धेश्वराय नमः। (१२) सोमनाथेश्वराय नमः। (१३) दालभ्येश्वराय नमः। (१४) शूलटंकेश्वराय नमः। (१५) आदिवाराहेश्वराय नमः। (१६) बन्दी दैव्यै नमः। (१७) दशाश्वमेधेश्वराय नमः। (१८) सर्वेश्वराय नमः। (१९) केदारेश्वराय नमः। (२०) हनुमतेश्वराय नमः। (२१) अर्कविनायकाय नमः। (२२) लोलार्क सूर्याय नमः। (२३) अस्सी संगमेश्वराय नमः। (२४) दुर्गाविनायकाय नमः। (२५) दुर्गादैव्यै नमः। (२६) विश्वक्सेनेश्वरायनमः। (२७) सोमनाथेश्वराय नमः। (२८) विरूपाक्षगणाय नमः। (२९) नीलकण्ठेश्वराय नमः। (३०) कर्दमेश्वराय नमः। (३१) नागनाथेश्वराय नमः। (३२) चामुण्डादैव्यै नमः। (३३) मोक्षेश्वराय नमः। (३४) करुणेश्वराय नमः। (३५) वीरभद्रगणाय नमः। (३६) विकटाक्षदुर्गा देव्यै नमः। (३७) उन्मत्त भैरवाय नमः। (३८) कालकूटगणाय नमः। (३९) विमला दुर्गायै नमः। (४०) महादेवेश्वराय नमः। (४१) यक्षेश्वराय नमः। (४२) भृङ्गीरीटगणाय नमः। (४३) गणप्रियेश्वराय नमः। (४४) विरूपाक्षगणाय नमः। (४५) यक्षेश्वराय नमः। (४६) विमलेश्वराय नमः। (४७) मोक्षेश्वराय नमः। (४८) ज्ञानेश्वराय नमः। (४९) अमृतेश्वराय नमः। (५०) नरकार्णवातारणाय नमः। (५१) गन्धर्वेश्वराय नमः। (५२) चण्डविनायकाय नमः। (५३) रविरक्ताक्षगन्धर्वाय नमः। (५४)

भीमचण्डेश्वराय नमः। (५५) भीमचण्डी देव्यै नमः। (५६) एकपाद शिवाय नमः। (५७) महाभीमगणाय नमः। (८) भैरवाय नमः। (५९) भैरवीदेव्यै नमः। (६०) भूतनाथेश्वराय नमः। (६१) सोमनाथेश्वराय नमः। (६२) सिन्धुसरोवरेश्वराय नमः। (६३) कपर्दीश्वराय नमः। (६४) कालनाथेश्वराय नमः। (६५) कपर्दीश्वराय नमः। (६६) कामेश्वराय नमः। (६७) गणेश्वराय नमः। (६८) वीरभद्रशिवगणाय नमः। (६९) चारुमुख शिवाय नमः। (७०) गणनाथेश्वराय नमः। (७१) देहली विनायकाय नमः। (७२) षोडषगणनाथाय नमः। (७३) उद्दण्डविनायकाय नमः। (७४) उत्कलेश्वराय नमः। (७५) रुद्राणी देव्यै नमः। (७६) तपोभूम्यै नमः। (७७) सोमेश्वराय नमः। (७८) भरतेश्वराय नमः। (७९) लक्ष्मणेश्वराय नमः। (८०) शत्रुघ्नेश्वराय नमः। (८१) ध्यावाभूमीश्वराय नमः। (८२) नहुषेश्वराय नमः। (८३) रोमेश्वराय नमः। (८४) असंख्यातशिवलिंगेश्वराय नमः। (८५) देवेसन्धेश्वराय नमः। (८६) द्रौपदी दैव्यै नमः। (८७) द्रौपदीश्वराय नमः। (८८) युधिष्ठीरेश्वराय नमः। (८९) भीमेश्वराय नमः। (९०) अर्जुनेश्वराय नमः। (९१) नकुलेश्वराय नमः। (९२) सहदेवेश्वराय नमः। (९३) कृष्णेश्वराय नमः। (९४) परीक्षितेश्वराय नमः। (९५) कुन्तीश्वराय नमः। (९६) पाशपाणि विनायकाय नमः। (९७) पृथ्वीश्वराय नमः। (९८) स्वर्गभूमीश्वराय नमः। (९९) स्वर्गभूमि देव्यै नमः। (१००) यूपसरोवरेश्वराय नमः। (१०१) भवानी पार्वती दैव्यै नमः। (१०२) वृषभध्वजेश्वराय नमः। (१०३) यूपसरोवर तीर्थाय नमः। (१०४) ज्वालानृसिंहाय नमः। (१०५) वरणासंगमेश्वराय नमः। (१०६) आदिकेशव विष्णवे नमः। (१०७) ज्ञान केशवाय जव खर्वविनायकाय नमः। (१०८) प्रह्लादेश्वराय नमः। (१०९) त्रिलोचनेश्वराय नमः। (११०) विन्दुमाधवाय विष्णवे नमः। (१११) गभस्तीश्वराय नमः। (११२) मंगलागौरीदेव्यै नमः। (११३) वशिष्ठेश्वराय नमः। (११४) वामदेवेश्वराय

नमः। (११५) पर्वतेश्वराय नमः। (११६) महेश्वराय नमः। (११७) सिद्धिविनायकाय नमः। (११८) सप्तावरण विनायकाय नमः। (११९) विष्णवे नमः। (१२०) भवानी अन्नपूर्णाय नमः। (१२१) दण्डपाणिभ्यो नमः। (१२२) भैरवाय नमः। (१२३) ढुण्ढिराजाय नमः। (१२४) साक्षी विनायकाय नमः। (१२५) द्रौपदीआदित्य सूर्याय नमः। (१२६) विश्वनाथाय नमः।

एक दिन से सात रात्रि के पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा इस प्रकार है– एक दिन की पञ्चक्रोशी यात्रा महाशिवरात्रि के दिन पैदल हजारों यात्री यात्रा करते हैं।

१. एक रात्रि के पञ्चक्रोशी यात्रा में रामेश्वर में विश्राम होता है।

२. द्विरात्री के यात्रा में भीमचण्डी और रामेश्वर में विश्राम करते हैं।

३. त्रिरात्रि के पञ्चक्रोशी यात्रा में भीमचण्डी, रामेश्वर और कपिलधारा में विश्राम करके श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन और कीर्तन करते हैं।

४. चार रात्रि के पञ्चक्रोशी यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, रामेश्वर और कपिलधारा में यात्री विश्राम करते हैं।

५. पाँच रात्रि के पञ्चक्रोशी यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी और रामेश्वर, शिवपुर, कपिलधारा में विश्राम किया जाता है।

६. छहरात्रि की पञ्चक्रोशी यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, सोमनाथ, लंगोटिया हनुमान, रामेश्वर, शिवपुर और कपिलधारा में यात्री विश्राम करते हैं।

७. सात दिन की पञ्चक्रोशी यात्रा में दुर्गा जी का दर्शन करके नगवा के दक्षिण लङ्का से पूर्व गङ्गा के किनारे और बहुत लोग दक्षिणेश्वर में जाकर विश्राम करते हैं। क्षेत्र संन्यासियों को संकल्प लेकर पञ्चक्रोशी-यात्रा नहीं करनी चाहिए।

पञ्चक्रोशी यात्रा के अनुभव और प्रत्यक्ष फल

पञ्चक्रोशी यात्रा करने वाले यात्रियों को जो प्रत्यक्ष चमत्कार देखने

को मिले वे इस प्रकार हैं– जो यात्री रोगी थे वे निरोग हो गये। जो यात्री ग्रहों से पीड़ित थे उनके ग्रह शान्त हो गये और जिन यात्रियों को दुःख, कष्ट था वह दूर हो गया। जिन यात्रियों को काशी में आवास, भोजन आदि की व्यवस्था नहीं थी सब व्यवस्था हो गयी। जो निर्धन थे वे धनी हो गये। जो यात्री मुकदमा, नेतागीरी में परास्त होते थे वे सब विजयी हो गये। जिन यात्रियों के घर, पट्टीदार में कलह था वह शान्त हो गया। जिन यात्रियों के घर में भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी की बाधायें थीं उनकी शान्ति हो गई। जो यात्री पाप कर्म में रत थे और पापी थे वे पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म करने लगे। जिन यात्रियों को नौकरी नहीं मिलती थी, विवाह नहीं होता था, नौकरी में पदोन्नति नहीं होती थी उनका सब कुछ हो गया। जिन यात्री के पुत्र नहीं थे उनके पुत्र-रूप-रत्न की प्राप्ति हुई। जो दीन-दुःखी थे वे सब धन-धान्य से सम्पन्न हो गये और वे सब पाप कर्म छोड़कर सत्कर्म करने लगे।

अभिप्राय यह है कि सभी यात्रियों के सब मनोरथ पूर्ण हुए। पञ्चक्रोशी यात्रा करने वालों के प्रति श्री विश्वनाथ जी की असीम अनुकम्पा रहती है, उनकी कृपा से पञ्चक्रोशी यात्रा कराने वाले एवं करने वालों का यह लोक और परलोक सुन्दर हो गया। जो यात्री निवृत्ति मार्ग के थे उनकी अनन्य भक्ति और ब्रह्मात्मा-साक्षात्कार हुआ। काशी रहस्य के नवम अध्याय में ऋषिपुत्र मण्डप का आख्यान सूक्ष्म से वर्णन करते हैं। विश्वनाथ जी जैगीषव्य ऋषि से कहते हैं। मण्डप माता-पिता, भ्राता के द्वारा मना किये जाने पर भी कुसंगति को नहीं छोड़ता। एक दिन मण्डप दो साथियों के साथ पिता के घर गया। कुष्माण्ड ऋषि बोले-तुम पापों का प्रायश्चित्त करके घर आना उसी समय मण्डप को पञ्चक्रोशी जाने वाले यात्री मिले। वह संकल्प लेकर साधु-महात्मा, संन्यासी और शिव-भक्तों के साथ शिव-शिव नाम मन्त्र और पञ्चाक्षरी महामन्त्र जपते हुए हर-हर महादेव का कीर्तन करते हुए यात्रियों के साथ चला। यात्रा में मण्डप के पाप

कर्म, पाप बुद्धि नष्ट हो गई। पापों को नाश करने वाली पञ्चक्रोशी-यात्रा से पाप वासना समाप्त हो गयी। यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् यात्रियों ने उससे कहा कि अपने पिता को बुलाओ।

पिता जी आ गये। पिता जी बोले जब तक विष्णु, सूर्य, ढुण्ढिराज और दण्डपाणि, भैरव नहीं कहेंगे तब तक मैं इन बातों पर विश्वास नहीं करूँगा, सभी यात्री देवताओं की स्तुति करने लगे। पाँचों देवता प्रगट हो गये। विष्णु जी बोले- मण्डप ने शिव-भक्त, साधु-महात्माओं के साथ काशी की प्रदक्षिणा किया और प्रदक्षिणा करते समय जगत् गुरु श्री विश्वनाथ जी का कीर्तन करते हुए पञ्चक्रोशी यात्रा किया इससे मण्डप शुद्ध हो गया। इसके पश्चात् श्री ढुंढिराज कहते हैं कि शिव-शिव नाम के जप से सब पाप नष्ट होते हैं, काशी के विषय में कथा-श्रवण मनन-कीर्तन करते हुए जो पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा करते हैं वे पापों से मुक्त होते हैं। दण्डपाणि जी कहते हैं–

पञ्च क्रोशात्मक सच्चिदानन्द शिवलिङ्ग की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा करके पापी लोग पापों से शुद्ध होते हैं। काल भैरव जी ने कहा कि मैं पापी लोगों को अनेक प्रकार से दण्ड देता हूँ। जो पापी काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा करते हैं उन पञ्चक्रोशी यात्रा करने वाले यात्रियों के पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है। अतः मण्डप विशुद्ध हो गया है। मण्डप ने पापों का प्रायश्चित्त कर लिया। पाप को दूर करने वाली यह पञ्चक्रोशी यात्रा है। विश्व के अन्य राष्ट्र से आये हुए यात्री पञ्चक्रोशी यात्रा करते हैं। एक सौ एक बार पञ्चक्रोशी यात्रा करने के पश्चात् यह पुस्तक लिखी गयी।

[काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले व्यक्ति को पूर्व में आधे गङ्गा तक, उत्तर में वरुणा नदी, दक्षिण में अस्सी नदी तक, पश्चिम में मडुवाडीह तक रहना चाहिए। काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले नर-नारियों को वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा अनिवार्य रूप से करनी

चाहिए।]

पञ्चक्रोशी यात्रा करने के लिए सबसे उत्तम और सहज आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, फाल्गुन, चैत्र-वैशाख मास हैं। पञ्चक्रोशी यात्रा उपर्युक्त मासों में सहजता से सफल होती है।

मेरी यात्रा के समय की मण्डलियों में प्रमुख हैं :- मेरे गुरुवर्य अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट् श्री स्वामी करपात्री जी महाराज की काशी दर्शन यात्रा मण्डली। करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् गोवर्धनपीठाधीश्वर जगत् गुरु श्री शंकराचार्य स्वामी निरंजन देवतीर्थ जी महाराज जी ने पञ्चक्रोशी यात्रा की। स्वामी श्री घनश्यामानन्द तीर्थजी महाराज, मुमुक्षु भवन, काशी दर्शन यात्रा मण्डली। करपात्री जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् श्री स्वामी सदानन्द सरस्वतीजी महाराज, करपात्री धाम, केदार घाट।

श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज, धर्मसंघ, दुर्गा-कुण्ड की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

श्री स्वामी कृष्णानन्दगिरि जी महामण्डलेश्वर की दक्षिणा मूर्ति मठ, मिश्रपोखरा की काशी दर्शन-यात्रा मण्डली।

श्री स्वामी गङ्गानन्द तीर्थ जी महाराज की, मणिकर्णिकाघाट, अभयानन्द आश्रम, काशी दर्शन, यात्रा-मण्डली।

काशी दर्शन-यात्रा करने वाले प्रमुख पण्डितों की मण्डलियाँ इस प्रकार हैं–

पं० बैजनाथ त्रिपाठीजी की अस्सीघाट की काशी यात्रा मण्डली। जो की अस्सीघाट में बैठकर सबको प्रणाम करके यात्रा कराते हैं।

पं० दातार शास्त्रीजी की ब्रह्माघाट की काशी यात्रा मण्डली।

पं० बैकुण्ठनाथ उपाध्याय जी की विश्वेश्वर गंज की काशी यात्रा मण्डली।

विश्वनाथ पालन्देजी की दुर्गाघाट की काशी यात्रा मण्डली।

विश्वेश्वर शास्त्री हनुमान घाट की काशी यात्रा मण्डली।
श्री हरी बम बाबा जी की पीताम्बरपुरा की काशी यात्रा मण्डली।
पं० कुबेरनाथ शुक्लजी की काल भैरव की काशी यात्रा मण्डली।
गणेशानन्द तीर्थ जी की मीरघाट की काशी यात्रा मण्डली।
महिला मण्डलियों का विवरण निम्नांकित है :-
विद्या देवी जी (साक्षी विनायक) की काशी यात्रा मण्डली।
गीता देवी जी (मानसरोवर) की काशी यात्रा मण्डली।
ढुण्ढिराज गली की परमेश्वरी देवी की काशी यात्रा मण्डली।
सीता देवी जी (लक्ष्मी कुण्ड) की काशी यात्रा माण्डली।

काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा करने के लिए भारत के कोने-कोने से शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर, साधु, महात्मा, महन्त, अधिकारी एवं तपस्वी, साधक, सिद्ध सभी अपने-अपने भक्तों को साथ में लेकर काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा करने आते हैं। लखपति, करोड़पति और राजा-महाराजा काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा करने आते हैं। काशी के धनी वर्ग स्वयं पञ्चक्रोशी यात्रा करने आते हैं। जो यात्रा करने में असमर्थ होते हैं वे व्यक्ति ब्राह्मणों द्वारा वरण करके पञ्चक्रोशी यात्रा भेजते हैं।

मेरे गुरुवर्य अनन्त श्री विभूषित धर्म-सम्राट् स्वामी, करपात्री जी महाराज जी ने लोक शिक्षा और काशीवासियों के कल्याण के लिए यात्राएँ कीं। उनकी यात्रा में उनके शिष्य एवं भक्त मण्डलियों के साथ चैत्र (मधुमास) बसन्त ऋतु, पञ्चमी तिथि के दिन पञ्चक्रोशी यात्रा हजारों की संख्या में यात्री चलते थे। विद्वान् ब्राह्मण वेदों की स्तुति करते हुए साथ में चलते थे और अन्य यात्री कीर्तन करते हुए चलते थे। इसके साथ ही काशी विश्वनाथ जी का जयघोष करते हुए चलते थे। मार्ग में गौ, पीपल, बरगद तथा साधु, महात्माओं को दाहिने करके और मन्दिरों का दर्शन करते हुए चलते थे। प्रत्येक पड़ाव में अन्न क्षेत्र चलाते थे। पड़ाव में मध्याह्न पूजा

के पश्चात् स्वामी जी साधु, महात्मा और संन्यासियों को स्वयं खड़े रहकर भोजन कराते थे, दीन-दुखियों को अन्न-वस्त्र देते थे, भोजने कराते थे।

जिन धर्मशालाओं में पड़ाव होता था उनमें ब्राह्मण तीन बजे से प्रवचन करते थे। अन्त में स्वामी जी की कथा होती थी। हजारों नर-नारी गाँव और शहर से दर्शन और कथा-श्रवण करने के लिए आते थे। प्राय: कथा का विषय पञ्चक्रोशी यात्रा का नियम, यात्रा करने का फल, पञ्चक्रोशी और उसके माहात्म्य आदि की कथा होती थी।

काशीवास करना ही मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। इस विषय की ओर सदैव स्वामी जी ध्यानाकर्षित करते थे।

मेरे गुरुवर्य स्वामी करपात्री जी महाराज की प्रेरणा से पञ्चक्रोशी की पक्की सड़क बनी। स्वामी जी ने जीर्णोद्वार समिति बना करके तीर्थ, कुआँ, धर्मशाला, मंदिर आदि का जीर्णोद्धार कराया।

काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले शिवभक्त अर्थात् काशी विश्वनाथ के भक्त माने जाते हैं।

पहले बाहर से बहुत मात्रा में विद्वान् काशी आते थे और क्षेत्र संन्यासियों को ढूँढ कर फल, वस्त्र और द्रव्य आदि देते थे। काशी में पहले हजारों लखपति जो कि रात दिन एक लाख शिव नाम मन्त्र का जप करके सायं सूर्यास्त के समय जल पीते थे। उन लोगों का लखपति नाम था। बाहर से आने वाले कहते थे, उन लखपतियों का दर्शन कराओ। काशीवास करने वाले को सहयोग देने वाले भक्तों के प्रति अन्नपूर्णा, विश्वनाथ जी प्रसन्न होते हैं उनके सब कार्य सफल होते हैं। अन्त में मुक्ति भी प्राप्त होती है। इस लोक में ऐश्वर्य देकर सुख-शान्ति प्रदान करते हैं।

अत: काशीवास करने वाले भक्तों के सहयोग देने वालों को इस लोक में धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है तथा गुणवान, विद्यावान, धनवान पुत्र की प्राप्ति होती है और सुख-शान्ति मिलती है। अन्त में कैवल्य मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अतएव अपने कल्याण चाहने वाले और काशी में रहने वाले भक्तों को चाहिए कि बाहर से काशीवास करने के लिए आये हुए भक्तों का और काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वालों को आवास, भोजन आदि की व्यवस्था करें। ऐसा करने से उनके पितर तृप्त होते हैं और वह व्यक्ति अपने परिवार सहित संसार सागर से तर जाता है। पञ्चक्रोशी के आस पास के गाँवों में रहने वाले व्यक्तियों विशेषकर ग्रामप्रधानों को यह ध्यान रखना चाहिए कि उस क्षेत्र में जो धार्मिक स्थल-तीर्थ हों उनकी समुचित देखभाल की व्यवस्था करें। यदि कोई मंदिर, स्थान, जीर्ण-शीर्ण हो गया हो तो उनका जीर्णोद्वार, मरम्मत आदि का कार्य करें-कराएँ। उनकी पवित्रता एवं शुद्धता और सुरम्यता की उचित व्यवस्था करें। गाँव में रहने वाले पञ्चप्रधान, सभापति तथा गाँव के धनी वर्ग को सुझाव देकर गाँव से और ग्राम विकास खण्ड से सहयोग लेकर जीर्णोद्वार समिति बना कर ऐसे धार्मिक स्थलों का जीर्णोद्धार करें।

काशी में संकल्प पूर्वक क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाला व्यक्ति स्वयं तो मुक्त होता ही है उसका इक्कीस कुल भी उसके इस क्षेत्र संन्यास से तर जाता है। वह व्यक्ति काशी में शरीर पात होते ही मुक्त हो जाता है। काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले की शिवजी के दूत रक्षा करते हैं और आवास, भोजन की भी व्यवस्था करते हैं। इसके साथ ही शिव-योगी शंकर जी के भक्तों को विद्वान्, सज्जन, साधु-महात्माओं का सङ्ग स्वतः प्राप्त होता है।

वेदान्त का श्रवण, मनन, निदिध्यासन करने वाले मनुष्य से भगवान विश्वनाथ प्रसन्न होते हैं और वेदान्त पढ़ने-पढ़ाने वाले के प्रति शंकर जी प्रसन्न होते हैं।

काशी में मरने वाला व्यक्ति मुक्त हो जाता है। जिस मानव को सन्देह हो वह "काशी मोक्ष निर्णय" नामक पुस्तक देखें।

रोगी को अस्सी और वरुणा के मध्य के अस्पताल में भरती करना

चाहिए। कोई भी डाक्टर प्रारब्ध को नहीं मिटा सकता और मरने वाले व्यक्ति को डाक्टर बचा नहीं सकता। जन्म-जन्मान्तर में किए हुए अपने कर्म के द्वारा रोग आते हैं। भोग के पश्चात् ही रोग अच्छे होते हैं। डाक्टर-वैद्य रोगी को दवा देकर राहत अवश्य दिलाते हैं, परन्तु भोग को नहीं मिटा सकते। अतएव प्रयत्न करके (अस्सी-वरुणा के बीच), में शरीर छोड़ने का विधान करना चाहिए।

मलमास "अधिक मास" में प्रतिदिन १५ हजार यात्री आज भी पञ्चक्रोशी यात्रा करने जाते हैं। मणिकर्णिका घाट से मणिकर्णिका तक पञ्चक्रोशी मार्ग सड़क से पंक्तिबद्ध होकर यात्री चलते हैं। कार या जीप से भी असमर्थ यात्री-यात्रा करते हैं। हवाई जहाज से यात्रियों का दर्शन अच्छी प्रकार से होता है। प्रत्येक पुरुषोत्तम मास के पूर्णिमा के दिन एक दिन की पञ्चक्रोशी यात्रा काशी के हजारों युवक करते हैं।

दुर्गाजी में रात्रि निवास का वर्णन

श्री काशी रहस्य के दशवें अध्याय में लिखा है कि प्राचीन काल में दुर्गा जी का दर्शन, पूजन करने के पश्चात् यात्री काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पश्चिम बगल में शंकर जी के मन्दिर में दक्षिणेश्वर हैं, दक्षिणेश्वर में रात्रि में विश्राम होता था, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनने के बाद धर्मशाला विश्वविद्यालय के अन्दर हो गया उसी समय से यात्री दक्षिणेश्वर में नहीं रुकते हैं।

जपध्यानविहीनानां ज्ञानविज्ञानवर्जिनाम्।
तपस्युत्साहहीनानां गतिर्वाराणसीनृणाम्॥

(कूर्मपुराणान्तर्गत वाराणसी माहात्म्य)

जो मनुष्य न तो जप कर सकते हैं और न परमेश्वर का ध्यान ही करते हैं, ज्ञान और विज्ञान से रहित हैं, तप करने के लिये जिनके हृदय में लेशमात्र भी उत्साह नहीं है ऐसे मनुष्यों की गति वाराणसी में ही हो सकती है, दूसरी जगह मुक्ति मिलना असम्भव है।

जन्मान्तरसहस्रेषु यत्पापं पूर्वसञ्चितम्।

(कूर्मपुराणे वाराणसी माहात्म्य)

हजारों जन्मों के सञ्चित पाप भी वाराणसी प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं।

कलौ विश्वेश्वरो देव: कलौ वाराणसी पुरी।
कलौ भागीरथी गङ्गा दानं कलियुगे महत्॥

(स्कन्द पुराणे काशीखण्डे)

अर्थ- कलियुग में भगवान विश्वनाथ ही देवता हैं, वाराणसी ही मुक्तिपुरी है। भागीरथी ही गंगा है और कलियुग में दान देना ही कल्याणकारी है। दान से ही पाप क्षय होते हैं।

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मो यस्य कीर्तित:।
तत्तद्धर्मपरैरेव सेव्या वाराणसी पुरी॥

(पद्म पुराण वाराणसी माहात्म्य)

अर्थ- अपने-अपने जाति के अनुसार धर्मशास्त्र में जिसके लिए जो धर्म कहे गये हैं उस धर्म में जो जाति तत्पर रहती है उन्हीं मनुष्यों का वाराणसी पुरी काशी में काशीवास सफल होता है और वह व्यक्ति अपना जीवन सफल करता है।

जन्मान्तरसहस्रेषु सञ्चितैः पुण्यकर्मभिः।
प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात् परमेश्वरात्।।

(मत्स्य पुराणे वाराणसी माहात्म्य)

अर्थ- हजारों जन्मों में मैंने अनेकों पुण्य कर्म किये। वे पुण्य धीरे-धीरे सञ्चित होते गये। उन्हीं पुण्यों के फल से और भगवान की कृपा से तथा अपने इष्टदेव के आशीर्वाद से परम मनोहर वाराणसी पुरी मिली।

माता पिता परित्यक्ता ये त्यक्ता निजबन्धुभिः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।६९।।

जरया परिभूता ये व्याधिविकलविकृताः।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।६५।।

पदे-पदे समाक्रान्ता ये विपश्चिरहर्निशम्।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।।७६।।

(काशीखण्ड)

अर्थ- जो- माता-पिता, पति से और भाई बन्धुओं से परित्यक्त हैं जिनका कोई आश्रय नहीं है उनके लिये वाराणसी आश्रय है। जो व्यक्ति जरा-वृद्धावस्था से पीड़ित है, तथा जो व्यक्ति रोग से विकल किए गये हैं जिनको कोई और आश्रय नहीं है उनका एक मात्र आश्रय वाराणसी है। जो व्यक्ति पद-पद पर विपत्तियों से रात दिन चिन्तामग्न और दुःख-संकट से घिरा हुआ है, आक्रान्त है, जिनका सहारा कोई नहीं है ऐसे दुःखी व्यक्तियों को वाराणसी ही धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष देती है और वह चारों पदार्थों को प्राप्त करता है।

इदं कलियुगं घोरं सम्प्राप्तं पाण्डुनन्दन।
गतिमन्यां न पश्यामि मुक्त्वा वाराणसी पुरम्।।

(महाभारत)

वेद व्यास जी कहते हैं- हे कुन्ती पुत्र युधिष्टिर ! यह घोर कलियुग आ गया है। कलियुग में वाराणसी को छोड़कर और कहीं भी मुक्ति मिलना

असम्भव है।

काशी स्मरणमात्रेण

वाराणसीति काशीति महामन्त्रमिदं जपन्।
यावज्जीवं त्रिसन्ध्यन्तुर्जातुजन्तु न जायते।।

(काशीखण्ड, ३१/१२६)

अर्थ- "काशीखण्ड" में लिखा है, 'काशी' इस महामन्त्र को तीनों सन्ध्यायों में जो जीव जप करता है, उसका कभी जन्म नहीं होता है, अर्थात् वह जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूटकर मुक्त हो जाता है।

योजनानां शतस्थोऽपि विमुक्तं संस्मरेद्यदि।
बहुपातक पूर्णोऽपि पदं गच्छन्त्यनामयम्।।

यात्रा करने वाले यात्रियों के असिद्ध कार्य भी सिद्ध और निर्विघ्न सफल होते हैं, यात्रियों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

विशेष जानकारी के लिए वाराणसी का चलचित्र देखें। इससे काशी की स्थिति एवं देवस्थलों सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होगी। काशी में रहने वाले और पितरों के कल्याण के लिए प्रतिदिन यथाशक्ति अन्न, द्रव्य, दूध, फल और वस्त्र आदि दान करना चाहिए। यथाशक्ति सीधा आदि दान करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप धीरे-धीरे शान्त होते हैं और इस जन्म में मन, वाणी और शरीर से जो पाप होते हैं उस पाप का प्रायश्चित्त हो जाता है।

वाराणसी माहात्म्य

क्षेत्र संन्यासियों को वाराणसी यात्रा करनी चाहिए।

वाराणसी करुणामय दिव्यमूर्ति
हत्सृज्य यत्र तु तनुं तनुमृत्सुखेन।
विश्वेशवृङ्महसि यत्सहसा प्रविश्य-
रूपेण ता वितनुता पदवीं दधाति।। (क० ३०)

अर्थ- इस संसार में वाराणसी साक्षात् करुणामयी अलौकिक मूर्ति है, क्योंकि यहाँ प्राणिमात्र सुखपूर्वक देह त्याग कर उसी समय विश्वेश्वर के ज्ञान रूप ज्योति में प्रवेश कर तद्रूप कैवल्य पद को धारण कर लेते हैं।

किं मया वर्ण्यते देवि ह्यभिमुक्त फलोदयः ।।३१।।
पापिनां यत्र मुक्तिः स्यान्मृता नामैक जन्मना।
अन्यत्र तु कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति।

अर्थ- हे देवि ! मैं क्या वर्णन करूं, जो मुक्ति देना ही तुम्हारे दर्शन का फल है, यहाँ मरे हुये पापियों की तुरन्त मुक्ति हो जाती है, जैसे कि अन्य क्षेत्र का किया हुआ पाप वाराणसी में विनष्ट हो जाता है।

येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः।
क्षेत्रसंन्यासिनां कृते प्रदक्षिणाक्रमवर्णनम् ।।
स्नात्वा देवं समभ्यर्च्य विश्वेशाम्बिकया सह।
मोदादि पञ्चकढुण्ढि दण्डपाणिञ्च भैरवम् ।।
पूर्ववत्तीरगान्पूज्य दुर्गां सम्पूज्य यत्नतः।
बहिरावरणन्त्यक्त्वा गणेशानान्तु सप्तकम् ।।
मध्ये प्रदक्षिणाङ्कुर्याद्सिवरणयोः कृती।
सम्मुखीभूय विधिवत्पूजयेच्चाग्रतः स्थितान् ।।
देवा देव्यश्च फलदाः क्षेत्रपालाः प्रयत्नतः।
एकरात्रं द्विरात्रंवा वसेन्मध्ये त्रिरात्रकम् ।।
यत्र श्रद्धा सुमहती वसेत्तत्र न संशयः।
प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा कार्या प्रयत्नतः ।।
दण्डपाणे पूजनेन सिद्धा भवति नान्यथा।
दण्डपाणे ! यक्षपते ! क्षेत्र संन्यासिवल्लभः ।।
आगत्य विश्वनाथस्य पूजा कार्या च पूर्ववत् ।।

काशी रहस्यम्।

देव्युवाच

प्रत्यहं दण्डपाणेस्तु पूजा प्रोक्ता विशेषत:।
किमेतद्वद देवेश ! यात्रामुदिद्श्य शंकर !॥

भगवानुवाच

काशीम्प्राप्य बहिर्नैव गच्छेत्सर्वात्मना क्वचित्।
मन्मुखात्सम्यगाश्रुत्य क्षेत्रसन्न्यासकृत्तम: ॥
दण्डपाणि: समभवत्तदारभ्य वरानने !
कालान्तरे तदा देवि ! ऋषिभिर्नारदादिभि: ॥
पृष्टोऽहं क्षेत्रजनितपापनाशनमद्भुतम्।
तदा सुदुर्लभंदेवि ! प्रायश्चित्तम्मया महत् ॥
उपदिष्टम्महलिङ्गं प्रदक्षिणमशेषत:।
तच्छ्रुत्वा पृष्टवान् दण्डपाणि क्षेत्रपरायण: ॥
तदा मयोपदिष्टोऽसौ महापाशुपत: कृती।
क्षेत्रयात्रा द्वितीया मे मयोक्ता दण्डपाणये ॥
ततो दण्डपते: पूजा कर्तव्या पूर्त्तिकारिणी।
प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्नर: ॥
क्षेत्रसन्न्यासिनामेव क्रम: प्रोक्तो मयानघे।
प्रदक्षिणाया माहात्म्यं महापापहरं शुभम्॥

(काशी रहस्य अ० ॥)

अर्थ- यह काशी क्षेत्र है, जैसे माता-पिता प्रत्येक परिस्थिति में पुत्र का हित करने वाले होते हैं, उसी तरह काशी प्रत्येक जीवों का हित करने वाली है।

जो लोग पद-पद पर विपत्ति से आक्रान्त होते हैं फिर भी काशी में रहते हैं उनकी सारी विपत्ति दूर हो जाती है। जिनकी अन्य क्षेत्रों में मुक्ति नहीं होती है उनको मुक्ति देने वाली काशी है।

यात्रा जाने के ५ दिन पहले भगवान् के भक्तों और भाई-बन्धु एवं मित्रों को निमन्त्रित करना चाहिए और विद्वानों को एक दिन पहले नन्दी श्राद्ध करना चाहिए। यात्रा पर जाने के एक दिन पहले गणेश की पूजा करें।

प्रातः स्नान, संध्या और हवन, किञ्चित् दान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर अन्नपूर्णा आदि के दर्शन करने के पश्चात् दण्डपाणि जी को प्रणाम करें। वाराणसी प्रदक्षिणा के सम्बन्ध में स्कन्दपुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, पद्म पुराण एवं शिव पुराण, वामन पुराण, लिंग पुराण में वर्णन है।

वाराणसी (नगर वह बड़ी अन्तर्गृही) की प्रदक्षिणा यात्रा

१. दण्डपाणिभ्यो नमः (मं० नं० सी० के० ३६/११ में, मु० ढुण्ढिराज गली)। प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है–

दण्डपाणे यक्षपते क्षेत्र संन्यासिवल्लभ।

वाराणसी यात्रा करने वाले नर-नारियों के इस जन्म के और पूर्व जन्मों के स्थूल पाप नष्ट होते हैं। भारत के सभी प्रान्तों से, नेपाल, भूटान, लंका, पूर्व बंगाल तथा विश्व राष्ट्र के लोग काशी में आकर यात्रा करते हैं। मन्द्राचल से विश्वनाथ जी काशी में आने के पश्चात् आश्विन शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन विश्वनाथ भवानी जी ने वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा की थी। द्वापर युग में अन्नपूर्णा विश्वनाथ जी ने मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा के दिन अपने भक्त भैरव आदि के साथ वाराणसी की यात्रा की। आज भी उसी दिन भारत के कोने-कोने से नर-नारी आकर यात्रा करते हैं, गाँवों वाले वाराणसी यात्रा को बड़ी अन्तर्गृही यात्रा कहते हैं।

"सम्यक् पृष्टा त्वयादेवि ! महाहंकारनाशनम्।
प्रायश्चित्तं न्यासिनां हि क्षेत्राघौघविनाशनम्"।

(काशी रहस्य अ० ११)

भावार्थ- शंकर जी भवानी जी से कहते हैं कि हे देवी तुमने ठीक प्रश्न किया। वाराणसी यात्रा करने वाले यात्रियों के अहंकार को नाश

करती है। काशीवास करने वाले और काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर रहने वाले नरनारियों के मन, वाणी, शरीर से जो पाप होते हैं उन पापों का प्रायश्चित्त करने के लिये तथा पाप समुदायों को नष्ट करने के लिये वाराणसी दर्शन, पूजन प्रदक्षिणा यात्रा करना अनिवार्य है।

२. वाराणसी देव्यै नमः (विश्वनाथ जी में)

३. कालराजेश्वराय नमः (विश्वनाथ जी में)

४. वाराणसीश्वराय नमः (विश्वनाथ जी हैं, म० नं० सी० के० ३५/१९ में है मो० अन्नपूर्णा गली)

प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है–

काश्यां प्रजातवाक्कायमनोजनितमुक्तये।
ज्ञाताज्ञातविमुक्त्यर्थं पातकेभ्यो हिताय च ।।

भावार्थ- हे विश्वनाथ भगवान् ! मैं समस्त पापों का प्रायश्चित्त करने के लिये और पितरों को मुक्ति दिलाने के लिये तथा अपना कल्याण करने के लिये यात्रा करना चाहता हूँ।

५. ज्ञानवापी तीर्थाय नमः (संकल्प लेकर)– ब्राह्मण को सीधा, पैसा, फल देकर यात्री मणिकर्णिका घाट में जाते हैं।

६. मणिकर्णिका तीर्थाय नमः (स्नान या मार्जन करके)

पञ्चोपचार पूजन की सामग्री (गंगा जल, रोली, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, लाचीदाना, अगरबत्ती, द्रव्य (पैसा), चढ़ाने के वस्त्र आदि सामान) साथ में लेकर शिव-शिव महामन्त्र जप करते हुए 'हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे' एक स्वर से कीर्तन करते हुए चलते हैं।

गंगेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण- काशी रहस्य, शिव पुराण तथा लिंग पुराण में प्राप्त है।

गंगेश्वराय नमः (मो० मर्णिकर्णिका घाट)।

गंगेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले व भक्तों को इस लोक में सुख

का साधन तथा विद्वान्, सज्जन, साधु, सन्त, महात्माओं का संग और भक्ति देकर अन्त में मुक्ति दिलाते हैं। मणिकर्णिका घाट से दक्षिण गंगा तट से चलते हैं।

ललिता दैव्यै नमः (मं० नं० डी० १/६७ में है, मु० ललिता घाट)।– देवी जी अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को जब तक वह जीता है तब तक उस साधक को बुद्धि योग द्वारा ज्ञान प्राप्त कराती है। शूलटंकेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण, काशी रहस्य और शिव पुराण, पद्म पुराण में उपलब्ध है।

९. शूलटंकेश्वराय नमः (मु० दशाश्वमेध घाट)। शूलटंकेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले और उनके स्नान कराया हुआ चरणामृत जल पीने वाले रोगी के पेट के रोग और शूल सम्बन्धी रोग अच्छे होते हैं। दुःख-कष्ट दरिद्रता दूर होती है। द्रव्य, परिवार, भक्ति की वृद्धि होती है। शूलटंकेश्वर से दक्षिणक्षेमेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड में, काशी रहस्य, केदार माहात्म्य में, शिव पुराण में प्राप्त होता है।

१०. क्षेमेश्वराय नमः (गंगातीर में क्षेमेश्वर घाट में है।) क्षेमेश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं उनके सब अपराध को क्षमा करके सुख-शान्ति एवं भक्ति देते हैं। क्षेमेश्वर से दक्षिण बगल में केदारेश्वर है। केदारेश्वर का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण एवं लिंग पुराण, केदार माहात्म्य, पद्म पुराण तथा मत्स्य पुराण में है।

११. केदारेश्वराय नमः (मन्दिर नं० बी० ६/१०२ में है, मु० केदारघाट)। – केदारेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, कष्ट रोग और संकट तथा ग्रहों की पीड़ा और गरीबी को दूर करते हैं। इसके अतिरिक्त, बुद्धि, विद्या तथा आयु की वृद्धि होती है। अन्त में मुक्ति मिलती है। केदारेश्वर से दक्षिण में अस्सी संगमेश्वर का प्रमाण-काशी खण्ड, काशी रहस्य, पद्म पुराण और लिंग पुराण में प्राप्त होता है। (अस्सी घाट में मार्जन करके गंगा जल साथ में लेकर चलें)

१२. अस्सीसंगमेश्वराय नमः (मं० नं० बी ० १/१७४ में है, मु० अस्सी घाट)। – अस्सीसंगमेश्वर अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों की कष्ट रोग को दूर करते हैं। द्रव्य, व्यापार, परिवार एवं नौकरी में पदोन्नति भक्ति में वृद्धि करते हैं, अस्सीसंगमेश्वर के दक्षिण बगल में जगन्नाथ मन्दिर है, जिसमें जगन्नाथ मूर्ति उत्तराभिमुख है। जगन्नाथजी का वर्णन और जगन्नाथ माहात्म्य, स्कन्दपुराण, विष्णु पुराण, ब्रह्मवैवर्त एवं बाराह, मत्स्य पुराण में है।

जगन्नाथाय नमः (मंदिर नं० बी० १/१५१ में है, मु० अस्सीघाट)। – जगन्नाथ जी अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को शिव, विष्णु की भक्ति तथा विद्वान् सज्जन, साधु, महात्माओं की संगति और भक्ति का साधन देकर सुख देते हैं और धन, सन्तान, भक्ति विद्या में वृद्धि करते हैं। जगन्नाथ जी काशी में संन्यास लेकर काशीवास करते हैं, यह सप्तपुरियों में प्रथम पुरी है।

[नोट- जगन्नाथ जी से अस्सी नदी पार करके संकट मोचन होते हुए सुकुलपुरा जाने का प्रमाण नहीं मिलता है। अतः अस्सी और वरुणा के अन्तर्गत यात्रा करनी चाहिए। जगन्नाथ जी से संकट मोचन होकर जो यात्री यात्रा करते हैं उन यात्रियों की यात्रा खण्डित होती है।]

जगन्नाथ जी से दुर्गा जी जाने का मार्ग इस प्रकार है–

जगन्नाथ जी से उसी मार्ग से सड़क में आते हैं। सड़क के सामने पश्चिम की गली से गोयनका गली, सेनापति हनुमान होते हुए दुर्गाकुण्ड जाते हैं। दुर्गाजी के मंदिर से सटे हुए वाहर पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है। दुर्गा शक्ति तीर्थ है।

दुर्गा जी का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण, पद्म पुराण, एवं लिंग पुराण, देवी भागवत में प्राप्त है। दुर्गातीर्थ दुर्गाकुण्डाय नमः।

१६. दुर्गा दैव्ये नमः (मं० नं० बी० २७/१ में है, मु० दुर्गाकुण्ड)।

– दुर्गा जी अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के कष्ट, दरिद्रता और रोग को दूर करती हैं। धन, परिवार, व्यापार तथा भक्ति में वृद्धि करती हैं। अपुत्री को दुर्गा जी के दर्शन, पूजन और आराधना से पुत्र की प्राप्ति होती है। पुरवासियों की रक्षा करती हैं। दुर्गा जी का वार्षिक शृंगार होता है। उस समय, विविध आयोजन होते हैं। गणेश, विष्णु, शिव-शक्ति यज्ञ होते हैं तथा वेद, वेदान्त, गीता और दुर्गा रामायण आदि सम्मेलन होते हैं। दुर्गा जी का मंगलवार, शनिवार, अष्टमी के दिन लाखों यात्री दर्शन करते हैं। दर्शन, पूजन करने के पश्चात् यात्री प्रथम विश्राम दुर्गाजी में करते हैं। मन्दिर के बाहर दक्षिण मुँह करके 'कर्दमेश्वराय नमः' कहकर अक्षत छोड़े, कुँआ के आस-पास अथवा पार्क में सफाई कर गंगा जल छिड़कर आसन लगाकर मध्याह्न संध्या करें। जिन यात्री के कुल में यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा नहीं है वह यात्री तीनों संध्यायों में पञ्चाक्षर महामन्त्र का जाप करें। साधु, महात्माओं और ब्राह्मणों को यथाशक्ति मधु-मिष्टान्न, लड्डू, खीर, पायस, हलुवा आदि दिव्य भोजन कराना चाहिए। भोजन की व्यवस्था न हो तो ऋतुफल, लड्डू आदि मिष्टान्न का जलपान कराना चाहिए। स्वयं हविष्य अन्न का भोजन करने के पश्चात् तीन बजे से कथा श्रवण करें।

प्रश्न- कथा श्रवण किस पुस्तक से करें?

उत्तर- वाराणसी माहात्म्य, वाराणसी की महिमा, वाराणसी यात्रा करने का फल। पहले यात्रा करने वाले यात्रियों को जो-जो फल मिला है उसका वर्णन और वाराणसी में निवास करने का फल का वर्णन करते हैं। अपने पास साधन हो तो विद्वानों को साथ में लेकर यात्रा करनी चाहिए।

कथा श्रवण कराने वाले व्यास जी और कथा सुनने वाले से अन्नपूर्णा और विश्वनाथ जी प्रसन्न होते हैं। कथा श्रवण करने के पश्चात् स्नान, सायं संध्या करके दुर्गा जी का दर्शन करें। दर्शन कर अपने अपने आसन में बैठकर गीत कीर्तन, दुर्गाजी का ध्यान करके वाराणसीश्वर विश्वनाथ

जी का स्मरण करते हुए शयन करें।

दूसरे दिन प्रात: स्नान संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर दण्डपाणिके पार्थिव मूर्ति का पूजा करें। दुर्गा जी का दर्शन करके प्रार्थना करें। प्रार्थना करके दर्शन, पूजन, कीर्तन करते हुये यात्री चलते हैं। दुर्गाजी के चौराहे से पश्चिम सड़क से कबीर नगर कालोनी में फुलपुरा में शुक्लेश्वर के दर्शन करें। खोजवाँ, बजरडीहा होते हुए मडुवाडीह आगे बजरडीहा सुन्दरपुर जाने वाली सड़क मिलती है। त्रिमुहानी से दाहिने उत्तर की ओर बजरडीहा चौकी से पश्चिम मडुवाडीह जाने वाली पोखरी, पटिया, ककरमत्ता, खराऊ मोहल्ला होते हुए मडुवाडीह रेलवे स्टेशन के दक्षिण गेट से लाइन पार करके उत्तर जाने वाली सड़क से आगे त्रिमुहानी के सामने से डीह मुहल्ले से मडुवाडीह थाना और शालटंक विनायक जाने वाली गली से थाना के दक्षिण बगल में दाहिने तरफ गणेश जी का मंदिर है। गणेश जी की मूर्ति उत्तराभिमुख है, ये शालटंक विनायक हैं। शालटंक गणेश-शक्ति तीर्थ पूर्व बगल में कुँआ के रूप में है। इसका ठंढा-मीठा जल है। शालटंक विनायक जी का वर्णन स्कन्द पुराण, काशीरहस्य, और काशी दर्शन यात्रा में, गणेश उपनिषद् में उपलब्ध है।

१७. शालटंक विनायकाय नमः (मु० मडुवाडीह)। शालटंक विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुख और संकट तथा गरीबी दूर करते हैं। इनकी पूजा-आराधना से परिवार, व्यापार, द्रव्य तथा नौकरी में पदोन्नति होती है। जो व्यक्ति मन्दिर का जीर्णोद्धार करके इनका दर्शन करते हैं उनके सब कार्य निर्विघ्न सफल होते हैं। मुकदमा, राजनीतिक कार्य अर्थात् प्रधान, सभापति, मन्त्री आदि जैसे पदों की प्राप्ति में सफलता मिलती है। दर्शन, पूजन के पश्चात्, मन्दिर के बाहर पश्चिम मुँह करके 'भीमचण्डी देव्यै नमः' कहते हुए अक्षत छोड़ें।

यह द्वितीय पड़ाव है। यहाँ यात्री मन्दिर के पास में विश्राम करते हैं। इस यात्रा का आधा मार्ग पूर्ण होता है।

मध्याह्न संध्या करने के पश्चात् साधु-महात्मा और संन्यासियों को जलपान या भोजन कराकर अपने मित्रों के साथ भोजन करें। तीन बजे से कथा श्रवण करें। सत्संग के पश्चात् यात्री सायं संध्या करके मंदिर में दर्शन करने जाते हैं। दर्शन के पश्चात् अपने-अपने आसन में बैठकर कीर्तन और भजन, वाराणसीश्वर विश्वनाथ जी का ध्यान करते हुये रात्रि में शयन करते हैं। प्रातः स्नान संध्या आदि से निवृत्त होकर दण्डपाणि की मिट्टी की पार्थिव मूर्ति बनाकर पूजा करें। शालटंक विनायक के दर्शन पूजन कीर्तन करते हुये शनैः शनैः चलते हैं। मडुवाडीह से आदि केशव तक का मार्ग लगभग पाँच किलोमीटर है। शालटंक विनायक से उत्तर मडुवाडीह चौराहा लहरतारा होते हुए लहरतारा सड़क से सटा हुआ पश्चिम बगल के शंकर जी के मंदिर में विश्वामित्रेश्वर हैं। मन्दिर के पश्चिम बगल में विशालकुण्ड है, इन्हीं विश्वामित्रेश्वर का वर्णन काशी खण्ड, शिव पुराण, काशी रहस्य और लिंग पुराण में है।

१८. विश्वामित्रेश्वराय नमः (मु० लहरतारा) विश्वामित्रेश्वर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के रोग, कष्ट और दरिद्रता को दूर करते हैं। द्रव्य, व्यापार, परिवार, भक्ति आदि में वृद्धि होती है। यहाँ पहले यज्ञ, गीता, भागवत, वेदान्त, रामायण, पुराण आदि सम्मेलन होते थे। दर्शन, पूजन करने के पश्चात् पश्चिम मुँह करके 'सोमनाथाय नमः' उच्चारण करते हुये अक्षत छोड़ें।

विश्वामित्रेश्वर से उत्तर सड़क से वाराणसी स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से लाइन पार करें, उत्तर कैन्टूमेन्ट जाने वाली सड़क से जौनपुर जाने वाली रेलवे लाइन के उत्तर बगल में सड़क के पश्चिम पटरी में पाशपाणि विनायक तीर्थ कुँआ के रूप में है, बगल में तीन मंदिर के दर्शन होते हैं। सबसे उत्तर बगल में शंकर जी के मंदिर के पश्चिम दक्षिण के कोने में कुष्माण्ड विनायक पर्वाभिमख हैं।

२०. कुष्माण्ड विनायकाय नमः (मु० कैन्टूमेण्ट एरिया में सदर बाजार)

– कुष्माण्ड विनायक अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के विघ्न को दूर करते हैं। पुरवासियों का कल्याण करते हैं। जो मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते हैं वे व्यक्ति सब जगह विजयी होते हैं। पहले लोग पाशपाणि में रात्रि में विश्राम करते थे, जब मिलिटरी छावनी बनी तभी से यात्री चौकाघाट में विश्राम करने लगे। यहाँ पहले विद्वानों का शास्त्रार्थ होता था। कुष्माण्ड विनायक से पश्चिम उत्तर के कोने में जो मन्दिर का दर्शन होता है वह चण्डी देवी जी का मंदिर है उसमें मुण्ड विनायक पश्चिमाभिमुख हैं। चण्डी देवी और चण्डेश्वर तीर्थ चण्डेश्वर के मन्दिर के बगल में कुँआ के रूप में है। मुण्ड विनायक का प्रमाण काशी खण्ड, काशी दर्शन यात्रा में, उपगणेश पुराण में भी मुण्ड गणेश्वरों के नाम से प्रसिद्ध है।

२१. मुण्ड विनायकाय नमः (मु० कैन्टूमेण्ट एरिया शक्ति मार्ग में)।

मुण्ड विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुःख, विघ्न, कष्ट दूर करते हैं। द्रव्य, व्यापार में वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति करते हैं। चण्डी देवी का स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिंग पुराण, एवं ब्रह्म पुराण, उपनन्दी पुराण, देवीभागवत, उपकालिका पुराण में वर्णन उपलब्ध है।

२२. चण्डीदेव्यै नमः (मु० शक्तिमार्ग कैन्टूमेण्ट एरिया में)। – चण्डी देवी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के प्रचण्ड संकट को दूर करती हैं और आपत्ति काल आदि से बचाती हैं। धन ऐश्वर्य प्राप्त कराकर भक्तों को सुख-सुविधा का अवसर दिलाती हैं। जो भक्त मंदिर का जीर्णोद्धार करके इनका दर्शन करते हैं उनको दुख नहीं आता है। चण्डीदेवी के पश्चिम बगल में चण्डेश्वर हैं। चण्डेश्वर का प्रमाण काशीखण्ड, काशीरहस्य, शिव पुराण, लिंग पुराण, उपनन्दी पुराण में प्राप्त होता है।

२३. चण्डेश्वरायनमः (शक्ति मार्ग कैन्टूमेण्ट ऐरिया)। चण्डेश्वर के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं उनको इस लोक में वैभव एवं सुख का साधन प्राप्त होकर सुख और धन की प्राप्ति होती है और अन्त में मुक्ति लाभ होता है। चण्डेश्वर से उत्तर सड़क से टेलीविजन स्तम्भ के बगल से पूर्व

नदेसर मुहल्ला में सड़क के उत्तर बगल में काशीराज विभूतिनारायण सिंह जी के दरबार के सामने शंकर जी के मंदिर में नन्दीश्वर हैं। नन्दीश्वर का प्रमाण- स्कन्द पुराण, शिव पुराण, लिंग पुराण, उपनन्दी पुराण, काशी रहस्य में मिलता है।

२४. नन्दीश्वराय नमः (मन्दिर नं० एस० १८/२४० में, मु० नदेसर)। नन्दीश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले व्यक्ति को ऐश्वर्य स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, बुद्धि होती है। जगत में मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। नन्दीश्वर से सटी हुई नन्दीश्वरी देवी हैं। नन्दीश्वरी देवी जी का प्रमाण स्कन्द पुराण, शिव पुराण, नन्दी उप पुराण, काशी रहस्य, पद्म पुराण में प्राप्त होता है।

नन्दीश्वरी देव्यै नमः (मंदिर नं० एस० १८/२४० में है, मुहल्ला नदेसर)। नन्दीश्वरी देवी जी अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुख, रोग, भक्तों के दुर्गुण दूर करती हैं तथा ऐश्वर्य, आज्ञाकारी पुत्र दिलाकर भक्त को सुख दिलाती हैं साथ ही व्यापार, द्रव्य आदि की वृद्धि करती हैं।

वेदेश्वर का काशी खण्ड, काशी रहस्य, लिंग पुराण और पद्म पुराण, उप नन्दी पुराण, मत्स्य पुराण में वर्णन है।

२६. वेदेश्वराय नमः (मंदिर नं० एस० १८/२४० में है, मु० नदेसर)। वेदेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनको बुद्धियोग और ब्रह्म विद्या की प्राप्ति होती है। उन भक्तों के पुत्र और पौत्र विद्वान होते हैं। उनको सब जगह मान, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। नन्दीश्वरी में पहले गणेश, विष्णु, रुद्र, शक्ति आदि बड़े-बड़े यज्ञ हुआ करते थे। वेद-वेदान्त, उपनिषद, पुराण, गीता एवं श्रीमद्भागवत, रामायण आदि सम्मेलन होते थे।

वेदेश्वर से उसी मार्ग से सड़क से पूर्व चौकाघाट पुल के नीचे से चौकाघाट सड़क से पूर्व बगल में धूपचण्डी त्रिमुहानी में लकड़ी के टाल के पीछे से उत्तर बगल के हनुमान मंदिर में, हनुमान जी से सटा हुआ दक्षिण बगल में विकट द्विज विनायक पूर्वाभिमुख हैं। इनका वर्णन काशी खण्ड, काशी

रहस्य, काशी दर्शन यात्रा में प्राप्त होता है।

२७. विकटद्विज विनायकाय नमः (मु० चौकाघाट)। विकटद्विज विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के विघ्न, कष्ट और संकट दूर करते हैं। उन भक्तों को बुद्धि, विद्या, धन की प्राप्ति होती है और सब कार्य सफल होते हैं। भक्ति, ज्ञान, व्यापार, परिवार की वृद्धि होती है। किसी भी शुभ कार्य करने जाने के एक दिन पहले जो व्यक्ति देशी घी में बना हुआ मिष्टान्न, खोवा, बेसन और सूजी आदि के लड्डू, दूध आदि अर्पण करते हैं उनके सब कार्य सफल होते हैं। विकटद्विज विनायक के बाहर उत्तर मुख होकर 'पञ्च पाण्डवेश्वराय नमः' उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

विकटद्विज विनायक के पूर्व बगल में वरुणा के किनारे से आदि केशव जाने का प्रमाण नहीं मिलता। (सन् १९७४ में मैं भी अपनी भक्त मण्डलियों के साथ चौकाघाट से वरुणा तट से यात्रा करता था। पैर फिसलंने के कारण ३ बार वरुणा के जल में गिर पड़ा और कपड़े भींग गये। यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् मैं शास्त्रों के प्रमाण ढूढ़ने के लिये पुस्तकालयों में गया, किन्तु चौकाघाट से वरुणा किनारे जाने का कोई प्रमाण नहीं मिला)

चौकाघाट से पूर्व जी० टी० रोड सड़क से बकरिया कुण्ड के उत्तर बगल से वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन के पश्चिम रेलवे गेट से उत्तर से शैल पुत्री चौराहा में उत्तर मुँह करके 'शैलपुत्री देव्यै नमः' बोलकर अक्षत छोड़े, राजघाट रेलवे गेट के उत्तर कोनियाघाट जाने वाली सड़क से बड़ी लाइन के नीचे से दाहिनी तरफ राधाकृष्ण मंदिर में कुन्तेश्वर का दर्शन करके रामानन्द आश्रम, तोतादरी मठ होते हुए, सड़क से बसन्त कालेज में, बैंक के पूर्व बगल में, सड़क के उत्तर पटरी में, गणेश जी के मन्दिर में, राजपुत्र विनायक पुर्वाभिमुख हैं। राजपुत्र विनायक का प्रमाण- स्कन्द पुराण, गणेशोपनिषद्, लिंग पुराण, काशी रहस्य, गणेश उपपुराण में है।

राजपुत्र विनायकाय नमः (मन्दिर न० ए० ३७/४८ में है, मु० बसन्त

कालेज)। राजपुत्र विनायक अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के अनेक प्रकार के रोग, कष्ट, विघ्न तथा आपत्ति दूर करते हैं। इसके साथ ही भक्तों को कष्ट देने वाले शत्रु परास्त हो जाते हैं तथा द्रव्य, मित्र, भक्ति आदि में वृद्धि होती है। राजपुत्र विनायक के बाहर उत्तर मुख होकर 'वृषभध्वजेश्वराय नमः' उच्चारण करते हुए अक्षत छोड़ें।

यहाँ पहले बड़े-बड़े यज्ञ होते थे। वेद, वेदान्त, पुराण तथा गीता, रामायण आदि सम्मेलन होते थे। विद्वान् शास्त्रार्थ करते थे। इस भूमि पर पहले राजमहल था। राजपुत्र विनायक से पूर्व बगल में चौमुहानी पर जो विशाल मंदिर का दर्शन होता है वही अदि केशव विष्णु जी का मन्दिर है। आदि केशव का प्रमाण स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण, विष्णु पुराण में प्राप्त होता है।

२९. आदिकेशव विष्णवे नमः (म० नं० ३७/ ५१ मु० आदि केशव) आदिकेशव विष्णु जी के दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों के दुख, कष्ट, दरिद्रता, रोग एवं अज्ञान दूर होते हैं। इनके दर्शन से सुखपूर्वक काशीवास होता है और विद्या, द्रव्य, भक्ति की वृद्धि होती है। वरुणा गंगा संगमेश्वर ज्ञान, केशव आदि केशवादित्य सूर्य आदि का दर्शन करके आदि केशव से दक्षिण उसी मार्ग से बसन्त कालेज होते हुए जी० टी० रोड के पूर्व पटरी से पगडण्डी के रास्ते गंगा किनारे से प्रह्लाद घाट जाते हैं।

प्रह्लाद घाट के ऊपर दाहिनी तरफ प्रह्लादेश्वर के मन्दिर के बगल के विष्णु मंदिर में प्रह्लाद केशव पूर्वाभिमुख हैं।

प्रह्लाद केशव विष्णु जी का काशी खण्ड में, विष्णु पुराण में, वाराह पुराण, कूर्म पुराण और काशी दर्शन यात्रा में वर्णन प्राप्त होता है।

३०. प्रह्लाद केशवाय नमः (मं० नं० ए० १०/८० में है, मु० प्रह्लाद घाट)। प्रह्लाद केशव के दर्शन, पूजन जो भक्त करते हैं उनको ऐश्वर्य, पुत्र, मित्र और भक्ति तथा मान की प्राप्ति होती है। प्रह्लाद केशव जी के दर्शन के पश्चात् पूर्वाभिमुख करके 'गंगा देव्यै नमः' बोलकर अक्षत छोड़ें।

बदरीनारायण घाट के ऊपर विष्णु मंदिर में बदरीनारायण पूर्वाभिमुख हैं। बदरीनारायण जी का वर्णन-स्कन्द पुराण, शिव पुराण, काशी यात्रा में है।

३२. बदरीनारायण विष्णवे नमः (मं० नं० ए० १/७२ में है, मु० बदरीनारायण)। – बदरीनारायण जी अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दुख, दरिद्रता, संकट को दूर करते हैं। इसके साथ ही शिव और विष्णु जी की भक्ति देते हैं।

[नोट– जिन मनुष्यों को बदरीनारायण जाने की वासना उत्पन्न होती है वह व्यक्ति बदरीनारायण जी का दर्शन, पूजन कर, कीर्तन करके प्रसाद पाते हैं। इससे उन यात्रियों के बदरीनारायण जाने की वासना समाप्त होती है।]

बदरीनारायण जी से सटा हुआ उत्तर बगल के शंकर जी के मंदिर में नरनारायणेश्वर हैं। नरनारायणेश्वर का प्रमाण-स्क़न्द पुराण, लिंग पुराण, मत्स्य पुराण और पद्म पुराण में प्राप्त होता है।

३३. नरनारायणेश्वराय नमः (मं० नं० ए० १/७२ में है, मु० बदरीनारायण घाट।) नरनारायणेवर अपने दर्शन-पूजन करने वाले भक्तों को शिव और विष्णु की भक्ति सुलभ कराते हैं। भक्तों की बुद्धि में वृद्धि होती है और दुख, कष्ट, विघ्न दूर होते हैं। धन-धान्य में वृद्धि होती है।

बदरीनारायण से दक्षिण, रामघाट में शंकर जी के मंदिर में वीररामेश्वर हैं।

वीररामेश्वर का प्रामण-स्कन्द पुराण, काशीरहस्य, शिव पुराण, कूर्म पुराण में प्राप्त होता है।

३४. वीररामेश्वराय नमः (मं० नं० के० २४/१० में है, मु० रामघाट में)। वीररामेश्वर के जो भक्त दर्शन-पूजन करते हैं उनके दुख, दरिद्रता, कष्ट दूर होते हैं तथा वीर्यवान, बलवान, तेजस्वी और बुद्धिमान पौत्र होते हैं। साथ ही शिव और राम जी की भक्ति प्राप्त होती है।

३५. मणिकर्णिका घाट तीर्थाय नमः।

यहाँ स्नान या मार्जन करके पश्चिम ब्रह्मनाल, नीलकण्ठ और ज्ञानवापी होते हुए ज्ञानवापी के उत्तर फाटक से ढुण्ढिराज गली में, दण्डपाणि के मंदिर में दण्डपाणीश्वर हैं।

३६. दण्डपाणीश्वराय नमः (मंदिर नं० सी० के० ३६/११ में है, मु० ढुण्ढिराज गली)

३७. साक्षीविनाय्रकाय नमः (मं० नं० डी० १०/७ में हैं, मु० साक्षी विनायक) ढुण्ढिराज और अन्नपूर्णा जी के दर्शन करके विश्वनाथ जी के पूर्व उत्तर के कोने में, वाराणसी देवी के मंदिर में, वाराणसी देवी जी पूर्वाभिमुख हैं। पार्वती देवी के नाम से प्रसिद्ध हैं। वाराणसी देवी जी का प्रमाण- स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिंग पुराण में प्राप्त होता है।

३९. वाराणसी देव्यै नमः (मंदिर नं० सी० के० ३५/१९ में है, मु० विश्वनाथ जी)। वाराणसी देवी जी अपने दर्शन, पूजन और आराधना करने वाले भक्तों के दुख, संकट, विघ्न, रोग, ग्रह-ग्रसित पीड़ा आदि को दूर करती हैं। इस लोक में धन, पुत्र आदि सुख के साधन देकर सुखी बनाती हैं, अन्त में मोक्ष की भिक्षा देती हैं।

४०. कालराजेश्वराय नमः (मं० नं० सी० के० ३५/१९ में है)

४१. वाराणसीश्वराय नमः (विश्वनाथ जी हैं)। – प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है - "नूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादा- दुमापते।"

ज्ञानवापी से संकल्प छोड़कर, यथाशक्ति सीधा दक्षिणा, ब्राह्मण को देकर, साधु, संन्यासियों को जलपान कराकर यात्रा समाप्त करें।

वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा का प्रत्यक्ष फल

इस यात्रा से पापों का प्रायश्चित्त होता है। पुनः पाप में वृद्धि नहीं हो पाती, पाप कर्म को छोड़कर निष्काम सेवा और सत्कर्म में प्रवृत्ति बढ़ती है। रोग नष्ट होते हैं, यात्रा करने से कठिन से कठिन कार्य भी सिद्ध होते

हैं, शत्रु मित्र बनते हैं। यात्रियों के पितर और इष्टदेव प्रसन्न होते हैं तथा ग्रह शान्त होते हैं। यात्रियों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। विद्या, भक्ति की प्राप्ति होती है। यात्री वाराणसी के ईश्वर वाराणसीश्वर विश्वनाथ भगवान का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं।

माता, पिता, प्रपितामह, आदि पितरों को मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से यात्री स्वयं यात्रा करते हैं और जो यात्री स्वयं यात्रा नहीं करते हैं वे ब्राह्मणों को वरण करके यात्रा करने के लिये भेजते हैं। इसके साथ ही मनोरथ पूर्ण करने के लिए, कठिन से कठिन कार्य सिद्ध करने के लिए यात्री काशी की सम्पूर्ण यात्रा करते हैं अत: उनके सभी कार्य सफल होते हैं।

नोट– आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन और मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा के दिन वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा हजारों यात्री करते हैं।

त्वदीयं वस्तु विश्वेश्वर ! तुभ्यमेव समर्पितम् हरि ऊँ तत् शिवार्पणमस्तु। हर हर महादेव ! ॥

[एक सौ आठ बार वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा करने के पश्चात् लिखा गया।]

१. प्रश्न- गुरु जी ! आपके मठ (आश्रम) में सब पदार्थ बनते हैं। भगवान को भोग लगाकर प्रसाद हजारों नर, नारी भोजन करते हैं। आप मधुकरी भिक्षा माँगने ब्राह्मणों के घर में क्यों जाते हैं ?

वत्स ! आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया। मेरे गुरु जी के आश्रम में कोई कमी नहीं है। अन्न क्षेत्र चल रहे हैं। फिर भी वेद, उपनिषद्, पुराणों में लिखा है कि जिस जाति धर्म में जन्म लिया है, उसी जाति के अनुसार धर्म का पालन करें। और वर्णाश्रम धर्म के अनुसार सबको धर्म का पालन करना चाहिए।

मैं (संन्यासी) यती हूँ मधुकरी माँग करके ही भिक्षा करना ही मेरा परम धर्म है। इसलिए मैं मधुकरी भिक्षा माँगकर भोजन करता हूँ।

१. प्रश्न- गुरुजी ! आपके मठ (आश्रम) में सब पदार्थ बनते हैं। भगवान को भोग लगाकर प्रसाद हजारों नर, नारी भोजन करते हैं। आप मधुकरी भिक्षा माँगने ब्राह्मणों के घर में क्यों जाते हैं ?

वत्स ! आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया। शिव शंकर जी की कृपा से मेरे गुरुजी के आश्रम में कोई कमी नहीं है। अन्न क्षेत्र चल रहे हैं। फिर भी वेद, उपनिषद्, पुराणों में लिखा है कि जिस जाति धर्म में जन्म लिया है, उसी जाति के अनुसार धर्म का पालन करें।

(और वर्णाश्रम धर्म के अनुसार सबको धर्म का पालन करना चाहिए)।

काशी में क्षेत्र-संन्यास माहात्म्य

"आनन्दकानने ये वसन्ति क्षेत्रसंन्यासं सम्विधायाऽत्र पुत्रा।
तैर्वस्तव्यं रूद्ररुपैर्हि यत्नाद्यतो रूद्रो धर्मपालः प्रसिद्धः ॥"

(काशी रहस्ये, अ० २, २ श्लो० ५८)

अर्थ - हे पुत्र ! विधिपूर्वक काशी में क्षेत्र-संन्यास लेकर जो इस आनन्द-कानन काशी में निवास करते हैं। वे रुद्र रूप ही हैं। जिस प्रकार से धर्म-पाल रुद्ररूप में प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले नर नारी जीवन मुक्त है।

"ये क्षेत्र संन्यास करामहामते। ते वन्दनीयाः कृत शुद्धया सदा।
ते शङ्करत्वं समवाप्य जीवा भवन्ति चेदिन्द्रियार्थेषुलोलाः ॥

(काशी रहस्य, अ० २, श्लो० ५९)

अर्थ- हे महामते ! काशी में जो नर-नारी क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करते हैं, वे ज्ञान बुद्धि सम्पदा से सदा पूजा करने के योग्य हैं। वे मनुष्य शिवत्व को प्राप्तकर इन्द्रियों में अनासक्त होते हैं।

"अविमुक्त माहात्म्य"

जन्मान्तरसहस्त्रेषु यात्पापं पूर्वसञ्चितम्। अविमुक्ते प्रविष्टस्य तत्सर्वं व्रजतिक्षयम् ॥५॥ (कूर्म पुराणे)

अर्थ - हे देवि ! पूर्व जन्म से जो पाप संचित रहता है, वह इस अविमुक्त क्षेत्र काशी में प्रवेश करने मात्र से ही नष्ट हो जाता है।

अविमुक्तं परं ज्ञानं अविमुक्त परं पदम्। अविमुक्त परतत्वं अविमुक्तं परं शिवम्।।

अर्थ - अविमुक्त "काशी" ही परम ज्ञान है। अविमुक्त काशी ही परम पद है। अविमुक्त काशी ही परम तत्व है और अविमुक्त काशी ही परम शिव है।

अविमुक्तं समासाध्य तीर्थसेवी कुरुद्वह।
दर्शनद्देव देवस्य मुच्यते ब्रसहत्यया।।११।।

(महा०)

अर्थ - तीर्थसेवी भक्त जन अविमुक्त क्षेत्र काशी शिवपुरी को प्राप्त करके भगवान अविमुक्तेश्वर के दर्शन से ही ब्रह्महत्या के पापों से छूट जाते हैं।

"गोकर्णेश: पश्चिमे पूर्वतश्च गङ्गामध्यमह्युत्तरे भारभूत:।
ब्रह्मेशानो दक्षिणे सम्प्रदिष्टस्तत्तु प्रोक्तं भवनं विश्वभर्तु:" ।।१४।।

(पद्म पुराणे पाताल खण्डे)

अर्थ - पश्चिम दिशा में गोकर्णेशवर, पूर्व में गङ्गा किनारे तक, उत्तर में भारभूतेश्वर गोविन्दपुरा तक, दक्षिण में ब्रह्मेश्वर कहे गये हैं। अगस्त कुण्डा तक इसे ही विश्व का पालन-पोषण कर्ता भगवान शिव का भवन कहा गया है। काशी रहस्य में अविमुक्त यात्रा की सीमा इस प्रकार है-

पूर्व में अट्टहासेश्वर, दक्षिण में भूतधात्रेश्वर, दशाश्वमेध पुलिस चौकी के दक्षिण बगल में है। पश्चिम में त्र्यम्बकेश्वर, उत्तर में घण्टाकर्णेश्वर हैं।

"अविमुक्त प्रदक्षिणा यात्रा प्रारम्भ"

अविमुक्त दर्शन यात्रा जाने से पाँच दिन पहले भाई, बन्धु, पट्टीदार, पड़ोसी और भगवान के भक्तों को निमन्त्रण करें। एक दिन पहले प्रातः किसी गणेशजी के दर्शन-पूजन करें। प्रातः स्नान, सन्ध्या, शिव-पूजा आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर पञ्चोपचार से पूजन की सामग्री गङ्गा जल, द्रव्य (चढ़ाने के लिये) चावल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, जलपात्र आदि साथ में लेकर शिव-शिव नाम जपते हुये " हर हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गङ्गे "॥ कीर्तन करते हुये शनैः शनैः चलते हैं॥ अविमुक्तेश्वर के दर्शन-पूजन करके संकल्प लेकर दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें। अविमुक्तेश्वर का प्रमाण यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद में सूत्र रूप से है और मुक्तिकोपनिषद, जावालोपनिषद, भस्मजावालोपनिषद तथा स्कन्द, मत्स्य, पद्म पुराण में एवं ब्रह्मवैवर्तपुराण, उपआत्मा पुराण में वर्णन प्राप्त है।

अविमुक्त तीर्थाय नमः। (बगल में कुआ के रूप में है)। इस तीर्थ के जल पीने वाले रोगी के पेट सम्बन्धी रोग शान्त होते हैं।

१. अविमुक्त विनायकाय नमः। (मं० नम्बर, सी० के० ३५/३३ में है, मु० ढुण्ढिराज गली)।

२. अविमुक्त देव्यै नमः। (मन्दिर नं० सी० के० ३५/३३ में है)।

३. अविमुक्तेश्वराय नमः। (मं० नं० सी० के० ३५/३३ में है)।

अविमुक्तेश्वर अपने-दर्शन-पूजन करने वाले मनुष्यों को सुख, शान्ति, धर्म, अर्थ और मोक्ष पदार्थों की प्राप्ति कराते हैं। साथ ही आयु, निरोग्यता, द्रव्य, सद्बुद्धि, मित्र तथा ब्रह्म विद्या की वृद्धि होती है। विश्वनाथ आदि के दर्शन करके यात्रा प्रारम्भ करें :—

ज्ञानवापी तीर्थाय नमः। (ज्ञानवापी में) संकल्प लेकर यात्रा प्रारम्भ करें।

मणिकर्णिका तीर्थाय नमः। मणिकर्णिका में मार्जन करके मणिकर्णिका पुष्करणी ब्रह्मकुण्ड के पूर्व बगल में गङ्गाजी में जो दिव्य गङ्गा जी के अन्दर मन्दिर के शिखर का दर्शन होता है, वही गुप्तेश्वर हैं।

४. गुप्तेश्वराय नमः। (मणिकर्णिका घाट में)।

५. गङ्गेश्वराय नमः। (मणिकर्णिका घाट में)।

गङ्गेश्वर श्मशान घाट के उत्तर सबसे बड़े शङ्कर जी के मन्दिर में हैं और विष्णु पादुका मंदिर के दक्षिण बगल में।

गङ्गेश्वर से दक्षिण दर्शन, पूजन और कीर्तन करते हुये शनैः शनैः दर्शन-यात्रा को चलते हैं।

६. जरासन्ध्येश्वराय नमः। (मंदिर नं० डी० ५/१०० में है, मु० त्रिपुरा भैरवी घाट)।

७. शूलटंकेश्वराय नमः। (मु० दशाश्वमेध घाट)।

शूलटङ्केश्वर से सीढ़ी चढ़कर पश्चिम सब्जी मण्डी में काली जी के मन्दिर के पास तारकेश्वर मठ से उत्तर पुलिस चौकी जाने वाली गली में हनुमान जी के मन्दिर में भूतधात्रेश्वर हैं।

८. भूतधात्रेश्वराय नमः। (मं० नं० डी १७/५०, मु० भूतनाथ)। भूतनाथजी से पश्चिम बगल में हैं।

९. भारद्वाजेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३३/५६, मु० खालिसपुरा)। ब्रह्मेश्वर के पूर्व बगल में हैं।

१०. ब्रह्मेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३३/६७ में है, मु० खालिसपुरा)। यहाँ से पश्चिम अगस्त कुण्ड में है।

११. अगस्तीश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३६/१९, मु० अगस्त कुण्डा)।

१२. कार्तिकेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३६/१९, मु० अगस्त कुण्डा)। अगस्तीश्वर के मन्दिर में हैं।

१३. लोपापुन्द्रा देव्यै नमः। (म० नं० डी० ३६/१९)।

१४. गणेशेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३६/१९)।

१५. गौतमेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३७/३३, मु० बड़ा महादेव, गोदौलिया), देढ़ीनीम देवमूर्ति की दूकान के बगल में)। १६. लोमसेश्वराय

नमः। (म० नं० डी० ३७/३३)। काशीराज के मन्दिर में गौदौलिया में हैं।

१७. बड़ा महादेवेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३७/४१, मु० बड़ा देव)। १८. त्र्यम्बकेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ३८/२१, मु० हौज कटोरा)। पुरुषोत्तम भगवान के मन्दिर में हैं।

१९. वैद्येश्वराय नमः। (म० नं० डी० ५०/२०, मु० कोदई की चौकी)। गोकर्णेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ५०/३४, मु० देऊ गली, कोदई की चौकी)

दशाश्वमेधथाना के उत्तर बगल में गोकर्णेश्वर से हाटकेश्वर जाते हैं।

२०. हाटकेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ४८/१६, मु० हड़हा सराय)। २१. भारभूतेश्वराय नमः। (म० नं० सी० ५४/४४, मु० मच्छर हट्टा फाटक, राजादरवाजा)।

२२. घण्टाकर्णेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ६०/३५, मु० गोविन्दपुरा हथिया राम बाबा के आश्रम में हैं)।

२३. गोविन्देश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ५७/५५, मु० गोविन्दपुरा)। २४. आशभैरवाय नमः। (म० नं० ५८/५२, मु० आशभैरव)।

परशुरामेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० १४/१४, मु० नन्दन साहू लेन)। २५. विश्वामित्रेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ५/३२, मु० गोलागली, पञ्चक्रोशी मंदिर में है)।

समवर्तेश्वराय नमः। (म०नं० सी०के० ७२३/२४, मु० सिद्धेश्वरी)।

२६. कोलालनृसिंह विष्णवे नमः। (म० नं० सी० के० ८/२१, मु० गोमठ, गढ़वासी टोला)। गोमठ का पूर्व इतिहास इस प्रकार है :-

श्री शिव प्रसाद पाण्डेय जी ने अपनी क़ाशी यात्रा नामक पुस्तक में लिखा है कि कोलालनृसिंह विष्णु जी का पहले विशाल मंदिर था। औरंगजेब ने मन्दिर तोड़वाने के लिये फौजों को लगाया। सैनिक मंदिर पर चढ़े।

उसी समय मंदिर में कम्पन हुआ और बीच से मन्दिर टूटकर दोनो तरफ गिरा, हजारों सिपाही मरे। नृसिंह भगवान के मन्दिर से हजारों मधुमक्खियाँ निकलीं, सबको काटकर भगायीं, और वाराणसी में मंदिर तोड़वाने के लिये जितने भी आफीसर और पुलिस तैनात किये गये थे, उन्हें मधुमक्खियों ने काटना शुरु कर दिया जिसमें कि हजारों तो मर गये और बाकी वरुणापार भाग गये। उसी दिन से मंदिर तोड़ना बन्द हो गया। यह बात सुनकर औरंगजेब ने पुजारियों को और मन्दिर के मालिकों से पूछा कि आप लोग क्या चाह्ते हैं? मंदिर के महन्त (रामेश्वरानन्द जी सरस्वती) ने कहा कि हमारा, मठ बनवा दो, तब औरंगजेब ने मठ बनवाकर स्वामी जी को पुनः सौंप दिया। पहले भी इस मठ का नाम गोमठ था। मंदिर तोड़ने के पश्चात् औरंगजेब को रोग लगा, काशी से बाहर जाकर मर गया। मुसलमान के रुपये से मन्दिर बनाना स्वामी जी ने मना किया। काशी में हाहाकार मच गया। वैदिक ब्राह्मणों ने वैदिक मन्त्र द्वारा नृसिंह भगवान की स्तुति करने लगे। ब्राह्मणों की स्तुति से नृसिंह भगवान प्रसन्न हो गये। सभी मधुमक्खियाँ आकर उसी नृसिंह भगवान के मंदिर में प्रवेश कर अन्तर्ध्यान हो गयीं।

२७. अत्युग्रह नृसिंह विणवे नमः। (म० नं० सी० के० ८/२१, मु० गढ़वासी टोला)।

२८. सुकदेवेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के ८/२०, मु० गढ़वासीटोला, गोमठ फाटक के सामने बाहर रामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है)। २९. अट्टहासेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ८/१५, मु० गढ़वासी टोला)। ३०. मणिकर्णिकेश्वराय नमः। (म० न० सी० के० ८/२१, मु० गढ़वासी टोला)। ३१. वेदव्यासेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ८/९, मु० मणिकर्णिका घाट)। ३२. सरस्वत्यै देव्यैः नमः। (सरस्वती फाटक)।

३३. अविमुक्तेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/३३, मु० ढुण्ढिराज गली)। अविमुक्तेश्वर के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् यात्री अपने मनोरथ पूर्ति के लिये निवेदन करते हैं। यात्री, साधु, महात्मा और संन्यासियों

को फल, मिष्टान्न आदि जलपान देकर अन्नपूर्णा, विश्वनाथ जी के दर्शन करने के पश्चात् संकल्प छोड़ते हैं। संकल्प बोलने वाले ब्राह्मणों को सीधा-दक्षिणा देते हैं।

अविमुक्त यात्रा करने वाले यात्रियों को मनोवांछित फल प्राप्त होता है। काशी से बाहर तथा काशी में किये गये पाप शान्त होते हैं। साथ ही द्रव्य, परिवार, मित्र एवं भक्ति, आयु, ज्ञान की वृद्धि होती है। इस यात्रा को करने वाले नर-नारियों की जहाँ कहीं भी मृत्यु होती है, वह व्यक्ति जहाँ कहीं भी जन्म ले परन्तु अन्त में काशी में आकर काशी वास करता है। और काशी में ही मर कर वह व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त होता है। यह अविमुक्त यात्रा केवल दो घण्टे में पूर्ण हो जाती है। काशी दर्शन में मंदिरों का प्रत्यक्ष फल प्रमाण सहित लिखा गया है।

११ ग्यारह रुद्र भैरव यात्रा काशी में कमच्छा मुहल्ले में स्थित बटुक भैरव के दर्शन पूजा करने के पश्चात् संकल्प लेकर बटुक भैरव से यात्रा प्रारम्भ होती है।

ग्यारह रुद्र भैरव यात्रा

१- बटुक भैरवाय नमः। (म० नं० बी० ३१/१२६, मु० कमच्छा)। २- रुद्र भैरवाय नमः। (म० नं० बी० २७/२, मु० दुर्गाकुण्ड दुर्गाजी के मंदिर में)। ३- केदार भैरवाय नमः। (म० नं० बी० ६/१०२, मु० केदार घाट, केदारेश्वर के मंदिर में हैं)।

४- अष्टांग भैरवाय नमः। (म० नं० डी० ५१/२०२ के सामने सूर्यकुण्ड के सड़क में)। साम्बादित्य सूर्य गली में हैं।

५- आस भैरवाय नमः। (म० नं० सी० के० ५८/५२, मु० आस भैरव सड़क के पश्चिम पटरी के भैरव मंदिर में है)।

६- काल भैरवाय नमः। (म० नं० के० ३२/२, मु० कालभैरव)। ७- आनन्द भैरवाय नमः। (म० नं० के० २४/२२, मु० रामघाट, साङ्ग वेद विद्यालय के उत्तर बगल में है)।

८- विन्दु भैरवाय नमः। (म० नं० के० २२/२३ मु० पंच गंगा)।

९- नृत्य भैरवाय नमः। (मु० मीरघाट, वृद्धादित्य के बगल में आनन्द भैरव के नाम से हैं)।

१०- अविमुक्त भैरवाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/३१, मु० ढुण्ढिराज गली, अविमुक्तेश्वर के मंदिर में)।

११- दण्डपाणि भैरवाय नमः। (म० नं० ३६/११, मु० ढुण्ढिराज गली दण्डपाणिजी के मंदिर में है)। ११ रुद्रभैरव यात्रा पूर्ण हो गई।

काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाला व्यक्ति अपने पितरों को २१ कुल को तार देता है। काशी वास करने वाले व्यक्ति को भैरव जी के गण रक्षा करते हैं। विधि पूर्वक क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले शिव योगी भक्तों को अन्न, वस्त्र और आवास सहयोग देने वाले व्यक्ति की भी भैरव जी के गण रक्षा करते हैं तथा उनके सभी कार्यों को निर्विघ्न सफल करते हैं। निवृत्ति मार्ग के साधु, सन्त, संन्यासी, शिव योगी तथा शिव भक्तों को भिक्षा और मधुकरी देने वाले भक्तों से भी विश्वनाथ जी, अन्नपूर्णा माँ तथा कालभैरव जी प्रसन्न होते हैं। इनके प्रसन्न होने से ऐश्वर्य, भक्ति तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है। काशी दर्शन द्वितीय संस्करण में ११ रुद्र भैरव यात्रा का प्रमाण सहित लिखा गया है।

छप्पन विनायक प्रदक्षिणा यात्रा

स्कन्द पुराणे चतुर्थ काशी खण्डे अध्याय ५७ में १२६ श्लोक तक छप्पन विनायक का वर्णन है।

शिव-शिव नाम तथा पञ्चाक्षर महामन्त्र का जाप करते हुये। हर हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे'' सबको मिलकर एक स्वर से कीर्तन करते हुये चलना चाहिये। संकल्प लेकर दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें। पूजा की सामग्री, लड्डू, धान का लावा, दूब, अक्षत, ऋतुफल, वस्त्र, धूप, दीप इत्यादि साथ में ले लें।

१- अर्क विनायकाय नमः। (म० नं० बी० २/१७, मु० लोलार्क घाट

के ऊपर पानी की टङ्की के सामने में है।

२- दुर्गा विनायकाय नमः। (म० नं० बी० २७/२, मु० दुर्गाकुण्ड के पूर्व दक्षिण के कोने के गणेश मन्दिर में है)।

३- भीमचण्ड विनायकाय नमः। (मु० भीमचण्डी देवी के मंदिर के बगल में पञ्चक्रोशी मार्ग में है)।

श्री चण्डी देवी जी के दर्शन कर जलपान करके चलें।

४- देहली विनायकाय नमः। (मु० भटौली गाँव में)। गणेश मन्दिर में पञ्चक्रोशी मार्ग में है।

५- उद्दण्ड विनायकाय नमः। (मु० भुइली गाँव में है)। रामेश्वर के दर्शन करके उस दिन रामेश्वर में विश्राम करें।

६- पाशपाणि विनायकाय नमः। (मु० कैन्टूमेन्ट एरिया, सदर बाजार में है)। ७- खर्व यव विनायकाय नमः। (मन्दिर नं० ए० ३७/५२, मु० आदि केशव, बसन्त कालेज)।

८- सिद्धि विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० १/६९, मु० मणिकर्णिका घाट के ऊपर)। यह आठ विनायक काशी पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा में रहकर अपने गणों के सहित काशी की रक्षा करते हैं।

छप्पन विनायक दर्शन यात्रा मद्धे प्रथम प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण होती है। "हर हर महादेव"।

सिद्धि विनायक के दर्शन करके घर में विश्राम करें।

९- लम्बोदर विनायकाय नमः। (म० नं० बी० ७/७६, मु० पीताम्बरपुरा, सोनारपुरा)। सोनारपुरा में चिन्तामणि गणेश जी के नाम से हैं।

१०- कूटदन्तविनायकाय नमः। (म० नं० ३/३३५, मु० रवीन्द्रपुरी कालोनी, कीना राम बाबा जी के आश्रम में हैं)।

११- शालटंक विनायकाय नमः। (मु० मडुवाडीह थाना के दक्षिण बगल में गणेश मंदिर में हैं)।

१२- कुष्माण्ड विनायकाय नमः। (मु० फुलवरिया गाँव में हैं)।

१३- मुण्ड विनायकाय नमः। (मु० शक्ति मार्ग, कैन्टूमेन्ट एरिया में चण्डीदेवी के मंदिर में मुण्ड विनायक की प्रतिमा है)।

१४- विकट दन्त द्विज विनायकाय नमः। (म० नं० जे० १२/१३४, मु० धूपचण्डी देवी के मन्दिर में है)।

१५- राजपुत्र विनायकाय नमः। (म० नं० ए० ३७/४८, मु० बसंत कालेज में है)।

१६- प्रणव विनायकाय नमः। (मु० त्रिलोचन में हैं)।

छप्पन विनायक यात्रा मद्धे द्वितीय प्रदक्षिणा पूर्ण हो गयी। उस दिन यात्री अपने-अपने घर में विश्राम करें। "हर हर महादेव"। १७- वक्रतुण्ड विनायकाय नमः। (म० नं० डी० २/४, मु० चौसट्ठी देवी जी के मंदिर के पास में है)।

१८- एक दन्त विनायकाय नमः। (म० नं० डी ३२/१०२, मु० पातालेश्वर गली, पुष्पदन्तेश्वर के मंदिर में हैं)।

१९- त्रिमुख विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ५९/६५, मु० सिगरा, शिवपुरवा, श्री शैलमल्लिकार्जुन के मंदिर में हैं)।

२०- पंचास्य विनायकाय नमः। (म० नं० ए० १३/३९, मु० पिशाच मोचन कपर्दीश्वर मंदिर के बगल में हैं)।

२१- हेरम्ब विनायकाय नमः। (म० नं० ए० २१/२४, मु० पिशाचमोचन)। लहुराबीर से पश्चिम बगल में वाल्मीकि कटरा और वाल्मीकीश्वर के मंदिर में हैं।

२२- विघ्नराज विनायकाय नमः। (म० नं० जे० १२/३२, मु० चित्रकूट, धूपचण्डी)। २३- वरद विनायकाय नमः। (म० नं० १३/३९, मु० नया महादेव प्रह्लाद घाट)।

२४- मोदक विनायकाय नमः। (म० नं० ए० १३/९२, मु० त्रिलोचन

आदि महादेव के मंदिर में हैं)।

छप्पन विनायक की तृतीय प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण हुई। मोदक विनायक के दर्शन करके अपने अपने घर में विश्राम करें। प्रातः पूर्ववत् दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें।

२५- अभय विनायकाय नमः। (म० नं० डी० १७/१११, मु० दशाश्वमेध घाट में हैं)।

२६- सिंहतुण्ड विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ३३/६७, मु० ब्रह्मेश्वर के मंदिर में हैं)।

२७- कुणिताक्ष विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ५२/३८, मु० महालक्ष्मी जी के मंदिर में हैं)।

२८- क्षिप्रादन विनायकाय नमः। (म० नं० सी० १८/४७, मु० मातृतीर्थ पितरकुण्ड, पित्रीश्वर के मंदिर में हैं)।

२९- चिन्तामणि विनायकाय नमः। (म० नं० के० ६६/४, मु० जागेश्वर मठ, नरहरिपुरा जागेश्वर के मंदिर में हैं)।

३०- दन्तहस्त विनायकाय नमः। (म० नं० के० ५८/१००, मु० लोहटिया, बड़े गणेश जी के मंदिर में हैं)।

३१- पिचिण्डिल विनायकाय नमः। (म० नं० ए० १०/८०, मु० प्रह्लाद घाट, प्रह्लादेश्वर के मंदिर में हैं)।

३२- उद्दण्ड मुण्ड विनायकाय नमः। (म० नं० ए० २/८, मु० त्रिलोचन, त्रिलोचनेश्वर के मन्दिर में हैं)। चतुर्थ यात्रा पूर्ण हुई। उस दिन घर में विश्राम करें। प्रातः पूर्ववत् यात्रा करें।

३३- स्थूल दन्त विनायकाय नमः। (म० नं० डी० १६/२४, मु० मान मंदिर घाट, सोमेश्वर के मंदिर में हैं)।

३४- कलिप्रिय विनायकाय नमः। (म० नं० डी० १०/५०, मु० साक्षी विनायक, मनः प्रकामेश्वर के मन्दिर में हैं)।

३५- चतुर्दन्त विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ४९/१०, मु० सनातन इण्टर कालेज, नई सड़क) ध्रुवेश्वर के मंदिर में हैं।

३६- द्वितुण्ड विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ५१/१०, मु० सूर्यकुण्ड, साम्बादित्य के मन्दिर में हैं)।

३७- ज्येष्ठ विनायकाय नमः। (म० नं० के० ६२/१४४, मु० सप्तसागर, ज्येष्ठेश्वर के मंदिर में हैं)।

३८- गजकर्ण विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ५४/१४४, मु० मच्छर हट्टा फाटक, भारभूतेश्वर के मन्दिर में हैं)।

३९- काल विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० २४/८, मु० रामघाट, वीर रामेश्वर के पास हैं)।

४०- नागेश विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० १/२१, मु० पटनी टोला, नागेश्वर के मन्दिर में हैं)। पाँचवीं यात्रा पूर्ण हुई। प्रातः पूर्ववत् यात्रा करें।

४१- मणिकर्णिका विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० १०/४८) सतुवा बाबा के आश्रम के सीढ़ी के सामने उत्तराभिमुख हैं। ४२- आशा विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ३/७९, मु० मीरघाट, हनुमान जी के मंदिर में है)।

४३- सृष्टि विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ८/३०, मु० कालिका गली, शुक्रेश्वर के मंदिर में हैं)।

४४- यक्ष विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३३/२९, मु० ढुण्ढिराज, ढुण्ढिराजजी से पश्चिम बगल कोतवालपुरा में हैं)।

[नोट- मेरे परम पूज्य गुरुजी धर्म सम्राट अनन्त श्री विभूषित हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री जी महाराज जब प्रथमा में पढ़ते थे, तब काशी आये और शिवशंकर पाण्डेय जी के साथ काशी यात्रा की। एक दिन शिवशंकर पाण्डेय जी यक्ष विनायक का दर्शन कराने के लिये ले गये। गुरुजी को

यक्ष विनायक की मूर्ति में दिव्य प्रकाश रूप में गणेश जी का दर्शन हुआ। दर्शन के पश्चात् गणेश जी के गले की माला उछल कर गुरुजी के गले में आ गयी। उसी क्षण गुरुजी को ब्रह्म विद्या की प्राप्ति हुई, उसी दिन से गुरुजी जो शास्त्र एक बार सुनते थे, एक बार देखते थे उन्हें सब याद हो जाता था। परम पूज्य करपात्री जी महाराज भारत दिग्विजय शास्त्रार्थ यात्रा में गणेश जी की कृपा से ही किसी से जीवन पर्यन्त परास्त नहीं हुये। हिमालय से कन्या कुमारी तक, पूर्व बंगाल ढाका शहर और पश्चिम में पाकिस्तान तक शास्त्रार्थ में दिग्विजय, होते हुये सर्वत्र विजयी हुये।]

४५- गजकर्ण विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३७/४३, मु० बाँसफाटक, ईसानेश्वर के मन्दिर में हैं)।

४६- चित्रघण्टा विनायकाय नमः। (म० नं० के० ३३/३४, मु० चित्रघण्टा, दुर्गाजी के मंदिर में हैं)।

४७- मंगल विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ७/१५८, मु० सिन्धिया घाट, आत्मवीश्वेश्वर के मंदिर में पूर्वाभिमुख हैं)।

४८- मित्र विनायकाय नमः। (म० नं० के० सी० ७/१५८, मु० सिन्धिया घाट, आत्मवीरेश्वर के मंदिर में हैं)।

षष्ठ प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण हुई।

४९- मोद विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के ३२/१२, मु० नेपाली खपड़ा)।

५०- प्रमोद विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३१/१ मु० नेपाली खपड़ा)। ५१- सुमुख विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/८, मु० नेपाली खपड़ा)।

५२- दुर्मुख विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३४/६, मु० सरस्वती फाटक)। ५३- गणनाथ विनायकाय नमः। (म० नं० डी० ७/१७, मु० अन्नपूर्णा गली, अन्नपूर्णा जी के मंदिर में हैं)।

५४- ज्ञान विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० २८/४, मु० खोवा बाजार, लाङ्गलेश्वर के मंदिर में हैं)।

५५- द्वार विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/२७, मु० सावित्री फाटक, नकुलेश्वर के मंदिर में पञ्चमुख-द्वारविनायक पूर्वाभिमुख हैं)।

५६- अविमुक्त विनायकाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/३१, मु० ढुण्ढिराज गली, अविमुक्तेश्वर के मंदिर में हैं)। छप्पन विनायक के सप्तम प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण हुई।

साक्षिविनायकाय नमः। (म० नं० डी० १०/७, मु० साक्षिविनायक)। साक्षि विनायक के जो भक्त दर्शन, पूजन करते हैं उनको वे इस लोक में कुशल मंगल स्वास्थ्य और निरोग तथा ऐश्वर्य प्रदान करके भक्तों को निर्विघ्न सुख शान्ति प्रदान करते हैं और अंत में अपने समस्त भक्तों को विश्वनाथ भगवान से प्रार्थना करके साक्षी विनायक सबको मुक्ति दिलाते हैं।

ढुण्ढिराजाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/२७, मु० सावित्री फाटक)। ढुण्ढिराज जी के दर्शन-पूजन जो भक्त करते हैं उनके जीवन में कहीं भी विक्षेप, घबराहट और अशान्ति, कलह तथा विघ्न आदि उपद्रव नहीं आते हैं। और सबको सुख, शान्ति, लक्ष्मी और विद्या देकर अपने भक्तों को इस लोक में निरोग और निर्विघ्न सुख प्रदान करते हैं। काशी वासियों का कल्याण करते हैं। इनके भक्तों का शत्रु कितना भी बलवान क्यों न हो वह परास्त होता है। ढुण्ढिराज जी के भक्त विश्व में जहाँ कहीं भी देह त्याग करें उसे शिवलोक की प्राप्ति होती है। उनको दूसरे जन्मों में प्रेरणा कर काशी लाते हैं और अन्त समय में मुक्ति दिलाते हैं। यात्रियों की भावना के अनुसार यात्रा करने का फल सबको प्राप्त होता है। मेरे साथ यात्रा करने वाले जो यात्री रोगी थे, वे निरोग हो गये, जो यात्री दरिद्र थे वे धनी हो गये, जो दुःखी थे वे सुखी हो गये। जिनको पुत्र नहीं था, वह पुत्रवान् हो गये। जिनका विवाह नहीं हुआ था, उनका विवाह

हो गया, जिनकी नौकरी नहीं लगी थी, उनकी नौकरी लग गयी, जिनका व्यापार सही ढंग से नहीं चलता था, उनका व्यापार सही ढंग से चलने लगा। इस प्रकार भक्तों को धन, विद्या, पद, परिवार, सद्बुद्धि और भक्ति तथा ज्ञान की वृद्धि होती है। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा देकर, साधु, संत और संन्यासी को जलपान देकर, दरिद्र को पैसा, लाई, चना आदि देकर छप्पन विनायक का स्मरण करते हुये यात्री अपने-अपने घर जाँय। ढुण्ढिराज अपने छप्पन विनायक के रूप में प्रगट होकर विभिन्न नाम से चारों दिशाओं में अपने गणों के साथ रहकर काशी की रक्षा करते हैं।

नवग्रह यात्रा

ब्रह्मामुरारी त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी, भूमि सुतौ बुधश्च, गुरुश्च शुक्रः, शनि राहु केतवः, सर्वेग्रहा शान्ति करा भवन्तु।

स्नान के पश्चात् प्रतिदिन इस श्लोक का पाठ करना चाहिये।

यात्रा : वैशाख शुक्ल प्रथम रविवार के दिन और प्रत्येक रविवार के दिन यात्रा करें। काशी खण्ड के तेरहवें अध्याय से लेकर अठारहवें अध्याय तक नवग्रहों का विस्तार से वर्णन है। वेदों, पुराणों में और श्रुति में भी वर्णन प्राप्त है। नवग्रह यात्रा जाने के पाँच दिन पहले भगवान के भक्तों को निमन्त्रण करें। "हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गङ्गे।" इस मन्त्र को कहते हुये यात्रा करें। गभस्तीश्वर तीर्थ मंगला गौरी घाट पर गङ्गा जी में है, स्नान करके मंगला गौरी जी के मंदिर में जो दिव्य शिव लिङ्ग हैं वही गभस्तीश्वर हैं।

१- गभस्तीश्वराय नमः। (म० न० सी० के० ४/३४, मु० मंगला गौरी)

२- चन्द्रेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ७/१२४, सिद्धेश्वरी के मंदिर में हैं)।

३- मंगलेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० १/८, मु० संकठाघाट)

४- बुधेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ७/१३२, मु० सिन्धिया घाट)

गङ्गा जी के मंदिर में रामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं।

५- वृहस्पतीश्वराय नमः। (म० नं० डी० १५/७९, मु० दशाश्वमेध घाट) ६ · शुक्रेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ८/३०, मु० कालिकागली)।

७- शनिश्चरेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ९/२, मु० अन्नपूर्णा गली)। ८- राहेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ८/१४, मु० गढ़वासी टोला)। ९- केतुकेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ८/१४, मु० मणिकर्णिका घाट)। मणिकर्णिका गली में कम्बलेश्वर के मन्दिर में हैं। उपशान्तेश्वरः (का० खं० अ० ९७, श्लो० ४८-४९)

भद्रेश्वरा धातु धान्या मुपशान्ता शिवोमुने।
तस्य लिङ्गस्य संस्य शीत्परां शान्ति समृच्छति।।
उपशान्त शिवं लिङ्गं दृष्ट्वाजन्मशतार्जितम्।
त्यजेदश्रयसो राशिं श्रेयोराशि च विन्दति।।

१०- नव ग्रहेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० २/४, मु० पटनी टोला)। नवग्रहेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्तियों के सब ग्रह जनित, कष्ट, पीड़ा बाधा और विघ्न एवं मानसिक चिन्ता दूर होते हैं। इनके दर्शन और स्पर्श से पाप नष्ट होते हैं। इस विषय में काशी खण्ड में विस्तार से वर्णन है और सभी यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं और धर्म, भक्ति तथा ज्ञान की वृद्धि होती है। साढ़ेसाती के मार्केश में शनि बाधा में और वृहस्पति निम्न स्थान में हो तो नवग्रह में किसी भी ग्रह का पीड़ा और कोई भी बाधा होने को हो तो उस अवस्था में नवग्रह यात्रा नौ बार करनी चाहिए। जो यात्री स्वयं यात्रा करने में असमर्थ हो तो वह यात्री किसी ब्राह्मण को वरण करके यात्रा करने भेजने से वही फल मिलता है, जो स्वयं की यात्रा करने से प्राप्त होता है। इस यात्रा से मानसिक तथा असाध्य रोग भी शान्त हो जाते हैं।

नवग्रह यात्रा का प्रमाण और दर्शन, पूजन बड़े से बड़े रोग निवृत्ति का विधान सहित काशी दर्शन द्वितीय संस्करण में लिखा गया है।

वाराणस्यां भैरवो देवः संसार भयनाशनम्।
अनेक जन्म कृतं पापं दर्शनेन विनश्यति॥

अर्थ - वाराणसी के भैरव देव संसार के भय से मनुष्य मात्र को अभय दिलाते हैं एवं अनेक जन्म के किये हुये पाप दर्शन मात्र से ही विनाश कर देते हैं।

रुरुसंहारकालाख्या असित क्रोध भीषणाः।
महाभैरव खट्वाङ्गवित्यष्टौ भैरवाः समृताः॥१७॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण के ब्रह्मखण्ड अ० ५)

अष्टम्याश्च चतुर्दश्यां रविभूमिजवासरे।
यात्राश्च भैरवी कृत्वा कृतैः पापैः प्रमुच्यते॥ १४७॥

(काशी खण्ड अ० ३१)

अर्थ – अष्टमी एवं चतुर्दशी तिथि को मंगलवार और रविवार के दिन दर्शन यात्रा करनी चाहिये। काशीकृत पापों की शान्ति होती है और भैरवी दण्ड से मुक्ति हो जाती है।

अष्टौ प्रदक्षिणीकृत्य प्रत्यहं पापभक्षणं।
नरो न पापैर्लिप्येत् मनोवाक्काय सम्भवैः॥१५१॥

(काशी खण्ड अ० ३१)

अर्थ – जो लोग भैरव की आठ बार प्रदक्षिणा करते हैं तथा पापों में लिप्त नहीं होते हैं एवं मन, वाणी तथा शरीर द्वारा जो पाप होते हैं उन सभी पापों को नष्ट कर देते हैं।

सदैवयस्य भक्तेभ्यो यमदूताः सुदारुणाः।
परमाम्भीरुताम्प्राप्तस्ततोऽसौ भैरवः स्मृतः॥१४२)

(काशी खण्ड अ० ३१)

अर्थ - श्री भैरव के स्मरण करने मात्र से यमदूतों के दारुण भय से

सदा भक्तगण मुक्त हो जाते हैं।

"अतः प्रदक्षिणी कार्या पूजनीया पूरीत्वयम्।"

अर्थ- अतः शंकर भगवान की काशी पुरी में भैरव की प्रदक्षिणा और पूजा करनी चाहिये।

वृहज्ज्योतिषार्णव धर्मस्कन्धे।
उपासना काण्डे भैरवी उपासना॥

असित अन्त अरु कहत है चण्ड और उन्मत्त।
क्रोध कपाली भीषनरु संहमूक मर्णिनत्त॥

रुरुचण्डं चाऽसिताङ्गं क्रोधनश्च कपालिनः।
उन्मत्त भैरवश्च संहारः भीषणं अष्ट भैरवः॥

अष्ट भैरव यात्रा

आठ बार अष्ट भैरव दर्शन-यात्रा करने से मनुष्य सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष भैरवाष्टमी के दिन वार्षिक यात्रा करनी चाहिए। अष्ट भैरव यात्रा कार्तिक कृष्ण अष्टमी के दिन और प्रत्येक अष्टमी के दिन हनुमान घाट में स्नान करके संकल्प करके गङ्गाजल, पञ्चोपचार से पूजन की सामग्री, लड्डू, सूजी, खोवा एवं बुंदियाँ के लड्डू, पैसा, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य तथा जलपात्र साथ में लेकर यात्रा प्रारम्भ करें। "हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गङ्गे।" सब मिलकर एक साथ एक स्वर से कीर्तन करते हुये चलें।

१- रुरु भैरवाय नमः। (म० नं० बी० ४/४२, मु० हनुमान घाट, रामेश्वर के मंदिर में हैं)।

२- चण्ड भैरवाय नमः। (म० नं० २७/२, मु० दुर्गाकुण्ड, दुर्गा जी के मंदिर में है)।

३- क्रोधन भैरवाय नमः। (म० नं० बी० २१/१२३, मु० कामाक्षा, कामाक्षा देवी के मंदिर में हैं)।

४- उन्मत्त भैरवाय नमः। (म० नं० बी० २१/१२६, मु० कामाक्षा, बटुक भैरव मंदिर से सटे हुए दक्षिण बगल में हैं)।

५- असितांग भैरवाय नमः। (म० नं० के० ५२/३९, मु० मृत्युञ्जय महादेव, दारानगर, अमृत कुण्ड के बगल में हैं)।

६- कपाल भैरवाय नमः। (म० नं० बी० १/१२३, मु० लाटभैरव, राजघाट) लाट भैरव के नाम से प्रसिद्ध हैं।

७- संहार भैरवाय नमः। (म० नं० ए० १/८२, मु० गायघाट पाटन दरवाजा, हनुमान जी के मन्दिर में हैं)।

८- भीषण भैरवाय नमः। (म० न० के० ६३/२८, मु० भूत भैरव, काशी पुरा, भूत भैरव, कालभैरव के नाम से प्रसिद्ध हैं)।

९- काल भैरवाय नमः। (म० नं० के० ३२/२, मु० काल भैरव के नाम से प्रसिद्ध हैं)।

कलिकालं कलयति सदा काशीनिवासिनाम्।
अतः ख्यातिं पराम्प्राप्तः कालभैरव सञ्ज्ञितम्॥

(नि. का० खं० अ० ३१ श्लो० ३१२)

अर्थ – काशी निवासियों के कलिकाल के पापों को क्षीण करने हेतु परम ख्याति प्राप्त शक्ति को ही काल भैरव के नाम से स्मरण किया जाता है।

कृत्वा च विविधां पूजां महासंभार विस्तरैः।
नरो मार्गसिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्न मुत्सृजेत्।

(नि. स्क० पु० का० खं० अ० ३१ श्लो० १४६)

जो नर मार्गशीर्ष के कृष्ण अष्टमी तिथि को कालभैरव की विधि पूर्वक विस्तृत पूजन करता है, उसकी सभी बाधायें नष्ट हो जाती हैं।

भैरवनाथ मोहाल में भैरवनाथ प्रसिद्ध।
जिनकी सेवा कि लिये होत सिद्ध पर सिद्ध॥

एहि कलिकाल कराल में काशी के कोतवाल।
कोतवाली अजहूं वहीं भगवन् भैरवकाल॥

यह भैरव यात्रा ५ घण्टे का है। काशी दर्शन द्वितीय संस्करण में, सप्रमाण दर्शन-पूजन का प्रत्यक्ष फल और इतिहास सहित लिखा है।

"काशी में मंगलवार से सोमवार तक की "वार" दर्शन यात्रा" मंगलवार से सोमवार तक की प्रतिदिन की यात्रा इस प्रकार है–

प्रत्येक मंगलवार के दिन दुर्गाजी, कालभैरव, वन्दीदेवी और मंगलवार से संयुक्त चतुर्थी तिथि के दिन जागेश्वर दर्शनयात्रा करें। मंगलवार से संयुक्त चतुर्थी तिथि के दिन महाराज बड़े गणेश दर्शन यात्रा करें।

मंगलवार तथा भरणी नक्षत्र से युक्त चतुर्दशी तिथि के दिन यमतीर्थ संकटाघाट में स्नान करके तर्पण पिण्डदान कर यमेश्वर का दर्शन करें। यमेश्वर संकटाघाट में हैं, दूसरे ऊपर ज्ञानी मठ में हैं। मंगलवार के दिन जब अमावस्या तिथि हो उस दिन केदारेश्वर तीर्थ, केदार घाट में स्नान करके स्नान श्राद्ध करने वाला व्यक्ति के १०१ (एक सौ एक) पितर अपने पाप से नरक में पड़े हों वह सब भव सागर से मुक्त हो जाते हैं।

१- दुर्गादेव्यै नमः। (म० नं० बी० २७/२ में हैं, मु० दुर्गाकुण्ड)।

२- काल भैरवाय नमः। (म० नं० के० ३२/२ में हैं, मु० कालभैरव)।

३- वन्दीदेव्यै नमः। (म० नं० डी० १७/१०० में हैं, मु० प्रयागराज घाट)।

४- अग्नीजागेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६३३/४, मु० नरहरि पुरा ईश्वरगङ्गी)।

५- महाराज बड़े गणेशाय नमः। (म० नं० के० ५८/१० में हैं, मु० बड़ा गणेश, लोहटिया)।

६- यमेश्वराय नमः। (मु० संकटाघाट) यमेश्वर ज्ञानी मठ में हैं।

७- केदारेश्वराय नमः। (म० नं० बी० ६/१० में हैं, मु० केदारघाट)।

बुधवार के दिन बुधेश्वर दर्शन-यात्रा करें।

८- बुधेश्वरायनमः। (म० नं० सी० के० ७/१३ में हैं, गङ्गा जी के मंदिर में रामेश्वर के नाम से बुधेश्वर प्रसिद्ध हैं, मु० सिन्धिया घाट)।

बृहस्पतिवार के दिन वृहस्पतीश्वर का दर्शन करना चाहिए।

आत्मा वीरेश्वर के पास के वृहस्पतीश्वर के दर्शन करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं। काशी खण्ड में लिखा है कि स्कन्द पुराण में जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र से युक्त योग आता है उस दिन दर्शन करने से पाप नष्ट होते हैं।

९- वृहस्पतीश्वराय नमः। (मु० सिन्धियाघाट)। दूसरे वृहस्पतीश्वर दशाश्वमेध चौकी के उत्तर बगल में दशाश्वमेध रोड पर बड़े शंकर जी के मंदिर में हैं। यह वृहस्पतीश्वर पद्म पुराण, बामन पुराण, ब्रह्म पुराण एवं काशीरहस्य के अनुसार है।

१०- वृहस्पतीश्वराय नमः। (म० नं० १५/७९ में हैं, मु० दशाश्वमेध)। शुक्रवार के दिन शुक्रेश्वर तीर्थ कूप में स्नान करके व्रत रहकर शुक्रेश्वर के दर्शन पूजा करने से पुत्र, पौत्र, परपौत्र, धनवान, पुण्यमान्, तेजस्वी पुत्र-पौत्र उत्पन्न होते हैं। स्त्रियों को पतिव्रत धर्म का फल मिलता है।

११- शुक्रेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ८/१० में हैं, मु० कालिकागली)। शनिवार के दिन शनिश्चरेश्वर के दर्शन पूजन करने से शनिश्चर के ग्रह बाधा आपदा अथवा किसी भी स्थान में बैठा हुआ शनि कष्ट नहीं देता है।

१२- शनिश्चरेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ९/१ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)। शनिवार से युक्त प्रदोष (शनि प्रदोष) के दिन प्रातः गंगाजी में स्नान कर कामेश्वर का दर्शन, पूजन करने से काम जनित अनेक पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है।

१३- कामेश्वराय नमः। (मु० कामेश्वर गली, मच्छोदरी)। प्रत्येक रविवार के दिन गभस्तीश्वर मयूखादित्य सूर्य के दर्शन पूजन करने से पापों का नाश होता है।

१४- गभस्तीश्वराय नमः। (म० नं० के० २५/३५ में है, मु० मंगलागौरी)। प्रत्येक रविवार के दिन कमलेश्वर के दर्शन, पूजन करने से ग्रहों की शान्ति होती है।

१५- कमलेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० ८/१५ में हैं, मु० गढ़वासी टोला) साथ ही मणिकर्णिकेश्वर का दर्शन करें। रविवार के दिन प्रत्येक रविवार को साम्बादित्य तीर्थ सूर्य कुण्ड में अरुणोदय के समय में स्नान या मार्जन करके (बगल में साम्बादित्य कूप भी है)। साम्बादित्य सूर्य का दर्शन पूजन करने से कुष्ठादि अनेक रोग नष्ट होते हैं। बन्ध्या स्त्री को पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है।

१६- साम्बादित्य सूर्याय नमः। (म० नं० डी० ५१/१० में हैं, मु० सूर्यकुण्ड)। रविवार के दिन विमलादित्य के दर्शन-पूजन करने से कुष्ठ आदि चर्म रोग नष्ट होते हैं। प्रत्येक सोमवार के दिन मणिकर्णिकाघाट में स्नान करके ज्ञानवापी कूप में मार्जन करके यथा शक्ति दान करने के पश्चात् दौपदादित्य सूर्य के दर्शन करके विश्वनाथ जी का दर्शन पूजन करता है उसके पाप नष्ट होते हैं।

१७- विश्वनाथाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)। प्रत्येक सोमवार के दिन जो मनुष्य जहाँ कहीं भी रहे शिव मंदिर में और मिट्टी का पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर पूजा करने वाले व्यक्ति को भक्ति तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है साथ ही आयु-विद्या-धन की वृद्धि होती है। प्रत्येक सोमवार के दिन केदारेश्वर दर्शन और यथा शक्ति अन्न आदि दान करने वाले नर-नारियों के एक सप्ताह तक मन, वाणी, शरीर से जो पाप हुए हैं वह पाप क्षीण होते हैं और प्रत्येक सोमवार के दिन महामृत्युञ्जयेश्वर जो दारा नगर में हैं, दर्शन करें। इनके दर्शन करने से पुण्य का उदय होता है। प्रत्येक सोमवार के दिन व्रत रहकर करुणेश्वर को कनेल के फूल से जो कोई पूजा करता है उस को कभी भी काशीवास में विघ्न नहीं आता और धर्म, भक्ति, अर्थ एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

१८- करुणेश्वराय नमः। (मंदिर नं० सी० के० ३/१० है, मु० ललिताघाट, लोहारीटोला) सोमवार के दिन जब सोमवारी अमावस्या से युक्त हो उस दिन चन्द्रकूप में स्नान, संध्या, तर्पण, श्राद्ध करने से एक सौ आठ पितर तीनों कुल के तृप्त होते हैं और एक दिन पहले चतुर्दशी तिथि के दिन व्रत रहकर शिव-कीर्तन एवं जप या अभिषेक करते हुए रात्रि में जागरण करना चाहिए। अमावस्या तिथि के दिन चन्द्रकूप में स्नान करके विधिवत् श्राद्ध करने से पितर तृप्त और मुक्त हो जाते हैं।

चन्द्रेश्वरायनमः। (म० न० सी० के० ७/१२४ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)।

१९- तीर्थ श्राद्ध में आवाहन और विसर्जन नहीं करना चाहिए। चूँकि पितर तीर्थ श्राद्ध से मुक्त हो जाते हैं।

आवाहनार्घ्यरहितं पिण्ड दान-दद्यात्प्रयत्नतः।
वसुरुद्रादितिसुत स्वरूपपुरुषत्रयम्।।५२।।

(काशी खण्ड अ० १४)

सोमवती अमावस्या तिथि के दिन कपिलधारा तीर्थ में स्नान और दर्शन करने के लिये तीर्थ देवता आते हैं। सोमवार से युक्त अमावस्या तिथि के दिन कपिलधारा में श्राद्ध और यज्ञ, अनुष्ठान, कीर्तन करने से अक्षय फल प्राप्त होता है।

कपिलधारा तीर्थाय नमः। (कपिलधारा)।

२०- वृषभध्वजेश्वराय नमः। (कपिलधारा)।

(नोट— जो व्यक्ति काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करते हैं, वे चन्द्रकूप में स्नान, पितर तर्पण, श्राद्ध करने से मुक्त हो जाते हैं। काशी में मंगलवार से सोमवार तक की यात्रा में सप्रमाण, दर्शन, पूजा का प्रत्यक्षफल और इतिहास सहित काशी दर्शन द्वितीय संस्करण में लिखा गया है।

नवदुर्गा दर्शन यात्रा

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तिथि से और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि के दिन प्रातः स्नान, संध्या आदि से निवृत्त होकर (टीका) त्रिपुण्ड्र, रुद्राक्ष की माला धारण कर गङ्गाजल, लालफूल, रोली, लाल वस्त्र, जलपात्र, बिल्वपत्र, चढ़ाने के लिये फुटकर पैसा, ऋतु फल आदि साथ में लेकर दुर्गा जी की जय हो, काशी विश्वनाथ जी की जय हो, जयघोष करते हुये, "शिव-शिव" महामन्त्र का जप करते हुये चलते हैं।

'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे' कीर्तन करते हुए शनैःशनैः वरुणा के तट पर स्थित शैलपुत्री दुर्गा जी के दर्शन पूजन करने के पश्चात् यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।३।। पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमम् कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।४।। (दुर्गासप्तशती दुर्गा कवच)

१. शैलपुत्री दुर्गा देव्यै नमः। (मंदिर नं० ए० ४०/११ में हैं, मु० शैलपुत्री)।

२. ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० के० २२/७२ में हैं, मु० दुर्गाघाट)।

३. चन्द्रचित्र-घण्टा दुर्गादेव्यै नमः। (म० नं० सी० के० ३३/३३ में है, मु० चित्रघण्टा, दुर्गागली, चौक)।

४. कुष्माण्ड दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० बी० २७/२ में है, मु० दुर्गाकुण्ड)।

५. स्कन्दमाता वागेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० जे० ६/३३ में है, मु० जैतपुरा)।

६. कात्यायनी दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० सी० के० ७/१५८ में हैं, मु० सिन्धियाघाट)।

७. कालरात्रि दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० डी० ८/३ में हैं, मु० कालिका

गली)।

८. महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० डी० ९/१७ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)।

९. सिद्धिमाता दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० सी० के० ६/२८ में हैं, मु० बुलानाला, गोलघर)। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को शीधा-दक्षिणा देकर, साधु-सन्त को जलपान कराकर दुर्गाजी का स्मरण करते हुए यात्री अपने-अपने घर जाते हैं। हर हर महादेव।

नव गौरी यात्रा-प्रारम्भ

मुक्ति को जन्म देने वाली काशीपुरी में जो भक्त नवगौरी यात्रा करते हैं, वह यात्री इस लोक में सुख संपत्ति प्राप्त करते हैं। परलोक में, स्वर्गलोक में जाकर सुख-भोग करते हैं।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा तिथि से प्रतिदिन नव दिन तक एक-एक गौरी का दर्शन करना चाहिए। एक दिन में करनी हो तो प्रत्येक शुक्ल तृतीया तिथि के दिन नवगौरी यात्रा करनी चाहिए।

मुखनिर्मालिकागोप्रेक्ष तीर्थाय नमः। यह तीर्थ पञ्चगङ्गा के उत्तर बगल में गायघाट में स्नान करके पूजा की सामग्री साथ में लेकर हनुमान जी के मंदिर में मुखनिर्मालिका गौरी पूर्वाभिमुख हैं।

दर्शन, पूजन करके नवगौरी यात्रा प्रारम्भ करें।

१. मुखनिर्मालिका गौरी देव्यै नमः। (म० नं० के० ३/४२ में हैं, मु० गायघाट)।

२. ज्येष्ठागौरी देव्यै नमः। (म० नं० के० ६३/२४ में हैं, मु० भूतभैरव, काशीपुरा)।

३. सौभाग्यगौरी देव्यै नमः। (म० नं० सी० के० ३८/८ में हैं, मु० बाँसफाटक)।

४. शृङ्गारगौरी देव्यै नमः। (म० नं० सी० के० ३/५८ में हैं, मु०

केदारेश्वर का दर्शन, पूजा करने के पश्चात् काशी के शिव काञ्ची से यात्रा प्रारम्भ करें। केदारजी काशी के शिव काञ्ची हैं।

१- केदारेश्वराय नमः। (म० नं० बी० ६/१०२ में हैं, मु० केदारघाट)। केदारेश्वर से दक्षिण हरिश्चन्द्र हनुमान घाट होते हुए यह अवधगर्वी मुहल्ले में यह काशी की अयोध्या है, यहाँ पर अयोध्या के छोटे-छोटे २ मन्दिर हैं। पहले अवध-गर्वी मुहल्ले में सरयूतीर्थ विशालकुण्ड था उसी में स्नान करते थे उसी कुण्ड के स्रोत सरयूनदी शिवालाघाट में गङ्गा सरयूनदी का संगम है।

रामेश्वर के मंदिर में अयोध्येश्वर हैं। अयोध्येश्वराय नमः। (म० नं० बी० ४/४२ में हैं, मु० हनुमानघाट)। हनुमान घाट से दक्षिण अस्सी घाट में माया पुरी हरिद्वार है, अस्सी घाट के ऊपर जो मंदिर का दर्शन होता है वही माया देवी का मंदिर है।

२- मायादेव्यै नमः। (म० नं० बी० १/१७४ में हैं, मु० अस्सी घाट)। अस्सी घाट से दक्षिण बगल में काशी की जगन्नाथपुरी है, यहाँ जगन्नाथ पुरी के सभी देवता विराजमान हैं।

३- जगन्नाथ विष्णवे नमः। (मु० अस्सी)। अस्सी से पश्चिम गुरुधाम चौराहा शंकुधारा होते हुए काशी की द्वारिकापुरी में जाते हैं। द्वारिकातीर्थ विशाल पक्का कुण्ड है, मन्दिर के पूर्व बगल में रुक्मिणीशक्ति तीर्थ कुँआ के रूप में है। द्वारिकेश्वर के बगल में द्वारिकानाथ हैं। द्वारिकानाथाय नमः। (मु० शंकुधारा), शंकुधारा से उत्तर मैदागिन, दारानगर दीपामहाकाल तीर्थ अमृत कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। मृत्युञ्जय के आस पास का एरिया काशी का उज्जयिनी है।

५- महाकालेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में है, मु० दारानगर)। महाकालेश्वर से उत्तर गोलगड्डा शैलपुत्री जमुना मथुरा तीर्थ शैल पुत्री घाट वरुणा में है।

६- मथुरेश्वराय नमः। (मकान नं० ए० ४०/११ में है मु० शैलपुत्री)।

शैलपुत्री से गोलगड्डा पञ्चगङ्गा होते हुए। काशी में बिन्दुमाधव जी के आस-पास का क्षेत्र विष्णु काञ्ची है।

७- विन्दुमाधवाय नमः। (म० नं० के० २३/३३ में है, मु० पञ्चगङ्गा)। पञ्चगङ्गा से दक्षिण में काशी विश्वनाथ जी हैं, काशी विश्वनाथ तीर्थ मर्णिकर्णिका है।

८- काशी विश्वनाथाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/१९ में है, मु० अन्नपूर्णा गली) काशी की सप्तपुरी यात्रा पूर्ण हुई। यात्री संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा देकर सप्तपुरियों का स्मरण करते हुए अपने अपने घर जाते हैं। हर हर महादेव।

काशी में एकादश रुद्र हनुमान यात्रा

हनुमान जी का प्रमाण वेद, पुराण, श्रुतिस्मृति हनुमान्नाटक तथा गोस्वामी तुलसीदास जी के ग्रंथों में उपलब्ध है। प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान यात्रा होती है। और हनुमान जयन्ती के दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री साथ में लेकर संकटमोचन हनुमान जी का दर्शन करें। संकटमोचन हनुमतेश्वराय नमः। संकटमोचन हनुमते नमः। (मंदिर संकटमोचन)। दर्शन कर संकटमोचन से उत्तर दुर्गा जी के बगल के विष्णु मंदिर में दुर्गा हनुमान जी पश्चिमाभिमुख हैं।

दुर्गाजी के दर्शन करके दुर्गाहनुमतेश्वराय नमः। दुर्गाहनुमते नमः। (म० नं० बी० २७/२ में हैं, मु० दुर्गाकुण्ड)। दुर्गाकुण्ड के पूर्व बगल में सेनापति हनुमान जी पूर्वाभिमुख हैं।

सेनापति हनुमतेश्वराय नमः। सेनापति हनुमते नमः। (म० नं० बी० ३७/५८ में हैं, मु० दुर्गाकुण्ड)। सेनापति हनुमान जी से पूर्व तुलसीघाट के ऊपर सिद्ध हनुमान जी दक्षिणाभिमुख तुलसी मठ में हैं।

१- सिद्ध हनुमतेश्वराय नमः। सिद्धहनुमते नमः(म० नं० बी० २/१५ में है, मु० तुलसी घाट)।

तुलसीघाट से उत्तर शिवाला मुहल्ला में स्वप्नेश्वर के मंदिर में ज्ञान हनुमान

जी पश्चिमाभिमुख हैं। ज्ञानहनुमतेश्वराय नमः।

२- ज्ञान हनुमते नमः। (म० नं० बी० ३/१६ में हैं, मु० शिवाला)। ज्ञान हनुमान जी से उत्तर हनुमानघाट में रामेश्वर के बगल में रामेश्वर हनुमान जी पश्चिमाभिमुख हैं। रामेश्वर के दर्शन कर रामेश्वर हनुमतेश्वराय नमः।

३- रामेश्वर हनुमते नमः। (बी० ४/११ में हैं, मु० हनुमानघाट)। हनुमानघाट से उत्तर केदारेश्वर के दर्शन करें। गौदौलिया, चौक, नीचीबाग, तारघर पोस्ट आफिस के बगल में हनुमान कटरा में संकटदहन हनुमान जी पश्चिमाभिमुख हैं।

४- संकटदहन हनुमतेशंकर दहन हनुमतेश्वराय नमः। (मु० नीचीबाग)। नीचीबाग से पश्चिम करणघण्टा मुहल्ला में व्यासेश्वर के बगल में कोढ़ी व्यास हनुमान जी पूर्वाभिमुख हैं।

व्यास हनुमतेश्वराय नमः।

५- व्यासहनुमते नमः। (म० नं० के० ६०/६७ में है, मु० करणघण्टा)। कुष्ट व्यास हनुमान जी का पूर्व इतिहास इस प्रकार है– शिव प्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं कि चार सौ वर्ष पूर्व करणघण्टा में विशाल वेदव्यास मठ (आश्रम) था। उस मठ के महन्त शिवानन्द सरस्वती थे। वहीं स्वयं ४ बजे से पाँच बजे तक वेद वेदान्त की कथा कहते थे। उसी कथा में हनुमान जी कुष्ट रोगी के भेष में आकर सब से पीछे आम के पेड़ के नीचे बैठते थे। कथा सुनने के बाद सब सतसङ्गियों के चले जाने के पश्चात् स्वामी जी को प्रणाम करके लाठी टेककर लँगड़ाते हुए धीरे-धीरे चलकर पास के बगीचा में जाकर कुष्ट भेष को छोड़कर फलफूल खाकर काशीवास करते थे। एक दिन गोस्वामी तुलसीदास जी को सुपात्र समझकर काशी के ब्रह्मराक्षस प्रेत जी ने स्वामी जी को दर्शन दिये। (नोट– कुपात्र को तो प्रेत भी दर्शन नहीं देता। पापी मनुष्य होने पर भी जन्म-जन्मान्तर के पुण्य से काशी में मरता है वह पापी ब्रह्मराक्षस प्रेत-बनकर काशीवास करता है। प्रेत योनि में होने पर भी पूर्व जन्म का सब ज्ञान होता है,

काशी में आज भी लाखों ब्रह्मराक्षस है। परन्तु किसी को भी कष्ट नहीं देते हैं। प्रेत जी ने कहा– आप क्या चाहते हैं, स्वामीजी बोले– मुझे हनुमान जी का दर्शन कराइये। प्रेत जी कहने लगे– कर्णघण्टा वेदव्यास मठ में स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की कथा में कुष्ठ रोगी के रूप में हनुमान जी आते हैं। उसी सत्सङ्ग में आप भी जाकर कथा सुनिये सब सत्सङ्गी के जाने के बाद में हनुमान जी बगीचा में जाते हैं, बगीचा में पहुँचते ही पीछे से दोनों हाथ से हनुमान जी के पैर जोर से पकड़ना। जब गोस्वामी जी ने जोर से हनुमान जी की पादुका पकड़ी उसी समय हनुमानजी बोले– मेरा पैर क्यों पकड़ते हो। रामजी का स्मरण करो, वे भव सागर से पार कर देंगे। हनुमान जी ने कहा राम जी चित्रकूट के रामघाट में आते हैं, जाकर दर्शन करलो, तुम्हारे सब मनोरथ पूर्ण होंगे। इतना कहकर हनुमान जी अन्तर्ध्यान हो गये। हनुमान जी की कृपा से गोस्वामी जी ने १२ ग्रन्थों की रचना की।)

(नोट – प्यारे आत्मा अपने कुल परम्परा से अथवा अपनी रुचि के अनुसार गुरु और इष्टदेव को अपना बना लेना चाहिए)।

गुरु और इष्ट देव की कृपा से धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं)। कर्णघण्टा से उत्तर लोहटिया होते हुए जागेश्वर का दर्शनकर भरत मिलाप के पश्चिम बगल के राम लीला मैदान के बगल में चित्रकूट के तुलसी मठ में हनुमान जी पश्चिमाभिमुख हैं। यह काशी का चित्रकूट है।

चित्रकूट हनुमतेश्वराय नमः।

६- चित्रकूट हनुमते नमः। (म० नं० जे० १२/३२ में हैं, मु० भरत मिलाप, नाटी इमली)।

(नोट– पूर्व इतिहास गोस्वामी तुलसीदास जी के गुरुजी नरहरि दास जी नरहरीपुरा में जागेश्वर के दक्षिण बगल के नरहरी मठ में क्षेत्र सन्यास लेकर काशी वास करते थे, दर्शन करें। भरत मिलाप मैदान से पूर्व मृत्युञ्जयेश्वर

के दर्शन करें। मंदिर के उत्तर बगल में महामृत्युञ्जय हनुमान दक्षिणाभिमुख हैं।

७- महामृत्युञ्जय हनुमते नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० दारानगर)। महाकालेश्वर का दर्शन करके बगल के धनवन्तरी अमृत कुण्ड में जलपान करके चलें। दारानगर से पूर्व पदमपुर होते हुए हनुमान फाटक तुलसीदास जी के मठ में सुमन्तेश्वर के मंदिर में सुमन्त हनुमान जी दक्षिणाभिमुख हैं। सुमन्त हनुमतेश्वराय नमः।

८- सुमन्त हनुमते नमः। (मु० हनुमान फाटक) हनुमान फाटक से पूर्व प्रह्लाद घाट के सड़क के पश्चिम पटरी तुलसी मठ में हनुमान जी पूर्वाभिमुख हैं। प्रह्लाद हनुमतेश्वराय नमः।

९- प्रह्लाद हनुमते नमः। (मु० प्रह्लादघाट)। प्रह्लाद घाट से पश्चिम त्रिलोचनेश्वर कालभैरव जी के दर्शन करके चौखम्बा सट्टी, गोपाल मंदिर में गोपाल, भक्तिदा हनुमान जी पूर्वाभिमुख हैं। गोपाल विष्णु जी का दर्शन करें। गोपाल भक्ति दाता हनुमतेश्वराय नमः।

गोपाल भक्ति दाता हनुमते नमः। (मु० गोपाल मंदिर, चौखम्बा सट्टी)। गोपाल भक्तिदाता हनुमान जी का पूर्व इतिहास इस प्रकार है– शिव प्रसाद पाण्डेजी अपनी काशी यात्रा नाम की पुस्तक के १०१ पृष्ठ में लिखते हैं– अठारह सौ नब्बे (१८९०) में गोपाल मन्दिर के महन्त रामानन्द सम्प्रदाय के रामदास जी थे। प्रतिदिन हजारों नर-नारी दर्शन करने आते थे। प्रतिदिन कथा होती थी। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। इस महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन होता था, अन्नक्षेत्र चलता था, निःशुल्क दवा वितरण हेतु औषधालय चलता था। गोपाल मंदिर से सटे हुए पश्चिम बगल के गुफा में रहकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका महाकाव्य की रचना की थी। गुफा के उत्तर बगल में विशाल हनुमान जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख थी। रामदास महन्तजी के पश्चात् निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय के कृष्ण सरण नाम के महन्त पुजारी हो

गये। उन्होंने हनुमान जी को तुलसी गुफा से हटाकर बगीचे में रखा। उसी दिन से उनको रोग लगा। कर्मनाशा पार जाकर मरे। काशीवासियों ने उनको मठ से निकाल दिया। यह गोपाल मंदिर का इतिहास है। अस्तुं, आज जो गोपाल मंदिर के मालिक हैं वे विशाल हनुमान जी की मूर्ति स्थापना करें। काशी में केवल एक देव को मानने वाले मनुष्यों पर पग पग में विघ्न और संकट आते हैं।

गोपाल मन्दिर से दक्षिण उपशान्तेश्वर, संकठाजी, सिद्धेश्वरी, नीलकण्ठेश्वर एवं विशालाक्षी, धर्मेश्वर के दर्शन करते हुए आशापूर्ण हनुमान जी पश्चिमाभिमुख हैं।

आशापूर्ण हनुमतेश्वराय नमः

१०- आशापूर्ण हनुमते नमः (म० नं० डी० ३/७९ में है, मु० मीरघाट)। आशापूर्ण हनुमान जी से पश्चिम कालीजी के मंदिर में हरसिद्धी माता हैं। दर्शन करके भवानी, अन्नपूर्णाजी के दर्शन करने के पश्चात्। द्रौपदादित्य के मंदिर में सूर्य हनुमान जी पश्चिमाभिमुख हैं।

सूर्ये हनुमानेश्वराय नमः

११- सूर्ये हनुमते नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)। हनुमान यात्रा करने वाले नरनारियों के रोग, ग्रह, दुःख, शान्त होते हैं, शिव-शक्ति, विष्णु और राम जी की अनन्य भक्ति प्राप्त होती है। हनुमान जयन्ती के दिन और मंगलवार के दिन यात्रा करनी चाहिए। अतः अपने कल्याण के लिये अवकाश लेकर प्रयत्न पूर्वक हनुमान यात्रा करें। हनुमान यात्रा के विषय में काशीदर्शन, द्वितीय संस्करण में हनुमान जी का प्रमाण और इतिहास सहित लिखा गया है।

हरि ओं तत्सत् हनुमानार्पणमस्तु।

"काशी में दशमहाविद्या दर्शन यात्रा" काली तारा महा विद्या षोड़शी भुवनेश्वरी, भैरवी छिन्नमस्ता च विद्याभूमावती तथा॥ वगला सिद्ध विद्या च मातङ्गी कमलान्मिका। एता दश महाविद्याः सिद्ध विद्याप्रकीर्तिताः॥

शक्तिसंगमतंत्र तारा खण्डनुसारेण-सताः दशमहा विद्या पदेनाभिधीयन्ते।

प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर लाल कपड़ा, लाल फूल, लाल अक्षत, बिल्वपत्र (ऋतु फल, मिष्टान्न), गङ्गाजल आदि पूजा की सामग्री साथ में लेकर कीर्तन करते हुए यात्री चलते हैं। दशाश्वमेध से केदार जी जाने वाली गली में पाण्डेय घाट के ऊपर तारा देवी जी के मंदिर में तारा वाणी नाम से प्रसिद्ध हैं, यह तारा देवी की सिद्ध पीठ है।

१- तारादेव्यै नमः। (म० नं० बी० २४/४ में है, मु० तारावाणी, पाण्डेय घाट)। तारावाणी से पश्चिम लक्सा रोड, लक्ष्मी कुण्ड होते हुए लक्ष्मी कुण्ड के पूर्व उत्तर के कोने के काली मठ में काली देवी है, यह काली जी की सिद्ध पीठ है।

२- कालिका देव्यै नमः। (म० नं० डी० ५/५२ में है, मु० लक्ष्मी कुण्ड काली मठ)। काली जी से पश्चिम बगल में सिखीचण्डी देवी के मंदिर में कमला देवी हैं, यह कमला देवी जी की सिद्ध पीठ है।

३- कमला देव्यै नमः। (म० नं० डी० ५२/४० में है, मु० लक्ष्मी कुण्ड) महालक्ष्मी जी के दर्शन कर लक्ष्मी जी से पूर्व दशाश्वमेध त्रिपुराभैरवी घाट होते हुए त्रिपुरेश्वर के मंदिर में त्रिपुराभैरवी पूर्वाभिमुख हैं।

४- त्रिपुराभैरवी देव्यै नमः! (म० नं० डी० ५/२३ में है, मु० त्रिपुरा भैरवी), यहाँ से विश्वनाथ जी, विशालाक्षी का दर्शन करते हुए त्रिसन्ध्येश्वर के दर्शन कर राजराजेश्वरी मठ में षोडशी राजराजेश्वरी ललिता जी की दिव्य मूर्ति उत्तराभिमुख है। श्रीविद्या की अधिष्ठात्री षोडशी राजराजेश्वरी ललिता हैं। यह राजराजेश्वरी देवी की सिद्ध पीठ है।

५- षोडशीराजराजेश्वरी ललिता देव्यै नमः। (म० नं० डी० १/५८ में है, मु० राजराजेश्वरी मठ, ललिता घाट)। ललिता घाट से उत्तर सिद्धेश्वरी मुहल्ले में चन्द्रेश्वर के मंदिर में मातङ्गी सिद्धेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध है। काशी में मातङ्गी सिद्धेश्वरी सिद्ध विद्या के नाम से प्रसिद्ध यह सिद्धेश्वरी की सिद्ध पीठ है।

६- मातङ्गी सिद्धेश्वरी देव्यै नमः। (म० नं० सी० के० ७/१२४ में है, मु० सिद्धेश्वरी) सिद्धेश्वरी के पूर्व बगल में पीताम्बरा देवी हैं। यह काशी की बगला जी सिद्धपीठ है।

७- बगला पीताम्बरा देव्यै नमः। (म० नं० सी० के० में हैं, मु० सिद्धेश्वरी) पीताम्बरा देवी से पूर्व बगल में संकटादेवी जी की सिद्ध पीठ है। तत्रैव विकटा देवी।

सर्व दुःखौघ मोचनी ॥५०॥ का० ख० अ० ९७

८- संकटादेव्यै नमः। जब तक छिन्नमस्ता देवी जी के स्थापना न हो तब तक संकटा देवी का दर्शन करें। छिन्नमस्ता देव्यै नमः। काशी में छिन्नमस्ता देवी जी का पूर्व इतिहास इस प्रकार है, पूर्व आचार्य शिवप्रसाद पाण्डेजी लिखते हैं कि काशी यात्रा नामक पुस्तक के ११० वें पृष्ठ में उल्लेख है कि संकटा जी के पास विशाल हाल था। उसी हाल में छिन्नमस्ता की विशाल मूर्ति पूर्वाभिमुख थी। उस समय छिन्नमस्ता देवी जी के दर्शन करने के लिए हजारों नर, नारी प्रतिदिन आते थे और विश्व के तान्त्रिक लोग मन्त्र सिद्धि के लिए दर्शन करने आते थे। साधना करके सिद्धि प्राप्त करके जाते थे। औरंगजेब ने विश्वनाथ मंदिर के साथ चौक थाना में कर्फ्यू लगाकर उसके सिपाहियों ने छिन्नमस्ता देवी जी की मूर्ति को उखाड़कर तोड़ डाला और उसे संकटाघाट के पास गङ्गाजी में डाल दिया। मूर्ति के टूटते ही लाखों सिपाही तड़प-तड़पकर मर गये और मंदिर में ताला लगा दिया गया। जब औरंगजेब को यह बात मालूम हुई तो उसने मंदिर बनाने के लिए आदेश दिया। उस मंदिर के महन्त ज्ञानानन्द सरस्वती जी थे। उन्होंने मुसलमानों के रुपये से मंदिर बनाने का विरोध किया। मंदिर के तोड़-फोड़ करने के कारण उसी बरसात में छिन्नमस्ताजी का मंदिर गिर गया। तभी से आज तक मंदिर नहीं बना। जब तक छिन्नमस्ता देवी जी की मूर्ति स्थापित नहीं होती है तब तक संकटाजी का दर्शन-पूजन उपासना करनी चाहिए। दूसरी छिन्नमस्ता रामनगर में दुर्गाजी के मंदिर में

स्थापित हैं। संकटादेवी से उत्तर अग्नीश्वर के मंदिर में भुवनेश्वरी पूर्वाभिमुख है।

भुवनेश्वरी देव्यै नमः। (म० न० सी० के० १/२१, मु० पटनी टोला में स्थित हैं)।

९- भुवनेश्वरी से पश्चिम मैदागिन भरतमिलाप धूपचण्डी होते हुए धूपचण्डी देवी जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है। यह धूमावती धूपचण्डीदेवी जी की सिद्धपीठ है। इनके दर्शन करने वाले नर-नारियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं।

१०- विद्याधूमावती धूपचण्डी देव्यै नमः। (म० नं० १२/३४ में है, मु० धूप चण्डी, भरतमिलाप)। काशी दर्शन, द्वितीय संस्करण में दश महाविद्याओं में प्रत्येक देवी जी का प्रमाण और दर्शन-पूजन का फल सहित लिखा गया है।

काशी में द्वादशज्योतिर्लिंग यात्रा दाहिनेवर्त से करें।

प्रत्येक चतुर्दशी तिथि के दिन ज्योतिर्लिंग यात्रा करनी चाहिए।

प्रातः स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर गङ्गाजल, भस्म, बिल्वपत्र, पुष्प एवं ऋतुफल, धूप, दीप नैवेद्य आदि पूजा की सामग्री साथ में लेकर दशाश्वमेधघाट से सटे हुए उत्तर बगल के मानमंदिर घाट में स्थूल दन्त विनायक के मंदिर में सोमनाथ जी हैं।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुस्मेशं शिवालये।
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं-प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।

१. सोमनाथाय् नमः (म० नं० डी० १६/३४ में है, मु० मानमन्दिर

घाट)। मानमंदिर घाट से दक्षिण केदार जी के मंदिर में हैं।

२. केदारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में हैं, मु० केदारघाट)। केदारजी से पश्चिम भेलूपुर कामाक्षा होते हुए बटुक भैरव जी के दर्शन करके बगल के शंकर जी के मंदिर में घुस्मेश्वर हैं।

३. घुश्मेश्वराय नमः (म० नं० बी० ३१/१२६ में है, मु० कामाक्षा)। कामाक्षा देवीजी के दर्शन कर पश्चिम बगल में काशी के बैजनाथ जी हैं।

४. बैजनाथाय नमः (म० नं० बी० ३७/१ में है, मु० बैजनत्था)। बैजनत्था से पश्चिम रथयात्रा-सिगरा चौराहा से पश्चिम बगल के शिवपुरा मुहल्ले में लाल मंदिर काशी में सबसे ऊँचा मंदिर है। यह त्रिमुख विनायक के मंदिर में है।

५. मल्लिकार्जुनेश्वराय नमः (म० नं० ५९/६५ में है, मु० सिगरा)। मल्लिकार्जुन के दर्शन करके सिगरा चौराहा से पूर्व जाने वाली सड़क से आगे दाहिने तरफ से रामकुण्ड गली में विशाल कुण्ड है, कुण्ड के बगल में रामेश्वर हैं।

६. रामेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५४/४५ में है, मु० रामकुण्ड)। रामेश्वर से पूर्व लक्ष्मी कुण्ड, दशाश्वमेध थाना के पूर्व बगल के त्रिलोकीनाथ गली में यह काशी का नासिक है बगल में गोदावरी नदी कुँआ के रूप में है।

७. त्र्यम्बकेश्वराय नमः (मु० हौजकटोरा, बाँसफाटक)। त्र्यम्बकेश्वर से उत्तर मैदागिन होते हुए मध्यमेश्वर मुहल्ले में मध्यमेश्वर के दर्शन कर मृत्युञ्जय के दर्शन करें। बगल में महाकालेश्वर हैं।

८. महाकालेश्वराय नमः (म० नं० ५२/३९ में हैं, मु० दारानगर)। सभी यात्री धन्वन्तरी अमृतकुण्ड में जलपान करके धीरे-धीरे कीर्तन करते हुए चलें ।

(नोट- महामृत्युञ्जय काशी के अन्तर्गत के सारनाथ हैं)। सारनाथेश्वर

के दर्शन करने से जो फल मिलता है उससे अधिक फल महामृत्युञ्जय के दर्शन करने से प्राप्त होता है। महाकालेश्वर से पूर्व मच्छोदरी पार्क से उत्तर जाने वाली सड़क से आगे दाहिने तरफ ऊपर टीला में शंकर जी का लाल मंदिर है वही ओंकारेश्वर हैं।

९. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/२३ में हैं, मु० छितवन पुरा)। ओंकारेश्वर से उसी मार्ग से विशेश्वरगंज, दूधमण्डी होते हुए कालभैरव जी के दर्शन कर चौखम्भा, सूतटोला, पटनी टोला होते हुए उपशान्तेश्वर के दर्शन करें। पूर्व बगल में नागेश्वर का मंदिर है।

१०. नागेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० १/२१ में हैं, मु० पटनी टोला)। नागेश्वर से पश्चिम नेपाली खपड़ा में मोद विनायक के मंदिर में भीम शंकरेश्वर हैं।

११. भीमशंकरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३२/१२ में हैं, मु० नेपाली खपड़ा)। विश्वनाथ जी का दर्शन करें।

१२. काशीविश्वनाथाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा और साधुमहात्माओं को ऋतुफल, मिष्टान्न, आदि देकर काशीविश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए यात्री अपने-अपने घर जाते हैं।

भारत के कोने-कोने में जो ज्योतिर्लिंग हैं उनके दर्शन करने से जो फल मिलता है, वेदव्यास जी लिखते हैं कि काशी के द्वादशज्योतिर्लिङ्ग यात्रा करने वाले नर-नारियों को दशगुना अधिक फल प्राप्त होता है। ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा पूर्ण हुई।

हरि ॐ तत्सत् शिवार्पण मस्तु-हर हर महादेव।

बृहत् काशीदर्शन के द्वितीय संस्करण में प्रमाण और दर्शन, पूजन का प्रत्यक्ष फल सहित लिखा गया है।

काशी में द्वादश सूर्य दर्शन यात्रा

सूर्य यात्रा प्रत्येक रविवार के दिन करनी चाहिए। विशेष महत्त्वपूर्ण

दिन निम्नांकित है–

रविवारे रवेर्यात्राषष्ठ्यां वा रविसंपुजि।
तथैव रविसप्तम्या सर्व विघ्नोपशान्तये।।७५।।

(काशीखण्ड अ० १००)

अर्थ- रविवार के दिन जब षष्ठी या सप्तमी तिथि पड़ती हो जिसको पद्म योग कहते हैं। इस पद्म योग में सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान फल माना जाता है। ऐसे महायोग के दिन पाप और सर्व विघ्नों की शान्ति के लिए सूर्य यात्रा करनी चाहिए, जिनकी आँख की ज्योति कमजोर हो गयी हो, वे नर-नारी सूर्य यात्रा विधि पूर्वक करें उनके नेत्र की ज्योति में वृद्धि होती है और चर्मरोग अच्छे होते हैं।

रविवार के दिन प्रातः संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर लाल फूल, लाल अक्षत, लाल चन्दन एवं लालवस्त्र इत्यादि साथ में लेकर (कीर्तन करते हुए) यात्री लोलार्क (तीर्थ) कुण्ड में आते हैं, लोलार्क कुण्ड में स्नान करके भस्म आदि धारण करके लोलार्कादित्य को मीठा दूध, मिष्टान्न, धान का लावा, ऋतुफल आदि चढ़ाते हैं। ब्राह्मणों को मीठा दूध चढ़ा हुआ दूधपिलाकर दक्षिणा देते हैं। (काशी खण्ड, अ० ४६, श्लोक ५३)। लोलार्कादित्य गणेशजी अर्कविनायक के मंदिर में पूर्वाभिमुख हैं, लोलार्कादित्य भी पूर्वाभिमुख हैं।

लोलार्कादित्य विनायकाय नमः

१- लोलार्कादित्य सूर्याय नमः (मु० लोलार्क कुण्ड)। दर्शन, पूजन करने के पश्चात् 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे' कीर्तन करते हुए, धीरे-धीरे उत्तर की ओर यात्री चलते हैं। सोनारपुरा, जंगमबाड़ी, खारी कुवाँ होते हुए, हरीकेशेश्वर के बगल में विमलादित्य हैं। इनके दर्शन-पूजन से कुष्ठ रोग नष्ट होता है। (काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक ९९)।

२. विलादित्याय नमः (म० नं० डी० ३५/२७३ में हैं, मु० खारी कुँआ)। जंगमबाड़ी खारी कुँआ से उत्तर नई सड़क में सनातन धर्म इण्टर कालेज

से पश्चिम सूर्यकुण्ड जाने वाली गली में साम्बादित्य सूर्य तीर्थ है बगल में सूर्य शक्ति तीर्थ कुँआ के रूप में है। (काशीखण्ड, अ० ४८, श्लोक ४८)

३. साम्बादित्य सूर्याय नमः (म० नं० डी० ५१/९० में हैं, मु० सूर्यकुण्ड)। जो यात्री चलने में असमर्थ होते हैं वे साम्बादित्य के दर्शन यात्रा करके यहीं विश्राम करते हैं। दूसरे रविवार के दिन यात्रा पूर्ण करते हैं। सूर्यकुण्ड से उत्तर लोहटिया, जैतपुरा होते हुए जी.टी. रोड, जी.टी. रोड से पश्चिम बगल में बकरियाकुण्ड के पूर्व तट में जोगीबीर के नाम से प्रसिद्ध है। जोगीबीर से पूर्व बगल में बड़े हनुमान जी के मंदिर में भी दर्शन करें। (काशी खण्ड, अ० ८७)।

४. उत्तरार्कादित्याय नमः (म० नं० जे० १७/१३ में हैं, मु. बकरिया कुण्ड)। बकरिया कुण्ड से उत्तर वाराणसी सिटी स्टेशन के पश्चिम रेलवेगेट से लाइन पार करके राजघाट जाने वाली गली से बसन्त कालेज होते हुए यात्री आदिकेशव जाते हैं। (काशी खण्ड, अ० ५१, श्लोक ७३)

केशवादित्य सूर्य अपने दर्शन करने वाले भक्तों के अज्ञान रूपी अन्धकार को नष्ट करके सूर्य और विष्णु की भक्ति देते हैं।

५. केशवादित्याय नमः (म० नं० ए० ३७/५१ में स्थित हैं, मु० गङ्गा वरुणा संगम आदिकेशव (बसन्त कालेज)। ज्ञान केशव आदि के दर्शन करके उसी मार्ग से बसन्त कालेज होते हुए, जी० टी० रोड पहुँचते ही गङ्गा किनारे जाने वाली पगडण्डी रास्ते से पुल के नीचे से प्रह्लाद घाट होते हुए मच्छोदरी पार्क के पूर्व कामेश्वर गली में खखोलादित्य हैं। (काशीखण्ड अ० ५० श्लोक १४९)

६. खखोलादित्याय नमः (म० नं० ए० २/९ में स्थित हैं, मु० मच्छोदरी-त्रिलोचन)। खखोलादित्य से पूर्व त्रिलोचनेश्वर के मन्दिर में अरुणादित्य हैं। (काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक १२३)।

७. अरुणादित्याय नमः (म० नं० ए० २/८० में स्थित हैं, मु०

त्रिलोचनघाट)। त्रिलोचन से दक्षिण दुर्गाघाट होते हुए मंगलागौरी। मंगलागौरी, गभस्तीश्वर के दर्शन करने के पश्चात् (काशी खण्ड, अ० ४९, श्लोक ९३) मयूखादित्य के रविवार के दिन दर्शन, पूजन करने वाला व्यक्ति कभी भी दरिद्र और रोगी नहीं होता है।

८. मयूखादित्याय नमः (म० नं० के० २४/३४ में हैं, मु० मंगलागौरी)। मयूरखादित्य से दक्षिण में हैं। (काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक १०९) यमादित्य वशिष्ठेश्वर के बगल में हैं।

९. यमादित्याय नमः (संकठाघाट)। सिन्धियाघाट से दक्षिण ललिताघाट गङ्गा केशव जी के मंदिर में हैं। (काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक ४)

१०. गङ्गादित्याय नमः (म० नं० डी० १/६६ में स्थित हैं, मु० ललिताघाट)। ललिताघाट से दक्षिण आशापूर्ण हनुमान जी के बगल में वृद्धादित्य हैं, प्रत्येक रविवार के दिन प्रणाम करके जो दर्शन करता है वह अभीष्ट सिद्धि पाता है और वृद्धावस्था में रोग नहीं लगता है। (काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक ४३)

११. वृद्धादित्य सूर्याय नमः (म० नं० डी० ३/१६ में स्थित हैं, मु० मीरघाट)। मीरघाट से पश्चिम सूर्य हनुमान जी के मन्दिर में द्रौपदादित्य हैं। (काशीखण्ड, अ० ४९)

१२. द्रौपदादित्यसूर्याय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)। प्रतिदिन जो नर-नारी द्रौपदादित्य के दर्शन करेंगे, अन्न, धन-धान्य आदि उनके घर में परिपूर्ण होता रहेगा। जो व्यक्ति द्रौपदादित्य को नमस्कार करके विश्वनाथ जी का दर्शन करते हैं उनके दुःख, अज्ञान, अन्धकार द्रौपदादित्य अपने किरणों द्वारा दूर करते हैं और यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। अन्नपूर्णा, विश्वनाथ जी आदि के दर्शन करने के पश्चात्, सूर्य यात्रा पूर्ण होती है। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा देकर साधु-महात्मा को जलपान देकर सूर्यनारायण भगवान् का स्मरण करते हुए यात्री अपने अपने घर जाते हैं। कोई-कोई यात्री दूसरे दिन तीन घण्टे

का अखण्ड कीर्तन करते हैं, ३ घण्टा का रामायण पाठ भी करते-कराते हैं। साधु, ब्राह्मण को भोजन कराते हैं। श्री सूर्यार्पणमस्तु। हर हर महादेव। सूर्ययात्रा के संबन्ध में काशी दर्शन, द्वितीय संस्करण में प्रमाण और प्रत्यक्ष फल का वर्णन लिखा गया है।

काशी की विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग यात्रा

स्वरूपात्मा अङ्ग यात्रा प्रत्येक त्रयोदशी प्रदोष के दिन करनी चाहिए। (स्कन्दपुराणे, काशी खण्डे, अध्याय ३३, श्लोक १६७ से ७३)

अङ्ग यात्रा सर्वसाधारण के सुविधा हेतु गुरुजी की आज्ञा से दाहिनेवर्त से लिखा गया है। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर भस्म, बिल्वपत्र, गङ्गाजल, पुष्प इत्यादि पूजा की सामग्री साथ में लेकर केदार घाट में स्नान, टीका या त्रिपुण्ड धारण करके केदारेश्वर के दर्शन, पूजा करने के पश्चात् संकल्प लेकर यात्रा प्रारम्भ करें।

१. केदारेश्वराय नमः (लिङ्ग) (म० नं० बी० ६/१०२ में स्थित हैं, मु० केदारघाट)। केदारघाट से उत्तर "हर हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गङ्गे।" कीर्तन करते हुए धीरे-धीरे चलें। दशाश्वमेध थाना के उत्तर बगल में गोकर्णेश्वर हैं (शिव प्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं दूसरे त्र्यम्बकेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल के शिव मंदिर में हैं)।

२. गोंकर्णेश्वराय नमः (दक्षिण कर्ण) म० नं० डी० ५०/३३ में हैं, मु० दशाश्वमेध थाना, कोदई की चौकी)। यहाँ से उत्तर चेतगंज थाना से पश्चिम बगल में पिशाचमोचन तीर्थ में मार्जन करके कपर्दीश्वर के दर्शन करें। कपर्दीश्वर विनायक के मंदिर में स्थित हैं।

३. कपर्दीश्वराय नमः (वाम चरण) (म० नं० ए० १३/३९ में हैं, मु० पिशाचमोचन)। पिशाच मोचन से पूर्व बेनियाबाग के दक्षिण बगल से पूर्व हड़हासराय राजा दरवाजा होते हुए, गज विनायक के मंदिर में हैं।

४. भारभूतेश्वराय नमः (वामकर्ण) (म० नं० सी० के० ५४/४४ में

हैं, मु० राजादरवाजा)। भारभूतेश्वर से उत्तर सप्तसागर मुहल्ले में काशीदेवी के दर्शन करके बगल के जेष्ठ विनायक मंदिर में ज्येष्ठेश्वर विराजमान हैं, दर्शन करें।

५. ज्येष्ठेश्वराय नमः (नितंब) भूतभैरव के दर्शनकर भूतभैरव से उत्तर मैदागिन मध्यमेश्वर मुहल्ला में मध्यमेश्वर हैं।

६. मध्यमेश्वराय नमः (मु० मध्यमेश्वर)। मध्यमेश्वर से उत्तर मृत्युञ्जय के बगल में महाकालेश्वर हैं।

७. महाकालेश्वराय नमः (दाहिना चरण) (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० दारानगर)। महाकालेश्वर अपने दर्शन उपासना करने वाले भक्तों को भोग सामग्री देकर सुखी बनाते हैं। महाकालेश्वर से पूर्व मृत्युञ्जय सड़क में रत्नेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल के शंकरजी के मंदिर में श्रुतीश्वर हैं।

८. श्रुतीश्वराय नमः (शिरोभूषण) (म० नं० के० ५३/४० में हैं, मु० मध्यमेश्वर)। श्रुतीश्वर से पूर्व बगल में कृत्तिवासेश्वर हैं।

९. कृत्तिवासेश्वराय नमः (मस्तक) (म० नं० के० ४६/२३ में हैं, मु० हरतीर्थ)। हरतीर्थ से पूर्व मच्छोदरी पार्क के उत्तर ओंकारेश्वर जाने वाली सड़क से आगे दाहिने तरफ ऊपर के लाल मंदिर में ओंकारेश्वर हैं।

१०. ओंकारेश्वराय नमः (शिखा) (म० नं० ए० ३३ में हैं, मु० छितवन पुरा) ओंकारेश्वर से पूर्व मच्छोदरी त्रिलोचन होते हुए, वाल्मीकीश्वर के मंदिर में हैं।

११. त्रिलोचनेश्वराय नमः (नेत्र) (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचन घाट)। त्रिलोचनेश्वर से सटे हुए पूर्व बगल के मोद विनायक के मंदिर में आदि महादेव हैं।

१२. आदि महादेवेश्वराय नमः (जटाजूट) (म० नं० ३/९२ में हैं, मु० त्रिलोचन घाट)। त्रिलोचन से दक्षिण कालभैरव जी के दर्शन करके सूत टोला, पटनी टोला होते हुए, शान्तेश्वर, संकठा जी का दर्शन करें।

कात्यायनी दुर्गा जी के मन्दिर में आत्मा वीरेश्वर हैं।

१३. आत्मा वीरेश्वराय नमः (मनः) (म० नम्बर सी० के० ७/१५८ में हैं, मु० सिंधिया घाट)। आत्मा वीरेश्वर से पश्चिम सिद्धेश्वरी के मन्दिर में चन्द्रेश्वर हैं।

१४. चन्द्रेश्वराय नमः (हृदय) (म० नं० सी० के० ७/१२४ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)। चन्द्रेश्वर से पूर्व बगल में मणिकर्णिकेश्वर हैं।

१५. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (दक्षिण कर) (म० नं० सी० के० ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)। मणिकर्णिकाघाट से दक्षिण विशालाक्षी के बगल में धर्मेश्वर हैं।

१६. धर्मेश्वरराय नमः (बायाँ हाथ), (म० नं० डी० २/२१ में हैं, मु० मीरघाट)। धर्मेश्वर से पश्चिम कालिका गली में सृष्टि विनायक के बगल में शुक्रेश्वर हैं।

१७. शुक्रेश्वराय नमः (वीर्ये) (म० नं० डी० ८/३० में हैं, मु० कालिंका गली)। शुक्रेश्वर से उत्तर ढुण्ढिराज गली में अविमुक्तेश्वर हैं।

१८. अविमुक्तेश्वराय नमः (दाहिना हाथ) (मु० ढुण्ढिराज गली)।

१९. विश्वेश्वराय नमः (दाहिनाहाथ) (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)। विश्वनाथ अङ्ग यात्रा करने वाले नार-नारियों के शरीर में कोई भी अङ्ग-भङ्ग नहीं होता, हड्डी टूटने का भय नहीं होता है। और शरीर स्वस्थ, रोग रहित होता है। इतना ही नहीं पूर्व आचार्य शिवप्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं, जिस व्यक्ति के पहले हड्डी टूटी है उसकी भी हड्डी जुट जाती है। यात्रा करने वाला व्यक्ति इस लोक में सुःख शान्ति प्राप्त करता है। जो यात्री चलने में असमर्थ है वह यात्री महाकालेश्वर महामृत्युञ्जय में उस दिन विश्राम करें। सत्सङ्ग-कीर्तन करके रात्रि में विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए शयन करें। अन्नपूर्णा आदिं के दर्शन करने के पश्चात् विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग यात्रा पूर्ण हुई। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को सीधा दक्षिणा देकर साधु-महात्मा को जलपान देकर

काशी विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए यात्री अपने अपने घर जाते हैं। कोई-कोई यात्री दूसरे दिन रुद्राभिषेक करते हैं, ब्राह्मण साधु को भोजन करांते हैं; कीर्तन करते हैं। शिवार्पणमस्तु।

काशी में चारधाम यात्रा

प्रत्येक द्वितीया तिथि के दिन यात्रा करनी चाहिए। प्रातः संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री गङ्गा जल साथ में लेकर जगन्नाथ तीर्थ, अस्सीघाट में स्नान करके काशी के जगन्नाथ पुरी, अस्सी घाट के दक्षिण बगल के जगन्नाथ मंदिर में छोटे-छोटे सभी मंदिर हैं।

जगन्नाथाय नमः (मु० अस्सी)।

अस्सी से पश्चिम गुरुधाम चौराहा काश्मिरीगंज होते हुए शंकुधारा में गोमती-गोपीतीर्थ विशाल पक्काकुण्ड है। कुण्ड के दक्षिण तट में ऊपर द्वारिकेश्वर के बगल में काशी की द्वारिकापुरी है।

२. द्वारिकानाथाय नमः (म० नं० बी० २२/१६५ में हैं, मु० शंकुधारा)। शंकुधारा से उत्तर कामाक्षा चौराहा होते हुए गुरुद्वारा के पूर्व तट से रामकुण्ड जाने वाली गली में रामेश्वरतीर्थ विशाल पक्का कुण्ड है, कुण्ड के पूर्व बगल में रामेश्वर का मन्दिर है। मन्दिर के पूर्व बगल में सीताशक्ति तीर्थ है।

३. रामेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५४/४५ में हैं, मु० रामकुण्ड, लक्सारोड)। रामकुण्ड से बद्रीनारायण जाने का मार्ग इस प्रकार है — रामकुण्ड से गोदौलिया, मैदागिन, मच्छोदरी होते हुए गाय घाट में संहार भैरव के दर्शन कर पूर्व की बद्रीनारायण गली में यह काशी के बद्रीनारायण महापुरी है, अलकनन्दा बद्रीनारायण तीर्थ नीचे घाट में स्रोत बहता है, ठण्डा-मीठा जल है।

नरनारायणेश्वराय नमः।

४. बद्रीनारायण विष्णवे नमः (मु० बद्रीनारायण गायघाट) काशी से बाहर के चारधाम यात्रा करने से जो फल मिलता है वही फल काशी

के चारधाम यात्रा करने से प्राप्त होता है। काशी खण्ड में वेदव्यास जी लिखते हैं, काशी से बाहर के चार धाम की यात्रा करने से जो पुण्य उपलब्ध होता है उससे दसगुना अधिक काशी के चारो धाम यात्रा करने से पुण्य मिलता है। इस संबंध में काशी दर्शन द्वितीय संस्करण देखिये। हर-हर महादेव।

४२ बयालिस महाशिवलिङ्ग यात्रा

४२ सिद्धशिवलिङ्ग यात्रा मद्धे प्रथम सिद्ध-लिङ्ग-यात्रा प्रारम्भ दाहिने वर्त से करें।

एतेषांसिद्धलिङ्गानां ज्ञास्यन्त्याख्यामपीह न
नामश्रवण तो ऽपीह यलिङ्गानां शुभानने। वृजिनानिक्षयंयन्ति वर्धन्ते पुण्यराशयः ॥३॥
त्वया तु यानि पृष्टानियैरिदंक्षेत्रमुत्तमम्।
तानिलिंगानि वक्ष्यामि मुक्तिंहेतूनिसुन्दरि ॥२८॥
कःकाश्यांमोक्षमाप्नोति सत्यं सत्यं पुनः पुनः– पूज्यान्येतानिलिंगानि भक्त्या परमयामुने।
काशीकोशोयमतुलो न प्रकाश्यो यतस्ततः।

(काशीखण्ड अ० ७३)

काशी खण्ड अध्याय ७३ में श्लोक ३२ से ६५ तक है। श्लोक के आधार से यात्रा कठिन होने के कारण सरल करके लिखा है, प्रातः स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर भस्म, रुद्राक्ष का दाना, विल्वपत्र एवं वस्त्र पुष्प, चढ़ाने के लिये रेजगारी पैसा, गङ्गाजल, धूपदीप, नैवेद्य (सीधा) इत्यादि साथ में लेकर केदारेश्वर गौरीतीर्थ में स्नान करके केदारेश्वर के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् संकल्प लेकर १४ सिद्ध महालिङ्ग यात्रा प्रारम्भ करें।

१. केदारेश्वराय नमः (म० न० बी० ६/१०२ में हैं, मु० केदारघाट)।

केदारजी से उत्तर 'हरहर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गङ्गे' कीर्तन करते हुए, यात्री धीरे-धीरे पंक्तिबद्ध होकर चलते हैं। दशाश्वमेध, मीरघाट होते हुए विशालाक्षी देवीजी के बगल में धर्मेश्वर और धर्मेश्वर तीर्थ धर्मकूप हैं।

२. धर्मेश्वराय नमः (म० नम्बर डी० २/२१ में हैं, मु० मीरघाट)। धर्मेश्वर से पश्चिम ढुण्ढिराज गली में राज राजेश्वर के बगल में अविमुक्तेश्वर हैं।

३. अविमुक्तेश्वराय नमः (मु० ढुण्ढिराज गली)।

४. विश्वेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० विश्वनाथ जी)। विश्वनाथ जी से पूर्व मणिकर्णिका घाट के ऊपर अभयानन्द आश्रम में मणिकर्णिकेश्वर हैं।

५. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)। यहाँ से उत्तर सिद्धेश्वरी के मंदिर में चन्द्रेश्वर हैं।

६. चन्द्रेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/२४ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)।

७. आत्मावीरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१५८ में हैं, मु० सिन्धियाघाट) आत्मा वीरेश्वर से उत्तर काल भैरव के दर्शन कर, मृत्युञ्जय चौराहा से महामृत्युञ्जय सड़क में ऋण हरेश्वर के बगल में कृत्तिवासेश्वर हैं।

८. कृत्तिवासेश्वराय नमः (म० नं० के० ४६/२३ में हैं, मु० हरतीरथ) बगल में रत्नेश्वर हैं।

९. रत्नेश्वराय नमः (म० नं० के० ५३/४० में हैं, मु० मध्यमेश्वर) महामृत्युञ्जय के दर्शन करके महाकालेश्वर, धन्वन्तरी अमृतकुण्ड का जल पीकर, पूर्व मच्छोदरी के दक्षिणतट लक्ष्मीनारायण मंदिर में शुभेश्वर हैं, जो लक्ष्मीनारायणेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं।

१०. शुभेश्वराय नमः (मच्छोदरी-गायघाट)। मच्छोदरी से पूर्व

अरुणादित्य के मंदिर में त्रिलोचन हैं।

११. त्रिलोचनेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचनघाट)।

१२. आदिमहादेवेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३/९२ में हैं, मु० त्रिलोचनघाट) आदिमहादेव से उत्तर मच्छोदरी के पूर्व तट में कामेश्वर गली में हैं।

१३. कामेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं, मु० मच्छोदरी) मच्छोदरी पार्क से उत्तर छितवनपुरा मुहल्ले में ओंकारेश्वर हैं।

१४. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/२३ में हैं, मु० छितवनपरा)। ओंकारेश्वर के दर्शन करने के पश्चात् संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को सीधा, दक्षिणा और महात्माओं को जलपान देकर यात्री अपने अपने घर जाते हैं। महासिद्ध लिङ्ग दर्शन यात्रा करने वाले नर-नारियों को इस लोक में सुख सम्पत्ति, आयु, भक्ति उपलब्ध होती है, और ११ बार यात्रा करने वाले यात्रियों को सिद्धि प्राप्त होती है।

काशीदर्शन द्वितीय संस्करण में विस्तार से सप्रमाण दर्शन, पूजन का फल लिखा गया है। प्रथम यात्रा पूर्ण हुई। हरिओम् तत्सत् शिवार्पणमस्तु। हर हर महादेव।

४२ महाशिवलिङ्ग मद्धे १४ महालिङ्ग यात्रा

यह यात्रा प्रत्येक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि के दिन करनी चाहिए। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजन की सामग्री साथ में लेकर, भारतद्वाजेश्वर के पश्चिम बगल में ब्रह्मेश्वर हैं उनका दर्शन करें।

१. ब्रह्मेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३३/६७ में हैं, मु० खालिसपुरा)। दर्शन, पूजा करके दाहिनेवर्त से यात्रा प्रारम्भ करें। ब्रह्मेश्वर से उत्तर अन्नपूर्णा गली में विश्वनाथ जी से सटे हुए पूर्व बगल के मंदिर में तारकेश्वर हैं।

२. तारकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७ में हैं, मु० ज्ञानवापी)। तारकेश्वर से सटे हुए पूर्व बगल के शंकरजी के मंदिर में नन्दीकेश्वर हैं,

दूसरे ज्ञानवापी में हैं।

३. नन्दीकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१६ में हैं, मु० सरस्वती फाटक)। नन्दीश्वर से दक्षिण काली जी के उत्तर बगल के अर्धनारीश्वर के मंदिर में चण्डीश्वर हैं।

४. चण्डीश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/२६ में हैं, मु० कालिकागली) चण्डीश्वर से उत्तर खोवाबाजार में ज्ञानविनायक के मन्दिर में लाङ्गलीश्वर हैं।

५. लाङ्गलीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २८/४ में हैं, मु० खोवा बाजार)। लाङ्गलीश्वर से पूर्व सरस्वती फाटक लाहोरी टोला होते हुए, ज्ञानेश्वर के मन्दिर में हैं।

६. ज्ञानेश्वराय नमः (म० नं० डी० १/३२ में हैं, मु० लाहौरी टोला) ज्ञानेश्वर से उत्तर बगल में करुणेश्वर हैं।

७. करुणेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३४/१० में हैं, मु० ललिताघाट) करुणेश्वर के मंदिर में मोक्षद्वारेश्वर हैं।

८. मोक्षद्वारेश्वराय नमः (म० नम्बर सी० के० ३४/१० में हैं, मु० ललिताघाट)। करुणेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल में ब्रह्मनाल चौराहा में राम मंदिर है, राम मंदिर से सटे हुए दक्षिण, ऊपर बगल से सीढ़ी चढ़कर ऊपर शंकर जी के मंदिर में स्वर्गद्वारेश्वर हैं।

९. स्वर्गद्वारेश्वराय नमः (म० नम्बर सी० के० १०/१६ में है, मु० ब्रह्मलाल) स्वर्गद्वारेश्वर से पश्चिम बगल में अमृतेश्वर हैं।

१०. अमृतेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३३/२८ में हैं, मु० नीलकण्ठ) नीलकण्ड से पूर्व मणिकर्णिकेश्वर हैं।

११. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)मणिकर्णिकाघाट से उत्तर मैदागिन चौराहा से उत्तर हरिश्चन्द्र कालेज के बगल में पेट्रोल पम्प के सामने गोरखनाथजी के मठ में वृषेश्वर

हैं।

१२. वृषेश्वराय नमः (म० नं० के० ५८/७८ में हैं)। वृषेश्वर से उत्तर महाकालेश्वर के बगल में वृध्दकालेश्वर हैं।

१३. बृद्धकालेश्वराय नमः (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० मृत्युञ्जय दारानगर)। अमृतकुण्ड के बगल में दक्षेश्वर से पूर्व बगल के शंकर जी के मंदिर में महेश्वर हैं।

१४. महेश्वराय नमः (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० दारानगर)।

४२- बयालिस महालिङ्ग मध्ये द्वितीय यात्रापूर्ण हुई। यात्री पूर्ववत् सब कार्य करें। हर हर महादेव।

वेदव्यास जी काशी खण्ड में लिखते हैं कि यह द्वितीय १४ लिङ्ग यात्रा करने वाले व्यक्ति के घर में ऋद्धि सिद्धि स्वतः आ जाती है।

१४ सिद्ध महालिङ्ग यात्रा

बयालिस सिद्धमहालिङ्ग यात्रा मद्धे तृतीय १४ महाशिव लिङ्गयात्रा पूजा की सामग्री साथ में लेकर पूर्ववत् यात्रा प्रारम्भ करें। प्रत्येक शुक्ल प्रतिपदा तिथि के दिन यह यात्रा करनी चाहिए। विश्वनाथ जी से दक्षिण बगल में शुक्रेश्वर हैं।

१- शुक्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/३० में हैं, मु० कालिका गली)। शुक्रेश्वर से पश्चिम बाँसफाटक में गजकर्ण विनाक के मंदिर में ईशानेश्वर हैं।

२- ईशानेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३७/४३ में हैं, मु० बाँसफाटक)। बाँसफाटक से पूर्व चौक पशुपति मुहल्ला, सिद्धेश्वरी पटनी टोला होते हुए ज्वर हरेश्वर के मंदिर में ज्वर हरेश्वर के दर्शन पूजन करें। स्नान कराया हुआ जल पीने से मियादी बुखार अच्छा होता है।

३- उपशान्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २/४ में हैं, मु० पटनीटोला)। पटनीटोला से पश्चिम बुलानाला सप्तसागर होते हुए काशी देवी जी का

दर्शन करके, बगल में ज्येष्ठेश्वर हैं उनका दर्शन करें।

४- ज्येष्ठेश्वराय नमः (म० नं० ६२/१६ में हैं, मु० सप्तसागर)। ज्येष्ठेश्वर के पश्चिम बगल में भूतभैरव के पास में व्याघ्रेश्वर हैं।

५- व्याघ्रेश्वराय नमः (म० नं० के० ६३/१६ में हैं, मु० भूत भैरव)। व्याघ्रेश्वर के बगल में निवासेश्वर हैं।

६- निवासेश्वराय नमः (म० नं० के० ६३/१६ में हैं, मु० भूतभैरव)। भूतभैरव से उत्तर लोहटिया होते हुए बड़े गणेश जी के फाटक के सामने जम्बूकेश्वर हैं।

७- जम्बूकेश्वराय नमः (म० नं० के० ५८/१०१ हैं, मु० बड़े गणेश, लोहटिया) बड़े गणेशजी के दर्शन करके पूर्व बगल में पेट्रोल पम्प के सामने वृषेश्वर के मन्दिर में बृषभध्वजेश्वर हैं।

८- बृषभध्वजेश्वराय नमः (म० नं० के० ५८/७८ में हैं, गोरख नाथ जी के मठ में हैं) यहाँ से पूर्व बगल में मध्यमेश्वर हैं।

९- मध्यमेश्वराय नमः (म० नं० के० ५३/६३ में स्थित हैं, मु० मध्यमेश्वर)। मध्यमेश्वर से उत्तर गोलगड्डा जी० टी० रोड रेलवे लाइन पार करके शैलपुत्री हैं। शैलपुत्री दुर्गाजी के मन्दिर में शैलेश्वर हैं।

१०- शैलेश्वराय नमः (म० नं० ए० ४०/११ में हैं, मु० शैलपुत्री)। शैलपुत्री से पूर्व शैलपुत्री चौराहा, राजघाट बसन्त कालेज होते हुए आदि केशव में वरुणा संगमेश्वर हैं।

११- वरुणा संगमेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३७/५१ में हैं, मु० आदिकेशव, बसन्त कालेज)। ज्ञानकेशव, आदि केशव आदि के दर्शन करके आदि केशव से दक्षिण बसन्त कालेज जी० टी० रोड से सड़क की बायीं पटरी से गङ्गा किनारे जाने वाले मार्ग से पुल के नीचे से प्रह्लाद घाट, नया महादेव घाट में अग्नि अखाड़ा के ऊपर श्वर्लिनीश्वर हैं।

१२- श्वर्लिनीश्वराय नमः (म० नं० ए० ११/३० में स्थित हैं, मु०

नया महादेव)। नया महादेव से दक्षिण त्रिलोचनेश्वर की सभा में ब्रह्मेश्वर के बगल में हिरण्यगर्भेश्वर हैं।

१३- हिरण्यगर्भेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचन)। त्रिलोचनघाट से दक्षिण में लालघाट के ऊपर गौरीशंकर के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है।

१४- गोप्रेक्षेश्वराय नमः (म० नं० के० २२/३३ में हैं, मु० लाल घाट)।

४२ महासिद्धलिङ्ग यात्रा करने वाले नर-नारियों के अज्ञात पाप नष्ट होते हैं और अज्ञानता भी नष्ट होती है। पुण्य का उदय होता है।

काशी में ग्यारहरुद्र गणेश यात्रा

प्रत्येक शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन सभी विघ्न को नष्ट करने के लिए तथा सब कार्य सिद्धि के लिए ११ रुद्र गणेश यात्रा करें। प्रातः संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर दूब, गङ्गाजल, लड्डू, धान का लावा, ऋतुफल, वस्त्र, बिल्वपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य द्रव्य इत्यादि साथ में लेकर केदार घाट में स्नान या मार्जन करके केदारेश्वर के दर्शन पूजा करके गणेश जी के दर्शन करने के पश्चात् संकल्प लेकर "हर हर महादेव शंभो काशीविश्वनाथ गङ्गे" कीर्तन करते हुए पंक्तिबद्ध होकर यात्री चलते हैं।

१. केदारेश्वर गणेशाय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में हैं, मु० केदार घाट)। केदारेश्वर से लक्सारोड लक्ष्मी कुण्ड होते हुए महालक्ष्मी जी के मंदिर में मण्ड गणेश जी हैं। मण्ड गणेशेश्वराय नमः।

२- मण्ड गणेशाय नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं, मु० लक्ष्मीकुण्ड)। लक्ष्मीकुण्ड से उत्तर पिशाचमोचन तीर्थ के पूर्व तट में कपर्दीश्वर के मंदिर में गणेश जी हैं।

३. कपर्दीश्वर गणेशाय नमः (म० नं० ए० १३/३९ में हैं, मु० पिशाचमोचन)। पिशाचमोचन से पूर्व अन्नपूर्णा एवं विश्वनाथ जी के दर्शन करके धर्मकूप में धर्मेश्वर के मंदिर में धर्मेश्वर गणेश जी हैं उन धर्मेश्वर का दूसरा नाम गायत्रीश्वर है। धर्मेश्वर के पास में ब्रह्मगायत्री का जप,

अनुष्ठान एवं पुरश्चरण करने वाले व्यक्ति को दोगुना अधिक फल प्राप्त होता है।

४. धर्मेश्वर गणेशाय नमः (म० नं० डी० २/२१ में हैं, मु० धर्मकूप-मीरघाट)। धर्मेश्वर से उत्तर पशुपति मुहल्ले में पशुपति के मन्दिर में मूर्ति पूर्वाभिमुख है।

५. पशुपतिगणेशाय नमः (म० नं० सी० के० १३/६६ में हैं, मु० पशुपतीश्वर)। पशुपतीश्वर से पूर्व मणिकर्णिका घाट श्मशान के बगल में हैं। शिवप्रसाद पाण्डेजी लिखते हैं, भागीरथीश्वर और गणेश जी सतुवा बाबा के मठ में हैं।

६. भागीरथीश्वर गणेशाय नमः (म० नं० सी० के० ११/११ में हैं, मु० मणिकर्णिका घाट)। मणिकर्णिकाघाट से उत्तर शंकठाघाट के ऊपर हरिश्चन्द्रेश्वर के मंदिर में हरिश्चन्द्र गणेश जी हैं।

७. हरिश्चन्द्रेश्वर गणेशेश्वरायनमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में हैं, मु० संकठाघाट)। संकठाजी के मंदिर में गणेशजी पूर्वाभिमुख हैं, संकठा जी का दूसरा नाम बीफटा देवी है।

८. विकटागणेशाय नमः (मु० संकठाघाट)। संकठाजी से उत्तर विन्दुमाधव के मंदिर में विन्दु गणेश जी हैं।

९. विन्दुगणेशाय नमः (म० नं० सी० के० २२/३३ में हैं, मु० पञ्चगङ्गा)। विन्दुमाधव गणेश जी से पश्चिम काल भैरवजी के मंदिर में भैरव गणेश जी हैं।

१०. भैरव गणेशाय नमः (म० नं० के० ३२/२ में हैं, मु० भैरवनाथ-चौखम्बा)। महाराज बड़े गणेशेश्वराय नमः।

११. महाराज बड़े गणेशाय नमः (म० नं० के० ५८/१० में हैं, मु० बड़ा गणेश लोहटिया)। बड़ा गणेश जी से दक्षिण चौक साक्षीविनायक मुहल्ला में होते हुए, साक्षीगणेशजी जो पूर्वाभिमुख हैं।

१२. साक्षीगणेशेश्वराय नमः। साक्षीगणेशाय नमः (मु० साक्षी विनायक)। गणेश यात्रा करने वाले नर-नारियों के विघ्न, कष्ट और रोग दूर होते हैं, असाध्य कार्य (काम) भी सिद्ध होता है।

केदारेश्वर माहात्म्य

काश्यां केदारभूमौ तु न तथा देहयातना।
अनायासेन देहस्यत्यागमात्रेण तारकम्॥
उपदिश्य महादेवः करोति स्वात्मवत्क्षणात्।
श्रीकालभैरवाद्यास्तुकाशीस्था देवतागणाः॥
केदारान्तर्गृहेऽस्माकं नैवाज्ञा संप्रवर्तते।
शिवप्रसादो बलवान् केन शक्यो निवारितुम्॥

अर्थ : काशी के केदारखण्ड में भैरवी यातना नहीं होती है जिस किसी तरह से केदार खण्ड में शरीर त्याग हो जाने पर तारकमन्त्र का उपदेश प्राप्त हो जाता है, भगवान् शङ्कर अपने समान बना देते हैं। भैरवादि समस्त देवतागण कह रहे हैं कि हम लोगों का आदेश केदारखण्ड में मरने वालों के ऊपर नहीं चलता। इसमें भगवान् शिव की कृपा ही मुख्य है इसको कोई टाल नहीं सकता।

केदारेशं महालिङ्गं देह केदारनाशनम्।
केदाराणित्तपुत्राद्याभवन्ति ध्यान्तभूमयः॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण त्रिस्थलीसेतु पृष्ठ ११२)

ममकेदारलिङ्गे यः पत्रं वा पुष्पमेव वा।
एकद्वित्रिचतुर्वापि चुलुकोदकमेव वा॥
अर्पयेत स समस्ताद्य मुक्त सर्वाधिपोभवेत्।

(स्कन्द पुराणे)

अर्थ : मेरे केदारेश्वर शिवलिङ्ग में जो मनुष्य फूल विल्व पत्र, पुष्प और एक, दो, तीन, चार, चुलुक जल अर्पण करता है, उस व्यक्ति के

समस्त पाप दूर हो जाते हैं, वह सभी पापों से मुक्त होता है तथा सभी का स्वामी बनता है।

जन्मद्वयार्जितम्पापं शरीरादपिनिर्व्रजेत्।।५/२।।
दृष्ट्वा केदारशिखरं पीत्वा तत्रत्यमम्बुच।
सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नाऽत्रसंशयः।।९।।
हरपापह्रदे स्नात्वा केदारेशम्प्रपूज्य च।
कोटि जन्मार्जितै नोभिर्मुच्यते नात्र संशयः।।१०।।
सकृत्प्रणम्य केदारं हरपापकृतोरकः।।११/१।।

(का० खं० अ० ७७)

अर्थ : दो जन्मों के अर्जित पाप भी शरीर से निकल जाते हैं। केदारशिखर (केदारेश्वर) का दर्शन कर, तथा वहाँ के जल को पीकर व्यक्ति, सात जन्मों के पापों से छूट जाता है इसमें संशय नहीं है। पाप तापहारी ह्रद (कुण्ड) में स्नान कर, तथा केदारेश्वर की पूजा करने से कोटिजन्मों के अर्जित पापों से लोग छूट जाते हैं इसमें संशय नहीं है। एक बार भी केदारेश्वर को प्रणाम करने वाला पापमुक्त हो जाता है।

पुरा केदारनाथस्य क्षेत्रमन्त्रर्गृहं स्थितम्।
पूर्वस्यां दिशि गङ्गार्धभागं तीर्थसमर्चितम्।।
अर्द्धक्रोशं चाग्निदिशि लोलार्केशान्तदक्षिणम्।
सर्वपापप्रशमनं शङ्खोद्धारान्तनैर्ऋतम्।।
पश्चिमे वैद्यनाथान्तं रमातीर्थन्तु वायुदिक्।
उत्तरेशूलटङ्कान्तमीशान्यां क्रोशमर्धकम्।।
एतन्मध्ये शुभं लिङ्गं सर्वपापविनाशकम्।
श्री विश्वनाथकेदार काश्यां केदारनामतः।।
सद्यस्तारयते लोकान् भैरवीयातनां बिना।

(केदारमाहात्म्य)

अर्थ : यह केदार अन्तर्गृही के भीतर स्थित है। पूर्व की ओर आधी गङ्गा तक अग्नि कोण में आधाकोश तक दक्षिण में लोलार्क अस्सी तक, नैर्ऋतकोण में सब पापों के शमन करने वाले शङ्खोद्धार तक पश्चिम में वैद्यनाथ तक और वायव्य में लक्ष्मीतीर्थ तक, उत्तर में शूलटङ्क तक और ईशान में आधे कोश तक। इन क्षेत्रों के मध्य में सभी पापों को दूर करने वाला शुभ लिङ्ग विद्यमान है। श्री विश्वनाथ केदार, काशी में केदार नाम से विख्यात हैं। केदारेश्वर, जीवों को भैरवी यातना के बिना ही शीघ्र ही तार देतें हैं।

धर्मार्थकाम मोक्षाणां काश्यां केदार भूमिका
यास्यबृद्धिकरी जाता विश्वेश नगरी बलात् ।।

(केदार माहात्म्य)

अर्थ : काशी में धर्म, अर्थ, क़ाम और मोक्ष की उत्पत्ति का स्थान, केदारक्षेत्र है, विश्वनाथ की नगरी में जो काशी धर्मादि की वृद्धिकारिणी है एवं विश्वेश की नगरी है।

शिवलोकंमावाप्नोति निष्पापो जायतेक्षणात्।

(काशी ख० अ० ७७ श्लोक ७४/२)

अर्थ : जो नर नारी केदारेश्वर के दर्शन पूजन करते हैं वह व्यक्ति तत्क्षण निष्पाप हो जाते हैं और उनको शिवलोक की प्राप्ति होती है।

केदारेश्वर नित्य दर्शन यात्रा

१. आदिमणिकर्णिका तीर्थाय नमः २. गौरीकुण्डाय नमः ३. हर पाय तीर्थाय नमः ४. मान्धातृतीर्थाय नमः

५. रेवातीर्थाय नमः ६. मधुश्रवातीर्थाय नमः ७. हंसतीर्थाय नमः ८. केदारेश्वर तीर्थाय नमः ९. नीलकण्ठेश्वर तीर्थाय नमः। केदारघाट में स्नान करने वाले व्यक्ति को नौ तीर्थों में स्नान करने का फल मिलता है। (केदारेश्वर के और अन्य मंदिरों के शिखरों के दर्शन करने से अमित फल प्राप्त होते

हैं)। केदारघाट के ऊपर केदारेश्वर के पूर्व फाटक के बाहर दाहिने तरफ वैकुण्ठेश्वर के मन्दिर में गङ्गेश्वर, किरातेश्वर, हंसेश्वर, सूर्येश्वर हैं। केदारेश्वर के दूसरे फाटक के दक्षिण बगल में शनैश्चरेश्वर, भैरवेश्वर, दक्षिणामूर्ति, दक्षिणेश्वर, महाविष्णु, लक्ष्मी देव्यै नमः, लक्ष्मीश्वराय नमः, विष्णवेश्वराय नमः, बगल में हरपापेश्वर, नीलकण्ठेश्वर हैं। बगल में केदारेश्वर संसद सभा है।

केदारेश्वर सभाभ्यो नमः, पश्चिम फाटक से सटे हुए उत्तर के फाटक के अन्दर शंकरजी के मंदिर में तारकेश्वर हैं। तारकेश्वर से सटे हुये बगल में सुराभाण्डेश्वर हैं, सटे हुए बगल में विभाण्डेश्वर, तिलभाण्डेश्वर है।

बगल में पार्वती देवी हैं। पार्वतीदेवी जी के मंदिर में कालंजरेश्वर हैं, नन्दिकेश्वर हैं, चण्डगण हैं। सटे हुए पूर्व बगल के मन्दिर में इन्द्रधूम्नेश्वर हैं। केदारेश्वर के दूसरे फाटक के दोनों तरफ दीवाल से सटे हुए डण्डा हाथ में लिये हुए पूर्वाभिमुख खड़े दोनों द्वारपाल हैं।

वीरभद्रद्वारपालाय नमः, सुभद्रगणाय नमः दूसरे दरवाजा के अन्दर दाहिने तरफ केदारेश्वर भैरव दण्डपाणि गणेश, स्कन्द और भवानी, अन्नपूर्णाजी हैं। केदारेश्वर के तीसरे फाटक के ऊपर महालक्ष्मी पूर्वाभिमुख हैं, लक्ष्मी जी के दक्षिण बगल के शिवमंदिर में देवोदासेश्वर हैं। भृङ्गीश्वर, नन्दीश्वर हैं।

केदारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में है, मु० केदारघाट)। केदारेश्वर के मन्दिर से सटे हुए दक्षिण बगल में हरिहरेश्वर हैं।

हरिहरेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०१ में है, मु० केदारघाट करपात्रिधाम में हैं, केदारघाट)।

भूमानिकेतन में मोक्षलक्ष्मी, मनसादेवी, नीलकण्ठेश्वर हैं।

मोक्षलक्ष्मी देव्यै नमः (म० नं० ६/९९ में है।)

मनसा देव्यै नमः (म० नं० ६/९९ में है। पश्चिम बगल के शिव मंदिर में माण्डूकेश्वर, शिवेश्वर, मोक्षेश्वर हैं।

मोक्षेश्वराय नमः (म० नं० बी० ७/१९ में हैं, मु० केदारघाट) पश्चिम बगल में लम्बोदर विनायक चिन्तामणि गणेश जी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

लम्बोदर विनायकाय नमः। (म० नम्बर बी० ७/७६ में है, मु० पिताम्बरापुरा, सोनारपुरा) केदारेश्वर के पास में मार्कण्डेश्वर, ओंकारेश्वर, अम्बरीषेश्वर हैं।

मार्कण्डेश्वराय नमः (म० नं० बी० ७/१८२ में है)

ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ७/१८३ में हैं)

अम्बरीषेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/८ में है, मु० चौकीघाट) केदारेश्वर नित्य यात्रा पूर्ण हुई।

केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा जाने के एक दिन पहले केदारेश्वर नित्य यात्रा करें। लंम्बोदर विनायक, तिलभाण्डेश्वर का दर्शन करें। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर केदारघाट में स्नान करके पूजा की सामग्री साथ में लेकर त्रिपुण्ड लगवाकर गङ्गाजल, भस्म, विल्वपत्र, रुद्राक्ष की माला, ऋतुफल, वस्त्र, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, पैसा इत्यादि साथ में लेकर केदारेश्वर के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् संकल्प लें। यात्रा प्रारम्भ करें।

१. केदारेश्वराय नमः केदार घाट केदारेश्वर के पश्चिम फाटक से दक्षिण

२. हरिहरेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०१ मु० करपात्री धाम, केदारघाट) हरिश्चन्द्रेश्वर हरिश्चन्द्र घाट में लुप्त हो गये थे। शिव काञ्ची काशी मठ के शंकराचार्य श्री जितेन्द्रानन्द सरस्वती जी ने मन्दिर बनाकर हरिश्चन्द्रेश्वर की स्थापना की, जो काम-कोटि नाम से प्रसिद्ध है। बगल में शंकर मठ की स्थापना करके दण्डीस्वामी को महन्त वनाकर सब व्यवस्था की।

रामेश्वर नित्य यात्रा प्रारम्भ

हरिश्चन्द्रेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/६२ में हैं, हरिश्चन्द्रघाट)। भरतेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/११ में हैं, मु० हनुमान घाट),

लक्ष्मणेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/४५ में हैं, मु० हनुमानघाट)।
शत्रुघ्नेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/४८ में हैं, मु० हनुमान घाट)। शत्रुघ्नेश्वर से सटे हुये उत्तर बंगल के कर्नाटक स्टेट के फाटक के अन्दर दाहिनी तरफ में नागेश्वर हनुमतेश्वर हैं।

नागेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/५२ में है, मु० हनुमानघाट)।

८. दशरथेश्वराय नमः (बी० ४/५२ में हैं)।

९. हनुमतेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/५२ में हैं, मु० हनुमानघाट)।

१०. रामेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/११ में हैं, मु० हनुमानघाट)।

११. रूरूभैरवाय नमः (मं० नं० बी० ४/११ में हैं, मु० हनुमानघाट)।

१२. सीतेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/११ में हैं, मु० हनुमानघाट)। रामेश्वर से दक्षिण बगल में वशिष्ठेश्वर हैं।

१३. वसिष्ठेश्वराय नमः (म० नं० बी० ४/२० में हैं, मु० हनुमानघाट)। वसिष्ठेश्वर से दक्षिण ज्ञान हनुमान जी के मंदिर में।

१४. स्वप्नेश्वराय नमः (म० नम्बर बी० ३/१५ में है, मु० शिवाला)।

१५. स्वप्नेश्वरी देव्यै नमः (म० न० बी० ३/१५ में हैं।)

१६. जयन्तेश्वराय नमः (म० नं० बी० ३/१५ में हैं।)

यहाँ से दक्षिण आनन्दमयी घाट के ऊपर गणेश जी के बगल में हैं।

१७. अक्रूरेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/७४ में हैं, मु० बच्छराजघाट)। यहाँ से दक्षिण लोलार्ककुण्ड के पश्चिम बगल में देवी जी की मंदिर में हैं।

१८. चामुण्डा देव्यै नमः (म० नं० बी० २/६२ में हैं, मु० लोलार्क कुण्ड)।

१९. चर्ममुण्ड देव्यै नमः (म० नं० बी २/६२ में)।

२०. निर्वाणकेशवाय नमः (म० नं० बी० २/६४ में हैं, चामुण्डा देवी जी से सटे हुये पूर्व बगल में हैं)।

२१. लोलार्क सूर्यतीर्थाय नमः।

२२. लोलार्केश्वराय नमः (म० नं० बी० २/३१ बगल में हैं, मु० लोलार्क)।

२३. लोलार्केश्वर से दक्षिण ऊपर सटे हुये शिवालय में हैं)।

२४. कुण्डोदरेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/३१ में हैं)।

२५. कार्तिकेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/१८ में हैं, मु० लोलार्ककुण्ड)।

२६. महारण्डा देव्यै नमः (म० नं० १/२/१८ में हैं, मु० अमरनाथजी के मंदिर से सटे हुये उत्तर बगल के मंदिर में)।

२७. भैरवेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२० में हैं, मु० लोलार्क घाट)।

२८. भद्रेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२० में हैं)।

२९. अमरनाथेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२० में हैं, मु० लोलार्कघाट)।

३०. पराशरेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२१ में हैं, मु० लोलार्कघाट) पूर्व बगल में उद्दालकेश्वर हैं।

३१. उद्दालकेश्वराय नमः (म० नं० बी २/१९ में हैं, मु० लोर्लाकघाट)।

३२. अर्क विनायकेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/१९ में हैं, मु० लोलार्कघाट)।

३३. अर्कविनायकाय नमः (म० नं० बी० २/१९ में हैं)। यहाँ से दक्षिण बगल में तुलसी गणेश जी उत्तराभिमुख हैं।

३४. तुलसीगणेशाय नमः (म० नं० बी० २/१६ में हैं, मु० तुलसीघाट)। निर्विघ्न तुलसी दास रामायण लिखने के लिये इन्हीं गणेश जी की स्थापना कर के प्रतिदिन दर्शन, पूजन करते हुए रामायण लिख कर पूर्ण किया। यह गणेश जी संपूर्ण विघ्न को दूर करते हैं।

३५. अस्सी माधवाय नमः (म० नं० बी० २/१६ में हैं, मु० तुलसीघाट)।

३६. त्रिविक्रमेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/१६ में हैं, मु० तुलसीघाट)।

बगल में बालसिद्ध हनुमान जी के दर्शन करके चलें। त्रिविक्रमेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में तुलसी घाट के ऊपर पंक्तिबद्ध ३ शिव मंदिर हैं।

३७. जनकेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/१६ में हैं, मु० तुलसीघाट दूसरे मंदिर में कपिलेश्वर हैं।

३८. कपिलेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/१६ में हैं, मु० तुलसीघाट)। तीसरा मंदिर गङ्गासागरेश्वर का है।

३९. गङ्गासागरेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/१६ में हैं, तुलसीघाट)।

४०. अस्सीसंगमेश्वर तीर्थाय नमः। गङ्गाजल साथ में लेकर चलें।

४१. अस्सीसंगमेश्वराय नमः (म० नं० बी० १/१७४ में हैं, मु० अस्सीघाट)।

४२. मायादेव्यै नमः (म० नं० बी० १/१७४ में हैं। अस्सी घाट से पश्चिम सिद्धेश्वर हैं।)

४३. सिद्धेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२८२ में हैं, मु० गोयनका संस्कृत महाविद्यालय में हैं, मु० अस्सी)।

४४. सिद्धेश्वरी देव्यै नमः (म० नं० बी० २/२८२ में हैं)।

पञ्च पूजयेद्यस्तु सततं सिद्ध सप्तकम्।
पश्येद्य:स्मरते वापि सर्वदोषैविमुच्यते।।

गोयनका विद्यालय के पञ्चदेव मंदिर में।

४५. पञ्चपरमेश्वराय नमः (म० नं० बी० १/४ में हैं, मु० अस्सी)।

४६. कुरुक्षेत्र सूर्य तीर्थाय नमः (तीर्थ के पूर्व तट के शंकर जी के मंदिर में हैं) सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र सूर्यतीर्थ में लाखों यात्री स्नान करने आते हैं।

४७. स्थाणुलिङ्गेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२६२ में हैं, मु० कुरुक्षेत्र तीर्थ)। कुरुक्षेत्रेश्वराय नमः (म० नं० बी० २/२८२ में है, मु० कुरुक्षेत्र

रविन्द्रपुरी कालोनी)। दुर्गाकुण्ड के पूर्व तट में जो संगमरमर के मंदिर हैं वहीं भास्करेश्वर का मंदिर है (भास्करानन्दजी का इतिहास केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा में लिखा गया है)।

दुर्गाजी की नित्य यात्रा प्रारम्भ

४९. भास्करेश्वराय नमः (म० नं० बी २७/६७ में हैं, मु० आनन्दबाग, दुर्गाकुण्ड) सेनापति हनुमान जी के दर्शन करके चलें।

५०. दुर्गाविनायक, दुर्गातीर्थ दुर्गाकुण्डाय नमः। दुर्गाकुण्ड में पक्का विशाल कुण्ड है, कुण्ड के बीच में और कुण्ड के पूर्व उत्तर के कोने में स्रोत है। इस तीर्थ में मंगलवार, शनिवार और प्रत्येक अष्टमी के दिन स्नान करके दुर्गा जी के दर्शन यात्रा करते हैं।

५१. दुर्ग विनायकाय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं, मु० दुर्गाकुण्ड)। मयूरेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं।

५२. सूपकर्णेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं)।

५३. कूटकुटेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं, मु० दुर्गाकुण्ड)।

५४. जाङ्गलेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं)।

५५. दुर्गाविष्णवे नमः (म० नं० बी० २७/२ में दुर्गा हनुमान जी के मंदिर में हैं)।

५६. तिलपर्णेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं) पश्चिम फाटक से दुर्गाजी के दर्शन करें। दुर्गाशक्ति तीर्थाय नमः। (कुँवा के रूप में हैं।)

५७. दुर्गा देव्यै नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं)। दुर्गाजी के दर्शन करने वाले नर-नारियों के संकट, पाप दूर हो जाते हैं।

५८. रुद्र भैरवाय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं)।

५९. द्वारेश्वरी देव्यै नमः (म० नं० २७/२ में हैं)। दुर्गाजी के दक्षिण फाटक के पास द्वारेश्वरी माया देवी उत्तराभिमुख हैं।

६०. चण्डभैरवाय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं)।

६१. भैरवाय नमः (म० नं० बी० २७/२) पश्चिम फाटक के बाहर सूर्य के मन्दिर में हैं।

६२. द्वारेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं)।

६३. कृष्णेश्वराय नमः (म० नं० २७/२ में हैं) दुर्गा चौराहा से पश्चिम बगल से उत्तर कौड़ीदेवी गली में।

६४. वाराही देव्यै नमः (म० नं० बी० २७/२० में हैं, मु० कौड़ीदेवी)।

६५. मुकुटेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२० में हैं)। मुकुटेश्वर से उत्तर धर्मसंघ जाने वाली गली से धर्मसंघ के दक्षिण फाटक से श्रीमद्भागवत मन्दिर बन रहा है, दर्शन करें।

नवाबगंज, काश्मीरी गंज, शंकुधारा होते हुए द्वारिका तीर्थ। काशी खण्ड में द्वारिका शंकु तीर्थ का वर्णन है, विशाल पक्काकुण्ड है, कुण्ड के पूर्व तट पर ६७. द्वारिकातिर्थाय नमः।

६८. शंकुकूर्णेश्वराय नमः (म० नं० बी० २२/६५ में हैं, मु० शंकुधारा) यहाँ से द्वारिकानाथ नित्य यात्रा प्रारम्भ।

६९. रुक्माङ्गदेवेश्वराय नमः (म० नं० बी० १२२/६५ में हैं)।

७०. रुक्माङ्गदेवेश्वराय नमः (म० नं० बी० १२२/६५ में हैं)।

७१. द्वारिकेश्वराय नमः (म० नं० बी० १२२/६५ में हैं)। रुक्मणीशक्ति तीर्थ पूर्व बगल में कुँआ के रूप में हैं, यहाँ जलपान करके चलें।

७२. द्वारिकानाथ विष्णवे नमः (म० नं० बी० २२/१६५ में हैं, मु० शंकुधारा)। शंकुधारा तीर्थ के दक्षिणतट में वासुदेव हैं।

७३. वासुदेवेश्वराय नमः (म० नं० बी० २२/१६५ में हैं)

७४. सुभद्रेश्वराय नमः (म० नं० बी० २२/१६५ में हैं) शंकुधारा के पश्चिम तट पर।

७५. दुर्वासेश्वराय नमः (म० नं० बी० में हैं, मु० शंकुधारा) दुर्वासेश्वर के मंदिर में।

७६. गोपीश्वराय नमः (म० नं० बी० में हैं, शंकुधारा) शंकुधारा से उत्तर बैजनत्था मुहल्ले में सड़क के पूर्व पटरी में च्यवनेश्वर हैं।

कामाक्षा देवी बटुक भैरवन्नित्य दर्शन यात्रा प्रारम्भ

७७. च्यवनेश्वराय नमः (म० नं० बी० में हैं, मु० वैजनत्था)।

७८. बैजनाथेश्वराय नमः (म० नं० बी० ३७/१ में हैं, मु० बैजनत्था)।

७९. कहोलेश्वराय नमः (म० नं० वी० ३७/१ में हैं, मु० बैजनत्था) यहाँ से पूर्व कामाक्षा देवी के मंदिर में।

८०. कामाक्षा देव्यै नमः (म० नं० बी० २१/१२३ में हैं, मु० कामाक्षा)।

८१. क्रोधन भैरवाय नमः (म० नं० बी० २१/१२३ में हैं, मु० कामाक्षा)। बटुक भैरव के फाटक से सटे हुए उत्तर बगल के शिवालय में हैं।

८२. ब्रह्मपदप्रदेश्वराय नमः (मु० कामाक्षा)।

८३. बटुक भैरवाय नमः (म० नं० बी० २१/१२६ में हैं, मु० कामाक्षा)।

८४. घुश्नेश्वराय नमः (म० न० बी० २१/१२६ में हैं, मु० कामाक्षा)।

८५. बटुक भैरवेश्वराय नमः (म० नं० बी० २१/१२६ में हैं, मु० कामाक्षा)। यह उन्मत्त भैरव काशीखण्ड के हैं। भैरव यात्रा में इनका दर्शन करें।

८६. उन्मत्त भैरवाय नमः (म० नं० १० २१/१२६ में हैं, मु० कामाक्षा)। कामाक्षा से पूर्व रामकृष्ण मिशन कौड़िया स्पताल में प्रथम फाटक के अन्दर दाहिनी तरफ के शिवालय में हैं।

८७. लवेश्वराय नमः (म० नं० डी० ४५/५१ में हैं, मु० लक्सारोड)।

यहाँ से नित्य वसिष्ठेश्वर की नित्य यात्रा प्रारम्भ

लवेश्वर से उत्तर सड़क पार करते ही उत्तर जाने वाली पहली गली छोड़कर दूसरी पतली कुशेश्वर गली में हैं।

८८. कुशेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५३/३५ में हैं, मु० लक्सा रोड)। कुशेश्वर से पश्चिम रामेश्वर तीर्थ पक्का विशाल कुण्ड है।

८९. रामेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५४/४५ में हैं, मु० रामकुण्ड)।

९०. हनुमतेश्वराय नमः (म० नं० ५४/४५ में हैं, मु० रामकुण्ड)। अखाड़ा में रामेश्वर से सटा हुआ दक्षिण बगल में हैं।

९१. वसिष्ठेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५४/४५ के सामने में हैं, मु० रामकुण्ड)। वसिष्ठेश्वर से पूर्व बगल में सटे हुए मंदिर में हैं।

९२. नारदेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५४/४५ सामने में हैं, मु० रामकुण्ड लक्सा रोड)। रामकुण्ड से पूर्व विशाल महालक्ष्मी तीर्थ पक्का लक्ष्मी कुण्ड है, लक्ष्मी कुण्ड के उत्तर तट में लक्ष्मीजी हैं।

महालक्ष्मी की नित्य दर्शन यात्रा प्रारम्भ

९३. महालक्ष्मी देव्यै नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं, मु० लक्ष्मीकुण्ड)।

९४. कूणिताक्ष विनायकाय नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं, मु० लक्ष्मीकुण्ड)।

९५. महाविष्णवे नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं।

९६. करवीरेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं, मु० लक्ष्मीकुण्ड)।

९७. मण्डविनायकाय नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं)।

९८. कमला देव्यै नमः (म० नं० डी० ५२/४० में हैं, मु० लक्ष्मी कुण्ड)।

९९. शिखीचण्डी देव्यै नमः (म० नं० डी० ५२/४० में हैं)।

१००. मयूखी देव्यै नमः (म० नं० डी० ५२/४० में हैं)। उग्रेश्वर पुरुषोत्तम भगवान के मंदिर में हैं।

१०१. उग्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५२/४९ में हैं, मु० लक्ष्मीकुण्ड)।

१०२. पुरुषोत्तम विष्णवे नमः।(म० नं० डी० ५२/४१ में हैं)।

१०३. अष्टभुजा देव्यै नमः।

१०४. दक्षिण महाकाली देव्यै नमः। (मु० लक्ष्मीकुण्ड)। कालीजी से दक्षिण लक्ष्मी कुण्ड के पूर्व दक्षिण में हैं।

१०५. महालक्ष्मीश्वराय नमः (म० नं० डी० ५२/५४ में हैं)। लक्ष्मीकुण्ड से पूर्व सड़क से दशाश्वमेघ घाट। दशाश्मेधघाट होते हुए प्रयागराज घाट में शूलटङ्केश्वर के सामने गङ्गाजी में काशी का रुद्र सरोवर तीर्थ है।

१०६. रुद्र सरोवरतीर्थाय नमः। शूलटङ्केश्वर से उत्तर सटे हुए बगल के देवालयों में रुद्र सरोवरेश्वर हैं यहाँ दर्शन करके चलें।

१०७. रुद्रसरोवरेश्वराय नमः।

१०८. शूलटङ्केश्वराय नमः।

१०९. गङ्गेश्वराय नमः। (मु० प्रयागराजघाट)। गङ्गेश्वर से दक्षिण बगल में शीतला देवी जी के मंदिर में हैं। प्रयागराज घाट से गङ्गा जल साथ में लेकर चलें।

११०. सीतकेश्वराय नमः (म० नं० डी० १८/१९ में हैं।)

१११. बड़ी शीतला देव्यै नमः (म० नं० डी० १८/१९ में हैं, मु० दशाश्वमेध घाट)।

११२. दशहरेश्वराय नमः (म० नं० डी० १८/ १९ में है)। शीतला देवी के मन्दिर से ऊपर दो मंदिर हैं।

११३. मान्धातेश्वराय नमः (म० नं० डी० १८/२१ शीतला घाट)।

११४. गोव्याघ्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० १८/२१ में हैं, मु० शीतलाघाट)। प्रयाग घाट के ऊपर गङ्गा देवी जी के दर्शन करके बगल से वन्दी देवी गली में प्रवेश करते ही बायीं तरफ के शिवालय में यमुनेश्वर हैं।

११४. यमुनेश्वराय नमः।

११५. सरस्वतीश्वराय नमः (म० नं० बगल में डी० १७/१ में हैं, मु० प्रयागराज घाट)। बन्दिदेवी पूर्वाभिमुख हैं।

११६. वन्दीदेव्यै नमः (म० नं० डी० १७/१ में हैं, मु० प्रयागराज , घाट)।

११७. प्रयागेश्वराय नमः (म० नं० डी० १७/१ में हैं, मु० प्रयागराज घाट)। माघमास में और अर्धकुम्भ में, महाकुम्भ-में इलाहाबाद में जाकर गङ्गा यमुना संगम में स्नान करने से जो फल होता है, वह पुण्य काशी खण्ड में वेदव्यास जी लिखते हैं, काशी के प्रयागराजघाट में स्नान करने से दशगुना अधिक फल मिलता है। प्रयागराजघाट से पश्चिम काली जी के मंदिर के बगल में दधीचीश्वर हैं।

११८. दधीचीश्वराय नमः। (मु० कामरुमठ दशाश्वमेध में हैं) यहाँ से दक्षिण केदार जी जाने वाली गली से चौसट्टी चौमुहानी गली से पूर्व बगल में हैं।

चौषठ्ठी देवी दर्शन की नित्य यात्रा प्रारम्भ

११९. चतुष्षठी योगिनी देवीभ्यो नमः (म० नं० डी० २२/१७ में स्थित है, मु० चौषठ्ठी घाट)।

१२०. चतुष्षष्ठी गणेशाय नमः (२२/१७ में हैं)।

१२१. भद्रकाली देव्यै नमः (म० नं० डी० २२/१७ में हैं। वक्रकुण्ड विनायक बगल में हैं।

१२२. वक्रतुण्ड विनायकाय नमः (म० नं० डी० २१/ २२ में हैं, मु० चौषठ्ठीघाट) चौषठ्ठी मठ में फाटक के अन्दर दाहिनी ओर के मन्दिर में सबसे बड़ा शिव लिङ्ग है।

१२३. चतुःषष्ठीदेवीश्वराय नमः (म० नं० डी० २१/२२ में हैं, मु० चौषठ्ठी घाट) चौषठ्ठीदेवी चौमुहानी से पश्चिम बगल में पुष्पदन्तेश्वर के बगल में हैं।

१२४. पातालेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३२/१ में हैं, मु० पातालेश्वरम)।

१२५. पुष्पदन्तेश्वराय नमः (म० डी० ३२/१ में हैं, मु० पातालेश्वर, बंगाली टोला)। पुष्पदन्तेश्वर के दर्शन, पूजा करने वाले नर-नारियों को किसी भी मंदिर में चढ़ा हुआ विल्वपत्र, पुष्प इत्यादि पैर से कुचलने का

पाप नष्ट होते हैं। चूँकि सड़क या गली में पड़े हुये पुष्प जान या अन्जान में पैर के नीचे आते हैं, उन पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है।

१२६. एकदन्तविनायकाय नमः (म० न० डी० २२/१ में हैं)। पुष्पदन्तेश्वर से पश्चिम बगल में कालीजी के मन्दिर से सटे हुए पश्चिम बगल के शंकर जी के मंदिर में गरुड़ेश्वर हैं।

१२७. गरुड़ेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३१/४३ में स्थित है, मु० जंगमबाड़ी तेलियाना मुहल्ले में हैं)। यह गरुड़जी की तपोभूमि है, द्वितीय संस्करण काशी दर्शन देखिये। गरुड़ेश्वर से पूर्व तारावाणी में तारादेवी के दर्शन कर के बगल से पाण्डेय घाट के ऊपर रङ्गामाटी अन्न क्षेत्र में हैं।

१२८. सर्वेश्वराय नमः (म० नं० डी० २५/७ में हैं, मु० रङ्गामाटी अन्नक्षेत्र, पाण्डेयघाट)।

१२९. सोमेश्वराय नमः (म०नं० डी० २५/७७ में सर्वेश्वर से दक्षिण बगल के दत्तात्रेय मठ में हैं)।

१३०. नारदेश्वराय नमः (म० नं० डी० २५/१२ में स्थित हैं, मु० नारदघाट)। यह नारदजी की तपोभूमि है।

१३१. अत्रीश्वराय नमः (म० नं० डी० २५/१२ में हैं)।

१३२. अनुसूइया देव्यै नमः (म० नं० डी० २५/१२ में हैं)।

१३३. दत्तात्रेय मूर्तिभ्यो नमः (म० नं० डी० २५/१२ में हैं। नारदेश्वर से पश्चिम त्रिमुहानी में पहुँचते ही बायीं तरफ मठ के शिवालय में नर्मदेश्वर हैं।

१३४. नर्मदेश्वराय नमः (म० नं० बी० ७/१८७ में स्थित हैं, मु० मानसरोवर)। नर्मदेश्वर के दक्षिण बगल में दाहिने तरफ देवालय में विशाल शिव लिङ्ग है। इस किस्म का शिवलिङ्ग अन्य जगह नहीं है।

१३५. रघुनाथेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/८५ में हैं, मु० मानसरोवर घाट)।

१३६. एकादश रुद्रेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/८५ में हैं, मु० मानसरोवर)। रघुनाथेश्वर से दक्षिण बगल में मानसरोवरतीर्थ है।

१३७. मानसरोवर तीर्थाय नमः। पहले विशाल पक्का कुण्ड था। नीचे स्रोत है। जल ठण्डा मीठा है। मार्जन करके दर्शन करें और जल पीकर चलें।

१३८. कैलासेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/९२ में स्थित हैं, मु० मानसरोवर)। आन्ध्रा मठ (आश्रम) में कैलासेश्वर से दक्षिण बगल के आदि शंकराचार्य मठ में आदि शंकराचार्य जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है, दर्शन करें। आदि शंकराचार्य के मठ में पूर्व-उत्तर के कोने के शिवालय में क्षेमेश्वर हैं।

१३९. क्षेमेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/११ में हैं, मु० आदि शंकराचार्य मठ, मानसरोवर) क्षेमेश्वर से दक्षिण गली के दाहिने तरफ ऊपर छोटे कुमार स्वामी के मठ में चित्राङ्गदेश्वरी देवी उत्तराभिमुख हैं।

१४०. चित्राङ्गदेश्वरी देव्यै नमः (म० नं० बी १४/११ में हैं, मु० चौकीघाट)।

१४१. चित्राङ्गदेवेश्वराय नमः (म० नं० बी १४/११ में हैं)। चित्राङ्गदेवेश्वर से दक्षिण बगल के बाल हनुमान जी के मंदिर में हैं।

१४२. रुक्माङ्गदेवेश्वराय नमः (म० नं० बी० १४/१ में स्थित है, मु० चौकाघाट)।

१४३. अंबरीषेश्वराय नमः (म० नं० १४/१ में हैं)। चौकीघाट से दक्षिण बगल में गली के दाहिने तरफ ऊपर के शिवमन्दिर में ओंकारेश्वर हैं।

१४४. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ७/८३ में स्थित हैं, मु० केदारघाट)। केदारेश्वर के पश्चिम फाटक से सटे हुए शिवालय में तारकेश्वर हैं।

१४५. तारकेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१२ में हैं)।

१४६. केदारेश्वराय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में हैं)। केदारेश्वर के दर्शन पूजा करके प्रणाम करते हैं, यात्री अपने-अपने मनोरथ पूर्ति के लिये केदारेश्वर से प्रार्थना करते हैं। केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा करने के पश्चात् जो यात्री प्रार्थना करते हैं, उनकी मनोकामना पूर्ण होती है।

केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा पूर्ण हुई। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को सीधा यथा शक्ति दक्षिणा देकर साधु, संन्यासियों को फल मिष्टान्न आदि जलपान देकर केदार अन्तर्गृही यात्रा का स्मरण करते हुए, यात्री अपने-अपने घर जाते हैं। दूसरे दिन कोई-कोई उपनिषद्, गीता पाठ करवाते हैं, यात्री ३ घण्टा के कीर्तन करते हैं, अखण्ड कीर्तन भी कराते हैं। रामायण के सुन्दरकाण्ड का पाठ करते हैं, कोई कोई यात्री अखण्ड रामायण पाठ कराते हैं, शिवपूजा करके साधु, ब्राह्मण को यथा शक्ति भोजन कराते हैं। इस जन्म और जन्मान्तर के पापों के प्रायश्चित्त के लिए ग्यारह बार केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा करनी चाहिए।

काशी दर्शन द्वितीय संस्करण में केदारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा का प्रमाण, प्रत्येक मन्दिर के दर्शनपूजन माहात्म्य और इतिहास लिखा गया है।

हरिःओं तत्सत् शिवार्पणमस्तु।

काशी में आज्ञा दर्शन यात्रा

आज्ञा दर्शन यात्रा का वर्णन कई पुराणों में प्राप्त है, पुस्तक के कलेवर बढ़ने के भय से यहाँ इतना ही लिखा जा रहा है।

"पूर्वस्मिन्दिवसे ढुण्ढिम्पूजयित्वा हविष्यभुक्।"
प्रातरुत्तरवाहिन्यां स्नात्वा विश्वेशमर्चयेत्।
पुनर्यात्रार्थमपि च शिवयोः पूजनम् भवेत्।।८।।

(काशी रहस्य अ० १०)

१. अविमुक्तेश्वराय नमः (मकान नं० सी० के० ३५/३१ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली)। अविमुक्तेश्वर अपने दर्शन, पूजन, उपासना करने वाले भक्तों को पापों से मुक्त कर देते हैं, काशी वास करने के लिये अविमुक्तेश्वर से आज्ञा लेनी चाहिए।

२. साक्षीविनायकाय नमः (मकान नं० डी० ७/४० में हैं, मु० साक्षीविनायक)। साक्षीविनायक के अर्चना आराधना करने वाले भक्त कहीं भी रहे वह संकट में नहीं पड़ता और उस भक्त को ये सब प्रकार से सुखी रखते हैं। साक्षी विनायक काशी में चित्रगुप्त जी का कार्य करते हैं। काशी में मरने वाले मनुष्यों के पाप, पुण्य सब साक्षी विनायक लिखते हैं। पाप, पुण्य दोनों के बही खाता रखते हैं। काशी वासी की मृत्यु होने के पश्चात् कालभैरव साक्षी विनायक जी से पूछते हैं, इस मृतक का पाप क्या-क्या है? साक्षी विनायक काल भैरव से हाथ जोड़कर प्रार्थना करके पाप और भैरवी यातना से जीव को मुक्त कर देते हैं। निर्विघ्न काशीवास करने के लिये साक्षी विनायक से प्रार्थना करें।

३. दण्डपाणिभ्यो नमः (मकान, नं० सी० के० ३६/११, मुहल्ला ढुण्ढिराज गली)। दण्डपाणि जी को शास्त्रविधि से काशी खण्ड के ३२ अ० में विश्वनाथ जी स्वयं दण्डपाणि जी को वरदान दे रहे हैं कि काशी वास करने वाले नर-नारियों को अन्न, वस्त्र, भोजन एवं आवास आदि की व्यवस्था करें। उन काशी वास करने वाले को सत्कर्म कराओ, उनको भक्ति दो,

ज्ञान दो और ज्ञान का साधन दो, सज्जन विद्वानों का सङ्ग कराओ। उनको सत्सङ्ग दो तथा मेरा निरन्तर स्मरण कराओ। काशी वास करने वाले मैरे भक्तों को कष्ट देने वाले दुष्टों को डण्डामार कर उस पापी के अभिमान को चूर्ण करो। काशी वास करने वाले मैरे भक्तों को सदा तुम रक्षा करो, मैरे भक्तों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। विश्वनाथ जी दण्डपाणि जी से कर रहे हैं।

४. काल भैरवाय नमः (मकान नं० सी० के० ३२/२, मुहल्ला कालभैरव)। कालभैरव अपने दर्शन, पूजन, उपासना (मन्त्र का अनुष्ठान) आदि करने वाले भक्तों को छः महीने में सिद्धि देते हैं और काशी वास करने वाले शंकर जी के भक्तों को कष्ट देने वाले को एवं काशी में पाप कर्म करने वाले मनुष्यों को काशी के सीमा से बाहर निकाल देते हैं। यदि उस पापी के पुण्य बहुत अधिक हो जिससे उस व्यक्ति को (डण्डा से मारकर) धन, जन की हानि कराकर पाप कर्म से छुड़ाकर उसको काशी में रखते हैं। काल भैरव काशी के महामन्त्री-प्रधानमन्त्री हैं, काल भैरव काशी की हर प्रकार से रक्षा करते हैं। एक विशेषता यह है कि शंकर जी ने काल भैरव को वरदान दिया है कि काशी से बाहर से जो रोगी काशी में आकर तथा काशी में जो रोग लगा हो वह सब तुम्हारे दर्शन करते ही रोग शान्त होंगे और तुम्हारे दर्शन करने के पश्चात् मनुष्यों की पाप कर्म करने की बुद्धि ही समाप्त होगी। वरदान देकर शंकर जी अन्तर्ध्यान हो गये।

विन्दुमाधव जी का दूसरा नाम वेणीमाधव है। विन्दुमाधव-विष्णु भगवान काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास कर रहे हैं। स्कन्द पुराण में विन्दु माधव विष्णु स्वयं शंकर जी से कहते हैं, मैं काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास कर रहा हूँ अब मैं वैकुण्ठ नहीं जाऊँगा। काशी खण्ड में विन्दुमाधव स्वयं कह रहे हैं, मैं काशी में आ गया हूँ। काशीवास करके शिव जी का भजन करूँगा अब मैं लौटकर वैकुण्ठ नहीं जाऊँगा कहते हैं।

५. विन्दुमाधव विष्णु भगवानाय नमः। (मकान नं० के० २२/३३, मु० पञ्चगङ्गा)। विन्दुमाधव अपने दर्शन- पूजन- आराधना करने वाले भक्तों को शंकर जी की अनन्य भक्ति देते हैं। शंकर भगवान विन्दुमाधव विष्णु जी से कहते हैं, आप काशी में रहें और काशीवासियों का पालन, पोषण करें तथा काशीवासियों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। बिन्दुमाधव विष्णु अपने भक्तों को शिव और विष्णु की भक्ति देते हैं।

६. भवानी अन्नपूर्णादिव्यै नमः (मकान नं० डी० ९/१७, मु० अन्नपूर्णागली)।

प्रार्थना

हे अन्नपूर्णा माँ! मैं पापों का प्रायश्चित्त करने के लिये, सुख-शान्ति प्राप्त करने के निमित्त एवं अपने कुल के उद्धार के लिये तथा पितरों के मोक्ष दिलाने के हेतु से मैं काशीवास करना चाहता हूँ। हे माँ अन्नपूर्णे! मुझे काशीवास करने के लिये आज्ञा दीजिये।

७. विश्वनाथाय नमः (मकान, नं० सी० के० ३५/१९, मु० विश्वनाथ गली)। हे जगत्गुरु विश्वनाथ जी, अनाथों के नाथ, काशी विश्वनाथ जी हमें काशीवास करने के लिये आज्ञा दीजिये। आज्ञा यात्रा पूर्ण हुई।

विश्वनाथ नित्य दर्शन-यात्रा

किसी भी दिन या प्रति दिन गङ्गाजी में मणिकर्णिकाघाट पर स्नान करके शुद्ध धोया हुआ वस्त्र पहनकर त्रिपुण्ड या टीका धारण कर यात्रा करनी चाहिए।

त्रिपुण्ड्रं मस्तके धृत्वावर्तुलं रक्तचन्दनम्।
निधने याति बैकुण्ठं मुक्तों भवति वैजनः॥

अर्थ - जो मनुष्य मस्तक में त्रिपुण्ड लगाते हैं और त्रिपुण्ड के बीच में रक्त चन्दन लगाते हैं वे व्यक्ति मरने पर जन्म-मृत्यु से मुक्त होकर बैकुण्ठ में जाते हैं।

नबन्ध्यं दिवसं कुर्याद् विना यात्रां क्वचित्कृती।
दृश्यो विश्वेश्वरो नित्यं स्नातव्या मणिकर्णिका।।

(काशीखण्ड अ० १००)

अर्थ- हे भवानी काशीवास करने वाले पुण्यवान मनुष्य नित्य मणिकर्णिका (या किसी भी) घाट में स्नान कर और विश्वनाथ दर्शन किये बिना कोई भी दिन व्यर्थ न जाने दें।

यात्रा द्वयं प्रयत्नेन कर्तव्यं प्रतिवासरम्।

अर्थ- शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे पार्वती जो नर-नारी प्रतिदिन प्रयत्न पूर्वक दोनों यात्रा करते हैं– पहली यात्रा गङ्गा दर्शन और स्नान, दूसरी भगवान काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करते हैं। विश्वनाथ जी कहते हैं कि उनको मैं सुख पूर्वक काशीवास कराता हूँ। और अन्त में उनको मैं मुक्ति देता हूँ।

मणिकर्णिका घाट में स्नान करके गङ्गाजल, पुष्प, अक्षत, पैसा, लायचीदाना, ऋतुफल, धूप, दीप और नैवेद्य, मिष्टान्न, वस्त्र आदि साथ में लेकर 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे' कीर्तन करते हुए धीरे-धीरे काशी विश्वनाथ आदि का दर्शन करने जाते हैं, ज्ञानवापी तीर्थ में मार्जन और आचमन करते हैं उनका सर्व प्रकार से कल्याण होता है। किञ्चित् अन्न-पैसा दान देने के पश्चात् मन्दिरों का दर्शन प्रारम्भ करें।

विश्वनाथ नित्य दर्शन यात्रा के मध्य पड़ने वाले मन्दिरों के देवताओं का दर्शन अनिवार्य रूप से करना चाहिए। विश्वनाथ जी से दूर रहने वाले भक्तों को प्रत्येक सोमवार के दिन जाकर विश्वनाथ नित्य यात्रा करने के पश्चात् विश्वनाथ भगवान् का दर्शन करना चाहिए। चूँकि इनके दर्शन करने वाले नर-नारियों को विघ्न, कष्ट, दरिद्रता कभी भी नहीं आती तथा इन देवताओं के दर्शन करने से आवास, भोजन एवं सत्सङ्ग और सज्जन, साधु, सन्त-महात्माओं का दर्शन स्वतः प्राप्त होता है। काशी के विषय में वर्णन करने वाले सद्ग्रन्थों का और काशी माहात्म्य, काशी मोक्षनिर्णय,

काशी दर्शन एवं काशी रहस्य, काशी की महिमा, वेदान्त, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र आदि शङ्कराचार्य की पुस्तकों का अध्ययन, काशी खण्ड, शिवरहस्य, शिवपुराण और लिङ्गपुराण, गीता, भागवत्, रामायण आदि का श्रवण करना चाहिए।

पहले प्रमुख देवताओं का वर्णन करते हैं, द्रौपदादित्य, अन्नपूर्णा भवानी एवं ढुण्ढिराज, साक्षीविनायक, एक्षविनायक, मोक्षेश्वर, दण्डपाणि, तारकेश्वर का दर्शन करके विश्वनाथ जी का दर्शन करने वाले नर-नारियों के सब कार्य सिद्ध होते हैं। अब विश्वनाथ नित्य यात्रा के देव मन्दिरों का वर्णन करता हूँ। जिसमें मन्दिर के दर्शन यात्रा करने से काशीवास में विघ्न, दरिद्रता, कष्ट और रोग नहीं होता उन मंदिरों का मैं वर्णन करने जा रहा हूँ।

१. ज्ञानवापी ईशान तीर्थाय नमः।

२. तारकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७ में हैं, मु० ज्ञानवापी तारकेश्वर मन्दिर)।

३. वीरभद्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१० में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)।

४. शनिश्चरेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१० में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)।

५. द्रौपदादित्य सूर्याय नमः (म० नं० डी० ८/१० में हैं, मु० अन्नपूर्णागली, सूर्य, हनुमान् जी के बगल में हैं)।

६. शुक्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/१० में हैं, मु० कालिकागली)।

७. यन्त्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/१७ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)।

८. कुवेरेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१७ में हैं)।

९. गणनाथाय नमः (म०नं० डी० ९/१७ में हैं)।

१०. महाविष्णुभगवानाय नमः (म० नं० डी० ९/१७ में हैं)।

११. महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यै नमः (म० नं० डी० ९/१७ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)। अन्नपूर्णा माता जी अपने दर्शन-पूजन एवं उपासना

करने वाले भक्तों को धन, ऐश्वर्य और पुत्र-पौत्र आदि सन्तान देती हैं, अन्त में भक्तों को मोक्ष की भिक्षा विश्वनाथ जी से कहकर दिला देती हैं।

१२. भवानी गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० ३/३८ में हैं)। अन्नपूर्णागली के राम मन्दिर में अनेक मूर्तियाँ विराजमान हैं, सब का दर्शन, पूजन करें। भवानी गौरी जी के दर्शन, पूजन उपासना करने वाले सभी नर-नारियों को भोग्य पदार्थ देकर सुखी बनाती हैं। १३. शिवरात्रेश्वराय नमः।

१४. सावित्री देव्यै नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)।

१५. द्वारविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में हैं)।

१६. नकुलेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में हैं)।

१७. ढुण्ढिराजाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में हैं)।

१८. एक्षविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३७/१८ में हैं, मु० ढुंण्ढिराज के पश्चिम बगल में कोतवालपुरा)।

१९. साक्षी विनायकाय नमः (म० नं० डी० ७/४० में हैं, मु० साक्षी विनायक।)।

२०. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० सी० के०, २७/१३ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली।)। २१. चतुर्वेदेश्वराय नमः। २२. सतीदेव्यै नमः।

२३. गणेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३७/९ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली)।

२४. महेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१२ में हैं)।

२४. अविमुक्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३१ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली।)। अविमुक्तेश्वर के दर्शन, पूजन और उपासना करने वाले नर-नारियों के घर-परिवार के दुःख, रोग एवं विघ्न दूर होते हैं।

२५. राजराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३३ में हैं, मु०

ढुण्ढिराज गली।)

२६. परद्रव्येश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३४ में हैं)।

२७. प्रतिकेहेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४ में हैं)।

२८. निश्कलङ्केश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४ में हैं)।

२९. मार्कण्डेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४ में हैं)।

३०. दण्डपाणिभ्यौ नमः (म० नं० सी० के० मु० ढुण्ढिराज गली।) आदि विश्वनाथ जी को भवानी शंकर जी का मंन्दिर कहते हैं। आदि विश्वनाथ जी के मंन्दिर से सटे हुए पश्चिम दक्षिण कोने मंन्दिर में मार्कण्डेश्वर हैं। मार्कण्डेश्वर के पुत्र प्राप्ति की कामना से सतरुद्री, सतचण्डी और मार्कण्डेय पुराण सुनने से बुद्धिमान, धनवान, भाग्यवान और भगवान का भक्त पुत्र उत्पन्न होता है।

३१. भवानीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३६/१० में हैं, मु० बाँसफाटकं)। ३२. पञ्चपाण्डवेश्वराय नमः। ३३. अप्सरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३०/१ में हैं, मु० ज्ञानवापी।) ३४. गङ्गेश्वराय नमः (मु० ज्ञानवापी।) ३५. तारकेश्वराय नमः। ३६. महाकालेश्वराय नमः। ३७. नन्दी केश्वराय नमः। ३८. महेश्वराय नमः। ३९. लक्ष्मी नारायणाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७ में हैं, मु० ज्ञानवापी, तारकेश्वर मंदिर।) ४०. ज्ञानमण्डपाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली।) विश्वनाथ जी के सभा में जो शिवलिङ्ग विराजमान हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं—

४१. वेदेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४२. वेदान्तेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४३. उपनिषदेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४४. पुराणेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४५. श्रुतिस्मृतीश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४६. गीतेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४७. व्याकरणेश्वराय नमः (म० नं० ३५/२१ में हैं।) ४८. न्यायेश्वराय

नमः। ४९. मीमांसेश्वराय नमः। ५०. वर्णाश्रमेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में हैं।) ५१. सनातनधर्मेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में हैं।) ५२. वैदिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में हैं।) ५३. पञ्चविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२१ में हैं।) ५४. कालराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं।) ५५. स्कन्देश्वराय नमः (कार्त्तिकेय जी की मूर्ति पूर्वाभिमुख है।) ५६. वैकुण्ठेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं)। ५७. विश्वनाथाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में है, मु० अन्नपूर्णा गली)। विश्वनाथ नित्य यात्रा करने वाले नर-नारियों के मन, वाणी और शरीर से होने वाले पापों का प्रायश्चित्त होता है और काशीवास में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता, आवास, भोजन, वस्त्र आदि सब विश्वनाथ भगवान की कृपा से स्वतः प्राप्त होता है। विश्वनाथ शङ्कर भगवान के भक्त श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर अपना जीवन बनाने के लिए, पितरों का उद्धार करने के लिए और इस नश्वर परिवर्तनशील जगत् में क्षणभङ्गुर मलभूत्र से भरा हुआ शरीर जन्म-मृत्यु रूप चक्कर से छूटने के लिए विश्वराष्ट्र से काशी में आकर काशीवास करते हैं, काशी में संन्यास लेकर जीवन पर्यन्त काशीवास करते हैं। क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले नर-नारियों के आगे पीछे शिवजी के गण, क्षेत्र संन्यासी की अङ्गरक्षा करते हैं। काशी क्षेत्र में काशीवास करने वाले नर-नारियों को आवास, भोजन आदि की व्यवस्था अन्नपूर्णा जी करती हैं, इसलिए प्रयत्न पूर्वक ४० वर्ष की अवस्था हो जाने के पश्चात् श्रद्धा, भक्ति से युक्त होकर विश्वास करके पति-पत्नी सहित अपने खाने के लिए, दीन-दुखियों को देने के लिए और प्रतिदिन दान करने के लिए अपने पास रखकर एवं शेष सम्पत्ति पुत्र को सौंपकर काशीवास करने के लिए काशी में जाना चाहिए। जिसके पास कुछ भी नहीं है। वे मनुष्य भी काशी में जा कर वास करें।

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवा प्रति प्रतिज्ञा द्वयम्।

जीवतोऽन्नं ददासित्वं मुक्तिं ददाम्यहम्।।

अर्थ - शंकर जी ने अपने मानसिक सङ्कल्प से काशी को उत्पन्न किया। उसी समय भवानी अन्नपूर्णाजी से कहते हैं कि हे अन्नपूर्णे तुम सभी काशी वासियों को भोजन दो, आवास दो, भक्ति और ज्ञान प्रदान करो, किसी भी काशी वासी को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न हो। हे अन्नपूर्णे मैं मृत्यु के समय में सभी काशी वासियों को मुक्ति प्रदान करूँगा।

बाहर से केवल काशीवास करने के लिए काशी में आये हुए स्त्री, पुरुषों को जो व्यक्ति आवास देता है या दिलाता है उनका हर सम्भव सहयोग करता है और कराता है। ऐसा मनुष्य दूसरे जन्म में रङ्क से राजा हो जाता है एवं अज्ञानी से ज्ञानी हो जांता है। परोपकारी व्यक्ति सदा सुखी और मस्त रहता है। चूँकि हमारे सनातन वैदिक धर्मशास्त्रों में लिखा है कि काशी वासियों को सहयोग देने वाले भक्तों के प्रति दण्डपाणि, सुभ्रम, विभ्रम, भैरव, अन्नपूर्णा और बाबा विश्वनाथ जी प्रसन्न होते हैं। इसलिए वह व्यक्ति काशी में स्वर्ग का सुख प्राप्त करता है और अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है, तथा जन्म एवं मृत्यु के चक्कर से छूट जाता है। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि निष्काम सेवा करने वाला मन, वाणी से सबका [illegible]ने वाला परोपकारी सदा सुखी और जीवन मुक्त माना जाता है।

जो नर-नारी प्रतिदिन निष्काम सेवा और परोपकार करते हैं और प्रतिदिन दूसरों को जलपान और भोजन कराकर भोजन करते हैं, प्रतिदिन मन से परोपकार की भावना रखते हैं तथा दीन, दुःखी दरिद्र के प्रति दया रखते हैं। वे मनुष्य धन्य हैं और उनका ही संसार में जन्म लेना सफल है। प्यासे को जल, भूखे को भोजन, नङ्गे को वस्त्र और रोगी को दवा देना, सत् का दान है अतः प्रयत्न पूर्वक देना चाहिए। भगवान का दिया हुआ यह नश्वर शरीर, स्त्री, पुत्र, परिवार और धन सब भगवान का है। तुम क्या लेकर आये थे और क्या लेकर जाओगे। भगवान की वस्तु परोपकार

में लगा दो और दान करो। सत् कर्म करते हुए जीयो, अन्नक्षेत्र खोलो, सड़क पर पड़े हुए रोगियों को अस्पताल में भर्ती करो और उनकी सेवा करो, जन्म-जन्मान्तर तक आपके शरीर में रोग नहीं आ सकता। नीरोग बने रहना चाहते हो तो परोपकार करो और सत्पात्र को दान करो, जो व्यक्ति धनी लखपति, करोड़पति और राजा होकर भी परोपकार में धन नहीं लगाता और यथा शक्ति दान नहीं करता तथा तीर्थों में जगह-जगह अन्नक्षेत्र नहीं खोलता है वह व्यक्ति अगले जन्म में महारोगी, अंगहीन और विद्याहीन होकर उत्पन्न होते हैं, वैद्य, डाक्टर उस को पौष्टिक को पदार्थ खाने से मना करते हैं और इस अवस्था में घर वाले भी ध्यान नहीं देते हैं। रुपये-पैसे और पौष्टिक पदार्थ के लिए तरसता रहता है। कहता है आँ मेरा जीवन व्यर्थ है, मैं पूर्व जन्म का पापी हूँ मैंने क्या पाप किया है। हाय कष्ट, हाय कष्ट करते हुए जीवन व्यतीत करता है। इस नश्वर संसार में कौन किसका है, अपने जन्म-जन्मान्तर का पुण्य शुभ कर्म और अपना अच्छा व्यवहार सदा साथ में रहकर सदा सुख देता है। अतिथि की सेवा इस प्रकार करनी चाहिए। कभी-कभी अतिथि के रूप में सन्त और भगवान आपके घर में आते हैं। अपरिचित अतिथि आते ही प्रेम से बैठाइये, जल पिलाइये उनके कार्य पर ध्यान दीजिये, सेवा करें। कभी-कभी भगवान आपकी परीक्षा लेने आते हैं।

नोटः गुरुजी आप बार-बार दान करना चाहिये कहते हैं? उत्तर- प्यारे शिष्य! मैं नहीं कहता हूँ, हमारे वेद, पुराण, उपनिषद् एवं धर्म शास्त्र कहते हैं। दान करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं, और दान देने वाला व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर तक करोड़पति के घर में उत्पन्न होता है, उनके पुत्र-पौत्र को ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। प्यारे शिष्य भगवान के चार हाथ हैं, भगवान चार हाथ से देते हैं। तुम दो हाथ से दान करो, तुम्हारे घर में कभी भी कमी नहीं होगी। तुम परोपकार, निष्काम सेवा तथा दीन दुःखियों पर दया करो।

प्यारे शिष्य! तुम मुट्ठी बाँधकर आये हो हाथ फैला कर जाओगे। तुमको यहीं सब कुछ मिले हैं, यहीं छोड़कर जाओगे। प्यारे तुमको जो गरीब मिल रहे हैं, देख रहे हो उन्होंने पूर्व जन्म में दान नहीं किया इस जन्म में भी दान नहीं कर रहे हैं।

विश्वनाथ जी का नित्य दर्शन यात्रा पूर्ण हुई।

विश्वराष्ट्र के दर्शनार्थी-यात्री काशी में आते हैं और मणिकर्णिका या दशाश्वमेध में स्नान करके संध्या पितृतर्पण और पिण्डदान करते हैं। पितरों के उद्धार के लिए तथा पितरों की प्रसन्नता के लिए और अपने कल्याण के लिए वे यात्री यथा शक्ति दान करते हैं और साधु, सन्त, संन्यासी एवं ब्राह्मणों को भोजन, यथाशक्ति दान करते हैं और साधु, सन्त, संन्यासी एवं ब्राह्मणों को भोजन यथाशक्ति कराते हैं। हमारी काशी विश्व के सभी तीर्थों से न्यारी है। विश्व के तीर्थों में स्नान करने से जो फल मिलता है उससे हजार गुणा ज्यादा काशी के तीर्थों में स्नान करने से फल मिलता है। वे भक्त जो विश्वनाथ जी से दूर रहते हैं। वे सोमवार, प्रदोष तथा शिवरात्रि के दिन दर्शन यात्रा करते हैं। जो भक्त चलने में असमर्थ हैं वे घर के पास में जो शिव मंदिर हो उनका दर्शन-पूजन करें। प्रत्येक घर के उत्तर पूर्व के कोने के कमरा (कोठा, कोठरी) में पूजा के लिए मंदिर के रूप में सजाकर रखें और नर्मदेश्वर को प्रत्येक घर में रखकर पूजा करें तथा पार्थिव शिवलिङ्ग बनाकर पूजा करने से परिवार सुखी और परिवार की वृद्धि होती हैं तथा धन, सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

ज्ञानवापी में रुद्र और महारुद्र सतचण्डी एवं रामायण, गायत्री आदि अनेक यज्ञ और कथा, वेद, उपनिषद् एवं पुराण पाठ होते हैं।

स्नात्वा मुमुक्षुमणिकर्णिकायामृडानि गङ्गा हृदयेत्व दास्ये।
विश्वेश्वरं पश्यति योऽपि कोऽपिशिवत्वमायाति पुनर्जन्म ॥

अर्थ - विश्वनाथ जी कहते हैं हे पार्वती जो कोई मुमुक्षु मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य मणिकर्णिका घाट में स्नान करके गंगा जी का,

तुम्हारा तथा मेरा जो भक्त दर्शन करते हैं वे भक्त शिवत्व को प्राप्त करते हैं और पुनः उनका जन्म नहीं होता है।

दृश्यो विश्वेश्वरो नित्यं स्नातव्यामणिकर्णिकाम्।।१०५

अर्थ- हे भवानी काशीवास करने वाले सभी पुण्यवान प्राणी नित्य दर्शन किये बिना कोई भी दिन व्यर्थ न जाने दें। प्रतिदिन मणिकर्णिका घाट में स्नान करके विश्वनाथ आदि का दर्शन करें।

विश्वनाथ-अन्तर्गृही यात्रा माहात्म्य

गोकर्णेशः पश्चिमे पूर्वतश्च गङ्गामध्यमुत्तरे भारभूतः।
ब्रह्मेशानो दक्षिणे सम्प्रदिष्टस्तत्तु प्रोक्तं भवनं विश्वभर्त्तुः।।

(पद्म पुराण)

अर्थ - गङ्गा जी के पश्चिम में गोकर्णेश्वर तक, पूर्व में गङ्गा जी तक उत्तर में भारभूतेश्वर महादेव तक, दक्षिण में ब्रह्मेश्वर तक विश्वभर्त्ता श्री विश्वनाथ जी का भवन कहा गया है। इसी के अन्तर्गत विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा है।

अन्तर्गृहस्य यात्रां वै कर्तव्या प्रतिवासरम्।
प्रातः स्नानं विधायाऽऽदौ नत्वा पञ्चविनायकान्।
नमस्कृत्वाऽथ विश्वेशं स्थित्वा निर्वाणमण्डपे।।७७।।

(काशी खण्ड अ० १००)

अर्थ - प्रातः स्नान कर पञ्च विनायकों को तथा विश्वेश्वर को नमस्कार कर विश्वनाथ जी एवं मुक्ति मण्डप में बैठ कर संकल्प लें।

एषा यात्रा प्रयत्नेन कर्तव्या क्षेत्रवासिनाम्।।४७।।
यस्तु क्षेत्रमुषित्वा तु नैतां यात्रां समाचरेत्।
विघ्नास्तस्योपतिष्ठन्ते क्षेत्रोच्चाटन सूचकाः।।४८।।

(का० खं० अ० १००)

अर्थ - व्यास जी सूत जी से कहते हैं कि काशी वासियों को प्रयास

करके यह विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा करनी चाहिये। चूँकि जो काशी क्षेत्र में रहकर इस यात्रा को नहीं करता है, तो क्षेत्र से उच्चाटन करने वाले अनेक विघ्न उसके पास उपस्थित होते हैं अर्थात् काशीवास में विघ्न आता है।

दृश्यान्तेतानि लिङ्गानि महापापोपशान्तये।
अपरापि शुभायात्रा योगक्षेमकरी सदा।
सर्वविघ्नोपहन्त्री च कर्तव्या क्षेत्रवासिभिः ।।५१।।

(का० खं० अ० १००)

अर्थ - व्यास जी सूत जी से बोले– महापापों के शान्ति के लिये इन शिवलिङ्गों का दर्शन आवश्यक है। काशी वासियों को क्षेत्र में योग प्रदान करने वाली तथा सभी विघ्नों के विनाशिनी अन्य यात्रा भी करनी चाहिये।

इमां यात्रांनरः कृत्वा क्षेत्रेस्मिन्मुक्तिजन्मनि।
न दुःखैरभिभूयेत इहामुत्रापि कुत्रचित् ।।७२।।

(का० खं० ० १००)

अर्थ - मुक्ति के जन्म स्थान काशी क्षेत्र में यात्रा करने से इस लोक तथा परलोक में मनुष्य दुःखों से पीड़ित नहीं होता है।

पूर्वतो मणिकर्णीशो ब्रह्मेशो दक्षिणेस्थितः।
पश्चिमेचैव गोकर्णोभारभूततस्तथोत्तरे ।।४५।।

(काशी खण्ड अ० ७४)

अर्थ - पूर्व में मणिकर्णेश्वर, दक्षिण में ब्रह्मेश्वर, पश्चिम में गोकर्णेश्वर तथा उत्तर में भारभूतेश्वर स्थित हैं। यह विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा काशी में अपने पापों की शान्ति के लिए प्रयत्न पूर्व अन्तर्गृही यात्रा करनी चाहिए।

अविपन्नस्तु काश्यां वै साक्षात्सान्निध्यमाप्नुयात्।
अन्तर्गृहे विपन्नस्तु साक्षात्कैवल्यमाप्नुयात् ।।

अर्थ - काशी में असमृद्ध व्यक्ति साक्षात् सान्निध्य मुक्ति पाता है, और

अन्तर्गृह में विपन्न व्यक्ति कैवल्य मुक्ति प्राप्त करता है।
प्रदक्षिणी कृत्य राजसूयफलं लभेत्।।४७।।
यावज्जीवं वसेत् काश्यां प्रत्यब्दं सुप्रदक्षिणाम्।

अब मैं काशी विश्वनाथ खण्ड का वर्णन सूक्ष्मरूप से करता हूँ। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर केदार अन्तर्गृही यात्रा में लिखे हुए पूजा की सामग्री को साथ में लेकर चलें।

काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही प्रदक्षिणा यात्रा

प्रत्येक सोमवार त्रयोदशी तिथि प्रदोष के दिन विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा करनी चाहिए, विश्वनाथ नित्य यात्रा करने के पश्चात्।

१. पञ्च विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२४ में हैं।)

२. श्री विश्वनाथाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में विश्वनाथ जी स्थित हैं)। हे विश्वनाथ जी मैं ग्रहों की शान्ति के लिये दुःख, दरिद्रता एवं संकट को दूर करने के लिये, पितरों के उद्धार और मुक्ति दिलाने के लिये तथा पितरों को प्रसन्न करने के लिए, मैं विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा करना चाहता हूँ, आज्ञा दें। ज्ञानवापी से संकल्प लेकर ब्राह्मण को सीधा किञ्चित् दक्षिणा देकर मणिकर्णिका घाट में जाकर स्नान या मार्जन करके मौन व्रत को छोड़कर त्रिपुण्ड रुद्राक्ष की माला आदि धारण करके शिव-शिव नाम महामन्त्र जपते हुये। हर-हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गङ्गे। कीर्तन करते हुये पंक्तिबद्ध होकर यात्रा पर चलते हैं।

३. ज्ञानवापी तीर्थाय नमः। ४. मणिकर्णिकातीर्थाय नमः। ५. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१२ में स्थित हैं, अभयानन्द मठ, गढ़वासीटोला)। मणिकर्णिकेश्वर से सटे हुये एक मकान छोड़कर उत्तर बगल में है।

६. कमलेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१४ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)। ७. श्वेताश्वतरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१४ में हैं।)

यहाँ से उत्तर पूर्व में सिन्धिया घाट के ऊपर में हैं।

८. वासुकीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१५ में हैं, मु० सिन्धियाघाट)। ९. पर्वतेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१५ में हैं, मु० सिंधियाघाट)। सिन्धियाघाट से दक्षिण ललिताघाट के ऊपर नेपाली पशुपतिनाथ मन्दिर के नीचे है। बर्षात में श्मशान के दक्षिण ऊपर से विश्वनाथ पुस्तकालय राजराजेश्वरी मठ होते हुए गङ्गा केशव मंदिर में जाते हैं।

१०. गङ्गाकेशवाय नमः (म० नं० डी० १/६६ में हैं, मु० ललिता घाट)।

११. ललिता गौरीदेव्यै नमः (म० नं० डी० १/६६ में हैं, मु० ललिता घाट)। १२. जरासन्धेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५/१०० में हैं, मु० त्रिपुरा भैरवी)। १३. सोमनाथेश्वराय नमः (म० नं० डी० १६/३४ में स्थित हैं, मु० मान मन्दिरघाट)। गङ्गा देव्यै नमः (म० नं० डी० १७/२३ में हैं, मु० दशाश्वमेधघाट)। दशाश्वमेधघाट में जाकर गङ्गा जल साथ में लेकर शूलटंकेश्वर के दर्शन करके ऊपर में राम मंदिर से सटे हुए पश्चिम बगल में वाराहेश्वर हैं।

१४. वाराहेश्वराय नमः (म० नं० डी० १७/१११ में हैं, मु० प्रयागराज घाट)। वाराहेश्वर से दक्षिण केदारजी जाने वाली गली से प्रथम त्रिमुहानी से पश्चिम ब्रह्मेश्वर गली में चौगली से उत्तर बगल में सिंहतुण्ड विनायक के बगल में हैं।

१५. ब्रह्मेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३३/६७ में हैं, मु० खालिसपुरा)। ब्रह्मेश्वर से पश्चिम कालिका गली से आगे उत्तर की गली में अगस्तीश्वर हैं।

१६. अगस्तीश्वराय नमः (म० नं० डी० ३६/११ में स्थित हैं, मु० अगस्त कुण्डा)। लोपामुन्द्रा देव्यै नमः (म० नं० ३६/११ में हैं)। १७. कार्तिकिश्वराय नमः (म० नं० ३६/११ में हैं।)

अगस्तकुण्डा से दक्षिण की गली से जंगमबाड़ी सड़क से जंगमबाड़ी

मठ के अन्दर जंगमेश्वर ज्योतीश्वर के दर्शन करके चलें। जंगम बाड़ी मठ के गेट से सटे हुए उत्तर बगल के अङ्गिरेश्वर के बगल में कश्यपेश्वर हैं। १८. कश्यपेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३५/१२ में हैं, मु० जंगमबाड़ी)। जंगमबाड़ी से पश्चिम खारी कुँआ विमलादित्य सूर्य के बगल में हरिकेशेश्वर हैं।

१९. हरिकेशेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३५/२७३ में हैं, मु० खारी कुँआ जंगमबाड़ी)। विमलादित्य के दर्शन कर खारी कुँआ से उत्तर दशाश्वमेध थाना से सटे हुए उत्तर बगल के मकान में वैद्येश्वर हैं।

२०. वैद्येश्वराय नमः (म० नं० डी० ५०/२० में हैं, मु० कोदई की चौकी)। यह विश्वनाथ जी के वैद्य हैं। किंवदन्ती है। वैद्येश्वर के उत्तर बगल के देऊ गली में दाहिने तरफ गोकर्णेश्वर हैं।

२१. गोकर्णेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५०/३३ में हैं, मु० कोदई की चौकी) देऊ गली में गोकर्णेश्वर से पश्चिम इण्टर सनातन धर्म कालेज के अन्दर दक्षिण पश्चिम के कोने में विष्णवेश्वर के बगल में हैं।

२२. ध्रुवेश्वराय नमः (म० नं० डी० ४६/१० में हैं, मु० सनातनधर्म इन्टर कालेज, मिश्रपोखरा)। ध्रुवेश्वर से उत्तर बेनिया बाग से दक्षिण बगल से पूर्व हड़हा सराय जाने वाली गली से तीन गली छोड़कर दाहिनी तरफ के शंकर जी के मन्दिर में हैं। पहले देऊ गली से दाल मण्डी होते हुए हाटकेश्वर जाते थे। वह विजातियों का मुहल्ला है।

२३. हाटकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ४८/१६० में हैं, मु० हड़हासराय)। हाटकेश्वर से पूर्व बगल में पकड़ी के नीचे। २४. अस्थिक्षेपेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ४८/४४ में हैं, मु० हड़हासराय)।

२५. कीकसेश्वराय नमः (म० नं० ४८/४४ में हैं)। कीकसेश्वर से दक्षिण की गली से पूर्व राजादरवाजा से मच्छरहट्टा फाटक जाने वाली गली से उत्तर जाने वाली तीन गली को छोड़कर चौथी भारभूतेश्वर गली में गज विनायक के बगल में हैं।

२६. भारभूतेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ५४/४४ में हैं, मु० मच्छरहट्टा फाटक)। भारभूतेश्वर से पूर्व उत्तर रेशम कटरा में हैं।

२७. चित्रगुप्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ५७/७७ में हैं)। चित्रगुप्तेश्वर से पूर्व चौक चित्रघण्टा दुर्गागली में हैं।

२८. चित्रघण्टा दुर्गा देव्यै नमः (म० नं० सी० के० ३३/३४ में हैं, मु० चित्रघण्टा, दुर्गा गली चौक)। चित्रघण्टा दुर्गाजी से पूर्व पशुपति विंनायक के बगल में हैं, अवधूतेश्वर के पास में हैं। २९. पशुपतीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० १३/६६ में हैं, मु० पशुपतीश्वर)। पशुपतीश्वर से पूर्व शीतला गली के पास में हैं।

सिद्धेश्वरी नित्य यात्रा प्रारम्भ

३०. पितामहेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७६/१ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)। पितामहेश्वर से सटे हुए पूर्व बगल के शिव मन्दिर में कलशेश्वर हैं।

३१. कलशेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१० में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)। कलशेश्वर से पूर्व सिद्धेश्वरी के मंदिर में चन्द्रेश्वर हैं।

३२. चन्द्रेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१२४ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)। सिद्धेश्वरी, सिद्धेश्वर, सूर्येश्वर, कलियुगेश्वर आदि के दर्शन करके चन्द्रकूप का ठण्डा मीठा जल पीकर चलें। सिद्धेश्वरी से पूर्व कात्यायनी दुर्गाजी के मंदिर में आत्मावीरेश्वर हैं।

३३. आत्मावीरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१५८ में हैं, मु० सिन्धियाघाट)। आत्मावीरेश्वर से पश्चिम उत्तर गोला गली में मुड़ते ही दाहिने तरफ फाटक के अन्दर विद्येश्वर हैं।

३४. विद्येश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २/४९ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)। विद्येश्वर से उत्तर पूर्व नव ग्रहेश्वर के बगल में भुवनेश्वरी के मंदिर में वैश्वानरेश्वर के बगल में हैं।

उपशान्तेश्वर संकठाजी नित्य यात्रा प्रारम्भ

३५. अग्नीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २/१ में हैं, मु० पटनी टोला)। ज्वरहरेश्वर, उपशान्तेश्वर के दर्शन करके चलें। ३६. नागेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० १/२१ में हैं, मु० पटनी टोला)। नागेश्वर से दक्षिण गङ्गा महल के फाटक के सामने सटे हुए पश्चिम में संकठाजी का दर्शन करके चलें। संकठा जी से सटे हुए पूर्व बगल में हरिचन्द्रेश्वर हैं।

३७. हरिश्चन्द्रेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१६६ में हैं, मु० संकठाजी)। हरिश्चन्द्रेश्वर के सामने सटे हुए संकठा जी के मंदिर में सेनाविनायक हैं।

३८. सेनाविनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ७/१६६ के सामने हैं)। ३९. चिन्तामणि विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में हैं)। ४०. वशिष्ठेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में हैं, मु० शंकठाजी, वशिष्ठघाट)। ४१. अरुन्धती देव्यै नमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में हैं)। ४२. वामदेवेश्वराय नमः (म० नं० सी के० ७/१६१ में हैं)। ४३. यमादित्याय नमः (म० नं० सी के० ७/१६१ में हैं)।

४४. सीमा विनायकाय नमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में है)। दूसरे मणिकर्णिका ब्रह्महृद कुण्ड के उत्तर पूर्व के कोने के धर्मशाला के नीचे गणेश मन्दिर में हैं।

सीमा विनायकाय नमः (मु० मणिकर्णिकाघाट)। मणिकर्णिका से दक्षिण सतुवा बाबा के (आश्रम) मठ से दक्षिण विश्वनाथ पुस्तकालय से ऊपर मोक्षद्वारेश्वर के बगल में हैं।

विशालाक्षी नित्य दर्शन यात्रा प्रारम्भ

४५. करुणेश्वराय नमः (म० नं० सी० ३४/१० में हैं, मु० ललिताघाट, लाहौरी टोला)। ४६. त्रिसन्ध्येश्वराय नमः (म० नं० डी० १/४० में हैं, मु० लाहौरी टोला)। त्रिसन्ध्येश्वर से दक्षिण नवग्रह के मंदिर में हैं।

४७. विशालाक्षी देव्यै नमः (म० नं० डी० ३/८५ में हैं, मु० मीरघाट)।

धर्मकूप, धर्मेश्वर तीर्थ के बगल में है।

४८. धर्मेश्वराय नमः (म० नं० डी० २/२१ में हैं, मु० धर्मकूप मीरघाट)। धर्मेश्वर वटसावित्री देवी के बगल में हैं। (वटसावित्री व्रत के दिन) दर्शन करें। दिवोदासेश्वर के मंदिर में हैं।

४९. विश्वबाहुका गौरी देव्यै नमः (म० नं० डी० २/१३ में हैं, मु० धर्मकूप मीरघाट)। हनुमान जी के मंदिर, गोस्वामी तुलसीदास जी के मठ में हैं।

५०. आशाविनायकाय नमः (म० नं० डी० ३/७९ में हैं, मु० मीरघाट)।

५१. वृद्धादित्य सूर्याय नमः (म० नं० डी० ३/१६ में हैं, मु० मीरघाट)। विश्वनाथ घाट (मीरघाट) स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री जी महाराज) के व्यक्तिगत विश्वनाथ मन्दिर का दर्शन करके चलें।

५२. (व्यक्तिगत) विश्वनाथाय नमः (म० नं० डी० ७/७९ में हैं, मु० विश्वनाथ घाट)।

५३. चतुर्वक्त्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ७/१९ में हैं, मु० शकरकंद गली)। यहाँ से पश्चिम बगल में बायीं तरफ शंकरजी के मंदिर में हैं।

५४. ब्राह्मीश्वराय नमः (म० नं० डी० ७/१६ में हैं, मु० सकरकन्द गली)। यहाँ से पश्चिम साक्षी विनायक के दर्शन करके धनेश्वर के बगल में हैं। धनेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले नर-नारियों को धन की प्राप्ति होती है। कलिप्रिय विनायक के बगल में मनः प्रकामेश्वर हैं।

५५. मनः प्रकामेश्वराय नमः (म० नं० डी० १०/५० में हैं, मु० साक्षी विनायक)। मनः प्रकामेश्वर से उत्तर कोतवाल पुरा होते हुए गजकर्ण विनायक के मन्दिर में हैं।

५६. ईशानेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३७/४३ में हैं, मु० बाँसफाटक)। भवानी शंकरजी का दर्शन करके उत्तर से खोवा बाजार, नेपाली खपड़ा, सरस्वती फाटक में पहुँचते ही द्वितीय आवरण पूर्ण होता

है। यहाँ से दक्षिण बगल से महाकाली जी का दर्शन करके काली जी से सटा हुआ उत्तर बगल के अर्धनारीश्वर मन्दिर में चण्डेश्वर हैं।

५७. चण्डेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/२६ में हैं, मु० कालिका गली)।

चण्डेश्वरी देव्यै नमः (म० नं० डी ८/२६ में हैं)।

यहाँ से पश्चिम साक्षी विनायक गली होते हुए ढुण्ढिराज जी के सामने से राम मंदिर में भवानीशंकर हैं।

५८. भवानी शंकराभ्यो नमः (म० नं० डी० १९/१७ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)। अन्नपूर्णा आदि के दर्शन करके शिवरात्रेश्वर का दर्शन करें।

५९. ढुण्ढिराजाय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में हैं, मु० सावित्री फाटक)।

६०. राजराजेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३३ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली)। यहाँ से पश्चिम नन्दू फरिया की गली से सड़क से उत्तर खोवागली में ज्ञान विनायक के मंदिर में लाङ्गलीश्वर हैं।

६१. लाङ्गलीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २०/४१ में हैं, मु० खोवाबाजार)। लाङ्गलीश्वर से सरस्वती फाटक में जाते ही तृतीय आवरण यात्रा पूर्ण हुई। सरस्वती फाटक से पश्चिम अन्नपूर्णा गली में सावित्री देवी जी के सामने द्वारविनायक के बगल में शिव मंदिर में नकुलेश्वर हैं।

६२. नकुलेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७ में हैं, मु० सावित्रीफाटक)। दण्डपाणिजी के दक्षिण सटे हुए शिवमंदिर में परान्नेश्वर हैं।

६३. परान्नेश्वराय नमः (म० नं० ३५/३४ में हैं)।

६४. परद्रव्येश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३४ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली)।

६५. प्रतिग्रहेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३४ में हैं)।

६६. निष्कलंकेश्वराय नमः (म० नं० ३५/३४ में हैं)।

निष्कलंकेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों के दूसरे से लगाया हुआ कलंक, अपवाद, दोष निवृत्त हो जाता है।

कलंक लगाने वाले व्यक्ति स्वयं ही संकट में पड़ता है। परान्नेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले को दूसरे से अन्न, वस्त्र, रुपये इत्यादि लिखा हुआ दोष का प्रायश्चित्त हो जाता है। पर द्रव्येश्वर के दर्शन, पूजन से दूसरे से लेकर खर्च किये रुपये का मार्जन हो जाता है । प्रतिग्रहेश्वर के अर्चन, आराधना करने से दान आदि दूसरे से प्रतिग्रह लिया हुआ सामान आदि दशवा हिस्सा दान करने से और इनके दर्शन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। (नोट - हमारे वेद, पुराण, उपनिषद् आदि सत् ग्रन्थ कहते हैं जो मनुष्य यज्ञ, अनुष्ठान, तीर्थयात्रा एवं दान, सत्सङ्ग, निष्काम सेवा तथा कथा श्रवण; सज्जन सन्त-महात्माओं का दर्शन करने जाय, तपस्या और मोक्ष की जिज्ञासा उत्पन्न होते ही अथवा संकल्प करते ही जन्म-जन्मान्तर के पाप क्षीण होते हैं। उसी दिन से पुण्य का उदय होता है। सत्कर्म करने में प्रवृत्ति होती है)।

६७. मार्कण्डेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/३४ में हैं)। यहाँ से पश्चिम की नन्दूफरिया गली से सीढ़ी से उतर कर अप्सरेश्वर फाटक के अन्दर बायीं तरफ पत्थर की मूर्तियों की दूकान से सटे हुए शिव मंदिर में (धर्मशाला के घेरे में हैं)। दूसरे लाङ्गलीश्वर से दक्षिण बगल के पञ्चपाण्डव के मन्दिर में हैं।

६८. अप्सरेश्वराय नमः (म० नं० ३१/१ में हैं, मु० ज्ञानवापी) ६९. गङ्गेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/६ में हैं, मु० ज्ञानवापी)। दूसरे ज्ञानवापी पीपल के नीचे हैं।

७०. ज्ञानवापी तीर्थाय नमः। स्नान या मार्जन कर कूप के सटे हुए दक्षिण बगल में सङ्गमरमर के मन्दिर में नन्दिकेश्वर हैं। दूसरे सरस्वती फाटक

के पास और तारकेश्वर से पूर्व बगल में हैं।

७१. नन्दिकेश्वराय नमः।

ज्ञानवापी में विशाल नन्दी की मूर्ति उत्तराभिमुख है, विश्वनाथ जी का सवारी वृष है। इस किस्म की मूर्ति अन्य जगह नहीं है। महाकालेश्वर ज्ञानवापी में पीपल के नीचे है। दूसरे तारकेश्वर के मन्दिर में हैं।

७२. तारकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७ में हैं, मु० ज्ञानवापी)। महाकालेश्वर से दक्षिण अन्नपूर्णा गली में पहुँचते ही चतुर्थ यात्रा पूर्ण हो गई। हर हर महादेव।

विश्वनाथ अन्नपूर्णा जी के सामने से ढुण्ढिराज गली होते हुए मोक्षेश्वर के मन्दिर में ओंकारेश्वर हैं।

७३. मोक्षेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २७/१३ में हैं)।

७४. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २७/१३ में हैं, ढुण्ढिराज गली, कोतवालपुरा)।

७५. दण्डपाणिभ्यो नमः (म० नं० सी० के० ३६/११ में हैं, मु० ढुण्ढिराज गली)। महेश्वर अमरनाथ मठ में ढुण्ढिराज गली में हैं। दूसरे ज्ञानवापी में हैं।

७६. महेश्वराय नमः। ज्ञानवापी से अन्नपूर्णा गली में पहुँचते ही पञ्चम आवरण यात्रा पूर्ण होती है। विश्वनाथ जी के फाटक के सामने शिवालय में वीरभद्रेश्वर हैं।

७८. वीरभद्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ९/१० में हैं, मु० विश्वनाथ जी)। वीरभद्रेश्वर से विश्वनाथ जी के फाटक के अन्दर बायीं तरफ से परिक्रमा मार्ग में गणेश जी के बगल में अविमुक्त देवी वाराणसी देवी अविमुक्तेश्वर का दर्शन करके फाटक के सामने आते ही षष्ठावरण यात्रा पूर्ण होती है। वैकुण्ठेश्वर के सटे हुए पश्चिम बगल में कालराजेश्वर, स्कन्द कार्तिकेश्वर, वैकुण्ठेश्वर, दर्शन करके उत्तर से विश्वनाथ मन्दिर के परिक्रमा

करने के पश्चात् ससावरण काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा पूर्ण होती है।

७९. काशी विश्वनाथाय नमः (म० नं० सी० के ० ३५/१९ में हैं)।

अन्तर्गृहस्य यात्रेयं यथावद्यामया कृता।
नूनातिरिक्तया शम्भुः प्रयतामनयाविभुः॥

(काशी खण्ड अ० १०० श्लोक ६७ से ७६ तक है)

प्रार्थना करके मुक्तिमण्डप ज्ञानवापी में जाकर संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को यथाशक्ति सीधा, दक्षिणा देकर साधु, महात्माओं को जलपान देकर पापों का प्रायश्चित्त करने के पश्चात् पुण्य का उदय होता है। यात्री निष्पाप होकर विश्वनाथ भगवान का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते हैं। यह यात्रा ६ घण्टे का है। शिवप्रसाद पाण्डेजी लिखते हैं कि विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा २१ बार करनी चाहिए। अस्तु, कम से कम ११ बार यात्रा करें। हो सके तो स्वयं यात्रा करें न हो तो ब्राह्मण को वरण करके यात्रा करने भेजने से देव-ऋषि-पितर प्रसन्न होते हैं। यात्रा कराने वालों की सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण होती है। रोग, कष्ट, संकट एवं कार्यों में सब विघ्न दूर हो जाते हैं। काशी खण्ड में वेदव्यास जी लिखते हैं, विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा आपके हृदय में जिस दिन श्रद्धा भक्ति जिज्ञासा उत्पन्न हो उसी दिन यात्रा करें।

काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा पूर्ण हुई। "हर हर महादेव"। काशी दर्शन द्वितीय संस्करण में सप्रमाण, दर्शन, पूजन का प्रत्यक्ष फल और माहात्म्य, इतिहास सहित लिखा गया है।

काशी के सिद्ध सन्त-महात्मा का चमत्कार

सन् १८३० में श्री स्वामी परमान्द जी महाराज मणिकर्णिकेश्वर के पास की गुफा में रहते थे। वे प्रतिदिन नियमतः अन्तर्गृही दर्शन-यात्रा पूर्ण करने के पश्चात् मधुकरी लेकर भिक्षा करते थे। गुफा में रहते थे और गंगा जल पीते थे। सायंकाल तीन बजे से गंगा स्नान कर मणिकर्णिकेश्वर के मन्दिर में एक आसन पर बैठकर ११ हजार पंचाक्षारी महामंत्र का जप

करते थे। एक दिन रात्रि में दो बजे स्वामी जी ध्यान करनें बैठे थे। ध्यान करते-करते स्वामी जी की समाधि लग गयी। उसी समय विश्वनाथ जी को मालूम हुआ। विश्वनाथ भगवान स्वयं स्वामी जी का रूप धारण करके प्रात: ३ बजे विश्वनाथ जी के फाटक खुलने के पहले गङ्गा स्नान कर पूजा की सामग्री लेकर विश्वनाथ जी पहुँच गये। स्वामी जी जैसे बोलते थे, जैसे कार्य करते थे, वैसे ही विश्वनाथ जी सभी कार्य पूर्ण करने लगे। विश्वनाथ जी अन्तर्गृही दर्शन यात्रा करने चले गये। ३ बजे से मणिकर्णिकेश्वर में आसन पर बैठकर जप भी करने लगे। इधर स्वामीजी के नियम को पूर्ण करने के लिए स्वामी जी के शिष्य हरानन्दं जी विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा करने चले गये। मार्ग में भक्तों ने कहा स्वामी जी आपके आगे-आगे जा रहे हैं और शिष्य ने यात्रा के पश्चात् मणिकर्णिकेश्वर में जाकर देखा तो स्वामी जी आसन में बैठकर जप कर रहे हैं। यह दृश्यं देखकर शिष्य को आश्चर्य हुआ। अकस्मात् स्वामी जी के गुरु आत्मानन्द जी आ गये। शंख, घण्टा बजाकर हर हर महादेव की ध्वनि लगाते ही स्वामी जी की १० दिन की समाधि टूट गई। विश्वनाथ जी स्वामी जी के स्वरूप में उनके सभी नियमों का पालन कर रहे थे। यह बात सुनकर मुझे आश्चर्य होता था। परन्तु मुझे आज प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। मैं प्रदिदिन नियम से प्रात: काल विश्वनाथ जी का नित्य यात्रा दर्शन किया करता था। मैं ५/१/५५ को ध्यान में बैठा हुआ था। बारह बजे ध्यान से उठा। तत्पश्चात् मैं विश्वनाथ जी का दर्शन करने पहुँचा। दर्शन के पश्चात् वहाँ के पुजारी जी ने कहा आप प्रात: काल आये थे फिर इस समय क्यों आये। यह बात सुनकर विश्वनाथ जी की असीम कृपा पर विश्वास हो गया। "भगवान भक्तों के सभी नियमों, व्रतों और मनोरथों को पूर्ण करते हैं" ऐसा काशी खण्ड में वर्णन मिलता है।

इतिहास : विक्रम संवत् २०३८ चैत्र कृष्ण तृतीया को मध्याह्न में दो बजे विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा पूर्ण करने के पश्चात् मेरे गुरुजी अनन्त

श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी महाराज के कर-कमलों से स्थापित विश्वनाथ जी, जो मीरघाट में हैं, उनका दर्शन करने गया। मन्दिर में पुजारी जी बैठे हुये पुस्तक पढ़ रहे थे, अन्य कोई नहीं था। उन दिनों हमारा नियम था कि मैं प्रतिदिन प्रात:काल विश्वनाथ अन्तर्गृही दर्शन यात्रा पूर्ण करके विश्वनाथ जी के दर्शन करने के पश्चात् गङ्गा जल पीता था, मधुकरी माँग कर भिक्षा करता था।

मैं विश्वनाथ मंदिर में दोनों हाथ जोड़कर खड़े होकर स्तुति कर रहा था। उसी समय मंदिर में से आवाज आयी स्वामी शिवानन्द सरस्वती! आप काशी की दर्शन-यात्रा, काशी माहात्म्य ग्रन्थ लिखें। आवाज सुनते ही मैंने चारो तरफ देखा, पुजारी जी के अतिरिक्त वहाँ कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। मैं गुरुजी के पास गया और प्रार्थना की। गुरुजी बोले- काशी विश्वनाथ जी प्रसन्न हो गये हैं, मैंने गुरुजी से कहा, मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ। गुरुजी बोले, तुम्हें सब विद्या आ जायेगी पुस्तक लिखें। तुम काशी माहात्म्य, काशी दर्शन लिखो, तुम्हारा कल्याण होगा। इस प्रकार काशी विश्वनाथ जी की प्रेरणा से काशी माहात्म्य, काशी दर्शन, काशी मोक्ष निर्णय, काशी की महिमा, काशी की प्रचलित सम्पूर्ण यात्रा नाम की पुस्तके लिखी गईं।

ओंकारेश्वर अन्तर्गृही प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा

ओंकारेश्वर माहात्म्य

अकाराख्यामिदं लिङ्गमुकाराख्यमिदंपरम्।
मकाराह्वयमेतच्च नादाख्यं बिन्दुसञ्ज्ञकम्॥

अर्थ- वह ओंकारेश्वर शिवलिंग अकार, उकार और मकार तथा नाद एवं बिन्दु संज्ञक है।

मोक्षाय सर्वजन्तूनामस्मिन्ननन्दकानने।

(काशी खण्ड अ० ७३)

अर्थ- इस काशीपुरी में संपूर्ण प्राणियों को मुक्ति देने के लिए ओंकारेश्वर

मूर्ति रूप धारण करके काशी में विराजमान हैं।

एकमोङ्कारमालोक्यसमस्तेक्षोणिमण्डले।
लिङ्गजातानि सर्वाणि दृष्टानि स्युर्नसंशयः ।।१७१

(काशीखण्ड अ० ७३)

अर्थ - एक ओंकारेश्वर महाशिवलिंग का दर्शन, पूजन कर लेने से समस्त पृथ्वी मंडल के शिव लिंगों का दर्शन कर लिया, इसमें संशय नहीं है।

अकारं सत्व सम्पन्न मृक्क्षेत्रं सृष्टिपालकम्।
ओंकारेश्वर नामैतदस्तु भक्तैक मुक्तिदम् ।।८२।।

(का० खण्ड ७३)

अर्थ- महादेव जी देवी जी से कहते हैं - अकार सत्यगुण से सम्पन्न है, ऋग्वेद का क्षेत्र और सम्पूर्ण सृष्टि का पालक है। यह ओंकारेश्वर नामके शिव लिङ्ग, भक्तों के लिये एक मात्र मुक्ति प्रदान करने वाले हैं।

नमः ऊँकार रूपाय नमोऽक्षर वपुर्धृते।
नमोऽकारादि वर्णानां प्रभवाय सदाशिवे ।।१०१।।
ऋग्यजुः सामरूपाय रूपातीताय ते नमः।
आकारसत्वमुकारस्त्वं मकारस्त्व मनाकृते ।।१०२।।

अर्थ- ब्रह्माजी महादेव जी से कहने लगे ओंकार रूप के लिये नमस्कार है। अकार, उकार आदि अक्षर रूप शरीर को धारण करने वाले अविनश्वर ऊँकार को नमस्कार है। अकारादि वर्णों के कारण सदा शिव रूप इन्हें नमस्कार है।

रूप (आकार) से परे निर्गुण, निराकार, ऋग्य, यजु एवं सामवेद रूप ओंकार को नमस्कार है।

ओंकार दर्शनादेव वाजिमेध फलं लभेत्।
तस्मात् काश्यां प्रयत्नेन दृश्य ओंकार ईश्वरः ।।१६३।।

(का० ख० अ० ७३)

अर्थ- शंकर जी स्कन्द जी को सम्बोधित करते हुए बोले, ओंकारेश्वर शिवलिङ्ग का दर्शन करने मात्र से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

कृत्वाऽपि मोहात्पापानि भूरीण्येव महान्त्यपि।
काश्यामोङ्कारमालोक्य कुतस्त्रस्यति वै यमात्॥१६६॥
ओंकारयात्राभिमुखं नरं वीक्ष्य पितामहा: ॥१६७/१

का० ख० अ० ७३

अर्थ- ईश्वर स्कन्द जी से कहने लगे अज्ञानता के कारण बड़े से बड़े अनेक पापों को करने के पश्चात् भी यदि काशी में ओंकारेश्वर शिव लिङ्ग का दर्शन करता है, तो उस जीव को यमराज से भला कहाँ भय हो सकता है।

ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा

पुरा ओकारनाथस्य क्षेत्रमन्तर्गृहेस्थितम्। प्राच्यां गंगां दक्षिणस्यां परशुरामेश्वरं तथा। अग्नीश्वरो पश्चिमायाम् उत्तरस्यात्तुशैलजा।

(उपकार्तिकेय पुराणे)॥

पुराओंकारनाथस्य क्षेत्रमन्तर्गृहेस्थितम्।
प्राच्यां दक्षिणस्यां वीररामेश्वरं॥
वागेश्वरी पश्चिमायां उत्तरस्यातु शैलजा।
ओंकार अन्तर्गृही यात्रा कर्तव्यं सुप्रयत्नत:॥

(इति नन्दी उप पुराणे)

ओंकारेश्वर अन्तर्गृही दर्शन यात्रा का पुराणों में वर्णन है। ओंकारेश्वर अन्तर्गृही दर्शन यात्रा जाने के तीन दिन प॰ । भाई, बन्धु, पट्टीदार, पड़ोसी एवं भगवान के भक्तों को जाने के लिए निमन्त्रण करना चाहिए। यात्रा में जाने के एक दिन पहले प्रात: नित्य कर्म से निवृत्त होकर निर्विघ्न यात्रा पूर्ण करने के लिए गणेश जी का दर्शन पूजन करें। उस दिन हविष्य, अन्न का भोजन कर घर में रहें। दूसरे दिन प्रात: नित्य कर्म से निवृत्त

होकर त्रिलोचन घाट ओंकारेश्वर तीर्थ में स्नान करके या किसी भी घाट में गंगा जी में स्नान करके ओंकारेश्वर नित्य दर्शन यात्रा प्रारम्भ करें। अब मैं काशी के ओंकार खण्ड का सूक्ष्म रूप से वर्णन करने जा रहा हूँ। ओंकारेश्वर तीर्थ त्रिलोचनघाट में स्नान करके पूजा की सामग्री साथ में लेकर मच्छोदरी से उत्तर कोयला बाजार, छितवन पुरा में सड़क के दाहिनी तरफ ऊपर शंकर जी के लाल मन्दिर में ओंकारेश्वर हैं, ओंकार विनायक मन्दिर में है। मंदिर से पूर्व बगल में ओंकारेश्वर शुभोदक तीर्थ कुँआ के रूप में है। काशी खण्ड में लिखा है कि नाग कन्या पाताल से इसी शुभोदक तीर्थ कुँआ से निकल कर प्रतिदिन ओंकारेश्वर का दर्शन-पूजन करती थी। १. ओंकारेश्वर तीर्थाय नमः। (मु० छितवन पुरा)। ओंकारेश्वर शुभोदक तीर्थाय नमः। २. ओंकारेश्वर विनायकाय नमः।

३. ओंकारेश्वर अकाररूपात्मने ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० ३२/२३ में हैं, मु० छितवन पुरा)।

४. ओंकारेश्वर ऊकार रूपात्मने ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० ३२/२२ में हैं, मु० छितवन पुरा)।

ऊँकारेश्वर के दर्शन करने वाले भक्तों को ओंकारेश्वर इस लोक में सुख-शान्ति देते हैं, परलोक में मुक्ति देते हैं। ऊँकारेश्वर के मंदिर में ओंकारेश्वरी देवी हैं। ओंकारेश्वर द्वार पाल हैं, ओंकारेश्वर गण हैं, हनुमान जी, सन्तोषी माई आदि हैं। ओंकारेश्वर में त्रार्षिक उत्सव, उपनिषद्, रुद्र एवं रामायण आदि के पाठ होते हैं। यज्ञ, गीता, भागवत्, रामायण आदि सम्मेलन पहले होते थे। अब कौवाली, विरहा भी होता है।

ऊँकारेश्वर से पूर्व बगल में बाँयी तरफ मकारेश्वर हैं, मकारेश्वर तीर्थ कुँआ के रूप में है। बगल में मकारेश्वर हैं।

५. मकाररूपात्मने ओंकारेश्वराय नमः। (म० नं० ए० ३३/४५ में हैं, मु० छितवन पुरा)।

ओंकारेश्वर, ऊँकारेश्वर, मकारेश्वर के दर्शन करने वाले नर-नारियों

को ब्रह्म विद्या की प्राप्ति होती है। मकारेश्वर के मन्दिर में शूलेश्वर, नादेश्वर, प्रणवेश्वर और ओंकारगण हैं।

विन्दवेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/४५ में है)।

६. शूलेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/४५ में हैं)।

७. नादेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/४५ में हैं)।

८. प्रणवेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/४५ में हैं)।

इन सब के दर्शन करने से ऐश्वर्य और ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। मन्दिरों के जीर्णोद्धार कराने वाले व्यक्ति जहाँ कहीं भी मृत्यु हो शिवलोक में जाता है और अमर होकर शिवलोक में वास करता है। ओंकारेश्वर नित्य दर्शन यात्रा पूर्ण हो गयी। ओंकारेश्वर से दक्षिण मच्छोदरी पार्क के पूर्व कामेश्वर गली में कामेश्वर के मन्दिर के घेरे के अन्दर दुर्वासेश्वर, अम्बरीषेश्वर, विनीतेश्वर एवं महाबलनृसिंह विष्णु, खखोलादित्य हैं।

त्रिलोचनेश्वर नित्य यात्रा प्रारम्भ

१०. कामेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं, मु० कामेश्वर गली, मच्छोदरी त्रिलोचन)

११. दुर्वासेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं)।

१२. अम्बरीषेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं)।

१३. महाबलनृसिंह विष्णवे नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं)। १४. विनीतेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं)।

१५. खखोलादित्याय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं)।

कामेश्वर से पूर्व बगल में पिलपिला तीर्थ है। इस समय कुँआ के रूप में है। १६. पिलपिला तीर्थाय नमः (म० नं० ए० ३/८७ में हैं, मु० त्रिलोचन)।

१७. पिलपिलेश्वराय नमः (म० नं० ३/८७ में हैं)।

पिलपिला तीर्थ के सटे हुए पूर्व बगल के आदि महादेव मंदिर के अन्दर

योगेश्वर, पार्वतीश्वर, मोदक विनायक हैं।

१८. योगेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३/९२ में हैं, मु० त्रिलोचन घाट)
१९. पार्वतीश्वराय नमः (मु० ए० ३/९२ में हैं)।

२०. मोदक विनायकाय नमः (म० नं० ए० ३/९२ में हैं)।

२१. आदि महादेवेश्वराय नमः (मु० ए० ३/९२ में हैं)।

२२. हरीश्वराय नमः (म० नं० ३/९२ में हैं)।

हरीश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में नर्मदेवेश्वर हैं।

२३. नर्मदेवेश्वराय नमः (मु० त्रिलोचन)।

नर्मदेश्वर के सटे हुए पश्चिम बगल के त्रिलोचनेश्वर के मन्दिर के अन्दर कई देव मंदिर हैं। त्रिलोचनेश्वर तीर्थ पादोदक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है, ठण्डा मीठा जल है। कुँआ के रूप में है। इस तीर्थ के जल पीने से पेट सम्बन्धी रोग शान्त होते हैं। त्रिलोचन पादोदक तीर्थाय नमः।

२४. त्रिलोचनेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/८ में हैं, मु० त्रिलोचन घाट)।

२५. अरुणादित्य सूर्याय नमः (म० नं० ए० २/८ में हैं)।

२६. वाल्मीकीश्वराय नमः (म० नं० २/८ में हैं)।

२७. अम्बिका देव्यै नमः (म० नं० २./८ में हैं)।

२८. वाराणसी देव्यै नमः (म० नं० ए० २/८ में हैं)।

२९. प्रणवविनायकाय नमः (म० नं० २/८ में हैं)।

३०. त्रिपुरारेश्वराय नमः (म० नं० २/८ में हैं)।

३१. त्रिविक्रम विष्णवे नमः (म० नं० २/८ में हैं)।

३२. उद्दण्ड मुण्ड विनायकाय नमः (म० नं० ए० २/८ में हैं। (विवरण– त्रिलोचनेश्वर में प्रतिदिन कथा होती है, मास शिवरात्रि के दिन रात्रि में जागरण, चार पूजा, रुद्राभिषेक और शृंगार, वार्षिक उत्सव होते हैं। उपनिषद, गीता श्रीमद्भागवत, रामायण आदि के पाठ होते हैं, कीर्तन, अखण्ड कीर्तन

करते हैं। त्रिलोचन घाट के ऊपर पञ्चाक्षरेश्वर से सटे हुये उत्तर बगल के शंकर जी के मंदिर में हैं।

३३. नादेश्वराय नमः। (म० नं० ए० २/५६ इसके सटे हुए उत्तर बगल में हैं, मु० त्रिलोचन घाट)।

३४. पञ्चाक्षरेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/५६ में हैं, मु० त्रिलोचनघाट)।

पञ्चाक्षरेश्वर के दर्शन-पूजन करने वाले नर-नारियों को उनके सान्निध्य में पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप करने से ६ महीने में मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्धि प्राप्त करने वाला व्यक्ति लाखों मनुष्यों का कल्याण करता है। पञ्चाक्षरेश्वर से दक्षिण संहार भैरव से उत्तर बगल में मधुसूदन विष्णु भगवान का मंदिर है।

३५. मधुसूदन विष्णवे नमः। (मु० त्रिलोचन)। पुरुषोत्तम मास में इनके लाखों नर-नारी दर्शन करने आते हैं।

३६. संहार भैरवाय नमः (म० नं० १/८२ में हैं, मु० गायघाट)। ३७. कपाल भैरवाय नमः (म० नं० ए० १/८२ में हैं, मु० गायघाट)।

३८. नरनारायणेश्वराय नमः। (म० नं० १/७३ में हैं)।

३९. बदरीनारायण विष्णवे नमः। (म० नं० ए० १/७३, बदरीनारायण घाट)। बदरीनारायण घाट से दक्षिण लालघाट के ऊपर गौरी शंकर जी के मंदिर में हैं)। ४०. गोप्रक्षेश्वराय नमः। (म० नं० ए० ४/२४ में मु० लाल घाट)।

४१. गोपी गोविन्दाय नमः। (म० नं०.ए० ४/२४ में हैं)। गोप्रेक्षेश्वर से दक्षिण हनुमान जी के मन्दिर की चहारदीवारी के अन्दर में हैं। ४२. उद्दालकेश्ववराय नमः। (म० नं० ए० २/१५९ में हैं, मु० राजमन्दिर)।

४३. लक्ष्मीनृसिंहाय नमः (म० नं० २/१५९ में हैं)। प्रशान्नविष्णवे नमः। (म० नं० २/१५९ में हैं)।

प्रसन्न विष्णु जी के पश्चिम सटे हुए बगल में भक्ति माधव पूर्वाभिमुख

हैं।

४४. भक्ति माधवाय नमः (मु० राजमन्दिर) ब्रह्माघाट में ब्रह्मेश्वर हैं। ४५. ब्रह्मेश्वराय नमः। (मु० ब्रह्माघाट)।

४६. कपिलेश्वराय नमः। (म० नं० के०२५/१४ में हैं, मु० कपिल गली दुर्गाघाट)। कपिल गली से पश्चिम में स्थित है।

४७. गोपाल विष्णवे नमः। (के० ३७/९ मु० चौखम्बा सट्टी)। गोपाल मन्दिर से उत्तर बगल में हैं।

४८. कालमाधवाय नमः। (के० ३४/८९, मु० चौखम्बा सट्टी काल भैरव)। ४९. कालमाधवेश्वराय नमः। ५०. सन्तानेश्वराय नमः। सन्तानेश्वर से उत्तर सटे हुए हैं।

५१. पापभक्षेश्वराय नमः। (के० ३२/३६) कालभैरव तीर्थाय नमः।

५२. काल भैरवाय नमः। (म० नं० के० ३२/२ में हैं, मु० काल भैरव)। ५३. कालेश्वर दण्डपाणि तीर्थाय नमः।

५४. दण्डपाणिभ्यो नमः। (के० ३१/४९, मु० दण्डपाणि गली)। ५५. कालेश्वराय नमः। (के० ३१/४९) दण्डपाणिजी से पूर्व उसी मार्ग से दुर्गाघाट दुर्गेश्वर के मंदिर में ब्रह्मचारिणी दुर्गा जी हैं। ब्रह्मचारिणी दुर्गेश्वराय नमः।

५६. ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० के० २२/७२ में हैं, मु० दुर्गाघाट)। दक्षिण की दूध विनायक गली में हैं।

५७. दूधविनायकाय नमः। (के० २३/६६, मु० दूध विनायक)। ५८. घृतविनाकाय नमः। (के० २३/५७)। ५९. दधिविनायकाय नमः। (के० २३/६३, मु० दूधविनायक)।

६०. मधुविनायकाय नमः। (के० २८/३३, मु० दूध विनायक)। ६१. सक्कराविनायकाय नमः। (के० २४/३४, मु० दूध विनायक)। सक्कराविनायक से पूर्व बगल में तैलङ्ग स्वामी जी के आश्रम में पञ्चगङ्गेश्वर तैलङ्गेश्वर पञ्चामृत विनायक हैं। ६२. पञ्चगङ्गेश्वराय नमः। (म० नं० के० २७/८५

में हैं, मु० पञ्चगङ्गा)। ६३. तैलङ्गेश्वराय नमः। (म० नं० के० २७/८५ में हैं, मु० पञ्चगङ्गा)। ६४. पञ्चामृत विनायकाय नमः। (म० नं० के० २७/८५ में हैं)।

६५. विन्दुविनायकाय नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं, मु० पञ्चगङ्गा)। ६६. शिव विष्णवे नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं)। ६७. विन्दुमाधवेश्वराय नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं)।

६८. विन्दु भैरवाय नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं)।

६९. वैकुण्ठ विष्णवे नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं)। ७०. विन्दुमाधव विष्णवे नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं)। विन्दुमाधव घाट में बत्ती जलाने के लिये स्तम्भ बना है। स्तम्भ से सटे हुए शंकर जी के मंदिर में धूपपापेश्वर हैं। ७१. धूपपापेश्वराय नमः। (म० नं० के० २२/३१ में हैं, मु० पञ्चगङ्गाघाट) पञ्चगङ्गा से दक्षिण मङ्गला गौरी मुहल्ले में जाते समय फाटक के अन्दर षष्टी देवी हैं।

७२. गभस्तीश्वराय नमः। (म० नं० के० २४/३४ मु० मंगलागौरी) ७३. गभस्तीश्वर विनायकाय नमः। (म० नं० के० २४/३४ में हैं)। ७४. मयूखादित्याय नमः। (म० नं० के० २४/३४ में हैं)। ७५. गभस्तीश्वर विष्णवे नमः। (म० नं० के० २४/३४ में हैं)। ७६. अम्बिकादेव्यै नमः। (म० नं० के० २४/३४ में हैं। ७७. मंगलागौरी देव्यै नमः। (म० नं० के० २४/३४ में हैं)। मंगलागौरी से दक्षिण बगल में आनन्द भैरव उत्तराभिमुख हैं। ७८. आनन्द भैरवेश्वराय नमः। (म० नं० के० २४/२२ में हैं)। ७९. आनन्दभैरवाय नमः। (म० नं० के० २४/२२ में हैं, मु० रामघाट) आनन्दभैरव से दक्षिण साङ्ग वेद विद्यालय के अन्न क्षेत्र में शंकर जी के मंदिर में स्कन्द पुराण के वीर रामेश्वर हैं।

८०. वीर रामेश्वराय नमः। (म० नं० के० २४/८ में हैं, मु० रामघाट)। यहाँ से पश्चिम रामघाट, गोला गली, नन्दन साहूलेन, बुलानाला चौराहा, सप्त सागर होते हुए काशी देवी जाते हैं। ८१. परशुरामेश्वराय नमः। (म०

नं० सी० के० १४/१६ में हैं, मु० नन्दनसाहू लेन) वीरभद्र बुलानाला चौराहा के धर्मशाला में हैं। ८२. परशुरामेश्वराय नमः। (म० नं० सी० के० १४/१६ में हैं, मु० नन्दन साहू लेन) वीरभद्र बुलानाला चौराहा के धर्मशाला में हैं। ८३. वीरभद्रेश्वराय नमः। (सी० के० १५/९७, मु० बुलानाला चौराहा)। ८४. कार्तिकेश्वराय नमः। (सी० के० १५/९७, मु० बुलानाला चौराहा)। चौराहा से पश्चिम कर्णघण्टा मुहल्ला में वेदव्यास मठ में व्यासेश्वर हैं। व्यासेश्वर से सटे हुए पश्चिम बगल में पक्का कुण्ड वेद व्यास तीर्थ है, कर्णघण्टा तीर्थ नाम से प्रसिद्ध है। ८५. वेदव्यासेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६०/६७ में हैं, मु० करणघण्टा)। वेदव्यासेश्वर से सटे हुए शुकदेवेश्वर हैं जिसके बगल में महोदरेश्वर हैं। ८६. शुकदेवेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६०/६७ में हैं)। (शुकदेवेश्वर से सटे हुये पूर्व बगल में कुष्ठ हनुमान जी हैं यहीं हनुमान जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी को राम जी का दर्शन कराकर राम जी की अनन्य भक्ति दिलाई और तुलसी कृत रामायण लिखने में पूर्ण सहयोग किया। तुलसीदास जी चौपाई, दोहा इत्यादि लिखते हुए रुक जाते थे, वह प्रसङ्ग हनुमान जी स्वयं लिखकर पूर्ण करते थे। यह वही हनुमान जी हैं, जो तुलसीदास जी के इष्टदेव हैं। प्यारे आत्मा किसी देवता को इष्टदेव बनाइये, और ब्रह्मनिष्ठ विद्धान् को गुरु बनाइये। अपना अमूल्य जीवन भगवान को सौंप दीजिये। श्रवन-मनन, निदिध्यासन एवं परोपकार करते हुए यथा शक्ति दान देते हुये, तपोमय जीवन व्यतीत करें। हनुमान तीर्थ पश्चिम बगल में कुँआ के रूप में है इसका जल ठण्डा मीठा है। कुष्ठहनुमतेश्वराय नमः। ८७. कुष्ठ हनुमानाय नमः। (म० नं० के० ६०/६७ में हैं, मु० करणघण्टा)। व्यासेश्वर से पश्चिम बगल के काशी देवी के मंदिर मे काशीदेवीश्वर, सप्त सागरेश्वर हैं। ८८. काशीदेव्यै नमः। (म० नं० के० ६२/२८ में हैं, मु० सप्तसागर)। काशी देवी जी के दर्शन, पूजन और उपासना करने वाले व्यक्ति को इस जन्म में सुख-शान्ति तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। अन्त में काशी देवी विश्वनाथ

भगवान से प्रार्थना करके कैवल्य मोक्ष दिलाती हैं। प्रतिदिन दर्शन करना चाहिए। काशी देवी जी के दर्शन, आराधना, उपासना करने वाले नर-नारियों को काशी में निर्विघ्न काशी वास कराती हैं। साथ ही आवास, वस्त्र, भोजन और सज्जन विद्वान् महात्माओं का संग एवं सत्सङ्ग प्राप्त कराती हैं। काशी देवी के बगल में ज्येष्ठ विनायक के मन्दिर में ज्येष्ठेश्वर हैं। ८९. ज्येष्ठ विनायकाय नमः। (म० नं० के० ६२/ ४४ में हैं)। ९०. ज्येष्ठेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६२/ ४४ में हैं, मु० काशी मठ, सप्तसागर)। ज्येष्ठ विनायक से पश्चिम बगल में बाँयी तरफ के शंकर जी के मंदिर में हैं। हेतुकेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६३/२४ में हैं, मु० भूत भैरव, काशीपुरा)। ९२. ज्येष्ठागौरी देव्यै नमः। (म० नं० के० ६३/२४ में हैं, मु० भूतभैरव)। ९३. नर्मदेश्वराय नमः। (मु० भूतभैरव)। पवनेश्वराय नमः। ९४. व्याघ्रेश्वराय नमः। (म० नं० ६३/१६ में हैं)। ९५. देवलेश्वराय नमः। (म० नं० ६३/१६ में हैं)। ९६. जैगीषव्येश्वराय नमः। (म० नं० के० ६३/१२ में हैं)। जैगीषव्येश्वर के दर्शन, पूजा करने वाले नर-नारियों को विश्वनाथ भगवान की अनन्य भक्ति प्राप्ति होती है। साथ ही इस लोक में ऐश्वर्य, सुख, शान्ति प्राप्त होती है। ९७. कुंदकेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६३/२९ में हैं)। भूतभैरवाय नमः। (के० ६३/२८ में हैं)। भूतभैरव जी से पश्चिम बगल में हैं। ९८. अषाढेश्वराय नमः। (म० नं० के० ६३/३३ में हैं, मु० काशीपुरा)। काशीपुरा से उत्तर लोहटिया सड़क पार करते ही सामने के बड़े गणेश गली में हैं। ९९. जम्बुकेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५८/१०१ में हैं, मु० बड़ेगणेश)। १००. महाराज गणेशाय नमः। (म० नं० के० ५८/१०१ में हैं, मु० बड़ेगणेश, लोहटिया)। बड़े गणेश जी में जप, पूजा, अनुष्ठान, उपनिषद्, यज्ञ, पाठ, कीर्तन, अखण्ड कीर्तन, रामायण आदि करने वाले व्यक्ति के विघ्न, संकट दूर होते हैं। कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है। प्रत्येक चतुर्थी के दिन और प्रति दिन दर्शन करने वाले नर-नारियों को कभी भी विघ्न संकट नहीं आता जो भी कार्य करना

चाहे वह सब सफल होते हैं। भाद्रकृष्ण चतुर्थी के दिन लाखों नर-नारी गणेश जी के दर्शन करने आते हैं। १०१. महाराज बड़े गणेशाय नमः। (म० नं० के० ५८/१०१ में हैं)। १०२. दन्त हस्त विनायकाय नमः। (म० नं० ५८/१०१ में हैं)। बड़े गणेश जी से पूर्व मध्यमेश्वर मुहल्ले में मन्दिर के बगल में हैं। १०३. द्वारपाल मध्यमेश्वर गणाय नमः। (म० नं० के० ५३/६३ में हैं, मु० मध्यमेश्वर)। १०४. मध्यमेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५३/६३ में हैं, मु० मध्यमेश्वर)। १०५. भैरवेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५३/६३ में हैं)। १०६. शिवेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५३/६३ में हैं)। मध्यमेश्वर से उत्तर की गली में कुँआ के बगल के शंकर जी के मन्दिर में जमदग्नीश्वर हैं। १०७. जमदग्नीश्वराय नमः। (के० ५३/११६, मु० मध्यमेश्वर)। जमदग्नीश्वर से उत्तर बगल में महामृतुञ्जय के घेरे के अन्दर महाकालेश्वर धन्वन्तरी तीर्थ आदि हैं। १०८. महामृत्युञ्जयेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० मृत्युञ्जय, दारानगर)। महामृत्युञ्जय के पास जप, पाठ, अनुष्ठान, यज्ञ, कथा, कीर्तन करने कराने वाले व्यक्ति के मनोरथ पूर्ण होते हैं। १०९. मालतीश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। मालतीश्वर के मन्दिर में हैं। ११०. हस्तिपालेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। १११. महामृत्युञ्जय हनुमते नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। ११२. महाकालेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। ११३. महाकालविनायकाय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। ११४. वृद्धकालेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। ११५. भीष्मकेशवाय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। वृद्धकालेश्वर से सटे हुये पूर्व दरवाजे से बाहर के मन्दिर में हैं। ११६. ऐरावतेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। ऐरावतेश्वर से सटे हुये उत्तर बगल के शिवालय में तक्षकेश्वर, वासुकीश्वर हैं। ११७. वासुकीश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। ११८. तक्षकेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। तक्षकेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल के शिवालय में हैं और अमृत

कुण्ड के बगल में नागेश्वर हैं। ११९. नागेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। वासुकेश्वर, तक्षकेश्वर, नागेश्वर के प्रति दिन दर्शन करने वाले व्यक्ति के परिवार को साँप का भय नहीं होता है और नागपञ्चमी के दिन दर्शन, पूजा करने वाले नर-नारियों के घर का नाग देवता रक्षा करते हैं। १२०. धन्वन्तरी अमृत तीर्थाय नमः। अमृत तीर्थ के सात कोने हैं। सात कोनों से जल निकालने पर स्वाद सबका अलग अलग होता है इसका जल भारत के कोने-कोने में जाता है। वैद्य इस कुण्ड के जल को रोगी को पीने को कहते हैं। जल पीने से रोग नष्ट होते हैं। अमृतकुण्ड से सटे हुए उत्तर बगल के शिवमन्दिर में हैं। १२१. दक्षेश्वराय नमः। (के० ५२/३९ में हैं)। दक्षेश्वर के सटे हुए पूर्व बगल में महेश्वर हैं। १२२. महेश्वराय नमः। (म० नं० ५२/३९ में हैं)। अमृतकुण्ड से सटे हुए पूर्व बगल में असिताङ्ग भैरव, भैरवेश्वर सर्वेश्वर हैं। १२३. असिताङ्ग भैरवाय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। १२४. भैरवेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। १२५. सर्वेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। सर्वेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल में दो शिव मन्दिर हैं। १२६. अन्तकेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। १२७. विश्वक्सेनेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं)। मृत्युञ्जय से पूर्व मृत्युञ्जय सड़क में श्रुतीश्वर हैं। १२८. श्रुतीश्वराय नमः। (म० नं० के० ५६/२३ में हैं, मु० मध्यमेश्वर)। श्रुतीश्वर से सटे हुए मन्दिर में हैं। १२९. रत्नेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५६/२३ में हैं)। रत्नेश्वर से पश्चिम सटे हुए हिमालयेश्वर हैं। १३०. हिमालयेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५३/४० में हैं, मु० मध्यमेश्वर)। रत्नेश्वर से सटे हुए पूर्व बगल के शंकर जी के मंदिर में हैं। १३१. सती देव्यै नमः। (म० नं० के० ४३/३२ में हैं, मु० हरतीर्थ)। १३२. सतीश्वराय नमः। (म० नं० के ४३/३२ में हैं)। सतीश्वर से पूर्व बगल में कृतीवासेश्वर हैं। कृतीवासेश्वर से पश्चिम बगल के शिवालय में हैं। १३३. कृतीवासेश्वराय नमः। (म० नं० के० ४६/२३ में हैं, मु०

हरतीरथ)। कृतीवासेश्वर से पूर्व बगल में हंसेश्वर हरतीर्थेश्वर हैं। १३४. हंसेश्वराय नमः। (मु० हरतीर्थ)। १३५. हरतीर्थेश्वराय नमः। (मु० हरतीर्थ)। १३६. ऋणहरेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५३/४७ में हैं, मु० मध्यमेश्वर)। ऋण हरेश्वर से पश्चिम दारा नगर नरहरिपुरा में जागेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल के गोस्वामी तुलसीदास जी के गुरुजी के मठ में नरहरीश्वर, जैगिषव्य गुहा है, नरहरि दासजी ने इसी मठ में काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास किया था। १३७. जैगीषव्यगुहायै नमः। (म० नं० जे० ६६/३१ में हैं, मु० नरहरिपुरा)। १३८. जैगीषवेश्वराय नमः। नं० जे० ६६/३१ में हैं, मु० जैगीमठ नरहरि पुरा)। १३९. नरहरीश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६६/३१ में हैं)। १४०. अग्निजागेश्वराय नमः। (म०नं० जे० ६६/४ में हैं, मु० नरहरिपुरा ईश्वरगंगी)। १४१. पार्वती देव्यै नमः। (म० नं० जे० ६६/४ में हैं)। १४२. चिन्तामणि विनायकाय नमः। (म० नं० जे० ६६/३१ में हैं)। जागेश्वर से उत्तर बगल में ईश्वरगङ्गी तीर्थ विशाल पक्का कुण्ड (पोखरा) है। इस तीर्थ का इतिहास निम्नांकित है– जब शंकर भगवान ने काशी की सृष्टि की उसी समय शंकर भगवान ने अपने त्रिशूल से खोद कर ईश्वर गङ्गी तीर्थ का निर्माण करके इस तीर्थ को वरदान दिया है। जो मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करके जागेश्वर के दर्शन करेंगे उन सब के जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट होंगे। उस दिन से स्नान, दर्शन करने वाले मनुष्यों का पुण्य उदय होगा, जैसे आज भी दुर्गाकुण्ड में प्रत्येक मंगलवार के दिन स्नान करके दुर्गा जी के दर्शन करते हैं, उसी प्रकार ईश्वरगङ्गी का भी विधान है। ईश्वरगङ्गी तीर्थ के मध्य भाग में और चारों कोने में स्रोत है, जल ठण्डा मीठा स्वादिष्ट है। ईश्वर गङ्गेश्वर पूर्व दक्षिण तट के कोने में हैं। १४३. ईश्वर गङ्गा तीर्थाय नमः। ईश्वरगङ्गेश्वराय नमः। (के० ६७/३८, मु० ईश्वरगङ्गी)। ईश्वर गङ्गेश्वर से पूर्व बगल में उर्वशीश्वर गली में हैं। १४४. उर्वशीश्वराय नमः। (मु० औसानगंज)। उर्वसीश्वर से उत्तर बागेश्वरी दुर्गा गली में दाहिनी तरफ सिध्देश्वर के मन्दिर के घेरे

में हैं। १४५. सिद्धेश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६/८५ में हैं, मु० वागीश्वरी जैतपुरा)। १४६. सिद्धगणेश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६/८५ में हैं)। १४७. वागीश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६/८५ में हैं)। १४८. सोमेश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६/८५ में हैं)। १४९. ज्वरहरेश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६/८५ में हैं)।

स्कन्द पुराण, काशी रहस्य, पद्मपुराण के अनुसार ज्वरहरेश्वर के दर्शन, पूजन करके स्नान कराकर निर्माल्य जल रोगी को पिलाने से कितना भी मियादि ज्वर (बुखार) हो जल पिलाते ही रोगी अच्छे हो जाते हैं।

१५०. वागेश्वरी गणेश्वराय नमः। (म० नं० जे० ६/३३ में हैं, मु० जैतपुरा)। वागेश्वरी देवी से पश्चिम नागकुँआ गली में कर्कोटनागेश्वर हैं। कर्कोटनागेश्वर तीर्थ नागकुण्डाय नमः। पहले इसी नागकुण्ड में नागपञ्चमी के दिन प्रातः स्नान, दर्शन करने वाले यात्रियों का विशाल मेला लगता था। सायंकाल विद्वानों का शास्त्रार्थ होता था।

१५२. कर्कोटनागेश्वराय नमः। (म० नं० जे० ३६/२०६ में हैं, मु० जैतपुरा)। नागकुँआ से उसी मार्ग से जैतपुरा थाना, जैतपुरा से उत्तर शैलपुत्री दुर्गा, वरुणा के तट पर शैली पुत्री के मन्दिर के अन्दर अनेक देव मन्दिर हैं। शैलपुत्री में नवरात्र भर दर्शनार्थियों का मेला लगता है। प्रथम दिन विशेष मेला रहता है। १५३. शैलपुत्री दुर्गा देव्यै नमः। (म० नं० ए० ४०/११ में हैं, मु० शैलपुत्री)। १५४. शैलेश्वराय नमः। (म० नं० ४०/११ में हैं)। १५५. मधुरेश्वराय नमः। (म० नं० ४०/११ में हैं, काशी में मथुराधाम शैलपुत्री में है)। १५६. हुण्डेश्वराय नमः। (म० नं० ए ४०/११ में हैं)। १५७. मुण्डेवराय नमः। (म० नं० ए ४०/११ में हैं)। १५८. प्रयागसंज्ञक शिवलिङ्गाय नमः। (म० नं० ए ४०/११ में हैं)। १५९. शान्तिकरी गौरी देव्यै नमः। (म० नं० ए ४०/११ में हैं)। शैलपुत्री से पूर्व लाटभैरव, कपाल मोचन तीर्थ है। तीर्थ विशाल पक्काकुण्ड है, कुण्ड में जल भरा रहता है। काशी खण्ड के ३१ अध्याय में भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। कपालमोचन

तीर्थ में स्नान करने वाले नर-नारियों की ब्रह्महत्या, गौहत्या, बाल हत्या तथा स्त्री हत्या के पाप नष्ट होते हैं। १६०. कपालमोचन लाट भैरव तीर्थाय नमः। १६१. कपाल मोचन लाट भैरव तीर्थाय नमः। (म० नं० ए १/१२३ में हैं, मु० लाट भैरव, राजघाट)। १६२. लाटभैरवाय नमः। (म० नं० ए १/१२३ में हैं)।

लाटभैरव से दक्षिण रेलवे लाइन गेट से जी० टी० रोड पार करके तेलिया गली होते हुए ऋणमोचनेश्वर के बगल में अंगारेश्वर हैं। १६३. ऋणमोचन तीर्थाय नमः। १६४. ऋणमोचनेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३१/१५९ में हैं, मु० तेलियागली हनुमान फाटक)। काशी खण्ड के अनुसार किसी कारण वश दूसरे से ऋण लेकर न दिया हो उस ऋण का प्रायश्चित्त ऋणमोचनेश्वर के दर्शन, पूजा करने से हो जाता है। प्रतिदिन प्रत्येक सोमवार को दर्शन करना चाहिए।

१६५. अङ्गारेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३१/१५९ में हैं)। अङ्गारेश्वर से दक्षिण हनुमान फाटक में हनुमान मन्दिर में सुमन्तेश्वर हैं। १६६. सुमन्तेश्वराय नमः। (ए० ३१/९१, मु० हनुमान फाटक)। १६७. सुमन्त हनुमतेश्वराय नमः।

१६८. सुमन्त हनुमते नमः। (तुलसी दास जी के मठ में हैं)। हनुमान फाटक से पश्चिम धनेश्वर मठ में धन्वन्तरी तीर्थ कुँआ के रूप में पश्चिम बगल में है।

१६९. धनवन्तरीश्वराय नमः। (म० नं० जे० ४/९१ में हैं, मु० पीलीकोठी, गोलगड्डा)। धनवन्तरीश्वर से उत्तर गोलगड्डा बस अड्डा से सटे हुए दक्षिण बगल के मठ में विश्वकर्मेश्वर, हलिसेश्वर हैं।

१७०. विश्वकर्मेश्वराय नमः। (म० नं० ए० ३४/१०६ मु० गोलगड्डा)। १७१. हलिसेश्वराय नमः। (म० नं० ए० ३४/१०६ में हैं)। हलिसेश्वर से पूर्व हनुमान फाटक जी० टी० रोड नौवा पोखरा होते हुए पापमोचन तीर्थ के पश्चिम तट पर शिवालय में पापमोचनेश्वर में हैं।

१७२. पापमोचन तीर्थाय नमः। स्कन्दपुराण में काशी रहस्य, लिङ्गपुराण में लिखा है। जो मनुष्य पाप मोचन तीर्थ में स्नान करके पापमोचनेश्वर के दर्शन एवं पूजन करता है उसके पाप को पापमोचनेश्वर हर लेते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप भी नष्ट होते हैं।

१७३. पापमोचनेश्वराय नमः। (म० नं० ए० ३४/ १६३ में हैं, मु० नौवा पोखरा)। नौवा पोखरा से उत्तर कोनिया घाट जाने वाली सड़क से बड़ी रेलवे लाइन के नीचे दाहिनी तरफ कृष्ण मन्दिर में कुन्तेश्वर हैं। १७४. कुन्तेश्वराय नमः। (मु० केनियाघाट)। कुन्तेश्वर से उत्तर बगल में रेलवे लाइन के पश्चिम बगल में वैतरणी तीर्थ विशाल कुण्ड है, भाद्रकृष्ण अमावस्या तिथि के दिन वैतरणी तीर्थ में स्नान करने से द्विजन्म के पाप नष्ट होते हैं। वैतरणी तीर्थ से सटे हुए पूर्व रेलवे लाइन के पूर्व बगल में वैतरणी तीर्थ विशाल कुण्ड है। इस वैतरणी तीर्थ में स्नान करने वाले मनुष्य कैसा भी महापापी हो वह भाद्रकृष्ण अमावस्या तिथि के दिन स्नान करने वाला व्यक्ति पापों से मुक्त हो जाता है। भाद्रकृष्ण अमावस्या तिथि के दिन पहले स्नान करने वाले यात्रियों का मेला लगता था। कुन्तेश्वर रामानन्द आश्रम, तोता दरी मठ होते हुए बसन्त कालेज में राजपुत्र विनायक हैं। राजपुत्र विनायक तीर्थ कुँआ के रूप में हैं। इस कुँआ के जल पीने वाले व्यक्ति के पेट सम्बन्धी रोग नष्ट होते हैं। १७५. राजपुत्रविनायक तीर्थाय नमः। १७६. राजपुत्रविनायकाय नमः। (म० नं० ए ३७/८८ में हैं, मु० बसन्त कालेज)। १७७. यव खर्व विनायकाय नमः। (म० नं० ए ३७/४८ में हैं, मु० बसन्त कालेज)। १७८. आदिकेशव वरुणा गङ्गा संगम। १७९. नक्षत्रेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/८८ में हैं)। १८०. वरुणागङ्गा संगम तीर्थाय नमः। १८१. पादोदक तीर्थाय नमः, आदिकेशवतीर्थाय नमः। १८२. आदिकेशव विष्णवे नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं, मु० आदिकेशव बसन्त कालेज)। १८३. आदिकेशवेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। स्कन्दपुराण में वेदव्यास जी लिखते

हैं, आदिकेशवेश्वर को विष्णु भगवान ने अपने कर कमलों से स्थापित किया है। यह सर्वजनिक मन्दिर है। १८४. ज्ञानकेशवाय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं। १८५. वरुणा-गङ्गा-संगमेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। संगमेश्वर से सटे हुए पूर्व बगल में वेदेश्वर हैं। १८६. वेदेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। १८७. केशवादित्याय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। आदिकेशवेश्वर के मन्दिर से सटे हुए उत्तर नीचे विष्णुमन्दिर में वामन भगवान हैं। वामन द्वादसी के दिन प्रातः स्नान करके वामन भगवान के दर्शन करने के लिए हजारों नर-नारी आते हैं। आदिकेशव से सटे हुए दक्षिण बगल के गणेश जी के मंदिर में हैं। (आदिकेश्व काशी का वृन्दावन है)। १८९. वृन्दावनेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। १९०. नारदेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। १९१. वशिष्टेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। १९२. वरुणेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३७/५१ में हैं)। आदिकेशव के नित्य दर्शन यात्रा पूर्ण हुई।

विवरण- काशी में आदिकेशव प्रवेश द्वार है और सार्वजनिक मन्दिर है। आदिकेशव से दक्षिण बसन्त कालेज जी० टी० रोड के पूर्व पटरी से गङ्गा किनारे से प्रह्लादघाट नया महादेव मुहल्ले में वरदविनायक हैं। १९३. वरदविनायकाय नमः। (म० नं० ए १३/१२ में हैं, मु० नया महादेव प्रह्लाद घाट) १९४. कालिकादेव्यै नमः। (म० नं० ए १३/१२ से सटे हुए पूर्व बगल में कालिका देवी हैं। कालिका देवी से पूर्व गङ्गा किनारे अग्नि अखाड़ा में जाने वाली गली में स्वरनीलेश्वर हैं। १९५. स्वरनीलेश्वराय नमः। (म० नं० ए० १२/२६ में हैं, मु० नया महादेव)। स्वरनीलेश्वर से दक्षिण प्रह्लाद घाट। १९६. प्रह्लादभक्तराजाय नमः। (म० नं० ए १०/८२ में हैं, मु० प्रह्लादघाट)। १९७. विदारनृसिंहाय नमः। (म० नं० ए १०/८२ में हैं)। १९८. प्रह्लादेश्वराय नमः। (म० नं० ए १०/ ८० में हैं, मु० प्रह्लादघाट)। १९९. प्रह्लाद विनायकाय नमः। (म० नं० ए १०/८० में हैं)। २००. प्रह्लाद केशवाय नमः। (म० नं० १०/८० में हैं)। २०१ दमनेश्वराय नमः। (म०

नं० १०/८० में हैं)। २०२. पिचिंडिला विनायकाय नमः। (म० नं० ए १०/८ में हैं)। २०३. शिवेश्वराय नमः। (म० नं. १०/८० के दक्षिण बगल के शिवालय में हैं)। प्रह्लादघाट के ऊपर तुलसी हनुमान जी के दर्शन करके चलें। प्रह्लाद घाट से दक्षिण पिलपिला तीर्थ, कामेश्वर के बगल से मच्छोदरी, कोयला बाजार होते हुए यात्री ओंकारेश्वर जाते हैं। २०४. ओंकारेश्वर विनायकाय नमः। (म० नं० ए ३२/२३ में हैं)। २०५. ओंकारेश्वराय नमः। (म० नं० ए ३२/२३ में हैं, मु० छितवनपुरा) ओंकारेश्वर के दर्शन करने के पश्चात् ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा पूर्ण होती है। साधु-महात्माओं को जलपान देकर संकल्प छोड़ें, संकल्प छोड़ाने वाले ब्राह्मण को यथाशक्ति सीधा-दक्षिणा दे करके यात्री धीरे-धीरे अपने घर जाते हैं। ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा करने का प्रत्यक्ष फल यह है, जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट होते हैं। घर में स्थिर लक्ष्मी, संपत्ति, जगत में प्रतिष्ठा और जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त होती है। प्रणव ज्ञान स्वरूप है, प्रणव का स्मरण करने मात्र से ज्ञान का उदय होता है। धर्मशास्त्रों में सर्वत्र प्रणव का वर्णन प्राप्त होता है। माण्डूकोपनिषद् में ओंकार का विस्तार से वर्णन किया गया है, माण्डूकोपनिषद् का अवलोकन करें। पूर्व आचार्य लिखते हैं, ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा ११ बार करने वाला व्यक्ति जन्म-मृत्यु रूप चक्कर से छूट जाता है।

ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा पूर्ण हुई। हरिओम् तत्सत् शिवार्पण मस्तु।

द्वितीय संस्करण काशी दर्शन में सप्रमाण इतिहास और दर्शन, पूजन का प्रत्यक्ष फल लिखा गया है।

काशी में सिद्ध (कूप) कुण्ड स्नान यात्रा

श्रावण कृष्ण अमावस्या तिथि के दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री साथ में लेकर यात्रा करें। काशी विश्वनाथ जी से दक्षिण लोलार्क कुण्ड में ही कर्दमेश्वर तीर्थ कूप है।

कर्दमेश्वरसिद्ध कुण्डाय नमः। कर्दमेश्वराय नमः। (मु० लोलार्क कुण्ड)।

भाद्रशुक्ल षष्ठी तिथि के दिन भारत और नेपाल के कोने-कोने से लोलार्क कुण्ड में स्नान करने आते हैं यहाँ स्नान दर्शन करने से कुष्ठ आदि चर्म रोग नष्ट होते हैं। पुत्र, पौत्र एवं परपौत्र की प्राप्ति के लिये प्रत्येक रविवार के दिन हजारों नर-नारी आकर स्नान करते हैं। तुलसीघाट से उत्तर बड़ादेव हौजकटोरा मुहल्ले में त्र्यंबकेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल के छोटे मन्दिर में गोकर्णेश्वर हैं। गोकर्णेश्वर के बगल में गोकर्ण (कूप) है। गोकर्णेश्वराय नमः।

गोकर्णेश्वर सिद्धकुण्डाय नमः (म० नं० डी० ३८/२१, मु० हौज कटोरा)। त्र्यम्बकेश्वर के दर्शन करने के लिये सोमवार, प्रदोष, चतुर्दशी के दिन हजारों नर, नारी दर्शन करने आते हैं, हौजकटोरा से पूर्व कालिका गली में शुक्रेश्वर के बगल में है।

शुक्रेश्वराय नमः। शुक्रेश्वर (शुक्रकूप) सिद्धकुण्डाय नमः। प्रत्येक शुक्रवार के दिन प्रातः बहुत यात्री शुक्रकूप में स्नान करके दर्शन करते हैं। इनके दर्शन से (दैवी) शक्ति बढ़ती है, मनोरथ पूर्ण होते हैं। कालिका गली से उत्तर अन्नपूर्णा भवानी, विश्वनाथ आदि के दर्शन करके पूर्व धर्मेश्वर के बगल में धर्मकूप है।

धर्मेश्वराय नमः। धर्मेश्वर सिद्ध धर्म कुण्डाय नमः। धर्म कूप में स्नान करने और इसके जल पीने से पाप क्षीण होते हैं। प्रतिदिन और प्रत्येक सोमवार, अष्टमी, प्रदोष, चतुर्दशी तिथि के दिन धर्मेश्वर का दर्शन करना चाहिए। धर्मेश्वर से उत्तर सिद्धेश्वरी के चहार दीवारी के अन्दर चन्द्रकूप के नाम से प्रसिद्ध है। चन्द्रेश्वराय नमः। चन्द्रेश्वर (चन्द्र कूप) सिद्ध कुण्डाय नमः। (म० नं० सी० के० ७/१२४ में हैं, मो० सिद्धेश्वरी)। चन्द्रकूप के जल में स्नान या मार्जन करके प्रत्येक अष्टमी के दिन दशविद्याओं में मातङ्गी हैं, दर्शन करें। चन्द्र कूप के जल पीने से विद्या, बुद्धि की प्राप्ति होती है। प्रत्येक सोमवार, चतुर्दशी के दिन चन्द्रेश्वर का दर्शन करें। चन्द्रेश्वर के बगल में भद्र कालीजी के मन्दिर में कलशकूप है यहाँ स्नान

करके कलशेश्वर का दर्शन करें।

कलशेश्वराय नमः। कलश (कूप) सिद्ध कुण्डाय नमः। (म० नं० सी० के० ७/१०० के बगल में है)। सिद्धेश्वरी से उत्तर सूतटोला चौखम्बा दण्डपाणि जी के मन्दिर में काल कूप है।

दण्डपाणिभ्यो नमः, कालेश्वराय नमः।

काल (कूप) सिद्धकुण्डाय नमः (म० नं० के० ३१/४८ में है, मु० दण्डपाणि गली, कालभैरव)। कालकूप में प्रत्येक चतुर्दशी के दिन स्नान करके कालेश्वर (काल भैरव) के दर्शन करने वाले व्यक्ति को काल का भी भय नहीं होता। कालभैरव जी के दर्शन करके काल भैरव से उत्तर दारानगर महाकालेश्वर धन्वन्तरी सिद्धकुण्ड है। इस सिद्ध कुण्ड का जल भारत के कोने-कोने में जाता था। रोगी जल पीकर स्वस्थ होते थे। आज भी हजारों नर-नारी जल पीकर स्वस्थ होते हैं, प्रतिदिन प्रातः महामृत्युञ्जय आदि के दर्शन पूजन करने और जल पीने के लिये हजारों यात्री आते हैं।

महाकालेश्वराय नमः। (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० दारानगर)। अष्ट सिद्ध कुण्ड में स्नान, दर्शन यात्रा करने वाले व्यक्ति के पाप क्षीण होते हैं। इस यात्रा के करने से खून, पानी की कमी की पूर्ति होती है, शरीर, स्वस्थ और निरोग रहता है। अष्ट सिद्ध कुण्ड यात्रा प्रत्येक अमावस्या तिथि के दिन करनी चाहिए।

विश्वनाथजी से पश्चिम गोदौलिया, भेलूपुर जल निगम सुदामा पुरी होते हुये बड़ी गैबी में स्नान दर्शन करके धन्वन्तरी सिद्ध कुण्ड का जल पीते हैं, प्रातः काल जल पीने वालों का ताँता लगा रहता है। सृष्टि के प्रारम्भ में धन्वन्तरी वैद्य जी अवतार लेते ही ब्रह्मा जी के आज्ञा से धन्वन्तरी वैद्य जी काशी आये। मणिकर्णिका घाट में स्नान करके विश्वनाथ जी के दर्शन कर प्रंचक्रोशी आदि यात्रा करने के पश्चात् बड़ी गैबी में जाकर शिवलिंग का अपने कर कमलों से स्थापना किये। दर्शन, अर्चन, उपासना

करते हुए विश्वनाथ भगवान की तपस्या करने लगे। छः महीने में ही विश्वनाथ जी तपस्या से प्रसन्न होकर भवानी सहित प्रकट हो गये। विश्वनाथ जी के सामने खड़े होने पर भी धन्वन्तरी जी की समाधि नहीं खुली। शिवजी ने अपने हाथ उनके सिर पर रखा। उसी समय उनकी समाधि खुली। वैद्य जी हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे। विश्वनाथ जी बोले–वर माँगो! धन्वन्तरी जी ने तीन वरदान माँगे। प्रथम, इस कुण्ड का जल जो मनुष्य पियेगा उसका रोग नष्ट हो। दूसरा, मुझे ब्रह्म विद्या प्रदान कर आयुर्वेद ग्रन्थ लिखने की आज्ञा दीजिये। तीसरा, पृथ्वी पर उत्पन्न जड़ी-बूटियों का ज्ञान हो। तथास्तु कहकर विश्वनाथ भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। प्रत्येक चतुर्दशी तिथि को जो नर-नारी वड़ी गैबी में जाकर मार्जन कर धन्वन्तरी को गंगा जल चढ़ाकर दर्शन पूजन करने के पश्चात् जलपान करता है उसके रोग नष्ट होते हैं। स्कन्द पुराण के अनुसार विश्वनाथ जी से पश्चिम धन्वन्तरीश्वर का वर्णन है। उसी के अनुसार लिखा गया है। धन्वन्तरि महा सिद्ध कुण्ड का जल डाक्टर-वैद्य रोगी को पिलाते हैं।

भारत के कोने-कोने और नेपाल में पहले जल जाता था। रोगी जल पीकर स्वस्थ होते हैं। वैशाख कृष्ण त्रयोदशी, प्रदोष के दिन से चतुर्दशी अमावस्या तक वार्षिक उत्सव होता है। प्रातः स्नान दर्शन के पश्चात् गीता, रामायण, श्रीमद्भागवत, उपनिषद् आदि का पाठ होते हैं, सायं सात बजे से प्रवचन होता था।

काशी में एक तीर्थी यात्रा से सप्त तीर्थी यात्रा

वैशाख कृष्ण प्रतिपदा के दिन पूजा की सामग्री साथ में लेकर प्रातः मणिकर्णिका घाट में स्नान करके विश्वनाथ जी के दर्शन करते हैं। यह एक तीर्थी यात्रा है। यह यात्रा करने से काशी वास में विघ्न नहीं आता और आवास-भोजन की भी स्वतः व्यवस्था हो जाती है।

मणिकर्णिका तीर्थाय नमः। काशी विश्वनाथाय नमः।

द्वितिर्थी यात्रा वैशाख कृष्ण द्वितीया तिथि के दिन स्नान दर्शन यात्रा

करें।

प्रातः पञ्च नदे स्नात्वा मध्याह्ने मणिकर्णिकाम्।

(काशी खण्ड अ० ८४)

प्रातः पञ्चगङ्गा में स्नान करके मध्याह्न में मणिकर्णिका घाट में स्नान करना चाहिए।

वैशाख कृष्ण तृतीया तिथि के दिन त्रितीर्थी यात्रा करने के पूर्व स्नान, दर्शन यात्रा काशी में श्रेष्ठ तीन तीर्थ हैं। प्रातः प्रयागराजघाट में स्नान करके पंचगङ्गा में स्नान कर मध्याह्न काल में पुष्करणी मणिकर्णिका कुण्ड में स्नान करने वाला व्यक्ति सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता है। वैशाख कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन चतुर्थी तीर्थी यात्रा (काशी खण्ड अ० ७५) श्लोक ४७ से ५५ के अनुसार प्रथम पिलपिला तीर्थ में स्नान करके त्रिलोचनेश्वर के दर्शन कर पञ्चगङ्गा में स्नान के पश्चात् मणिकर्णिका ब्रह्महृद् विष्णुपादुका के सामने गङ्गा जी में स्नान करें। ज्ञानवापी तीर्थ इस समय कुँवा के रूप में है। स्नान करके विश्वनाथ जी का दर्शन करने के पश्चात् चतुर्थी तीर्थी यात्रा करने से पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है। चतुर्थी तीर्थी यात्रा पूर्ण हुई।

पञ्चतीर्थी यात्रा काशी खण्ड श्लोक १०८ से ११४ के अनुसार अस्सीघाट में स्नान करके, अस्सी संगमेश्वर के दर्शन कर, दशाश्वमेध घाट में स्नान कर, आदिकेशव तीर्थ में स्नान करके, आदिकेशव जी के दर्शन कर, पञ्चगङ्गा में स्नान करके विश्वनाथ जी का दर्शन करें। पञ्चतीर्थी यात्रा करने से स्त्री, पुरुष सत्संग, स्पर्शास्पर्श दोषों का प्रायश्चित्त हो जाता है। वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया तिथि के दिन यह यात्रा हजारों नर, नारी प्रतिवर्ष करते हैं। पञ्चतीर्थी यात्रा पूर्ण हुई।

"काशी में षट् तीर्थी यात्रा" काशी खण्ड अ० श्लोक ७५ से ७६ के अनुसार षट् तीर्थी यात्रा वैशाख कृष्ण षष्ठि तिथि के दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री लेकर अस्सी घाट में स्नान करके

अस्सी संगमेश्वर का दर्शन कर किञ्चित् अन्न मिष्ठान्न फल आदि का दान करके ब्रह्मसरोवर दशाश्वमेध घाट में स्नान कर, ब्रह्मेश्वर बगल में हैं, दर्शन करें। पादोदक तीर्थ आदिकेशव घाट में स्नान, आदिकेशव विष्णु जी का दर्शन करके धर्म सरोवर पञ्चगङ्गा में स्नान करके चलें। इसके बाद मणिकर्णिका घाट में स्नान करते हैं। ज्ञानवापी में जाकर स्नान या मार्जन करके विश्वनाथ जी के दर्शन करने के पश्चात् षट्तीर्थी यात्रापूर्ण होती है। यह वार्षिक यात्रा करने वाला व्यक्ति पुनः माता के गर्भ में नहीं जाता है।

"सप्तमी तीर्थी यात्रा" शिव रहस्य के अनुसार है। वैशाख कृष्ण सप्तमी तिथि के दिन प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर यह सप्त तीर्थी यात्रा उत्तर में रहने वाले आदि केशवघाट संगम में स्नान करके यात्रा प्रारम्भ करें। दक्षिण में रहने वाले यात्री अस्सीघाट से स्नान कर प्रारम्भ करें। अस्सीतीर्थाय नमः। अस्सी घाट में स्नान करके केदारघाट में जाकर केदारेश्वर तीर्थाय नमः। केदार घाट में स्नान करें। स्नान करके केदारेश्वर का दर्शन करें। प्रयाग राजघाट में स्नान करके पादोदक आदि केशव तीर्थ में स्नान करके त्रिलोचन घाट में स्नान करें। पञ्चगङ्गा में स्नान करने के पश्चात् मणिकर्णिका तीर्थ में स्नान करके विश्वनाथ जी के दर्शन करने के पश्चात् सप्ततीर्थी यात्रा पूर्ण होती है। पूर्व आचार्य शिव प्रसाद जी लिखते हैं, सप्त तीर्थी यात्रा करने वाले व्यक्ति के सात जन्म के पाप नष्ट होते हैं।

एकादश महारुद्र यात्रा

वैशाख कृष्ण त्रयोदशी प्रदोष के दिन एकादश रुद्र यात्रा प्रातः नित्यकर्म से निवृत होकर पूजा की सामग्री, बिल्वपत्र, पुष्प, ऋतुफल, गङ्गा जल एवं भस्म, रुद्राक्ष का दाना, दूब तथा अक्षत, वस्त्र, धूप, नैवेद्य इत्यादि पूजा की सामग्री साथ में लेकर विश्वनाथ जी से दक्षिण दुर्गाजी के पश्चिम फाटक में तिलपर्णेश्वर हैं। दुर्गा जी में दर्शन-पूजा करके संकल्प लेकर दाहिनेवर्त से यात्रा प्रारम्भ करें।

१. तिलपर्णेश्वराय नमः (म० नं० बी० २७/२ में हैं, मु० दुर्गाकुण्ड)। तिलपर्णेश्वर के दर्शन पूजा करने वाले व्यक्ति को एक तिल के दाना के बराबर पुण्य बढ़ता है। आश्विन कृष्ण एकादशी तिथी के दिन दूर्गाकुण्ड में सायं आठ बजे नाग-नथैया दर्शन मेला लगता है। मंगल गान करते हुए चलें। दुर्गाजी से उत्तर रथयात्रा चौराहा से पश्चिम बगल के शिवपुरवा में काशी में सबसे ऊँचा लाल मन्दिर है।

२. त्रिपुरान्तेकेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ५९/६५ में हैं, मु० शिवपुरवा सिगरा)। त्रिपुरान्तकेश्वर का दर्शन-पूजा करने मात्र से शिवजी की भक्ति प्राप्त होती है। सिगरा से पूर्व राजा दरवाजा के पास में भार भूतेश्वर हैं।

३. भारभूतेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ५४/४४, मु० मच्छरहट्टा फाटक)। राजादरवाजा से उत्तर काशीपुरा मुहल्ले में बेतिया मन्दिर में अषांढ़ेश्वर हैं।

४. अषाढ़ेश्वराय नमः (म० नं० के० ६३/५३ में हैं, मु० काशीपुरा बेतिया शिवाला में)। काशी पुरा से उत्तर ईश्वर गङ्गी के पास जागेश्वर मठ में चिन्तामणि विनायक के बगल में विशाल शिव लिङ्ग है।

अग्नीश्वराय नमः। (म० नं० के० ६६/४ में है, मु० नरहरीपुरा, ईश्वरगङ्गी)। ईश्वरगङ्गी तीर्थ के दक्षिण पूर्व के कोने से पूर्व जाने वाली गली में उर्वशीश्वर हैं।

उर्वशीश्वराय नमः। (मु० औसानगंज), उर्वशीश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले नर, नारी के स्थूल पाप क्षीण होते हैं और दूसरे जन्म में सुन्दर शरीर तथा विद्या की प्राप्ति होती है। औसानगंज से दक्षिण खोवा बाजार में ज्ञान विनायक के मन्दिर में लाङ्गलीश्वर हैं।

७. लाङ्गलीश्वराय नमः (म० नं० सी० के २८/४, मु० खोवाबाजार चौक)। खोवा बाजार से नेपाली खपड़ा, सरस्वती फाटक होते हुए कालिकागली चौमुहानी में बाँये तरफ के देवालय में हैं।

८. मदालेश्वराय नमः। (म० नं० डी० ५/१३३ में हैं)। मदालेश्वर

के दर्शन, पूजा, उपासना करने वाले नर, नारियों को ऐश्वर्य तथा शंकर जी की भक्ति प्राप्त होती है। कालिका गली साक्षी विनायक मुहल्ले में धनेश्वर के बगल में कलिप्रिय विनायक के मन्दिर में मनः प्रकामेश्वर हैं।

९. मनः प्रकामेश्वराय नमः। (म० नं० डी० १०/५० में हैं, मु० साक्षी विनायक) १०. धनेश्वराय नमः। (म० नं० डी० १०/५० से सटे हुए पश्चिम बगल के शिवालय में हैं। धनेश्वर के दर्शन पूजा करने वाले व्यक्ति के घर में धन-धान्य और परिवार से घर सदा भरा रहता है। धनतेरस के दिन धनेश्वर के दर्शन करने वाले व्यक्ति के घर में लक्ष्मी का निवास होता है, तथा धन की वृद्धि होती है। साक्षी विनायक से उत्तर बगल में प्रीतिकेश्वर हैं। ११. प्रीतिकेश्वराय नमः। (म० नं० डी० १०/८ में हैं, मु० साक्षी विनायक)। ढुण्ढिराज जी के पास द्वारविनायक के सटे हुए उत्तर बगल के शिव मंदिर में नकुलेश्वर हैं।

१२. नकुलेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/२७, मु० सावित्री फाटक)। नकुलेश्वर के दर्शन करने से द्रव्य, विद्या, भक्ति की वृद्धि होती है। अष्ट शिव लिङ्ग दर्शन यात्रा करने से आठ प्रकार के मन, वाणी, शरीर से जो पाप होते हैं उन सभी पापों का प्रायश्चित्त होता है।

काशी में षोडश विष्णु दर्शन पूजा यात्रा

काशीखण्ड अध्याय १०० श्लोक ९८ में, अ० ६१ श्लोक २०७ से २०९ में, अ० ९८ श्लोक ३१ में, अ० ७५ श्लोक ६७ से ७० तक वर्णन है।

विश्वनाथ नित्य दर्शन यात्रा करने के पश्चात् दाहिनेवर्त से यात्रा प्रारम्भ करें। पूजा की सामग्री, गङ्गाजल, तुलसीदल, मालपूवा, अक्षत, श्रीखण्ड चन्दन, माला, द्रव्य, विल्वपत्र, ऋतुफल, दूब, पुष्प, धूप, दीप, वस्त्र, जलपात्र इत्यादि साथ में लेकर महाविष्णु के दर्शन पूजा करने के पश्चात् संकल्प लेकर यात्रा प्रारम्भ करें।

१. महाविष्णवे नमः (म० नं० डी० ७/१७ में हैं, मु० अन्नपूर्णा गली)।

इस यात्रा से महाविष्णु जी की भक्ति प्राप्त होती है। विष्णु लक्ष्मी नारायण के नाम से प्रसिद्ध हैं। २. ज्ञानमाधवाय नमः। (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, ज्ञानमाधव के दर्शन से ऐश्वर्य तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है। विश्वनाथ जी से दक्षिण शूलटङ्केश्वर से ऊपर राम मन्दिर के पीछे वाराहेश्वर के बगल में प्रयाग माधव हैं।

३. प्रयागमाधव विष्णवे नमः। (म० नं० डी० १७/१११ में हैं, मु० प्रयागराज घाट)। प्रयाग माधव जी के दर्शन पूजा करने वाले व्यक्ति को भक्ति, ज्ञान वैराग्य की प्राप्ति होती है। प्रयागराज घाट से उत्तर मीरघाट में आशापूर्ण हनुमान जी की मूर्ति से सटे हुए दक्षिण बगल में श्वेतमाधव हैं।

४. श्वेतमाधव विष्णवे नमः। (म० नं० डी० ३/७९ में है, मु० मीरघाट)। श्वेत माधव के दर्शन उपासना से घर में अन्न जल भरा रहता है। मीरघाट के उत्तर गङ्गाकेशव हैं।

५. गङ्गाकेशवाय नमः (म० नं० डी० १/६६ में हैं, मु० ललिताघाट) गङ्गा केशव के दर्शन, अर्चना करने वाले नर, नारियों को विष्णु भगवान और गङ्गा जी की अनन्य भक्ति प्राप्ति होती है। ललिता घाट से ऊपर वृहस्पतीश्वर के बगल में गङ्गाजी के मन्दिर में वीरमाधव हैं।

६. वीरमाधव विष्णवे नमः। (म० नं० सी० के० ७/३० में हैं, मु० सिन्धियाघाट)। वीरमाधव जी के दर्शन से सूर-वीर तथा विष्णु भगवान के भक्त पुत्र, पौत्र उत्पन्न होते हैं। सिन्धियाघाट से उत्तर बगल में कृष्णेश्वर हैं। कृष्णेश्वराय नमः। कृष्णाय नमः। (म० नं० सी० के० ७/१६१ के सामने है, मु० संकटा घाट)। जन्माष्टमी के दिन और प्रत्येक अष्टमी के दिन कृष्णेश्वर के दर्शन करने वाले नर-नारियों को कृष्णजी की भक्ति प्राप्त होती है। संकटा जी से उत्तर सूत टोला चौखम्बा होते हुए सन्तानेश्वर के मन्दिर में कालमाधव हैं।

७. कालमाधवाय नमः। (म० नं० के० ३४/४ में हैं, मु० चौखम्बा

सट्टी)। कालमाधव के दर्शन उपासना करने वाले भक्तों को काल का भी भय नहीं रहता, उसकी विष्णु भगवान के गण (दूत) रक्षा करते हैं। चौखम्बा सट्टी से पूर्व मंगला गौरी मुहल्ला में गभस्तीश्वर हैं। गभस्तीश्वर से सटे हुए उत्तर बगल में भृगुकेशव विष्णु पश्चिमाभिमुख हैं।

८. भृगुकेशवाय नमः। (म० नं० ए २४/३४/ में हैं, मु० मङ्गला गौरी)। भृगुकेशवजी के दर्शन करने वाले भक्तों को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। मंगला गौरी से उत्तर में विन्दुमाधव स्थित हैं।

९. विन्दुमाधव विष्णवे नमः। (म० नं० के० २२/३३ में हैं, मु० पञ्चगङ्गा)। विन्दुमाधव विष्णु भगवान के दर्शन करने वाले नर, नारियों को लक्ष्मी, विष्णु और शंकर जी क़ी भक्ति प्राप्त होती है और भक्तों को निर्विघ्न काशी वास, आवास, भोजन आदि की व्यवस्था होती है। ब्रह्माघाट के ऊपर राजमन्दिर मुहल्ले में लक्ष्मीनृसिंह हनुमान मन्दिर में पूर्वाभिमुख हैं।

१०. लक्ष्मी नृसिंह विष्णवे नमः। (म० नं० के० २०/१५९ में हैं, मु० राजमन्दिर)। लक्ष्मी नृसिंह विष्णु के दर्शन करने वाले स्त्री-पुरुषों के घर में विष्णु सहित लक्ष्मी जी निवास करती हैं। पञ्चगङ्गा से उत्तर लाल घाट के ऊपर गौरीशंकर के मन्दिर में गोपी गोविन्द स्थित हैं। ११. गोपी गोविन्द के दर्शन करने मात्र से गोविन्द की भक्ति प्राप्त होती है। लालघाट से उत्तर बद्री नारायण घाट के ऊपर बदरी नारायण के बगल में है। बद्री नारायणाय नमः। १२. नर-नारायणाय नमः (म० नं० ए १/७२ में है, मु० बदरीनारायण घाट)। नर-नारायण के दर्शन पूजा, उपासना करने वाला व्यक्ति नर से नारायण हो जाता है। बदरीनारायण घाट से उत्तर त्रिलोचनेश्वर के मन्दिर में त्रिलोचन सभा में त्रिविक्रम विष्णु पूर्वाभिमुख हैं। १३. त्रिविक्रम विष्णवे नमः। (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचन घाट)। त्रिविक्रम विष्णु के दर्शन करने मात्र से तीन प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। त्रिलोचन से उत्तर प्रह्लादघाट के ऊपर प्रह्लादेश्वर के मन्दिर में प्रह्लादकेशव हैं। १४. प्रह्लादकेशवाय नमः। (म० नं० ए १०/८० में है, मु० प्रह्लाद घाट)।

प्रह्लादकेशव जी का दर्शन जो स्त्री, पुरुष करते हैं उनको धैर्य, स्थिरता, सहन शक्ति प्राप्त होती है। प्रह्लाद केशव से ऊपर भक्त प्रह्लाद के मन्दिर में नृसिंह हैं।

१५. भक्त प्रह्लाद नृसिंहाय नमः। (म० नं० ए १०/८२ में है, मु० प्रहलाद घाट)। नृसिंह विष्णु के दर्शन, पूजा करने वाले व्यक्ति को अपने अपने इष्टदेव की अनन्य भक्ति प्राप्त होती है। प्रह्लाद से उत्तर चौमुहानी में आदि केशव हैं। १६. क्षीरसागर आदि केशव विष्णवे नमः (म० नं० ३७/५१, मु० आदिकेशव बसन्त कालेज)। आदिकेशव विष्णु भगवान के दर्शन करने मात्र से घर में मंगलमय कार्य होते हैं, और धन-धान्य से घर पूर्ण होता है।

भारत के आधुनिक कृषि विज्ञानियों को सावधान किया जाता है, एक सौ वर्ष पूर्व जो भारत का कृषि विज्ञान था उस को विकसित करें और उसी कृषि विज्ञान का विश्व में प्रचार करें, चूँकि तृतीय विश्व युद्ध के पश्चात् आधुनिक कृषि विज्ञान समाप्त हो जायेगा। आधुनिक कृषिविज्ञान की खाद आदि सामग्री उपलब्ध नहीं होगी। बिजली, कल-कारखाना यातायात सब बन्द हो जायेगा। यदि भारत धर्म की ओर झुक जाय तो बच सकता है। विश्व के किसानों से निवेदन करते हैं, आधे खेत में प्राचीन पद्धति से खेती करें। धर्म निरपेक्षता की अवधि समाप्त हो गई है। प्रत्येक प्रान्त में धर्म एवं जाति को लेकर संघर्ष हो रहा है।

भविष्यवाणी

भारत में तृतीय युद्ध के पश्चात् मनुस्मृति के आज्ञानुसार पुनः राज्य परम्परा चलेगी जो व्यक्ति शंकर जी का अनन्य भक्त होगा वही भारत का राजा बनेगा।

जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हो कर अपने बालकों को वेद, व्याकरण, ज्योतिष, ग्रहशान्ति, दुर्गा सप्त शती, रुद्री नहीं पढ़ाता है। रुद्री, ग्रहशान्ति, दुर्गासप्तशती आदि उपासना के लिये पढ़ना जरूरी है क्योंकि उपासना करने

वाले व्यक्ति के घर में धन, सुख, शान्ति स्वतः आ जाती है। उपासना करने वाला व्यक्ति विश्व का कल्याण कर सकता है। जो ब्राह्मण संध्यावन्दन नहीं करता उसको यज्ञ में वरण नहीं करना चाहिए।

सामाजिक सम्मेलन

वेद और पुराणों में लिखा है कि कलियुग में सामाजिक यज्ञ, कीर्तन तथा वेद, पुराण, उपनिषद् एवं श्रीमद्भागवत, गीता, रामायण आदि के विशाल सम्मेलन करना चाहिए। जिनको अपने धर्म का ज्ञान नहीं है, जो अपने स्वकर्म को नहीं जानते हैं ऐसे अनपढ़ अज्ञानी मनुष्यों के लिये सत्सङ्ग आवश्यक है, जिसने जीवन में तपसी, साधक, सिद्ध, सन्त तथा विद्वानों का दर्शन नहीं किया है वह व्यक्ति कठोर से कठोर हृदय वाला होने पर भी यज्ञ, कीर्तन, सम्मेलन में जाकर दर्शन करते ही उस का मन पिघल जाता है। सत्सङ्ग में किसी न किसी वेश में सिद्ध सन्त, महात्मा, पितर, देवता सब आते हैं। उनका दर्शन होते ही वह गुमराह व्यक्ति अपने धर्म के अनुसार मुख्य धारा में सम्मिलित हो जाता है। उस दिन से उपासना करना प्रारम्भ कर देता है। वह दृश्य देखते ही उसमें जन्म-जन्मान्तर के धार्मिक संस्कार जागृत होते हैं। वह स्त्री, पुरुष इसी जीवन में धर्म, अर्थ एवं काम, मोक्ष- चारो पदार्थ प्राप्त कर लेता है।

प्रत्येक मनुष्य को वर्णाश्रम के अनुसार चलना चाहिए। अपौरुषेय वेद ने कहा है, कि वर्ण, आश्रम प्रकृति के अनुसार बना है। प्रकृति को जैसे कोई भी मनुष्य नष्ट नहीं कर सकता है। जो व्यक्ति नष्ट करने जाता है वह स्वयं समाप्त हो जाता है। काशी की विशेष महत्ता तो यह है कि काशी में रात्रि ११ बजे तक सभी प्राणियों को भोजन स्वतः मिलता है। स्कन्द पुराण में लिखा है, सभी प्राणियों के भोजन करने के पश्चात् विश्वनाथ जी भोजन करते हैं और काशी में कभी अकाल नहीं पड़ता तथा कोई भी जीव भूखा नहीं रहता। कोई-कोई साधक हठ करते हैं 'मैं भवानी-अन्नपूर्णा जब तक भोजन स्वयं आकर नहीं करायेंगी तब तक भोजन नहीं करूँगा'

ऐसा कहते हैं। भवानी अन्नपूर्णा रात्रि ११ बजे से १२ बजे के अन्दर किसी भेष में भोजन लाकर देती हैं। एक दृष्टान्त से समझें- काठमाण्डू (नेपाल) में शिवानन्द नाम के स्वामी जी पशुपतिनाथ मृगस्थली से आकर सन् १९४९ में काशी में नीलकण्ठेश्वर के बगल के बरामदे में रहते थे। प्रात: विश्वनाथ की नित्य यात्रा करने के पश्चात् यहीं आकर रहते थे। त्रिकाल संध्या करते थे। कहते थे जब तक भवानी भोजन नहीं करायेंगी तब तक मैं और का दिया हुआ भोजन नही करूँगा। दूसरे दिन रात्रि ११ बजे सात वर्ष की कन्या के रूप में एक थाली में मालपूवा, खीर और विभिन्न प्रकार की मिठाई लेकर कान के पास जाकर बोली– 'गुरु जी उठिये, भोजन करिये!' स्वामी जी कम्बल से मुँह तोप कर सो रहे थे। सोते हुए बोले- 'मैं तो भवानी जी का दिया हुआ भोजन करूँगा।' 'आप उठिये भोजन करिये मैं भवानी अन्नपूर्णा हूँ।' स्वामी जी ने मुँह खोलकर देखा सात वर्ष की सुन्दर कन्या दोनों हाथ में थाली पकड़ी हुई भोजन लेकर खड़ी है। स्वामी जी बोले– 'मुझे साक्षात् दर्शन दो तब भोजन करूँगा।' भोजन की थाली को स्वामी जी के आगे रखकर भवानी जी साक्षात् दर्शन देकर अन्तर्ध्यान हो गईं। भवानी जी का दिया हुआ भोजन करते ही स्वामी जी को ब्रह्मात्मा का साक्षात्कार हो गया। उस दिन से स्वामी जी ने भोजन करना छोड़ दिया। केवल प्रणव के जप करते थे। उपनिषद् ब्रह्म सूत्र का पाठ करते थे, ध्यान धारणा, समाधि में स्थित रहते थे। ८० वर्ष की अवस्था में भवानी जी का दर्शन हुआ था। एक सौ बीस वर्ष के उमर में ब्रह्मलीन हो गये।

काशी की महिमा

तीनो ही लोक से न्यारी त्रिशूल की
नोक पै शंभु सजाये हैं काशी।
भागीरथी अघ नासति भेद है,
बिम्ब निहारे सदा अविनासी।।

देवन में जहाँ लगी,
नभयान चढ़े निरखें सुख राशी।
धन्य है जो निसिवासर सेवते,
देवता तुल्य यहाँ के निवासी॥
काशी सदा रजधानी थी धर्म की,
मानवता नहीं फूली समाती।
ज्ञान की ज्योति मिली जग को,
तपपूत ने ऐसी जलाई है बाती॥
केते यहाँ मठ पीठ बने,
जनरक्षित हैं जहाँ धर्म की थाती।
काशी में क्या महिमा कहिए,
गुण गाती है वाणी कभी न अघाती।

मानसोपचारैः संम्पूज्य ॐ लं पृथिव्यात्मकं ॐ हं गन्धं समर्पयामि आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि।
ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। इति। मन्त्रं जपेत्।

गङ्गा में अस्थि प्रक्षेप

दशामहाभ्यन्तरे यस्य गंगायामस्थिमज्जति।
तावत् स्वर्णे वसेत् प्रेतो, यावत्तत्रास्थितिष्ठति॥

(गरुड़ महा पुराण)

जिस मृत व्यक्ति की अस्थि हड्डी मृत तिथि से १० दिन के भीतर गङ्गा (काशी) में डाल दी जाय, वह स्वर्ग में तब तक निवास करता है जब तक गङ्गा में उसकी हड्डी रहती है। स्कन्द पुराण में लिखा है कि जिस शव का काशी में दाह संस्कार होता है उस व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता और मृतक व्यक्ति की अस्थि बाहर से लाकर काशी में गङ्गा जी में छोड़ी जाती है वह मृतक मनुष्य स्वर्ग में वास करता है। काशी

में यदि मृतक का दर्शन हो जाय तो "विश्वनाथाय नमः" कहना चाहिए चूँकि वह मृतक मनुष्य मुक्त हो गया। काशी में शव का दर्शन होते ही शुभ और मङ्गलमय माना जाता है इसलिए उत्सव मनाते हुए, बाजा बजाते हुए शव को श्मशान ले जाते हैं।

शिव पूजा का फल

जल के चढ़ाये यमलोक से उबार लेत,
चन्दन के चढ़ाये चक्रवर्ती करि देत हैं।
चावल के चढ़ाये लोक चौदहों बकसि देत,
दीप के दिखाए सातों द्वीप देइ देत हैं।।
भाग और धतूर के चढ़ाये निज पुरी देत,
बेल के चढ़ाए सदा संग करि लेत हैं।।
हर हर कहते हर हरत कलेश सदा,
गाल के बजाये तो निहाल करि देत हैं।।

विस्वनाथ मम नाथ पुरारी, त्रिभुवन महिमा बिदिति तुम्हारी।

(राम चरित मानस)

कासी मरत जन्तु अवलोकी, जासुनाम बल करहुँ विसोकी।
आकर चारि जीव जग अहहीं, कासी मरत परमपद लहहीं।।
मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघहानिकर।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न।
सेइय सहित सनेह देह भरि।
काम धेनु कलि काशी।। (विनय पत्रिका)
काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासु नाम जपि भयउ बिसोकी।।
जासु नाम बल संकर कासी।
देत सबहि समगति अबिनाशी।।

रामचरित मानस

अधिभूत बेदन बिषम होत भूत नाथ,
तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर हौ।।
मारियै तो अनायास काशीवास खास फल
जाइये तो कृपाकरि निरुज शरीर हौं।।
गौरी नाथ भोलानाथ भवत भवानी नाथ,
विश्वनाथ पुर फिरि आनि कलि काल की।
शंकर से नर गिरजा सी नारी काशी बासी,
वेद कही सही शशि शेषर कृपाल की।।
महा मंत्र जेहि जपत महेसू। कासी मुक्ति हेतु उपदेसू
आसुतोष तुम अवढ़र दानी, आरति हरहुँ दीन जनु जानी।।
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी, सुनेऊ रामगुन भव भय हारी।।

श्रावण मास शंकर जी का माना जाता है। उसमें भी श्रावण कृष्ण पक्ष त्रयोदशी प्रदोष व्रत के दिन सायं शंकर जी का पूजन कर रहे थे, तभी आप की याद आयी। यह विश्वनाथ जी की असीम कृपा ही है।

आपके परिवार में सद्बुद्धि, सभी को ब्रह्मविद्या प्राप्त हो। घर में स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति हो। सभी आरोग्य रहें, और सभी को सुख शान्ति प्राप्त हो। अपने-अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुए गृह, व्यापार एवं समस्त कार्यों को करें। यथा शक्ति दान करें। इह लोक व परलोक दोनों को सुधारें। कभी कभी विचार करो, मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मुझे कहाँ जाना है। हम लोग तीर्थ यात्रा करने जाते हैं। द्रव्य (रुपया) वस्तु (समान) को लेकर जाते हैं। सोचो-विचारो आगे बढ़ो, लम्बे सफर के लिए आज से तैयारी करो, भूत की चिन्ता न करो, भविष्य की इच्छा न रक्खो, वर्तमान में भगवान का स्मरण करते हुये आनन्द से रहो, घर में रहकर तपोमय जीवन व्यतीत करो, यही मेरा आशीर्वाद है।

काशी यात्रा प्रकाश

श्री शिव प्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं कि ५ शताब्दी में काशी का

राजा विजय तुङ्ग नामका हुआ। श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन प्रातः भयङ्कर भूकम्प आया। विश्वनाथ जी का मन्दिर और उसकी दीवाल गिर गयी थीं, सनातन धर्म के मानने वाले और बौद्ध धर्म को मानने वालों में विवाद हो गया। राजा ने बौद्ध धर्मियों का पक्ष लिया। अदालत में मुकदमा चलने लगा। विजय तुङ्ग ने १० वर्ष राज्य किया। विजय तुङ्ग के बाद रणतुङ्ग राजा हुआ, उस समय विश्वनाथ जी का मन्दिर बहुत विशाल एवं चौड़ा था। जैसे इस समय मद्रास में रामेश्वर का मन्दिर है। मन्दिर के बाहर तीन घेरे थे, विशाल चार फाटक थे। फाटक के चारो कोणों में विष्णु, सूर्य, गणेश जी तथा देवीजी का मन्दिर था। दूसरे फाटक के अन्दर चारों कोनों में भैरव, दण्डपाणि, वीरभद्र, पार्वती जी का मन्दिर था। तीसरे फाटक के अन्दर चारों कोनों में पार्वतेश्वर, देवदासेश्वर, कालराजेश्वर, स्कन्देश्वर (कार्त्तिकेश्वर) काशी के विश्वनाथ जी का मन्दिर उस समय इसी प्रकार का था। ज्ञानवापी से पश्चिम में भवानीश्वर आदि विश्वनाथ, बाँसफाटक उत्तर में चौक, कचौड़ी गली तक था। पूरब में नीलकण्ठेश्वर, नीलकण्ठ मुहल्ला तक था। दक्षिण में शुक्रेश्वर कालिका गली तक था। वेद, स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, ब्रह्म वैवर्त एवं उपनिषद् में भी इसी सीमा का उल्लेख है।(अविमुक्त प्रदक्षिणा यात्रा देखिये।)

तृतीय विश्व युद्ध के पश्चात् मनुस्मृति के अनुसार पुनः राज परम्परा भारत में चलेगी। साधु तपस्या में लग जायेंगे। क्षत्री, वैश्य शिव जी की उपासना, आराधना करेंगे। विश्व कल्याण के लिये तीन-तीन किलोमीटर के अन्दर अखण्ड कीर्तन कराना चाहिये। चूँकि जहाँ कीर्तन होता है, वहाँ कीर्तन से मनुष्यों की बुद्धि शुद्ध हो जाती है, अन्तःकरण पवित्र होता है। उस कीर्तन स्थल के चारों तरफ ९ किलोमीटर के अन्दर समय पर वर्षा होती है।

गुरुजी– सूर्य, चन्द्र ग्रहण में क्या साधना करनी चाहिये ?

उत्तर – नारायण जी आपने मानव मात्र के कल्याण के लिये प्रश्न

किया। आप जहाँ कहीं भी रहें जहाँ जलाशय हो, तीर्थ, नदी, गङ्गा जी में जहाँ सुविधा हो, ग्रहण लगते ही स्नान करें (यदि काशी में उत्तर वाहिनी गङ्गा प्राप्त हो जाये तो दस हजार गुना अधिक फल प्राप्त होता है।) जिस मन्त्र में आप को श्रद्धा और विश्वास हो उसी मन्त्र का ग्रहण लगते ही स्नान करके, हो सके तो गाय के गोबर से लिपी हुई शुद्ध जमीन में आसन बिछाकर ग्रहण में दीर्घ उच्चारण करते हुए शुद्ध जप करें। ग्रहण में पाँच बार जप और पाँच बार हवन करें। ग्रहण में इस प्रकार जप करने से एक पुरश्चरण पूर्ण होता है। इस विधान से जप हवन करने वाले व्यक्ति का मन्त्र और स्वयं सिद्ध हो जाता है। उस मन्त्र द्वारा लाखों नर-नारियों का कल्याण कर सकते हैं। ऐसे लोग आज भी विश्व में मन्त्र द्वारा दीन-दुखियों का दुःख दूर करते हैं। ऐसे महात्मा आज भी काशी में अनेक जगह हैं, जो संकट, कष्ट, रोग दूर करते हैं। अस्सी में अनन्त विज्ञान मठ के महन्त (स्वामी) रामेश्वराश्रम हैं।

"अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः विद्या यशो बलम्" (मनुस्मृति)

भावार्थ– अपने से बड़े माता-पिता-चाचा, बड़े भाई, वृद्ध आदि के चरण स्पर्श करने का फल और ब्राह्मण, साधु, संत, संन्यासियों को हाथ जोड़कर प्रणाम करने वाले नर-नारियों को विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती है, आयु बढ़ती है। इतना ही नहीं, जीवन में धन, सुख, शान्ति भी प्राप्त होती है। वृहदारण्यक उपनिषद्, स्कन्दपुराण तथा मनुस्मृति में कहा गया है कि प्रणाम करने वाले व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मकान नम्बर पता आदि लिखना जो शेष रह गया है वह दूसरे संस्करण में लिखा जायेगा। काशी दर्शन दूसरे संस्करण में प्रत्येक मन्दिर के दर्शन पूजा का फल इतिहास मकान नम्बर और काशी के सिद्ध सन्त एवं काशी के तीर्थ आदि का विस्तार से वर्णन लिखा गया है।

उपदेश

क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है। जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चात्ताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है। तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जों तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आए, जो लिया, यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया, इसी (भगवान) से लिया। जो दिया, इसी को दिया। खाली हाथ आए, खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर मग्न हो रहे हो। बस, यही प्रसन्नता तुम्हारे दुखों का कारण है।

परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र बन जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सब के हो। न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है फिर तुम क्या हो? तुम अपने आपको भगवान के अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है। जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान के अर्पण करता चल। ऐसा करने से तू सदा जीवन-मुक्त का आनंद अनुभव करेगा।

''काशी मोक्ष विचार

जिह्वाग्रे वर्तते यस्य काशीत्यक्षरयुग्मकम्।

न तस्य गर्भवासः स्यात् क्वचिदेव सुमेधसः ॥
यो मन्त्रं जपति प्रातः काशीवर्णद्वयात्मकम् ।
स तु लोक द्वयं जित्वा लोकातीतं व्रजेत्पदम् ॥
वस्तु कोटि गुणं पुण्यं, काश्यां वासयितु ध्रुवम् ।
आत्मानं तारयेद्वस्ता, स्तौ द्वौ वासयिता यतः ।

भावर्थ– काशी में स्वयं वास करने वाले, काशी वास कराने वाले को (करोड़) कोटि गुणा अधिक पुण्य होता है। क्योंकि काशी वास करने वाला तो केवल अपने को ही तारता है पर वास कराने वाला अपने को तथा जिसे काशी वास कराता है उसे दोनों ही का उद्धार कर देता है।

"निम्नगानां यथा गङ्गा देवानामच्युतो यथा ।
वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणानामिदं तथा।
क्षेत्राणां चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा।"

(श्रीमद् भागवद् द्वादश स्कन्ध)

जैसे - नदियों में गङ्गा जी, देवताओं में विष्णु भगवान हैं, और वैष्णवों में श्री शंकर जी सर्वश्रेष्ठ हैं वैसे ही पुराणों में श्रीमद्भागवत है। ऋषियों में शौनकादि हैं। जैसे सम्पूर्ण तीर्थों में काशी सर्व श्रेष्ठ है।

व्रह्मज्ञानं तदेवाहं काशी संस्थितिभागिनाम् ।
दिशामि तारकं प्रान्ते मुच्यन्ते ते तु तत्क्षणात् ॥

(काशी खण्ड-१ अ० ११६ श्लोक ३२)

अर्थ- विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं– स्वभावतः पंचेन्द्रिय चञ्चल है। मनुष्यों को ब्रह्मज्ञान का उपदेश कहाँ हो सकता है, इसी कारण से काशी में अन्त समय में ब्रह्मज्ञान का उपदेश करता हूँ। अतएव काशी वासी जन अन्त समय उसी ब्रह्मज्ञान रूप तारक मन्त्र के उपदेश से उसी क्षण मुक्त हो जाते हैं, और सबसे बड़ी विशेषता तो यह कि काशी में मरने वाला कैसा भी पापी, दुराचारी, चरित्रहीन, चाण्डाल, क्यों न हो और चाहे पुण्यात्मा हो, सबको भगवान विश्वनाथ जी मुक्ति देते हैं।

यत्तच्छिवानन्दमनन्तमाद्यं यदावयोर्नित्यमभिन्नरूपम्।
वृश्यं समस्तोपनिषत्सु भक्तैर्जानीहि तेजस्तदहोविमुक्तम्।।

(सनत्कुमार संहिता-७)

अर्थ- श्री शंकर जी पार्वती जी कहते हैं कि हे प्रिये, जो शिव कल्याण रूप आनन्दमय, अनन्त, सबके आदि और उपनिषदों से जानने योग्य है और हम तुम दोनों का नित्य और अभिन्न रूप जो तेज है वही अविमुक्त (काशी) है ऐसा जानो।

कीटाः पिपीलिकाश्चैव ये चान्ये मृगपक्षिणः।।
कालेन निधनं प्राप्ता अविमुक्ते शृणुप्रिये।।
चन्द्रार्द्धमौलिनः सर्वे ललाटाक्षा बृषध्वजाः।
शिवे ममपुरे देवि जायन्ते नात्र संशयः।। (मत्स्य पुराण)

अर्थ- पाप योनि चाण्डाल आदि प्राणी मात्र और सभी कीट, पतंग, चींटी, पक्षी, मृग आदि जीव मात्र जो (काशी) अविमुक्त क्षेत्र में काल के बस देह का त्याग करते (मरते) हैं। वे मरने वाले सभी प्राणि मात्र मस्तक में अर्धचन्द्रधारी और ललाट में नेत्र और वृषध्वज बनकर सब शिव रूप हो जाते हैं। अतएव यह निश्चय है कि काशी में सबको मुक्ति मिलती है।

विश्वेश्वरो यत्र न तत्रचित्रं धर्मार्थकामामृतरूपरूपः।
स्वरूपरूपः हि विश्वरूपस्तस्मान्न काशीसदृशी त्रिलोकी।। (काशी खण्ड अ० ३/९८)

अर्थ- विश्वनाथ (काशी में) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने के लिए मूर्तिमान् होकर स्वयं विराजमान हैं। काशी में (मुक्ति लाभ) कौन आश्चर्य की बात है, क्योंकि वह विश्वनाथ अखण्ड सच्चिदानन्द साक्षात् विश्वरूप हैं। इसी से त्रैलोक्य भी काशी के समान नहीं है और इसी से यह काशी सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है।

कलावत्यन्त गोप्यानि भविष्यन्ति गिरीन्द्रजे।

परं तेषां प्रभावो यः स स्वस्थानं न हास्यति ॥

(काशीखंड)

अर्थ- शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे पार्वती कलियुग में लिंग व तीर्थ प्रायः लुप्त होंगे, किन्तु उनका जो विशेष प्रभाव है वह अपने स्थान को नहीं छोड़ेगा, और अन्य शास्त्रों में भी कहा है कि "कलौ स्थानानि पूज्यन्ते" अतएव लुप्त हुए मूर्ति व तीर्थ के स्थान का दर्शन करना चाहिए।

काशीमुद्दिश्य यातानां सर्वः स्यात्समयः शुभः।
मङ्गलं सकलं वस्तु न किञ्चित् हि विचारयेत् ॥

ब्रह्मवैवर्तपुराण

तथा सदा कृतयुग चास्तु सदा चैवोत्तरायणम्।
न ग्रहास्तोदयकृतो दोषो विश्वेश्वरालये ॥

(काशी खण्ड)

अर्थ - काशी के दर्शन-पूजन, यात्रा करने वालों को सभी काल, समय शुभ है और सभी वस्तु मंगलदायक हैं। उत्तरायण और दक्षिणायण ग्रहों का उदय और तिथि, वार, नक्षत्र आदि का भी काशी में किंचित् विचार नहीं करना चाहिए। तथा काशी में सदा सत्ययुग और उत्तरायण है, ग्रहों के उदय व अस्त का भी दोष विश्वेश्वर के आलय काशीपुरी में नहीं है। जब इच्छा हो तब काशी की दर्शन-पूजन-यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए। यह विचार कर बुद्धिमान मनुष्य को कभी भी काशी नहीं छोड़ना चाहिए, इस काशी की कृपा और प्रसाद में महादुर्लभ मुक्ति प्राप्त होती है।

तीर्थार्थी न वहिर्गच्छेन् न देवार्थी कदाचन।
सर्वतीर्थानि देवाश्च वसन्त्यत्राविमुक्तके ॥
अविमुक्तं समासाद्य न त्यजेन्मोक्षकामुकः

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, काशीरहस्य)

अर्थ- तीर्थ स्नान, देवता के दर्शनार्थ यात्रा भी (मुक्ति) मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य को काशी छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहिए। क्योंकि सम्पूर्ण तीर्थ और सम्पूर्ण देवता काशी में आकर वास करते हैं। अविमुक्त मुक्ति क्षेत्र में मुक्ति की कामना वाले मनुष्य को अविमुक्त मुक्ति क्षेत्र को प्राप्त कर काशी में वास करना चाहिए। काशी छोड़कर बाहर जाने की वासना को भी छोड़ देना चाहिए।

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मो यस्य कीर्तितः।
तत्तद्धर्मपरैरेव सेव्या वाराणसी पुरी॥

(पद्मपुराण)

अर्थ – अपने-अपने जाति के अनुसार जो धर्म जिसके शास्त्र में कहे गये हैं उस धर्म में जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं मनुष्यों का वाराणसी पुरी काशी में काशी वास सफल होता है।

वाराणसीह करुणामयदिव्यमूर्तिरुत्सृज्य यत्र तु तनुभृत्सुखेन।
विश्वेशदृङ्महो स यत्सहसा प्रविश्य रूपेण तां वितनुताम्पदवीं दधाति॥

(काशीखण्ड अ० ३० श्लोक ७१)

अर्थ- इस संसार में वाराणसी (काशी) साक्षात् करुणामयी अलौकिक मूर्ति है क्योंकि जहाँ प्राणि मात्र सुखपूर्वक (मरते हैं) देह त्याग करते हैं, उसी समय विश्वनाथ जी के (तारक मन्त्र के उपदेश से अज्ञान रूपी पाप का तत्काल नाश होकर) ज्ञान रूप ज्योति में प्रवेश करते ही मोक्ष प्राप्त करते हैं।

येषां क्वाऽपिगतिर्नास्ति तेषां वाराणसीगतिः।

(काशीखण्ड अ० श्लोक ३२/७४)

अर्थ- जिन मनुष्यों की कहीं भी गति नहीं हो सकती उन मनुष्यों की गति वाराणसी (काशी) पुरी में होती है।

अविमुक्तगुणान्वक्तुं देव-दानव-मानवैः।

न शक्यन्तेप्रमेयत्वात् स्वयं यत्र भवस्थित:।

(मत्स्य पुराण)

अर्थ- जिसमें स्वयं श्री विश्वेश्वर विश्वनाथ ही सदा सर्वदा निवास करते हैं, उस अविमुक्त मुक्ति क्षेत्र काशी के गुण देवता, दानव और मनुष्य नहीं कर सकते, कारण यह है कि काशी के गुण अप्रमेय गणनारहित हैं। अर्थात् माप रहित हैं।

एवं ज्ञात्वा तु मेधावी नाविमुक्तं त्यजेन्नर:।
अविमुक्तंप्रसादेन विमुक्तो जायते यत:॥

(काशीखण्ड अ० ७७/२५ श्लोक)

सेव्योत्तरवाहिनी नित्यं लिंगानर्च्य प्रयत्नत:।
दमो दानं दयानित्यं कर्तव्यं मुक्तिकांक्षिभि:॥

(काशीखण्ड अ० ६५ श्लोक ६४)

अर्थ- मुक्ति चाहने वाले काशीवासियों को, नित्य ही उत्तर वाहिनी गंगा में स्नान कर प्रयत्नपूर्वक शिवलिंग का दर्शन-पूजन करना चाहिए। विश्वनाथ जी के आस-पास रहने वाले भक्तों के नित्य मणिकर्णिकाघाट में स्नान कर विश्वनाथ जी का दर्शन पूजन करने से मुक्ति हस्तामलक होती है, और अपने इन्द्रियों को वश में रखकर यथा शक्ति प्रतिदिन दान देना, समस्त प्राणियों में सदैव दया करना चाहिये।

ये काश्यां धर्म्मभूमिष्ठानिवसन्ति मुनीश्वरा:।
ते तारयन्ति चात्मानं शतपूर्वान् शतावरान्॥

(काशी मा० ८ श्लोक २)

अर्थ- जो मननशील महात्मा जन स्वयं सत्धर्म का पालन करते हुए श्रोताओं को नित्य सत्धर्म का उपदेश, काशीखण्ड, काशीरहस्य, शिवरहस्य, शिव पुराण, लिङ्ग पुराण, काशी मोक्ष निर्णय, काशी माहात्म्य, काशीवासियों के प्राण हैं इनका नित्य श्रवण करना कराना चाहिए। शिव गीता, महिम्नस्तोत्र, शिवपुराण, लिंगपुराण आदि शिव सम्बन्धी रामायण, श्रीमद्भागवत,

श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद् आदि सद्ग्रन्थों की कथा सुनना, सुनाना चाहिए।

जो वक्ता उपदेश देते हुए, कथा सुनाते हुए काशी में निवास करते हैं, काशी में नित्य कथा करते हुए उपदेश देते हैं, उनके पूर्व के सौ (१००) पितृगण, सौ पीढ़ियों के पितृगण इस सागर से तरते हैं, कैवल्य मोक्ष प्राप्त करते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्ति,
मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत्।।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्येे
पूर्णस्या पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।।

अनन्त विभूषित यति चक्र चूडामणि परिवार्जकाचार्य धर्मसम्राट् स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज द्वारा रचित पुस्तकें निम्नलिखित हैं :-

(१) वेदार्थ पारिजात, (२) मार्क्सवाद और रामराज्य, (३) वेद का स्वरूप औरप्रमाण्य भाग २, (४) क्या सम्भोग से समाधी, (५) भागवतसुधा, (६) भक्ति सुधा, (७) अभिनव शंकर करपात्री स्वामी, (८) श्रीविद्यारत्नाकर, (९) श्रीविद्यावरिवस्या, (१०) भ्रमरगीत, (११) रामायणमिमांसा, (१२) विचारपियूस, (१३) अहमर्थ परमार्थसार, (१४) राहुल किभ्रान्ती, (१५) वेदस्वरूप विमर्श, (१६) वेदान्त प्रश्नोत्तरी, (१७) दशनामपराध, (१८) चातुर्यवर्णा संस्कृती विमर्श, (१९) शङ्कासमाधान, (२०) पूँजीवाद, समाजवाद और रामराज्य, (२१) शङ्कासमाधान, (२२) राधासुधा, (२३) भक्ति रसारणव, (२४) वर्णाश्रमधर्म, (२५) तिथ्यादिनिर्णय, (२६) रास और प्रयोजन, (२७) जाति राष्ट्र संस्कृती, (२८) बदलती दुनिया, (२९) जीवन दर्पण, (३०) विदेश यात्रा, (३१) करपात्री संस्मरण, (३२) वेदप्रमाण मिमांसा।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित पुस्तक व स्वयं रचित पुस्तकः- (१) काशी महात्म्य (२) काशीदर्शन (३) काशी की महिमा (४) काशी मोक्ष निर्णय (५) काशी का गौरव (६) काशी की प्रदक्षिणा यात्रा।

नोट सूचना:- निवेदन यह है कि प्रत्येक मन्दिर, मठ एवं जलाशय में काशीदर्शन और काशीगौरव नाम के पुस्तक को देखकर संगमरमर के पत्थर में मन्दिर का नाम एवं दर्शन पूजा का फल सहित लिखाकर दीवाल में लगाने से विश्वनाथजी, अन्नपूर्णा प्रसन्न होते हैं। यह दोनो प्रसन्न होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हस्तामलक होते हैं। हो सके तो स्कन्द पुराण आदि द्वारा प्रमाणसहित लिखें।

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

मुद्रक : भार्गव आफसेट्स, वाराणसी । मूल्य : ३५) ००